॥ श्रीः ॥



स्त्रीजातकम् ।

[illegible]बरेलीस्थगौडवंशावतंसबलदेवप्रसादात्म-
जराजज्योतिषिकपण्डितवर्यश्रीश्याम-
लालसंगृहीतम्,

उक्तपण्डितविरचितयैव श्यामसुन्दरी-
भाषाटीकया समलंकृतम् ।

तदेतत्

श्रीकृष्णदासात्मज-गंगाविष्णोः
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" मुद्रणालये
मनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयी इत्यनेन स्वाम्यर्थं
मुद्रयित्वा प्रकाशितम् ।

संवत् १९८१, शकाब्दाः १८४६.

कल्याण-मुंबई.

ग्रन्थारम्भोद्दशः



नाथ क्षितौ प्रचलितास्तव संगृहीता
ग्रन्था मुदे कृतधियां विलसंति नूनम् ।
तानाकलय्य पुरुषोपकृतौ समर्थान्
स्त्रीजातकं रचयितुं नवमास्मि याचे ॥ १ ॥
येन स्त्रियाः सुभगदुर्भगतावबोधः
सम्यग्भवेत्तदुपकारविधौ पटीयान् ।
इत्थं प्रियाभिगदितं वचनं निशम्य
श्रीश्यामलाल उपजातमतिस्तदर्थे ॥ २ ॥
प्राह प्रियां प्रणयिनीं प्रणयेन नूनं
क्रीतोऽस्मि ते ह्रतपरोपकृतौ प्रयत्नात् ।
यच्चास्ति तत्स्वपर समर्थमभीप्सितार्थ-
पूर्तौ स्मरामि खलु देवमहं सदीड्यम् ॥ ३ ॥
यस्त्रातु किल गोपवृन्दमभितो दर्पं दलञ्जैष्णवं
वर्षोपप्लवतो नगेन्द्रपालिकं गोवर्द्धनं लीलया ।
उच्चोल्याविकनिष्ठकं दधदसावासीदहःसप्तकं
पर्याप्तो नितरामभीप्सितकृते ते सोऽस्तु देवः प्रिये ॥ ।

भूमिका।

ज्योतिर्विनोदरसिकान्विज्ञापयामि।

श्रीकृष्णचन्द, आनंदकन्द, नन्दनन्दन, भक्तहितकारी, असुरसंहारी इंद्रमदहारी, श्रीगोवर्द्धनधारी मुरारीके चरणकमलका ध्यान करके पहिले आर्यावर्त्तनिवासी परम कृपालु विद्वानोंके पादारविन्दोंको नमस्कार हाथ जोडकर करताहूं. अब देखना चाहिये कि, परब्रह्म परमेश्वरने इस असार संसारमें कैसी कैसी अद्भुत विद्यायें जगद्धितार्थ बनाई हैं कि जिनके जाननेसे इन पंचतत्वोंकरके रचित मनुष्यका शरीर ब्रह्मदेवकृत चौरासी लाख योनियोंमें अग्रणीय गिना जाता है और बहुधा इन विद्याओंके ज्ञाता मनुष्योंमें भी देवताओंके समान पूजनीय होजाते हैं और राजा महाराजा उनका अधिक सन्मान किया करते हैं. इस समय अन्य विद्याओंके वर्णन करनेका कुछ प्रयोजन नहीं है. केवल संसारके हित करनेवाले संपूर्ण धर्मोंकी मूल ज्योतिष विद्याके, विषयमें निवेदन किया जाताहै. जिस होराशास्त्रके जाननेसे त्रिकालदर्शी हरएक प्राणिमात्रका शुभाशुभ फल तीनों जन्मका बतलाया करते हैं और इस विद्याके नियमोंपर चलनेवाले सत्पुरुषोंको कोई भी दुःख नहीं होता है इसमें सिद्धांत, संहिता, होरा, जातक, ताजिक, प्रश्न, मुहूर्त इत्यादि अनेक भेद वर्णन किये हैं. तिनमें जातकभागको सब संसारी मनुष्य सबसे अच्छा मानते हैं. क्योंकि जातकद्वारा मनुष्यका भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों समयका यथोचित फल कहाजाता है. इसके दो भेद हैं. एक-मनुष्यजातक दूसरा-स्त्रीजातक सो पहिले मनुष्यजातक, विषयका 'ज्योतिषश्यामसंग्रह' नामका ग्रंथ पुरुषोंकी जन्मपत्रके फलके हितार्थ संवत् १९६३ में नवीन बनाकर श्रीसेठगंगाविष्णु श्रीकृष्णदासजीके कल्याण-मुम्बई "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयमें छपाकर प्रकाशित करचुकाहूँ. अब स्त्रियोंके फलहितार्थ श्रीमन्महाराजाधिराज वीरशिरोमणि धर्मधुरन्धर बल्लूरदेशाधिपति विरासपुराधीश

श्री १०८ महाराज विजयचन्द्रजू देवकी सहायतासे ये "स्त्रीजातक" नामक ग्रंथ वसिष्ठ, वृद्धयवन, शौनक, गर्ग, पितामह, नरपति, श्रीपति, स्कन्द, वराहमिहिर, गुणाकर, बलभद्रसूरि, ढुंढिराज, भृगु, भारद्वाज, देवकीर्ति, नारद, गणेशदैवज्ञ, रामदैवज्ञ, वर्तमान श्यामदैवज्ञ इत्यादि पूर्वाचार्योंके प्रणीत ग्रंथोंसे संग्रह करके "श्यामसुंदरी" नाम भाषाटीकासहित द्वितीय ग्रन्थ रचनाकर प्रकाशित करताहूं क्योंकि इस संसारमें मनुष्यके शरीरके सुखका कारण स्त्रीही है. और पूर्वाचार्योंने भी स्त्रीको त्रिवर्गसाधिनी कहा है. जिन पुरुषोंके घरमें सुशीला स्त्रियां होती हैं वे मनुष्य चिंतारहित संसारी सर्व सौख्यों-सहित यावज्जीव जगत्में यश पाते हैं और जिन पुरुषोंके घरमें दुःशीला कर्कशा स्त्रियाँ होती हैं वे मनुष्य अहर्निश अनेक प्रकारके दुःख जन्मभर भोगा करते हैं और सदैवकाल लोकमें अपकीर्तिके भागी रहते हैं. क्योंकि ऐसा पूर्वाचार्योंने कहा है. श्लोक—"सुलक्षणैः सुचरित्रैरपि मंदायुषं पतिम्। दीर्घायुषं प्रकुर्वंति प्रमदाः प्रमदास्पदम्॥ १ ॥ अतः सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणैः। लक्षणानि परीक्ष्यादौ हित्वा दुर्लक्षणान्यपि ॥ २ ॥" अर्थात् जो नारी अच्छे लक्षणोंकरके सुचरित्रोंकरके थोडी उमरके पतिको भी दीर्घायु करती है और दुष्टलक्षण कुचरित्रोंकरके दीर्घायु मनुष्योंको भी अल्पायु करती है ॥१॥ इस कारणसे सुलक्षणवती स्त्रीको चतुर-मनुष्य विवाहे. लक्षणोंको पहिले परीक्षा करके दुर्लक्षणा कन्याको त्याग करना चाहिये. ॥ २ ॥ इस कारणसे जहाँतक होसके विवाहके पहिले अपने वर्णकी कुलवान् मनुष्योंके घरकी कन्याके जन्मपत्रद्वारा उसका स्वरूप, शील, गुण, सौभाग्य, संतान, सतीत्वादि विषयोंका विचार किसी बुद्धिमान् पंडितसे इस चातुर्वर्णीजातकके द्वारा कराकर सम्बन्ध करे. जो मनुष्य विवाहके पहिले इस ग्रन्थद्वारा विचार कराकर सम्बन्ध करेंगे अथवा कोई दोष कन्याके जन्मपत्रसे मालूम होय तो उसकी शांति इस ग्रन्थके लिखे अनुसार विवाहके समय करके परिण-

यन करेंगे वे मनुष्य जन्मभरतक स्त्रीयुक्त दुःखको स्वप्नमेंभी नहीं प्राप्त होंगे. यावज्जन्म इस जगत्‌में स्त्रीपुत्रके सर्वसौख्य भोगकर-धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पदकोभी पावेंगे अब कन्याके पिताको चाहिये कि धनका लोभ छोडकर जैसे कुयोग कन्यापक्षमें कहे हैं वैसेही पुरुषपक्षीय जातकग्रन्थोंसे वरकी कुंडलीके दोषोंको भलेप्रकार विचार कराकर उसके गुण अवगुणोंको देखकर वरकी आयु इत्यादिकोंका निर्णय कराकर अच्छे निरोगी स्वरूपवान् कुलवान् कन्याके वयसे ड्योढी उमरके वरके साथ कन्याका विवाह करै. इसके विपरीत करनेसे कन्याके माता, पिता वा ज्येष्ठ भ्राता अथवा जिनको कन्यादानका अधिकार है वे सम्पूर्ण नरकके भागी होते हैं. आजकल पुरोहित तथा पाधा लोगोंने ऐसी व्यवस्था कररक्खी है कि, वरकन्याकी कुण्डलीमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकूट, नाडी इन आठ बातोंको अट्टसट्ट देखलिया और निर्भय कन्यावरके पितासे कहदिया कि, कुण्डली बहुत अच्छी मिलती है. परन्तु जो बातें कन्यावरकी कुंडलीमें देखना चाहिये उनको कोई भी पाधाजी नहीं ध्यान करते हैं— जैसे आयु, कुष्ठादि राजरोग, प्रव्रज्या, ज्ञातिच्युति, म्लेच्छ, अन्य दुर्योगोंको कन्याका पिता किसी अच्छे विद्वान्‌से वरकी कुंडलीका विचार कराले और वरका पिता कन्याकी कुंडलीमें वैधव्य, निरपत्यता, दुःशील, उन्माद, व्यभिचार, राजरोगादि अनेक दुर्योग दिखाकर तब सम्बन्ध करे. नहीं तो कन्यावरको जन्मभर दुःख सहना पडताहै और उस पापके भागी वेही पंडित होंगे. जिन्होंने विवाहके पूर्व कुंडलीका मेलन करा है परन्तु वर कन्याकी कुण्डली शुद्ध इष्टकी होनी चाहिये. जन्मपत्रके अशुद्ध होनेका कारण यही कन्या वरके परस्पर दुःखका मूल है. जब मनुष्यके संतान उत्पन्न होनेका समय आवे तो मनुष्यको चाहिये कि बालकके जन्मसे पहिले किसी अच्छे गणितज्ञको बुलाकर बैठालले, जिससे उत्पत्तिकालकी लग्न नहीं बिगडने पावे और विवाहके पहिले किसी सद्विद्वान्‌से कुंडलीका मेलन तथा विचार

लग्नका शोधन करावें, जिससे ये मानस वंशका दुःख जन्मभर सहना न पडे सो संसारमें ऐसा अन्धकार छारहाहै चाहे कुंडली शुद्ध बने या न बने. चाहे कन्या दुःख पावे चाहे वर, परन्तु यजमान उन्हीं अनभिज्ञ नक्षत्रसूची पाधाओंको बुलाकर सब निश्चय करा लेते हैं शोक ! शोक !! शोक !!! सन्तानके उत्पत्तिसमय और वर कन्याके विवाहके विषयमें दीनसे दीन मनुष्य सैकडों रुपया रण्डी भाँड आतिशबाजी इत्यादि कामोंमें वृथा खर्च कर देते हैं, परन्तु ये किसीसे न होता है कि, दस बीस रुपये किसी बुद्धिमान् ज्योतिषीको देकर जन्मपत्र शुद्ध बनवावें या कुंडलीका मेलन विवाहकी लग्नको शोधन करावें इसी कारणसे उन पुरुषोंकी सन्तानको जन्मभर अनेक कष्ट सहने पडते हैं. आजकल बहुधा ऐसा देखागया है कि, पंडितजन स्त्रियोंकी जन्मकुण्डलीका फलादेश पुरुषजातकादिग्रन्थोंसे कहा करते हैं ये सर्वथा ठीक नहीं है. विद्वानोंको चाहिये कि, पुरुषकी जन्मकुण्डलीका सब शुभाशुभ फलादेश पुरुषजातक बृहज्जातकादिग्रंथोंसे कहना चाहिये और स्त्रियोंकी जन्मपत्रका फल स्त्रीजातकादि ग्रंथोंसे विचार करना चाहिये. केवल स्त्रीपुरुषकी आयुनिर्णय तथा दशागणित एकही प्रकारसे करना उचित है और स्त्रियोंके जन्मपत्रमें जो राजयोगादि भाग्यकारक योग होय वह स्त्रीके पतिको कहना अवश्य है. अब जो पंडितजन स्त्रीजातकको तलाशकर देखते हैं तो स्त्रीजातकके पचीस तीस श्लोकसे ज्यादे कहीं नहीं मिलते हैं. इसलिये मैंने बालवर्णीजातक नामक एक नवीन ग्रंथ बहुतसे प्राचीन आचार्योंके कहेहुए वाक्योंकी सम्मति लेकर बहुत बडा स्त्रीयोंके फलहितार्थ संग्रह करके बनाया है. जो पंडितजन स्त्रियोंकी जन्मपत्रीका सम्पूर्ण शुभाशुभ फल विचारकर भूत–भविष्यत्–वर्तमान इस ग्रंथके द्वारा कहेंगे वह समयानुसार ठीक ठीक मिलेगा और जो भारतवर्षनिवासी विवाहके पहिले कन्याके जन्मपत्रको विचार करवाकर इस ग्रंथके द्वारा सब

कन्याके लक्षणोंको देखकर विवाह करेंगे वह मनुष्य परमेश्वरकी कृपासे आजन्म स्त्रीपक्षके कष्टको स्वममें भी न पावेंगे. प्रायः पुत्रपौत्रादिसहित सर्व सौख्यलाभ पावेंगे. मैं आशा करताहूं परम कृपालु पंडितवर मेरी चपलताको देखकर क्षमा करेंगे, किंतु मुझ चरणसेवकको आशीर्वाद देकर मेरे परिश्रमको सफल करेंगे. और इस ग्रंथमें किसी प्रकारकी अशुद्धि होय तो उसको अभिमान छोडकर शुद्ध कर लेंगे. इस ग्रंथकी "श्यामसुन्दरी" नाम भाषाटीका सरल वाणीमें करी है और इस ग्रंथको अठारह अध्यायसे सुशोभित किया है. अध्याय–प्रथम जिसमें कन्याके सामान्य लक्षण वर्णन किये हैं. अध्याय–दूसरा इसमें नखसे लेकर चोटीपर्यंत छयासठ (६६) अंगोंके लक्षण और उनका सब शुभाशुभ फल सविस्तर वर्णन किया है. अध्याय–तीसरा जिसमें कन्याके सर्वांगके तिलमशकादि चिह्नोंके लक्षण और उनका फल कहा है. अध्याय–चतुर्थ जिसमें कन्याकी जन्मकुण्डलीसे त्रिंशांशका विचार वर्णन किया है. अध्याय–पंचम जिसमें अनेकप्रकारके ग्रहोंके योग और सप्तमभावस्थित नवांशसे सूर्यादिग्रहोंका फल तथा कन्याकी मृत्युके कारण वा प्रव्रज्यादि पतिसौख्यके अनेक योग बनाये हैं. अध्याय–छठा जिसमें स्त्रियोंके राजयोग कुण्डलीसहित सचक्र उदाहरणके बनाये हैं. अध्याय–सप्तम जिसमें प्रतिपदासे लेकर पौर्णमासी पर्यन्त कन्याके जन्मकी तिथियोंका फल कहाहै. अध्याय–अष्टम इसमें कन्याके जन्मकालमें सूर्यादि सातों वारोंका फल कहा है. अध्याय–नवम इसमें अश्विनीसे लेकर रेवतीपर्यन्त २७ सत्ताईस नक्षत्रजातफल कहा है. अध्याय–दशम इसमें विष्कुंभादियोगोंका फल कुमारीके जन्मसमयमें वर्णन किया है. अध्याय–ग्यारहवां इसमें बवादिक करणजातफल कहा है. अध्याय–बारहवाँ इसमें मेषादिलग्नजातफल कहा है. अध्याय–तेरहवां इसमें चंद्रराशिजातफल कहा है. अध्याय–चौदहवाँ इसमें सूर्यादि राहु पर्यंत भावस्थित फल कहा है. अध्याय–पंद्रहवाँ इसमें अमुक्तमूलजा-

तविचार और इसका विधान वर्णन करा है. अध्याय-सोलहवाँ इसमें पूर्वोक्त मूलजातशांति वनाई है. अध्याय सत्रहवाँ इसमें आश्लेषा, मूल, त्रिविधगण्डांत, गण्डदोष, नक्षत्रजाति, दान, ज्येष्ठाशांति, रेवती, गण्ड, ज्येष्ठापादजातफल, दुष्टयोगजातशांति, व्यतीपात, वैधृति, संक्रांति-जात, कुहू, सिनीवाली, दर्शशांति, कृष्णचतुर्दशीजातशांति, एकनक्षत्र जननशांति, त्रीतरशांति, प्रसवविकारशांति, सूर्यचंद्रग्रहणजननशांति वर्णन करी है. इनकी शांति करनेसे कन्याके दुष्टफल दूर होते हैं और शुभफलकी प्राप्ति होती है. अध्याय-अठारहवाँ इसमें ग्रंन्थकर्त्ताके वंशका वर्णन है. प्रार्थना-जो कहीं इस ग्रंथमें हस्तदोष अथवा छापेके दोषसे भूल होगई होय उसको पंडितवर सुधारलेंगे और सदैवकाल [illegible] कृपा करते रहेंगे और जिस किसी सत्पुरुषको इस ग्रंथके विषयमें कुछभी प्रश्नकरना होय तो पत्रद्वारा नीचे लिखे पतेपर पत्र भेजकर कृतार्थ करेंगे.

ब्राह्मणोंका कृपाभिलाषी-राजज्योतिषी पंडित श्यामलालशर्मा,
ठिकाना-" पुरानी कोतवाली "-बाँसबरेली.

॥ श्रीः ॥

अथ स्त्रीजातकस्थविषयानुक्रमणिका ।



इति स्त्रीजातकस्थविषयानुक्रमणिका सम्पूर्णा ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी-मुंबई.

जाहिरात.



नाम.	की. रु. आ.
अयोध्याजातक—भाषाटीकासमेत.	०—५
गर्गमनोरमा—भाषाटीकासमेत.	०—२
ग्रहगोचर—भाषाटीका.	०—२॥
दीर्घवृत्तलक्षण—श्रीयुत पं. सुधाकर द्विवेदिनिर्मित ...	०—८
द्युचरचार—पण्डित सुधाकर द्विवेदिनिर्मित. ...	०—८
पक्षीमार्गप्रदीपिका—मूल.	०—४
पद्मकोश—भाषाटीका-वर्षफलका भाषाध्याय अच्छा है	०—३
प्रश्नसिंधु—भाषाटीकासमेत	०—३
बृहदवकहोडाचक्र—भाषाटीका बड़ा	०—८
बृहदवकहोडाचक्र—भाषाटीकासमेत. छोटा ...	०—३
भुवनदीपक—सटीक संस्कृत.	०—६
मनुष्यजातक.	१—८
बिन्दुयोग—भाषाटीकासमेत.	०—८
मानवपञ्चांग—संवत् १९७९—८०·८१ का ...	०—४
मुहूर्तचिन्तामणि—पीयूषधाराटीकासमेत. ग्लेज ...	३—८
" तथा रफ	३—०
मुहूर्तप्रकाश—भाषाटीकासमेत। पं० चतुर्थीलालकृत	९—०
मुहूर्तगणपति—मूलमात्र.	१—०
मुहूर्तदीपक—सटीक संस्कृत-मुहूर्त देखनेमें सरल है ...	०—४

नाम.	की. रु. आ.
मुहूर्तदर्पण–चक्रोंसमेत। चक्रोंसे प्रश्नादिज्ञान होताहै	०–१०
रमलदीपिका–रमलविषयका यह बहुत उत्तम ग्रन्थ है	१–०
लघुपाराशरी भाषाटीका बड़ी.	०–५
लघुजातक–भाषाटीकासमेत.	०–१०
लघुसंग्रह–भाषाटीकासमेत.	१–०
लग्नचंद्रिका–मूलमात्र.	०–६
लघुजातक–भाषाटीकासमेत.	०–३
लोमशसंहिता–(भावफलाध्याय.)	०–१
वृन्दावली–ज्योतिष भाषाटीकासहित. ...	०–५
शकुनमञ्जरी–संस्कृत–अग्निपुराणान्तर्गत. ...	०–१
सम्वत्सरदीपिका–साठ संवत्सरोंका फल.	०–१
स्वप्नाध्याय–भाषाटीका	०–२
सिद्धांतशिरोमणि–भाषाटीकासमेत.	०–४



॥ श्रीः ॥

अथ स्त्रीजातकम् ।

श्यामसुन्दरीभाषाटीकासमेतम् ।



गोवर्द्धनधराधारं प्रणम्य पितरौ मुदा ।
स्त्रीजातकं श्यामलालः कुर्वे वामावशंवदः ॥ १ ॥

अर्थ—मैं जो श्यामलाल हूं सो स्त्रीबालवर्णीके वशीभूत होकर " स्त्रीजातक " नाम ग्रन्थको करताहूं. गोवर्द्धनपर्वतके धारण करनेवाले श्रीगोवर्द्धननाथजीको प्रणाम करके और गौरीनाम्नी माता और बलदेवप्रसादनामक पिताको हर्षसे प्रणाम करके ॥ १ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि कन्यादोषानशेषतः ।
यान्विहाय सुधीः क्वापि न मज्जेद्दुःखसागरे ॥ २ ॥
तस्मात्परीक्ष्य मतिमान्कन्यां लक्षणसंयुताम् ।
विवाहेत तथा न स्यात्सर्वथानर्थभाजनम् ॥ ३ ॥
यस्माद्धर्मार्थकामानां साध्वी चेत्साधनं भवेत् ।
तस्माल्लक्षणं नारीणां तथा लग्नतो ब्रुवे ॥ ४ ॥

अर्थ—इसके अनंतर कन्याओंके अशेष दोष कहताहूं, जिन लक्षणोंको जानकर बुद्धिमान् कोई पुरुष दुःखसागरमें स्नान न करे ॥ २ ॥ तिस कारणसे लक्षणसंयुक्त कन्याको

परीक्षा करके जिससे विवाह करनेसे हमेशा दुःखके भागी न होय ॥ ३ ॥ पतिव्रता स्त्रियोंकरके धर्म अर्थ कामनादिक फलोंका साधन पुरुषको होता है तिस कारणसे स्त्रियोंके लक्षण तथा लग्नका विचार कहते हैं ॥ ४ ॥

अथ स्त्रीणां लक्षणविशेषमाह व्यासः ।

मार्जारपिंगला नारी विषकन्येति कीर्तिता ।
सुवर्णपिंगला नारी नातिदुष्टा परे जगुः ॥ ५ ॥
कृष्णजिह्वा च लंबोष्ठा पिङ्गाक्षी घर्घरस्वरा ।
त्याज्या यस्याश्च पादौ च कुचावोष्ठौ च रोमशौ ॥६॥
विरलांगुलिदंता च कुचगंडबृहत्कचा ।
कृष्णतालुः परित्याज्या व्यङ्गाङ्गा पितृमातृतः ॥७॥
कनिष्ठानामिका यस्या यदि मध्यामिका तथा ।
भूमिं न स्पृशते सा स्त्री विज्ञेया व्यभिचारिणी ॥८॥

अर्थ–बिल्लीकी तरह पीले वर्णकी स्त्री विषकन्या होती है, वह पतिको नाश करती है और सोनेकी तरह पीले वर्णकी स्त्री अत्यंत दुष्ट नहीं होती है किन्तु मध्यम होती है, ऐसा कोई कोई आचार्य कहते हैं ॥ ५ ॥ जिन औरतकी काली जीभ, लंबे होठ, पीले वर्णके नेत्र, आवाज जिसकी घर्राटकी और जिस औरतके पैरोंमें कुचोंमें होठोंमें रोम हों वह स्त्री अवश्य त्याग करने लायक होती है ॥ ६ ॥ जिस स्त्री-

अंगुली तथा दांत छिदरे हों और कुचोंके ऊपर तथा गालोंके ऊपर बहुत बाल हों जिसका तालू काला हो या बापके समान हीन या अधिकांगी हो सो स्त्री जरूर २ त्याग करने लायक होती है ॥ ७ ॥ जिस स्त्रीके पैरकी कनिष्ठा अंगुली अनामिका और मध्यमा अंगुली धरतीको न छूती हो सो स्त्री अवश्य व्यभिचारिणी अर्थात् परपुरुषगामिनी होती है ॥ ८ ॥

पादे प्रदेशिनी यस्या अंगुष्ठं समतिक्रमेत् ।
न सा भर्तृगृहे तिष्ठेत्स्वच्छंदा कामचारिणी ॥ ९ ॥
उदरे श्वशुरं हंति ललाटे हंति देवरम् ।
स्फिचौ पतिं लंबमाने धनं कूर्मोदरी हरेत् ॥ १० ॥
पृष्ठावर्ता पतिं हंति नाभ्यावर्ता पतिव्रता ।
कट्यावर्ता तु स्वच्छंदा स्कंधावर्तार्थभागिनी ॥ ११ ॥
सुस्वरा च सुवेषा च सुदंती चारुभाषिणी ।
प्रशस्ता सुगतिः कन्या या च हृष्टमानसप्रिया ॥ १२ ॥

अर्थ—जिस औरतके पैरोंके अंगूठेके पासकी अंगुली अंगूठेसे बडी होय वह नारी अपने पतिके घरमें नहीं रहतीहै अपने मर्जीके माफिक कामचारिणी होती है ॥ ९ ॥ और जिस नारीका पेट लंबा हो वह स्त्री श्वशुरका नाश करती है और जिस स्त्रीका माथा ऊंचा हो वह देवरका नाश करती है और जिस स्त्रीका पेडू लंबा होय वह नारी पतिका नाश करतीहै और जिस औरतका पेट कछुएके माफिक हो

वह धनको नाश करतीहै ॥ १० ॥ जिस औरतके पीठमें रोमावलीका चक्र हो वह नारी पतिका नाश करतीहै और जिस औरतकी ढूडीमें रोमावलीका चक्र हो वह नारी पतिव्रता होती है और जिस नारीके कमरमें रोमावलीका चक्र होवे वह नारी इच्छानुसार चलनेवाली होतीहै और जिस औरतके कंधेपर रोमावलीका चक्र होवे वह नारी धनभोग करनेवाली होती है ॥ ११ ॥ जिस औरतकी आवाज अच्छी हो अच्छे मेधवाली कोमल शरीरवाली अच्छी वाणी बोलनेवाली अच्छी चाल चलनेवाली जिसे देखनेसे आँखें और मन प्रसन्न हो वह नारी अतिश्रेष्ठ होतीहै ॥ १२ ॥

मंडूककुक्षिका नारी न्यग्रोधपरिमण्डला ।
एवं जनयते पुत्रं स तु राजा भविष्यति ॥ १३ ॥
मध्यांगुलीं या मणिबंधनोत्था
रेखा गता पाणितलेंऽगनानाम् ।
ऊर्ध्वं गता पाणितलेऽथवा या
पुंसोथवा राजसुखाय सा स्यात् ॥ १४ ॥
कनिष्ठिकामूलगताथवा या
प्रदेशिनीमध्यमकांतराला ।
करोति रेखा परमायुषः स्या-
त्प्रमाणहीनाथ तदूनमायुः ॥ १५ ॥
अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखा
पुत्रा बृहत्यः प्रमदाश्च तन्व्यः ।

अच्छिन्नदीर्घाश्च चिरायुषो ताः
स्वल्पायुषश्छिन्नलघुप्रमाणाः ॥ १६ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीकी कोख मेंडकके समान और वटवृक्षके माफिक ऊपरसे बहुत विस्तार हो जिसके ऐसी कोखसे उत्पन्न हुआ पुत्र राजा होताहै ॥ १३ ॥ जिस स्त्रीके कलाईसे लेकर मध्यमांगुलीतक हथेलीमें रेखा होवे वह नारी महारानी होती है और जो पुरुषके हाथ यही रेखा होवे तो वह मनुष्य राजा होताहै ॥ १४ ॥ और जिस नारीके हाथमें कनिष्ठिका अंगुलीके मूलसे पैदा भई रेखा और वह रेखा मध्यमांगुली और प्रदेशिनी अंगुलीके अन्ततक चलीगई होय तो वह नारी (१२०) एकसौबीस वर्षसे कुछ कम उमरवाली होतीहै ॥ १५ ॥ और जिस स्त्रीके अँगूठेके मूलसे पैदा भई रेखा बहुत बडी होवे तो पुत्रदात्री होती है और छोटी बारीक होवे तो कन्या होती है और यही रेखा विना टूटी लंबी होय तो दीर्घायुवाले पुत्र होते हैं, टूटी होय तो अल्पायुवाले पुत्र होते हैं और वही रेखा बारीक लम्बी होवे तो कन्या दीर्घायुवाली होती है और टूटी होय तो अल्पायुवाली कन्या होती है ॥ १६ ॥

कलत्रकांतयोः सख्यं जीविताख्यकनिष्ठयोः ।
मध्ये विचिन्तयेद्दक्षे वामहस्ते नरस्त्रियोः ॥ १७ ॥
अरेखं बहुरेखं वा येषां पाणितलं नृणाम् ।
ते स्युरल्पायुषो निस्वा दुःखिता नात्र संशयः॥ १८॥
क्लेशसंपन्नो रेखा कुर्याच्छिन्नायुषः क्षयम् ।

मणिबंधोन्मुखा वृद्ध्यै विपदोंगुष्ठसंमुखा ॥ १९ ॥
मत्स्यः करतले यस्य स स्त्रियो बहुकोशयुक् ।
भाग्यरेखा सुतीक्ष्णाग्रा शुभा छत्राकृतिस्तथा॥२०॥
श्लिष्टान्यंगुलिमध्यानि द्रव्यसंचयहेतवे ।
तानि चेच्छिद्रयुक्तानि त्यागशीलकराणि च ॥२१॥

अर्थ—उमरकी रेखा और कनिठ अंगुलीके बीचमें पुरुष स्त्रीके प्रेम परस्पर करनेवाली रेखा होतीहै सो रेखा मनुष्यके दाहिने हाथमें और नारीके बांये हाथमें देखना चाहिये ॥ १७॥ और जिस स्त्रीपुरुषके हाथमें रेखा कोई न होय अथवा बहुत रेखा होय उन स्त्रीपुरुषको अल्पायु कहना चाहिये और धनहीन और दुःखित होते हैं इसमें संशय नहीं है ॥ १८ ॥ और जिसके हाथ पत्तोंकी माफिक रेखा कलाईके सामने होय तो वह स्त्रीपुरुष क्लेशके भागी और दुःखित होते हैं और जो रेखा कटी होय तो उमरका क्षय करती है. कलाईके सामने रेखा वृद्धिकी होतीहै और अंगूठेके सामने रेखा आपदाकी होती है ॥१९॥ और जिसकी हथेलीमें मछलीके समान रेखा होय वह प्राणी अधिक धनवान् होताहै और जिसके हाथमें छतरीके समान तीक्ष्ण पहुँचेके पास होवे उसका नाम भाग्यरेखा है वह श्रेष्ठ होताहै ॥ २० ॥ और जिसके हाथकी अंगुलियोंका बीचका हिस्सा परस्पर मिला होवे तो धन इकठा करतीहै और जिसकी अंगुलियोंके बीचमें छेद रहे वह धन खर्च करताहै उसके पास धन ठहरता नहीं है ॥ २१

मिलद्भ्रयुग्मिका काणा लंबोष्ठी शूर्पकर्णिका ।
वक्रास्यनासिका चातिमौना त्याज्यातिभाषिणी॥२२॥
यस्याः केशांशुकस्पर्शान्म्लायंति कुसुमस्रजः ।
स्नानांभसि विपद्यंते बहवः क्षुद्रजंतवः ॥ २३ ॥
ध्रियंते मत्कुणा यस्यास्तथा यूकाश्च वाससि ।
चौर्यान्नभक्षिणी शौचहीना त्याज्या नितंबिनी॥२४॥
इतिश्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेव-
प्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामला-
लसंगृहीते स्त्रीजातके स्त्रीलक्षणवर्णनो
नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी दोनों भौंहें परस्पर मिली होवें अथवा कानी होवे, जिसके ओंठ लंबे होवें और कान सूपके समान होवें जिसका मुख टेटा हो नाक टेढी हो अत्यंत चुपकी रहे वा बहुत बोलनेवाली हो ऐसी स्त्री सर्वथा त्याग करना चाहिये ॥ २२॥ जिस स्त्रीके बाल और कपडोंके स्पर्श करनेसे फूलोंकी माला कुम्हलाय जावे और जिस स्त्रीके स्नानके जलमें बहुत छोटे जीव मरजावें॥२३॥ और जिस स्त्रीके बाल और कपडोंमें जुएँ बहुत होवें और जो नारी चुराकर अन्न खावे और पवित्रता-हीन हो वह नारी जरूर त्याग करनी चाहिये ॥ २४ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभा-षाटीकायां स्त्रीलक्षणवर्णनो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

अथ स्कंदपुराणांतर्गतकाशीखंडे
स्त्रीलक्षणे विशेषमाह ।

अथ स्त्रीलक्षणकारणमाह—
स्कंद उवाच ॥

सदा गृही सुखं भुंक्ते स्त्री लक्षणवती यदि ।
अतः सुखसमृद्धयर्थमादौ लक्षणमीक्षयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—स्कंदजी महाराज कहतेहैं कि, हे अगस्त्य ! जिस गृहस्थीके घरमें अच्छे लक्षणवाली स्त्री होतीहै वह पुरुष हमेशा सुख भोग करताहै इस कारणसे सुखप्राप्तिकी इच्छा रखनेवाले मनुष्यके लिये पहिले स्त्रीलक्षण कहताहूं ॥ १ ॥

अथाष्टधालक्षणभूमिकामाह ।

वपुरावर्तगंधाश्च छाया सत्त्वं स्वरो गतिः ।
वर्णश्चेत्यष्टधा प्रोक्ता बुधैर्लक्षणभूमिका ॥ २ ॥

अर्थ—शरीर, चक्र, गंध, छाया, पराक्रम, आवाज, चाल, रंग ये आठ प्रकारकी भूमिकाके लक्षण विद्वानोंने कहेहैं ॥ २ ॥

अथ लक्षणप्रकारः ।

आपादतलमारभ्य यावन्मौलिरुहं क्रमात् ।
शुभाशुभानि वक्ष्यामि लक्षणानि मुने शृणु ॥ ३ ॥

अर्थ—पैरोंके तलुओंसे आरंभकरके शिरके बालोंतक क्रम करके अच्छे बुरे स्त्रीके लक्षण मैं कहताहूं हे अगस्त्य ! तुम सुनो ॥ ३ ॥

अथ लक्षणक्रमः ।

आदौ पादतलं रेखा ततोऽङ्गुष्ठाङ्गुलीनखाः ।
पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिजंघारोमाणि जानुनी ॥ ४ ॥
ऊरू कटी नितंबस्फिग्भगो जघनवस्तिके ।
नाभिः कुक्षिद्वयं पार्श्वोदरमध्यवलित्रयम् ॥ ५ ॥
रोमाली हृदयं वक्षो वक्षोजद्वयचूचुकम् ।
जत्रुस्कंधांसकक्षौ द्विमाणिबंधकरद्वयम् ॥ ६ ॥
पाणिपृष्ठं पाणितलं रेखांगुष्ठांगुलीनखाः ।
पृष्ठिः कृकाटिका कंठश्चिबुकं च हनुद्वयम् ॥ ७ ॥

अर्थ–पहले पैरोंके नीचेकी रेखा कहतेहैं १ फिर अँगूठा २ अंगुली ३ नाखून ४ पैरोंकी पीठ ५ गट्टे दोनों ६ दोनों ऐंडी ७ जंघा दोनों ८ रोमकी लक्षण ९ दोनों जानूके लक्षण १० दोनों ऊरू ११ कमर १२ चूतर १३ पेडू १४ भग १५ पंवोंके १६ टूडीके नीचे १७ पेडूके ऊपर १८ टूडी १९ दोनों कोंख २० दोनों पसली २१ पेटकी तीन वलियोंके लक्षण २२ २३ । २४ रोमावली २५ हृदयके २६ छातीके २७ छातीकी ऊचाई २८ दोनों चूँचियोंके २९ । ३० घगल ३१ नीचे स्थानको जत्रु कहते हैं अर्थात् बगल तिसके ३२ सुढोंके ३३ कंधोंके अंसोंके ३४ कलाई दोनों ३५ दोनों हाथोंके ३६ दोनों हाथोंके पीठके ३७ । ३८ दोनों हथेलियोंके ३९ हाथोंकी रेखाके ४० अँगूठेके ४१ अंगुलियोंके ४२ नाखूनोंके ४३

पीठके ४४ पीठके नीचेके भागको स्फाटिका कहते हैं तिसके ४५ गलेके ४६ ठोडीके ४७ दोनों हनूके ४८ ॥ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥

कपोलौ वक्त्रमधरोत्तरोष्ठौ द्विजजिह्विकाः ।
घंटिका तालु हसितं नासिका क्षुतमक्षिणी ॥ ८ ॥
पक्ष्मभ्रूकर्णभालानि मौलिसीमंतमौलिजाः ।
षष्टिः षडुत्तरा योषिदंगलक्षणसत्खनिः ॥ ९ ॥

अर्थ–दोनों गालोंके ४९ मुखके ५० दोनों होठके ५१ दांतोंके ५२ जीभके ५३ कागके ५४ तालूके ५५ हसनके ५६ नाकके ५७ छींकके ५८ नेत्रोंके ५९ पलकोंके ६० भौंहके ६१ कानोंके ६२ माथेके ६३ शिरके ६४ मांगके ६५ शिरके बालोंके ६६ छयासठ स्त्रियोंके अंगोंके लक्षणोंकी भूमिका वर्णन करी है ॥ ८ ॥ ९ ॥

अथ पादतललक्षणमाह ।

स्त्रीणां पादतलं स्निग्धं मांसलं मृदुलं समम् ।
अस्वेदमुष्णमरुणं बहुभोगोचितं स्मृतम् ॥ १० ॥
रूक्षं विवर्णं परुषं खंडितं प्रतिबिंबकम् ।
शूर्पाकारं विशुष्कं च दुःखदौर्भाग्यसूचकम् ॥११॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पैरोंके तलुऐ चिकने मांसकरके सहित मुलायम बराबर पसीनारहित गरम लाली लिये हों वह स्त्री बहुत भोग करनेलायक होती है ॥ १० ॥ और जिस नारीके पैरोंके

तलुऐ रूखे फटेहुए कठोर खंडित जिसके पैरोंके चिह्नसे धरती खंडित दिखाई पडे सूपके समान आगेमे चौडे विशेषकरके सूखे होय वह स्त्री दुःख और दारिद्यके करनेवाली होती है ॥ ११ ॥

अथ पादतलरेखालक्षणमाह ।

चक्रस्वस्तिकशंखाब्जध्वजमीनातपत्रवत् ।
यस्याः पादतले रेखा सा भवेत्क्षितिपांगना ॥१२॥
भवेदखण्डभोगायोर्ध्वमध्यांगुलिसंयुता ।
रेखाखुसर्पकाकाभा दुःखदारिद्यसूचिकाः ॥ १३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पैरके तलुऐमें चक्र, स्वस्तिक, शंख, कमल, ध्वजा, मीन, छत्रके समान रेखाके चिह्न होवे वह नारी राजाकी रानी होती है ॥ १२ ॥ और जिस नारीके पैरके तलुँऐमें बीचकी अंगुली तक अखंडित ऊर्ध्वरेखा होवे वह स्त्री भोगके लिये उत्तम होती है और जिसके पैरमें चूहे, सर्प, कौआके समान रेखा होवे वह नारी दुःख दारिद्यको देनेवाली होती है ॥ १३ ॥

अथ पादांगुष्ठलक्षणमाह ।

उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्तुलोऽतुलभोगदः ।
वक्रो ह्रस्वश्च चिपटः सुखसौभाग्यभंजकः ॥ १४ ॥
विधवा विपुले—नाङ्गुष्ठेन दुर्भगा ।

अर्थ-जिस स्त्रीके पैरोंका अँगूठा ऊंचा और मांससहित गोल होवे तो वह नारी बहुत सुखकी देनेवाली होती है और जिस स्त्रीके पैरका अँगूठा टेढा और छोटा और चिपटा होवे वह नारी सौभाग्यके नाश करनेवाली ॥ १४ ॥ और बहुत जडे अँगूठेवाली स्त्री विधवा होती है और लंबे अँगूठेवाली दुर्भगा होती है ॥

अथ पादाङ्गुलीलक्षणमाह ।

मृदवोऽङ्गुलयः शस्ता घना वृत्ताः समुन्नताः ॥ १५ ॥

अर्थ-जिस कन्याकी अंगुली कोमल और घनी गोल श्रेष्ठ ऊंची होवे हैं वह नारी शुभ होती है ॥ १५ ॥

दीर्घांगुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ।
ह्रस्वायुष्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ॥ १६ ॥
चिपटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ।
परस्परं समारूढाः पादाङ्गुल्यो भवंति हि ॥ १७ ॥
हत्वा बहूनपि पतीन्परप्रेष्या तदा भवेत् ।
यस्याः पथि समायांत्या रजो भूमेः समुच्छलेत् ॥ १८ ॥
सा पांसुला प्रजायेत कुलत्रयविनाशिनी ।
यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छंत्याः परिस्पृशेत् १९
सा निहत्य पतिं योषा द्वितीयं कुरुते पतिम् ।
अनामिका च मध्या च यस्या भूमिं न संस्पृशेत् २०
पतिद्वयं निहंत्याद्या द्वितीया च पतित्रयम् ।

पतिहीनत्वकारिण्यो हीने ते द्वे इमे यदि ॥ २१ ॥
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अङ्गुष्ठाद्व्यतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा सा स्याद्दोष एष विनिश्चयः ॥ २२॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पैरोंकी अंगुली अधिक लंबी हो वह कुलटा होती है और पतली अंगुलियोंवाली धनहीन होती है और बहुत छोटी अंगुलीवाली थोडी उमर पाती है छोटी बडी अंगुलियोंवाली कुटिनी कपट करनेवाली होती है ॥ १६ ॥ और चपटी अंगुलियोंवाली दासी होती है और छिदरी अंगुलियोंवाली दरिद्रिणी होतीहै और जिस स्त्रीकी पैरकी अंगुली एकके ऊपर एक चढी होय ॥ १७ ॥ वह स्त्री बहुतसे पतियोंको मारकर अन्य स्त्रीकी कुटिनी होतीहै और जिस औरतके चलनेसे धरतीकी बहुत धूरी उडे ॥ १८ ॥ सो स्त्री व्यभिचारिणी वेश्याके समान पिता नाना और पतिके इन तीनों कुलोंका नाश करतीहै और जिस स्त्रीके धरतीमें चलनेसे कनिष्ठिका अंगुली पृथिवीको स्पर्श न करे ॥ १९ ॥ सो स्त्री विवाहित पतिको नाश करके दूसरेको पति करती है और जिस स्त्रीकी अनामिका अंगुली धरतीको स्पर्श न करती होय ॥ २० ॥ वह नारी आदिके दो पतियोंका नाश करके तीसरा पति करतीहै और जिस स्त्रीकी मध्यमांगुली धरतीको स्पर्श न करे वह नारी तीन पतिको मारकर चौथा पति करतीहै और जिस स्त्रीकी कनिष्ठ और अनामिका दो अँगुली

हीन होवे वह नारी पतिहीन होतीहै ॥ २१ ॥ और जिस स्त्रीकी अंगूठेके पासकी अंगुली अंगूठेसे बडी होय तो वह नारी विना व्याही अवश्य करके व्यभिचारिणी होतीहै ॥ २२ ॥

अथ पादनखलक्षणमाह ।

स्निग्धाः समुन्नतास्ताम्रा वृत्ताः पादनखाः शुभाः ।

अर्थ–जिस स्त्रीके पैरोंके नाखून चिकने ऊंचे लाली लिये गोल होवें वह नाखून शुभदायक होते हैं ।

अथ पादपृष्ठलक्षणमाह । feet.

राज्ञीत्वसूचकं स्त्रीणां पादपृष्ठं समुन्नतम् ॥ २३ ॥
अस्वेदमशिराढ्यं च मसृणं मृदु मांसलम् ।
दरिद्रा मध्यभग्नेन शिराढ्येन सदाध्वगा ॥ २४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पैरोंकी पीठ ऊंची होवे वह नारी राजपत्नी होतीहै ॥ २३ ॥ और जिस नारीके पैरोंकी पीठ पसीनारहित नाडियों रहित मुलायम चिकनी मांससे भरपूर होवे वह शुभ होती है और जिस औरतके पैरोंकी पीठ बीचमें टूटी हो वह नारी दरिद्रिणी होतीहै और जिसके पैरोंकी पीठ बहुत नसोंवाली हो वह नारी हमेशा रस्ता चलनेवाली होतीहै ॥ २४ ॥

Ankle. अथ पादग्रंथिलक्षणमाह ।

रोमाढ्येन भवेद्दासी निर्मांसेन च दुर्भगा ।
गूढौ गुल्फौ शिरायोक्तावशिरालौ सुवर्तुलौ ॥ २५ ॥

सुपुष्टौ शिथिलौ हृश्यौ स्यातां दौर्भाग्यसूचकौ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके पैरोंके गट्टे रोमसहित हों वह दासी होतीहै और जिसके गट्टे मांसरहित हों वह नारी दुर्भगा होतीहै और जिसके पैरोंके गट्टे मांसकरके छीपे होंय नसों करके हीन होंय गोल होंय वे शुभ होतेहैं ॥ २५ ॥ और जिसके गट्टे बडे मोटे शिथिल होंय वह स्त्री दुर्भाग्यवती होती है ॥

अथ पादपश्चाद्भागलक्षणमाह ।

समपार्ष्णिः शुभा नारी पृथुपार्ष्णिश्च दुर्भगा ॥ २६ ॥
कुलटोन्नतपार्ष्णिः स्याद्दीर्घपार्ष्णिश्च दुःखभाक् ॥

अर्थ-जिस औरतके पैरोंके पीछेका भाग बराबर होवे वह शुभ होतीहै और मोटी पार्ष्णि होय तो दुर्भगा होती है ॥ २६ ॥ जिस औरतकी पार्ष्णि उन्नत हो वह कुलटा होतीहै और बडी होय तो दुःख भोगतीहै ॥

अथ पिंडलीलक्षणमाह ।

रोमहीने समे स्निग्धे यज्जंघे क्रमवर्तुले ॥ २७ ॥
सा राजपत्नी भवती विसरे सुमनोहरे ॥ २८ ॥
एकरोमा राजपत्नी द्विरोमा च सुखावहा ।
त्रिरोमा रोमकूपेषु भवेद्वैधव्यदुःखभाक् ॥ २९ ॥

अर्थ-जिस औरतके पिंडली रोमोंरहित समान चिकनी गोल होवे ॥ २७ ॥ वह राजाकी पत्नी होतीहै

जिसकी पिंडली नसोंरहित सुन्दर होय वह श्रेष्ठ होती है॥ २८॥ जिसकी पिंडली एकरोमवाली होय वह रानी होतीहै दो रोमवाली सुख भोगती है और जिसके तीन रोम रोमके छिद्रमें होयँ वह विधवा दुःख भोगनेवाली होतीहै ॥ २९ ॥

अथ जानुलक्षणमाह ।

वृत्तं पिशितसंलग्नं जानुयुग्मं प्रशस्यते ।
निर्मांसं स्वैरचारिण्या दरिद्रायाश्च विश्लथम् ॥ ३०॥

अर्थ--जिस नारीके दोनों जानू गोल मांसकरके सहित होवें वह श्रेष्ठ होती है और जिसके मांसरहित होवे वह नारी स्वैरिणी अर्थात् व्यभिचारिणी होतीहै और जिसके जानू ढीले होवें वह दरिद्रिणी होतीहै ॥ ३० ॥

अथ जंघालक्षणमाह ।

विशिरेः करभाकारैरूरुभिर्मसृणैर्घनैः ।
सुवृत्ते रोमरहितैर्भवेयुर्भूपवल्लभाः ॥ ३१ ॥
वैधव्यं रोमशैरुक्तं दौर्भाग्यं चिपिटैरपि ।
मध्यच्छिद्रैर्महादुःखं दारिद्र्यं काठिनत्वचैः ॥ ३२ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी जंघा नाडियोंसे रहित ऊंटके समान हाथीकी सुंडके समान दोनों आपसमें स्पर्श करतीहों और श्रेष्ठ गोलाई लिये रोमहीन होवें वह राजाकी प्यारी होती है॥ ३१ ॥ और रोमसहित हो तो विधवा होती है चपटी जंघों-

वाली दुर्भगा होती है और बीचमें छेदवाली बडे दुःखको पाती है और सख्त चमडेवाली जंघाकी स्त्री दरिद्रिणी होती है ॥ ३२ ॥

अथ कटिलक्षणमाह ।

चतुर्भिरंगुलैः शस्ता कटिर्विंशतिसंयुतैः ।
समुन्नतनितंबाढ्या चतुरस्रा मृगीदृशाम् ॥ ३३ ॥
विनता चिपटा दीर्घा निर्मांसा संकटा कटिः ।
ह्रस्वा रोमयुता नार्या दुःखवैधव्यसूचिका ॥ ३४॥

अर्थ—जिस औरतकी कमर चौवीस अंगुल ऊंची कमर ऊंचे चूतडसहित विस्तारवाली होय वह शुभ होती है ॥ ३३॥ नम्र हुई चिपटी लंबी मांसरहित कठोर छोटी रोमसहित कमर होवे वह नारी दुःख भोगनेवाली विधवा होतीहै ॥ ३४ ॥

अथ नितंबलक्षणमाह ।

नितंबबिंबो नारीणामुन्नतो मांसलः पृथुः ।
महाभोगाय संप्रोक्तस्तदन्योऽशर्मणे मतः ॥ ३५ ॥

अर्थ—जिन स्त्रियोंके चूतड ऊंचे मांससहित मोटे होवें वह नारी अतिभोगके ायक होती है इससे विपरीत होनेसे नष्ट होतीहै ॥ ३५ ॥

अथ मांसपिंडलक्षणमाह ।

कपित्थफलवद्वृत्तौ मृदुलौ मांसलौ घनौ ।
स्फिचौ वलिविनिर्मुक्तौ रतिसौख्यविवर्द्धनौ ॥ ३६ ॥

अर्थ-जिस नारीके चूतडके मांसके पिंड कैथके फलके समान गोल सुलायम मांससहित घने पुष्ट होवें तो रतिसौख्यके बढानेवाले होतेहैं ॥ ३६ ॥

अथ योनिलक्षणमाह ।

शुभः कमठपृष्ठाभो गजस्कंधोपमो भगः ।
वामोन्नतस्तु कन्याजः पुत्रजो दक्षिणोन्नतः ॥ ३७ ॥
आखुरोमा गूढमणिः सुश्लिष्टः संहतः पृथुः ।
तुंगः कमलवर्णाभः शुभोऽश्वत्थदलाकृतिः ॥ ३८ ॥
कुरंगखुररूपो यश्चुल्लिकोदरसन्निभः ।
रोमशो विवृतास्यश्च दृश्यनासोऽतिदुर्भगः ॥ ३९ ॥
शंखावर्तो भगो यस्याः सा गर्भमिह नेच्छति ।
चिपिटः खर्पराकारः किंकरीपददो भगः ॥४०॥
वंशवेतसपत्राभो गजरोमोच्चनासिकः ॥
• विकटः कुटिलाकारो लंबगल्लस्तथा शुभः ॥ ४१ ॥
भगस्य भाले-

अर्थ-जिस औरतकी योनि कछुएकी पीठकी तरह, हाथीके कन्धोंके समान और बाँई तरफसे ऊंची होवे वह नारी कन्यासंतान पैदा करती है और पूर्वोक्तगुणविशिष्ट भग दक्षिणकी तरफसे ऊंची होय तो वह नारी पुत्र औलाद पैदा करती है ॥ ३७ ॥ और जिस कन्याकी भग चूहोंके समान रोमावलीवाली छिपा हुआ छिदुना जिसका शोभायमान मजबूत मोटी ऊंची कमलके दलके समान शुभ पीपलके पत्तेकी

सी आकारवाली योनि शुभ होती है ॥ ३८ ॥ हरिणके खुर- के माफिक, चूल्हेकेसे आकारवाली, बहुतरोम करके सहित, घडेके मुखके समान नाकवाली भग अत्यंत बुरी होती है ॥ ३९ ॥ और जिसकी भग शंखके समान वलयवाली हो वह गर्भ नहीं धारण करती है और चपटी, खिपडेके समान भगवाली स्त्री दूती होती है ॥४०॥ और जिस नारीकी योनि बाँसके पत्तेके समान और हाथीकेसे बाल जिसके ऊपर हों और ऊंची नाकवाली भयंकर कुटिल लंबी गलेवाली अशुभ होती है इस प्रकारका भगका माथा नेष्ट कहा है ॥ ४१ ॥

अथ जघनलक्षणमाह ।

जघनं विस्तीर्णं तुंगमांसलम् ।
मृदुलं मृदुरोमाढ्यं दक्षिणावर्तमंडितम् ॥ ४२ ॥
वामावर्तं च निर्मांसं भुग्नं वैधव्यसूचकम् ।
संकटस्थं पुटं रूक्षं जघनं दुःखदं सदा ॥ ४३ ॥

अर्थ–जिस नारीके जघन विस्तार किये हुए ऊंचे मांसस- हित कोमल मुलायम बालों करके युक्त दाहिनी तरफको आवर्त हो जिसका ऐसा होवे वह शुभ होतीहै और बाई तरफको आवर्त मांसरहित हो तो कुटिल विधवा करतीहै जिसके पुट संको- चित रूखा हो वह नारी हमेशा दुःख पाती है ॥ ४२॥४३॥

अथ वस्तिलक्षणमाह ।

वस्तिः प्रशस्ता विपुला मृद्वी स्तोकसमुन्नता ।
रोमशा च शिराढ्या च रेखांका नैव शोभना ॥ ४४ ॥

अर्थ-नाभिके नीचेके भागका नाम बस्ति है जिस नारीका बस्तिस्थल बडा विस्तारवाला कोमल थोडा ऊंचा हो वह शुभ कहा है और जो बस्तिस्थल रोमोंसे रेखाओंकरके युक्त होवे वह नारी अशुभ होती है ॥ ४४ ॥

अथ नाभिलक्षणमाह ।

गंभीरदक्षिणावर्त्ता नाभिः स्यात्सुखसंपदे ।
वामावर्त्ता समुत्ताना व्यक्तग्रंथिर्न शोभना ॥ ४५ ॥

अर्थ-जिस नारीकी टूडी गंभीर (गहरी) दक्षिणावर्त हो वह सुखसंपदा देनेवाली होती है और जिसकी टूडी वामावर्त्त ऊपरको उठी ग्रंथिवाली होय वह अशुभ होती है ॥ ४५ ॥

अथ कुक्षिलक्षणप्रकारः ।

सूते सुतान्बहून्नारी पृथुकुक्षिः सुखास्पदम् ।
क्षितीशं जनयेत्पुत्रं मंडूकाभेन कुक्षिका ॥ ४६ ॥
उन्नतेन वलीभाजा सावर्तेनापि कुक्षिणा ।
वन्ध्या प्रव्रजिता दासी क्रमाद्योषा भवेदिह ॥ ४७ ॥

अर्थ-जो स्त्री भारी कुक्षियोंवाली होय वह पुत्र पैदा करती है और बहुत सौख्य देती है और जिसकी कोंख मंडूकके समान होवे उस कोंखसे पैदाहुआ पुत्र राजा होता है ॥ ४६ ॥ और ऊंची वलवाली कोंखकी औरत बांझ होती है और वलवान् कोंखवाली स्त्री संन्यासिनी होती है और घूमीहुई कमर

अथ पार्श्वलक्षणमाह ।

समैः समांसैर्मृदुभिर्योषिन्मग्नास्थिभिः शुभैः ।
पार्श्वैः सौभाग्यसुखयोर्निधानं स्यादसंशयम् ॥४८॥
यस्या दृश्यशिरे पार्श्वे उन्नते रोमसंयुते ।
निरपत्या च दुःशीला सा भवेद्दुःखशेवधिः ॥ ४९ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी पसली बराबर मांसयुक्त कोमल छिपी हुएवे हाडवाली होय वे शुभ और सौभाग्यसंपदाके स्थान निःसंदेह होती है ॥ ४८ ॥ और जिनके पसलियोंमें नसें दीखपडें और दोनों तरफसे ऊंची हों रोमकरके सहित हों वह नारी संतानरहित दुष्टस्वभावकी दुःखकी समूह होती है ॥ ४९॥

अथोदरलक्षणानि ।

उदरेणातितुच्छेन विशिरेण मृदुत्वचा ।
योषिद्भवति भोगाढ्या नित्यं मिष्टान्नसेविनी ॥ ५० ॥
कुम्भाकारं दरिद्राया जठरं च मृदंगवत् ।
कूष्माण्डाभं यवाभं च दुष्पूरं जायते स्त्रियाः ॥५१॥
सुविशालोदरी नारी निरपत्या च दुर्भगा ।
प्रलंबजठरा हंति श्वशुरं चापि देवरम् ॥ ५२ ॥
मध्यक्षामा च सुभगा भोगाढ्या सवलित्रया ।
ऋज्वी तन्वी च रोमाली यस्याः सा शर्मनर्मभूः५३॥
कपिला कुटिला स्थूला विच्छिन्ना रोमराजिका ।
चौरवैधव्यदौर्भाग्यं विदध्यादिह योषिताम् ॥ ५४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीका पेट छोटा नाडियोंरहित कोमल त्वचा-करके सहित होवे वह स्त्री भोग करनेलायक होतीहै और नित्यही मिष्टान्न भोजन करतीहै ॥ ५० ॥ और जिसका पेट घडेके समान हो वह नारी दरिद्रिणी होती है और जिसका पेट मृदंग वा कुंम्हडे वा यवके समान होवे वह बडे दुःखसे भराजाताहै ॥ ५१ ॥ और बडे पेटवाली स्त्री निःसंतान दुर्भगा होती है बडे लंबे चौडे पेटवाली स्त्री अपने ससुर वा देवरका नाश करतीहै ॥ ५२ ॥ और जिसका पेट बीचमें सूक्ष्म होवे वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवाली होती है और जिसके पेटमें तीन वलय पडें वह नारी भोगवती होती है, जिसके पेटपर सीधी बारीक रोमकी रेखा होय वह नारी सर्वकल्याणदात्री होतीहै ॥ ५३ ॥ और जिस नारीके पेटमें पिलाई लिये तिरछी छेदकी रोमोंकी पंक्ति होवे सो चोरी करनेवाली विधवा दुष्भाग्यवाली होती है ॥ ५४ ॥

अथ हृदयलक्षणमाह ।

निर्लोमं हृदयं यस्याः समं निम्नत्ववर्जितम् ।
ऐश्वर्यं चाप्यवैधव्यं प्रियप्रेम समालभेत् ॥ ५५ ॥
विस्तीर्णहृदया योगा पुंश्चली निर्दया तथा ।
उद्भिन्नरोमहृदया पतिं हंति विनिश्चितम् ॥ ५६ ॥
अष्टादशांगुलततमुरः पीवरमुन्नतम् ।
सुखाय दुःखाय भवेद्रोमशं विषमं पृथु ॥ ५७ ॥

अर्थ-जिस नारीका हृदय बालोंसे रहित बराबर निम्नतारहित होता है वह नारी ऐश्वर्ययुक्त पतिको प्यारी पतिके प्रेममें तत्पर होतीहै ॥ ५५ ॥ और बडे विस्तारवाले हृदयवाली स्त्री व्यभिचारिणी दयाहीन होती है और जिसके हृदयमें बहुत रुगटे होवें वह नारी पतिका नाश करतीहै ॥ ५६ ॥ और जिस स्त्रीकी छाती अठारह अंगुलकी पुष्ट और ऊंची होवे वह नारी सुख देनेवाली होतीहै और जिस स्त्रीकी छाती विषम हृदयवाली रुगटोंकरके युक्त होवे वह नारी दुःख देनेवाली होतीहै ॥ ५७ ॥

अथ कुचलक्षणमाह ।

घनौ वृत्तौ दृढौ पीनौ समौ शस्तौ पयोधरौ ।
स्थूलाग्रौ विरलौ शुष्कौ वामोरूणां न शर्मदौ॥५८॥
दक्षिणोन्नतवक्षोजा पुत्रिणीष्वग्रणीर्मता ।
वामोन्नतकुचा सूते कन्यां सौभाग्यसुंदरीम् ॥ ५९ ॥
अरघट्टघटीतुल्यौ कुचौ दौःशील्यसूचकौ ।
पीवरास्यौ सांतरालौ पृथुग्रान्तौ न शोभनौ ॥ ६० ॥
मूलस्थूलौ क्रमकृशौ वक्रे तीक्ष्णपयोधरौ ।
सुखदौ पूर्वकाले तु पश्चादत्यंतदुःखदौ ॥ ६१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके कुच घने, गोल और पुष्ट दोनों बराबर होंवें वह श्रेष्ठ होते हैं और आगेसे मोटे और विरले सूखे कुच स्त्रियोंके श्रेष्ठ नही होतेंहैं ॥ ५८ ॥ और जिस

स्त्रीका दहना कुच ऊंचा होवे वह नारी पुत्र पैदा करतीहै और जिसका बाँया कुच ऊंचा होवे वह नारी कन्या पैदा करती है ॥ ५९ ॥ और जिस नारीके स्तन जलघटीके समान होवें वह नारी कुशीला होतीहै और जिस स्त्रीके स्तन ऊपरसे मोटे मुखवाले आपसमें दूर नीचेसे बडे मोटे हों वह नेष्ट है ॥ ६० ॥ और जिस नारीके कुच नीचेसे मोटे और क्रमकरके ऊपरसे दुर्बल जिनका अग्रभाव तीक्ष्ण होवे वह स्त्री पहिली उमरमें सुख करती है और पीछेसे बहुत दुःख पातीहै ॥ ६१ ॥

अथ कुचाग्रभागलक्षणमाह ।

सुदृशां चूचुकयुगं शस्तं श्यामं सुवर्तुलम् ।
अंतर्भग्नं च दीर्घं च कृशं क्लेशाय जायते ॥ ६२ ॥

अर्थ–जिस नारीके कुचोंका अग्रभाग श्यामता लिये गोल होवे वह शुभ होता है भीतरको छिदे हुए दुर्बल लम्बे होनेसे क्लेशदायक होतेहैं ॥ ६२ ॥

अथ जत्रुलक्षणमाह ।

पीवराभ्यां च जत्रुभ्यां धनधान्यनिधिर्वधूः ।
श्लथास्थिभ्यां च निम्नाभ्यां विषमाभ्यां दरिद्रिणी ६३

अर्थ--जिस औरतके कोंसकी संधि मोटी हो वह नारी धन अन्नकी स्थान होती है । ढीले हाडवाली नवी हुई अस्थियों-वाली कमती बढती अस्थियोंवाली दरिद्रिणी होतीहै ॥ ६३ ॥

अथ स्कंधलक्षणमाह ।

अवद्धावनतौ स्कंधावदीर्घावकृशौ शुभौ ।
वक्रौ स्थूलौ च रोमाढ्यौ प्रेष्यवैधव्यसूचकौ ॥ ६४ ॥
निगूढसंधी स्रस्ताग्रौ शुभावंसौ सुसंहतौ ।
वैधव्यदौ समुच्चाग्रौ निर्मांसावतिदुःखदौ ॥ ६५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके मुंडे अबद्ध नीचे लंबे नहीं होवे और मोटे होवे तो श्रेष्ठ होते हैं, और टेढे बहुत मोटे रुगटोंकरके सहित हों तो यह दूती विधवा होती है ॥ ६४ ॥ और जिस स्त्रीके दोनों कंधे छिपे हुये मांसमें मिले हुये श्रेष्ठ होतेहैं और ऊंचेको उठे हुए विधवा करते हैं और मांसहीन अर्थात् खाली कंधे दुःख देते हैं ॥ ६५ ॥

अथ कक्षालक्षणमाह ।

कक्षे सुसूक्ष्मरोमे च तुंगे स्निग्धे च मांसले ।
शस्ते न शस्ते गंभीरे शिराले स्वेदमेदुरे ॥ ६६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीकी दोनों कक्षा महीन रुगटेवाली मांससहित चिकनी ऊंची होवे वह शुभ होती है और वही संधि कक्षाकी गंभीर नाडियोंकरके रहित पसीने सहित होवे तो नेष्ट होते हैं ॥ ६६ ॥

अथ भुजालक्षणमाह ।

स्यातां दोषौ तु निर्दोषौ गूढास्थी ग्रंथिकोमलौ ।
विशिरौ च विरोमाणौ सरलौ हरिणीदृशाम् ॥ ६७ ॥

वैधव्यं स्थूलरोमाणौ ह्रस्वौ दौर्भाग्यसूचकौ ।
परिक्लेशाय नारीणां परिदृश्यशिरो भुजौ ॥ ६८ ॥

अर्थ–जिस औरतकी बाहें दोषरहित छिपी हुई हाडवाली कोमल विना ग्रंथिके नाडी और रोमटेरहित होतीहै वह शुभ होते हैं ॥ ६७॥ और जिसकी बाहोंमें मोटे रुगटे होवे वह विधवा होती है और जिसकी दोनों बाहें छोटी होवे वह स्त्री दुर्भगा होती है और जिसकी बाहोंमें नसें दीख पडें वह नारी क्लेश पाती है ॥ ६८ ॥

अथ हस्तांगुष्ठलक्षणमाह ।

अंभोजमुकुलाकारमङ्गुष्ठाङ्गुलिसंमुखम् ।
हस्तद्वयं मृगाक्षीणां बहुभोगप्रदायकम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–जिस औरतके हाथकी अंगुली और अंगूठा कमलके डांडेकेसी सीधी बंधी होवे ऐसे हाथवाली नारी बहुत भोगके योग्य होतीहै ॥ ६९ ॥

अथ पाणितलस्य लक्षणमाह ।

मृदुमध्योन्नतं रक्तं तलं पाण्योररन्ध्रकम् ।
प्रशस्तं शस्तरेखाढ्यमल्परेखं शुभश्रियम् ॥ ७० ॥
विधवा बहुरेखेण विरेखेण दरिद्रता ।
भिक्षुकी तु शिराढ्येन नारीकरतलेन वै ॥ ७१ ॥

अर्थ–जिस औरतके हाथकी हथेली कोमल बीचमें ऊंची छेदरहित श्रेष्ठ रेखायुक्त होवे थोडी रेखावाली शुभ

होती है ॥ ७० ॥ बहुत रेखाकारके सहित हो तो विधवा होती है और रेखाहीन हाथवाली कन्या दरिद्रिणी होती है और जिसके हाथोंमें नसें दीखती होवें वह नारी भिक्षारिन होती है ॥ ७१ ॥

अथ करपृष्ठलक्षणमाह ।

विरोम विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नतम् ।
वैधव्यहेतु रोमाढ्यं निम्नं शिरायुतं त्यजेत् ॥ ७२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके हाथोंकी पीठ रुएंरोंरहित नाडियोंसे हीन होवे ऊंची होवे वह शुभ होती है और रुएंरों सहित नीची नसोंवाली हाथोंकी पीठ जिसकी होवे वह नारी विधवा होती है उसको त्याग करना चाहिये ॥ ७२ ॥

अथ हस्तरेखालक्षणमाह ।

रक्ता व्यक्ता गभीरा च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ।
कररेखाङ्गनायाः स्याच्छुभा भाग्यानुसारतः॥७३॥
मत्स्येन सुभगा नारी स्वस्तिकेन वसुप्रदा ।
पद्मेन भूपतेर्नारी जनयेद्भूपतिं सुतम् ॥ ७४ ॥
चक्रवर्तिस्त्रियाः पाणौ नद्यावर्तः प्रदक्षिणः ।
शंखातपत्रकमठा नृपमातृत्वसूचकाः ॥ ७५ ॥
तुलामानाकृती रेखा वणिक्पत्नी तु सा भवेत् ।
गजवाजिवृषाकाराः करे वामे मृगीदृशाम् ॥ ७६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके हाथमें लालवर्ण रेखा प्रगट और चिकनी पूरी टूटी न होवे गोलाई लिये होवे वह नारी भाग्य करके युक्त होती है ॥ ७३ ॥ और जिसके हाथमें मछलीके समान रेखा होवे वह नारी सुभगा होती है और जिसके हाथमें तिरछी रेखा होवे वह धनवती होती है और जिसके हाथमें कमलके समान रेखा होवे वह नारी रानी होती है उसकी कुक्षीसे उत्पन्न हुआ वालक राजा होता है ॥ ७४ ॥ जिसके हाथमें नंद्यावर्त अर्थात् नंदीके समान दहिनावर्त रेखा होवे वह स्त्री चक्रवर्ती राजाकी रानी होतीहै और जिसके हाथमें शंख छत्तरी कछुएके समान रेखा होवे वह नारी राजमाता होती है ॥ ७५ ॥ और जिसके हाथमें तराजूकी डंडीके समान रेखा होवे वह नारी धनवान् वैश्यकी स्त्री होती है और हाथी, घोडा, बैलके समान बाँये हाथमें रेखा होनेसे राजपत्नी होती है ॥ ७६ ॥

रेखा प्रासादवज्राभा ब्रूयुस्तीर्थंकरं सुतम् ।
कृषीवलस्य पत्नी स्याच्छकटेन युगेन वा ॥ ७७ ॥
चामरांकुशकोदंडै राजपत्नी भवेद्ध्रुवम् ।
अङ्गुष्ठमूलान्निर्गत्य रेखा याति कनिष्ठिकाम् ॥७८॥
यदि सा पतिहंत्री स्याद्दूरतस्तां त्यजेत्सुधीः ।
त्रिशूलासिगदाशक्तिदुंदुभ्याकृतिरेखया ॥ ७९ ॥
नितंबिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीतले ।
कंकमंडूकजम्बूकवृकवृश्चिकभोगिनः ॥ ८० ॥

रासभोष्ट्रबिडालाः स्युः करस्था दुःखदाः स्त्रियाः ॥

अर्थ—जिस औरतके हाथमें पूर्वोक्त रेखा और मकानके समान वज्रके तुल्य होवे वह नारी बडे भाग्यवाली शास्त्रकर्त्ता और तीर्थ करनेवाले पुत्रको पैदा करती है और जिसके हाथमें गाडी और गाडीके दुडंडी अथवा जुआके समान रेखा होवे वह नारी खेती करनेवाले बडे आदमीकी स्त्री होती है ॥७७। और जिसके हाथमें चमर, अंकुश, धनुषके, समान रेखा होवे वह नारी राजाकी रानी होती है और जिसके हाथमें अँगूठेके जडसे रेखा चलकर कनिष्ठिकापर्यंत चली जाय ॥७८॥ वह नारी पतिको मारनेवाली होतीहै उसको दूर-सेही त्याग करना चाहिये और जिसके हाथमें त्रिशूल, गदा, तलवार, शक्ति, नगाडेके समान रेखा होवे ॥७९॥ वह नारी त्यागकरके अर्थात् दान देनेसे धरतीके ऊपर बडी यशवान् होती है और परंदक, मेंडक वा गीदड वा भोडिया वा बिच्छू वा सर्प ॥ ८० ॥ गधेके समान वा ऊंटके वा बिल्लीके समान रेखा जिस नारीके हाथमें होवे वह दुःख देनेवाली होती है ।

अथ हस्तांगुष्ठलक्षणमाह ।

शुभदः सरलोऽगुष्ठो वृत्तो वृत्तनखो मृदुः ॥ ८१ ॥

अर्थ—जिसके हाथके अँगूठे सीधे गोल होवे वह शु होतेहैं और स्त्रियोंके हाथसे अँगूठेके नाखून गोल नखोंवा कोमल शुभ होते हैं ॥ ८१ ॥

अथांगुलिलक्षणमाह ।

अङ्गुल्यश्च सुपर्वाणो दीर्घा वृत्ताः क्रमात्कृशाः ।
चिपिटाः स्थपुटा रूक्षा पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः ॥८२॥
अतिह्रस्वाः कृशा वक्रा विरला रोमहेतुकाः ।
दुःखायाङ्गुल्यः स्त्रीणां बहुपर्वसमन्विताः ॥ ८३ ॥

अर्थ--सुंदर पोरुओंवाली गोल क्रमकरके आगेसे दुर्बल शुभ होती हैं और चिपटी मोटी रूखी पीठमें जिनके रुगटे ऐसी अंगुली अशुभ होती हैं ॥ ८२ ॥ और ज्यादे छोटी पतली टेढी रुगटोंवाली विरली बहुत गांठवाली अंगुली स्त्रियोंको दुःख देनेवाली होती है ॥ ८३ ॥

अथांगुलीनखलक्षणमाह ।

अरुणाः सशिखास्तुंगाः करजाः सुदृशां शुभाः ।
निम्ना विवर्णाः शुक्त्याभाः पीता दारिद्र्यदायकाः ८४
नखेषु बिंदवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणीस्त्रियाः ।
पुरुषा अपि जायंते दुःखिनः पुष्पितैर्नखैः ॥ ८५ ॥

अर्थ--लालवर्णके चोटीदार ऊंचे नखवाली स्त्री शुभ होती है सुलायम और फैलेहुए सीपके माफिक पीले ऐसे नखवाली स्त्रियाँ दरिद्रिणी होती हैं ॥ ८४ ॥ और जिन औरतोंके नाखूनोंमें सफेद बिंदे होवें वह स्त्री अक्सर अपने मनके माफिक घूमनेवाली होतीहै और जिन मनुष्योंके नाखूनोंमें सफेद बिंदे अर्थात् छोटे हों वह पुरुषभी दुःख पाते हैं ॥८५॥

अथ पृष्ठलक्षणमाह ।

अंतर्निमग्नवंशास्थिः पृष्ठिः स्यान्मांसला शुभा ।
पृष्ठेन रोमयुक्तेन वैधव्यं लभते ध्रुवम् ॥ ८६ ॥
भुग्नेन विनतेनापि सशिरेणापि दुःखिता ।

अर्थ—जिस औरतकी पीठ भीतरको नीची और बांसके माफिक देढी हाडवाली और मांसकरके पुष्ट ऐसी पीठवाली औरत शुभ होतीहै, और जिस नारीकी पीठ रुवोंकरके सहित हो वह विधवा होतीहै ॥ ८६ ॥ और जिसकी पीठ कुटिल नीची नसों करके सहित हो वह नारी दुःखित होतीहै ॥

अथ कृकाटिकालक्षणमाह ।

ऋज्वी कृकाटिका श्रेष्ठा समांसा च समुन्नता ॥ ८७ ॥
शुष्का शिराला रोमाढ्या विशाला कुटिला शुभा ॥

अर्थ—जिस औरतकी काठी सूधी मांसके सहित ऊंची हो वह श्रेष्ठ होतीहै ॥ ८७ ॥ और जिस औरतकी काठी सूखी नसों करके सहित रुवोंवाली ऊंची कुटिल होवे उसको अशुभ जानिये ॥

अथ कण्ठलक्षणमाह ।

मांसलो वर्तुलः कण्ठ प्रशस्तश्चतुरंगुलः ॥ ८८ ॥
शस्ता ग्रीवा त्रिरेखाङ्का त्वव्यक्तास्थिः सुसंहता ।
निर्मांसा चिपिटा दीर्घा स्थपुटा न शुभप्रदा ॥८९॥
स्थूलग्रीवा च विधवा वक्रग्रीवा च किङ्करी ।
वंध्या हि चिपिटग्रीवा ह्रस्वग्रीवा च निःसुता ॥९०॥

अर्थ-जिस स्त्रीका कंठ मांसकरके सहित गोलाकार चार अंगुलका होवे वह शुभ होताहै ॥ ८८ ॥ और जिसका गला तीन रेखाओंकरके अंकित छिपीहुई अस्थियोंवाला होवे वह शुभ होताहै और जिस नारीका गला मांसरहित चिपटा चडा लंबा नीचा होवे वह शुभ नहीं होताहै ॥ ८९ ॥ और जिस नारीकी गर्दन मोटी होय वह विधवा होतीहै और टेढी गर्दनवाली दासी होती है और चपटी गर्दनवाली बांझ होतीहै छोटी गर्दनवाली संतानहीन होती है ॥ ९० ॥

अथ चिबुकलक्षणमाह ।

चिबुकं द्व्यंगुलं शस्तं वृत्तं पीनं सुकोमलम् ।
स्थूलं द्विधा संविभक्तमायतं रोमशं त्यजेत् ॥ ९१ ॥

अर्थ-जिस औरतकी ठोडी दो अंगुल सुंदर गोछ मोटी मुलायम शुभ होतीहै और पुष्ट मोटी दोभागवाली चौडी रोमवाली अशुभ होतीहै ॥ ९१ ॥

अथ हनुलक्षणमाह ।

हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा ।
वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदा ॥९२॥

अर्थ-जिस नारीके ठोडीके ऊपरका स्थान रोमरहित सुंदर घन होय वह शुभ होता है और टेढा मोटा दुर्बल छोटा रोमसहित हो तो नेष्ट होताहै ॥ ९२ ॥

अथ कपोललक्षणमाह ।

शस्तौ कपोलौ वामाक्ष्याः पीनवृत्तौ समुन्नतौ ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ परिवर्जयेत् ॥ ९३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके गाल मोटे गोल ऊंचे होय तो शुभ होते हैं और रुवांसहित कठोर नीचे मांसरहित नेष्ट होते हैं ॥ ९३ ॥

अथ मुखलक्षणमाह ।

समं समांसं सुस्निग्धं स्वामोदं वर्तुलं मुखम् ।
जनितृवदनच्छायं धन्यानामिह जायते ॥ ९४ ॥

अर्थ–जिस औरतका मुख मांसयुक्त चिकना सुगंधियुक्त गोलाकार और उसके पिताके मुखके समान होवे ऐसी स्त्रियां संसारमें धन्य होती हैं ॥ ९४ ॥

अथ अधरोष्ठलक्षणमाह ।

पाटलो वर्तुलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः ।
सीमंतिनीनामधरो धराजानिप्रिया भवेत् ॥ ९५ ॥
कृशः प्रलंबः स्फुटितो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः ।
श्यावः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रियः ॥९६॥

अर्थ–जिस औरतके नीचेके ओष्ठ गुलाबके फूलके समान और चिकने गोल और रेखाओं करके शोभायमान है मध्यस्थल जिसका. इस प्रकारकी नारी राजाकी प्यारी होती है ॥ ९५ ॥ और दुर्बल लंबे स्फुटित अर्थात् फटे हुवे ओष्ठ

अर्थ-जिस स्त्रीका कंठ मांसकरके सहित गोलाकार चार अंगुलका होवे वह शुभ होताहै ॥ ८८ ॥ और जिसका गला तीन रेखाओंकरके अंकित छिपीहुई अस्थियोंवाला होवे वह शुभ होताहै और जिस नारीका गला मांसरहित चिपटा चडा लंबा नीचा होवे वह शुभ नहीं होताहै ॥ ८९ ॥ और जिस नारीकी गर्दन मोटी होय वह विधवा होतीहै और टेढी गर्दनवाली दासी होती है और चपटी गर्दनवाली बांझ होतीहै छोटी गर्दनवाली संतानहीन होती है ॥ ९० ॥

अथ चिबुकलक्षणमाह ।

चिबुकं द्व्यंगुलं शस्तं वृत्तं पीनं सुकोमलम् ।
स्थूलं द्विधा संविभक्तमायतं रोमशं त्यजेत् ॥ ९१ ॥

अर्थ-जिस औरतकी ठोडी दो अंगुल सुंदर गोल मोटी मुलायम शुभ होतीहै और पुष्ट मोटी दोभागवाली चौडी रोमवाली अशुभ होतीहै ॥ ९१ ॥

अथ हनुलक्षणमाह ।

हनुश्चिबुकसंलग्ना निर्लोमा सुघना शुभा ।
वक्रा स्थूला कृशा ह्रस्वा रोमशा न शुभप्रदा ॥९२॥

अर्थ-जिस नारीके ठोडीके ऊपरका स्थान रोमरहित सुंदर घन होय वह शुभ होता है और टेढा मोटा दुर्बल छोटा रोमसहित हो तो नेष्ट होताहै ॥ ९२ ॥

अथ कपोललक्षणमाह ।

शस्तौ कपोलौ वामाक्ष्याः पीनवृत्तौ समुन्नतौ ।
रोमशौ परुषौ निम्नौ निर्मांसौ परिवर्जयेत् ॥ ९३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके गाल मोटे गोल ऊंचे होय तो शुभ होते हैं और रुएटोंसहित कठोर नीचे मांसरहित नेष्ट होते हैं ॥ ९३ ॥

अथ मुखलक्षणमाह ।

समं समांसं सुस्निग्धं स्वामोदं वर्तुलं मुखम् ।
जनितृवदनच्छायं धन्यानामिह जायते ॥ ९४ ॥

अर्थ–जिस औरतका मुख मांसयुक्त चिकना सुगंधियुक्त गोलाकार और उसके पिताके मुखके समान होवे ऐसी स्त्रियां संसारमें धन्य होती हैं ॥ ९४ ॥

अथ अधरोष्ठलक्षणमाह ।

पाटलो वर्तुलः स्निग्धो रेखाभूषितमध्यभूः ।
सीमंतिनीनामधरो धराजानिप्रिया भवेत् ॥ ९५ ॥
कृशः प्रलंबः स्फुटितो रूक्षो दौर्भाग्यसूचकः ।
श्यावः स्थूलोऽधरोष्ठः स्याद्वैधव्यकलहप्रियः ॥९६॥

अर्थ–जिस औरतके नीचेके ओष्ठ गुलाबके फूलके समान और चिकने गोल और रेखाओं करके शोभायमान है मध्यस्थल जिसका, इस प्रकारकी नारी राजाकी प्यारी होती है ॥ ९५ ॥ और दुर्बल लंबे स्फुटित अर्थात् फटे रूखे ओष्ठ

दौर्भाग्य करनेवाले होतेहैं और पीलाईलिये मोटे ओठवाली स्त्री होतीहै और विधवा लडाई जिसको प्यारी ऐसी होतीहै ॥ ९६॥

अथोर्द्धौष्ठलक्षणमाह ।

मसृणो मत्तकाशिन्याश्चोत्तरोष्ठः सुभोगदः ।
किंचिन्मध्योन्नतोऽरोमा त्विपरीतो विरुद्धकृत् ॥ ९७॥

अर्थ-जिस औरतके ऊपरके ओठ नशोंरहित चिकने होवें वह भोग देने हैं और कुछ बीचमें ऊंचा रोमरहित शुभ होताहै और जो ऊपरको लौटा होय तो नेष्ट जानो ॥ ९७ ॥

अथ दंतलक्षणमाह ।

गोक्षीरसन्निभाः स्निग्धा द्वात्रिंशद्दशनाः शुभाः ।
अधस्तादुपरिष्टाच्च समाः स्तोकसमुन्नताः ॥ ९८ ॥
पीताः श्यावाश्च दशनाः स्थूला दीर्घा द्विपंक्तयः ।
शुक्त्याकाराश्च विरला दुःखदौर्भाग्यकारणम् ॥९९॥
अधस्तादधिकैर्दन्तैर्मातरं भक्षयेत्स्फुटम् ।
पतिहीना च विकटैः कुल्टा विरलैर्भवेत् ॥ १०० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके दांत गौके दूधके माफिक सफेद चिक्कने बत्तीस दांत शुभ होतेहैं और नीचेके दांतोंसे ऊपरके दांत समान कुछ एक ऊंचे होवें तो शुभ होतेहैं ॥ ९८ ॥ और पीले वर्णके वा बंदरके वर्णके समान मोटे लंबे दो पंक्तिवाले सीपीकी समान छिदरे इस प्रकारके दांत दुःख और दौर्भाग्यके बनानेवाले होते हैं ॥ ९९ ॥ और जिस

औरतके नीचेके दांतोंसे ऊपरके दांत अधिक होवें वह स्त्री माताको नाश करतीहै और फटेहुये विकराल दांतवाली स्त्री पतिको नाश करतीहै और छिदरे दांतवाली नारी कुलटा होतीहै ॥ १०० ॥

अथ जिह्वालक्षणमाह ।

जिह्वेष्टमिष्टभोक्त्री स्याच्छोणा मृद्वी तथा सिता ।
दुःखाय मध्यसंकीर्णा पुरोभागप्रविस्तरा ॥ १०१ ॥
सितया तोयमरणं श्यामया कलहप्रिया ।
दारिद्रिणी मांसलया लंबयाऽभक्ष्यभक्षिणी ॥ १०२ ॥
विशालया रसनया प्रमदातिप्रमादभाक् ।

अर्थ-जिस औरतकी जीभ सुर्ख मुलायम हो वह नारी इष्ट मिष्टपदार्थ भोजन करतीहै तैसेही सफेदवर्णकी आगेसे विस्तारवाली बीचमें संकुचित जीभवाली स्त्री दुःख भोगतीहै ॥ १०१ ॥ और सफेद जीभवाली नारी जलके दुःखसे मरतीहै और काली जीभवाली स्त्रीको लडाई प्यारी होतीहै और मोटी जीभवाली स्त्री दरिद्रिणी होतीहै लंबी जीभवाली स्त्री न खाने-योग्य चीजको खाती है ॥ १०२ ॥ और बडे विस्तारवाली जीभकी औरत बहुत झूंठ बोलनेवाली मदमाती होतीहै ॥

अथ तालुलक्षणमाह ।

स्निग्धं कोकनदाभासं प्रशस्तं तालु कोमलम् ॥ १०३ ॥
सिते तालुनि वैधव्यं पीते प्रव्रजिता भवेत् ।
कृष्णेऽपत्यवियोगार्ता रूक्षे भूरिकुटुम्बिनी ॥ १०४ ॥

अर्थ–जिस औरतका तालू स्निग्ध चिकना कमलके समान लाली लिये होय तो वह नारी कोमलतालुवाली उत्तम होतीहै ॥ १०३ ॥ और जिस नारीका सफेद तालू होय तो विधवा होती है और पीले तालुवाली संन्यासिनी होती है और काले तालुवाली संतानके वियोगसे दुःखी होती है और रूखे तालुवाली बहुत कुटुंबवाली होती है ॥ १०४ ॥

अथ घंटिकालक्षणमाह ।

कंठे स्थूला सुवृत्ता च क्रमतीक्ष्णा सुलोहिता ।
अप्रलंबा शुभा घण्टा स्थूला कृष्णा च दुःखदा१०५॥

अर्थ–जिस औरतके कंठके भीतरका काग मोटा गोल क्रमकरके तीक्ष्ण लाली लिये शुभ होता है और लंबा मोटा काला होय तो अशुभ होता है ॥ १०५ ॥

अथ हसनलक्षणमाह ।

अलक्षितद्विजं किंचित्किंचित्फुल्लकपोलकम् ।
स्मितं प्रशस्तं सुदृशामनिमीलितलोचनम् ॥१०६॥

अर्थ–जिस औरतके हँसनेके समय थोडे दाँत दीखे और गाल थोडे ऊंचे उठे और आँखे बंद न होवैं इस प्रकारका हँसना जिस औरतका होवे वह श्रेष्ठ होती है ॥ १०६ ॥

अथ नासिकालक्षणमाह ।

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभावहा ।
स्थूलाग्रा मध्यनिम्ना च न प्रशस्ता समुन्नता ॥१०७॥

आकुंचितारुणाग्रा च वैधव्यक्लेशदायिनी ।
परप्रेष्या च चिपटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया ॥१०८॥

अर्थ–जिस औरतकी नाक बराबर गोल दोनों नथनें जिसके और छोटे छेदवाली नाक जिसकी वह शुभ होती है और जिसकी नाक आगेसे मोटी बीचमें नीची और पीछे ऊंची ऐसी हो वह शुभ नहीं होती है ॥ १०७ ॥ जिसकी नाक आगेसे सकुची आगेसे लाल होवे वह विधवा क्लेश-दायक होती है. और चिपटीनाकवाली दूती होती है और बहुत छोटी या बहुत बडी नाकवाली औरतको लडाई प्रिय होती है ॥ १०८ ॥

अथ च्छिक्कालक्षणमाह ।

दीर्घायुःकृत्क्षुतं दीर्घं युगपद्वि त्रिपिण्डितम् ।

अर्थ–जिस औरतके लंबे श्वासकरके दो तीन छींक आवें वह नारी बडी आयुष्य पाती है ॥

अथ चक्षुर्लक्षणमाह ।

ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके ॥ १०९ ॥
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी ।
उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥ ११० ॥
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना ।
कामगृहीता नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्वृत्ता ॥ १११ ॥

अर्थ-जिस औरतका तालू स्निग्ध चिकना कमलके समान लाली लिये होय तो वह नारी कोमलतालुवाली उत्तम होतीहै ॥ १०३ ॥ और जिस नारीका सफेद तालू होय तो विधवा होती है और पीले तालुवाली संन्यासिनी होती है और काले तालुवाली संतानके वियोगसे दुःखी होती है और रूखे तालुवाली बहुत कुटुंबवाली होती है ॥ १०४ ॥

अथ घंटिकालक्षणमाह ।

कंठे स्थूला सुवृत्ता च क्रमतीक्ष्णा सुलोहिता ।
अप्रलंबा शुभा घण्टा स्थूला कृष्णा च दुःखदा१०५॥

अर्थ-जिस औरतके कंठके भीतरका काग मोटा गोल क्रमकरके तीक्ष्ण लाली लिये शुभ होता है और लंबा मोटा काला होय तो अशुभ होता है ॥ १०५ ॥

अथ हसनलक्षणमाह ।

अलक्षितद्विजं किंचित्किंचित्फुल्लकपोलकम् ।
स्मितं प्रशस्तं सुदृशामनिमीलितलोचनम् ॥१०६॥

अर्थ-जिस औरतके हँसनेके समय थोडे दाँत दीखे और गाल थोडे ऊंचे उठे और आँखे बंद न होवें इस प्रकारका हँसना जिस औरतका होवे वह श्रेष्ठ होती है ॥ १०६ ॥

अथ नासिकालक्षणमाह ।

समवृत्तपुटा नासा लघुच्छिद्रा शुभावहा ।
स्थूलाग्रा मध्यनिम्ना च न प्रशस्ता समुन्नता ॥१०७॥

आकुंचितारुणाग्रा च वैधव्यक्लेशदायिनी ।
परप्रेष्या च चिपटा ह्रस्वा दीर्घा कलिप्रिया ॥१०८॥

अर्थ–जिस औरतकी नाक बराबर गोल दोनों नथनें जिसके और छोटे छेदवाली नाक जिसकी वह शुभ होती है और जिसकी नाक आगेसे मोटी बीचमें नीची और पीछे ऊंची ऐसी हो वह शुभ नहीं होती है ॥ १०७ ॥ जिसकी नाक आगेसे सकुची आगेसे लाल होवे वह विधवा क्लेशदायक होती है. और चिपटीनाकवाली दूती होती है और बहुत छोटी या बहुत बडी नाकवाली औरतको लडाई प्रिय होती है ॥ १०८ ॥

अथ च्छिक्कालक्षणमाह ।

दीर्घायुःकृत्क्षुतं दीर्घं युगपद्द्वि त्रिपिण्डितम् ।

अर्थ–जिस औरतके लंबे श्वासकरके दो तीन छींक आवें वह नारी बडी आयुष्य पाती है ॥

अथ चक्षुर्लक्षणमाह ।

ललनालोचने शस्ते रक्तान्ते कृष्णतारके ॥ १०९ ॥
गोक्षीरवर्णविशदे सुस्निग्धे कृष्णपक्ष्मणी ।
उन्नताक्षी न दीर्घायुर्वृत्ताक्षी कुलटा भवेत् ॥ ११० ॥
मेषाक्षी महिषाक्षी च केकराक्षी न शोभना ।
कामगृहीता नितरां गोपिङ्गाक्षी सुदुर्वृता ॥ १११ ॥

पारावताक्षी दुःशीला रक्ताक्षी भर्तृघातिनी ।
कोटरानयना दुष्टा गजनेत्रा न शोभना ॥ ११२ ॥
पुंश्चली वामकाणाक्षी वंध्या दक्षिणकाणिका ।
मधुपिंगाक्षी रमणी धनधान्यसमृद्धिभाक् ॥ ११३ ॥

अर्थ–जिस औरतके नेत्र लालीलिये काली पुतलीवाले हों वे शुभ होते हैं ॥ १०९ ॥ गौके दूधके समान सफेदी लिये विशाल चिकने काली पुतलियोंवाले शुभ होते हैं और ऊंचाईकरके हीन नेत्रवाली बडी उमर पाती है और गोल नेत्रवाली कुलटा होती है ॥ ११० ॥ मेंढकेसे व भैंसकेसे गिंगचेकेसे नेत्रवाली शुभ नहीं होतीहै. और गौके समान पिङ्गलवर्णके नेत्रवाली सदैव कामकलामें तत्पर होतीहै ॥ १११ ॥ और कबूतरकेसे नेत्रवाली खोटे स्वभाववाली होती है लालनेत्रवाली स्वामीका घात करतीहै और कोटरानेत्रवाली दुष्टा होतीहै हाथीकेसे नेत्रवाली शुभ नहीं होती है ॥ ११२ ॥ और बाँई आंखसे कानी औरत वेश्या होतीहै और दहिनी आँखसे कानी औरत बांझ होतीहै और सहतके समान पीले वर्णके नेत्रवाली औरत धनधान्य अनेक समृद्धियोंसहित होतीहै ॥ ११३ ॥

अथ पक्ष्मलक्षणमाह ।

पक्ष्मभिः सुघनैः स्निग्धैः कृष्णैः सुक्ष्मैः सुभाग्ययुक् ॥
कपिलैर्विरलैः स्थूलैर्निंद्या भवति भामिनी ॥ ११४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके पलक घने चिकने श्यामता लिये सूक्ष्म होंय वे अच्छे भाग्यको करतेहैं और कपिल वर्णके विरले मोटे जिस नारीके होय वह निंदित होतीहै ॥ ११४ ॥

अथ भ्रूलक्षणमाह ।

भ्रुवौ सुवर्तुले तन्व्याः स्निग्धे कृष्णे असंहते ।
प्रशस्ते मृदुरोमाणौ सुभ्रुवः कार्मुकाकृती ॥ ११५ ॥
खररोमा च पृथुला विकीर्णा सरला स्त्रियाः ।
न भ्रूः प्रशस्ता मिलिता दीर्घरोमा च पिङ्गला॥ ११६॥

अर्थ–जिस औरतकी भौंहें चिकनी काली आपसमें एकसे एक मिली न होवें कमानकी तरह गुलाई लिये शुभ होती हैं. और कोमल रोमवाली धनुष्यके समान आकृतीवाली शुभ होतीहैं ॥ ११५ ॥ और कठोर रोमवाली या गधेकेसे बालवाली मोटी फैलीहुई सूधी आपसमें मिलीहुई बहुत लंबी पिङ्गलवर्णकी शुभ नहीं होती है ॥ ११६ ॥

अथ कर्णलक्षणमाह ।

लंबौ कर्णौ शुभावर्तौ सुखदौ च शुभप्रदौ ।
शष्कुलीरहितौ निंद्यौ शिरालौ कुटिलौ कृशौ ॥ ११७॥

अर्थ–जिस औरतके लंबे कान गुलाई लिये सुखके देनेवाले हों वे शुभ होते हैं । चौडाईरहित बहुत नसेंवाले दुर्बल कुटिल अशुभ होते हैं ॥ ११७ ॥

अथ भाललक्षणमाह ।

भालः शिराविरहितो निर्लोमार्धेन्दुसन्निभः ।
अनिम्नस्त्र्यङ्गुलो नार्याः सौभाग्यारोग्यकारणम् ११८॥
व्यक्तस्वस्तिकरेखं च ललाटं राज्यसंपदे ।
प्रलंबं मस्तकं यस्या देवरं हंति सा ध्रुवम् ॥ ११९॥
रोमशेन शिरालेन प्रांशुना रोगिणी मता ॥ १२० ॥

अर्थ-जिस औरतका कपाल नसोंरहित रोमहीन अर्द्धचन्द्रके समान तीन अङ्गुल ऊंचा होय वह नारी सौभाग्यवती निरोगिणी होतीहै ॥ ११८॥ और जिसके ललाटमें प्रकाशवान् कल्याणकारिणी रेखा होय वह राज्यसंपदादायक जानो और जिसका लंबा माथा होय वह नारी अपने देवरका नाश करती है ॥ ११९ ॥ और जिसके माथेमें रुगटे और नसें होवें तथा लंबे मस्तकवाली रोगिणी होती है ॥१२०॥

अथ सीमंतलक्षणमाह ।

सीमंतः सरलः शस्तो-

अर्थ-जिस औरतकी मांग सीधी होवे वह शुभ होती है।

अथ शीर्षलक्षणमाह ।

मौलिः शस्तः समुन्नतः ।
गजकुंभनिभो वृत्तः सौभाग्यैश्वर्यसूचकः ॥ १२१ ॥

अर्थ-जिसका शिर ऊंचा हाथीके मस्तकके समान गोल होवे वह सौभाग्य ऐश्वर्यदायक होती है ॥ १२१ ॥

अथ मूर्द्धलक्षणमाह ।

स्थूलमूर्द्धा च विधवा दीर्घशीर्षा च बंधकी ।
विशालेनापि शिरसा भवेद्दौर्भाग्यभाजनम् ॥ १२२॥

अर्थ-जिस औरतका चोटीका स्थान मोटा होय वह विधवा होतीहै ॥ और बडा चोटीका स्थान होनेसे पापिनी होतीहै और बडे शीसवाली औरत दुष्टभागिनी होतीहै॥ १२२॥

अथ केशलक्षणमाह ।

केशा अलिकुलच्छायाः सूक्ष्माः स्निग्धाः सुकोमलाः ।
किंचिदाकुंचिताग्राश्च कुटिलाश्चातिशोभनाः ॥ १२३ ॥
परुषाः कुटिलाग्राश्च विरलाश्च शिरोरुहाः ।
पिङ्गला लघवो रूक्षा दुःखदारिद्र्यबंधनाः ॥ १२४ ॥

अर्थ-जिस औरतके बालोंकी पंक्ति घुंघरवाले बारीक चिकने कोमल आगेसे कुण्डलके समान होवे कुटिल स्याम होवें वह केश अतिशुभ होते हैं ॥ १२३ ॥ जिसके बाल आगेसे कुटिल छिदरे पिंगलवर्णके छोटे रूखे वे बाल दुःख दारिद्र्य बंधनको देते हैं ॥ १२४ ॥

तस्मात्परीक्ष्य मतिमान्कन्यां लक्षणसंयुताम् ।
विवहेत यथा न स्यात्सर्वथानर्थभाजनम् ॥ १२५ ॥

इति श्रीवंशावरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके षट्षष्टिलक्षणवर्णनोनाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अर्थ-पहिले बुद्धिमान् पुरुष पूर्वोक्त लक्षणोंमेंसे कहेहुए श्रेष्ठ लक्षणोंवाली कन्याको परीक्षा करके विवाह करे जिससे विवाह करनेसे क्लेशको नहीं पाताहै ॥ १२५ ॥

इति श्रीवंशांवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-राजज्यौतिषिपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी भाषाटीकायां षट्षष्टिलक्षणवर्णनो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

अथातः संप्रवक्ष्यामि तिलमशकादिलक्षणम् ।
येन विज्ञानमात्रेण न मज्जेद्दुःखसागरे ॥ १ ॥

अर्थ-अब स्कंदजी कहते हैं हे अगस्त्य ! अब तिल मस्सा लहसन इत्यादिके मैं लक्षण कहताहूँ जिनके जानने मात्र करके मनुष्य दुःखसागरमें नहीं डूबताहै ॥ १ ॥

अथ भ्रूमध्ये तिलमशकलक्षणमाह ।
भ्रुवोरंतर्ललाटे वा मशको राज्यसूचकः ।

अर्थ-जिस औरतके भौंहके बीचमें या माथेमें मस्सा होवे तो वह नारी अपने कुलके अनुसार राज्यको प्राप्त होती है और राजकन्याके होय तो वह बहुत बडे राज्यको प्राप्त होती है ॥

अथ वामकपोले रक्तमशकचिह्नमाह ।
वामे कपोले मशकः शोणो मिष्टान्नदः स्मृतः ॥२ ॥

अर्थ-जिस औरतके बायें गालमें लालीलिये मस्सेका चिह्न हो वह नारी मिष्टान्नका भोग भोगतीहै ॥ २ ॥

अथ हृदये तिलादिचिह्नमाह ।

तिलकं लाञ्छनं वापि हृदि सौभाग्यकारणम् ।

अर्थ-जिस औरतके हृदयमें तिलका चिह्न होवे वह नारी सौभाग्यको प्राप्त होती है ॥

अथ दक्षिणस्तने रक्तचिह्नमाह ।

यस्या दक्षिणवक्षोजे शोणे तिलकलाञ्छने ॥ ३ ॥
कन्याचतुष्टयं सूते सूते सा च सुतत्रयम् ॥

अर्थ-जिस औरतके दहने स्तनमें लाल तिल वा मस्साका चिह्न होवे ॥ ३ ॥ वह नारी चार कन्या और तीन पुत्र पैदा करती है ॥

अथ वामस्तने तिलादिचिह्नमाह ।

तिलकं लाञ्छनं शोणं यस्या वामस्तने भवेत् ॥ ४ ॥
एकं पुत्रं प्रसूयादौ ततः सा विधवा भवेत् ॥

अर्थ-जिस औरतके बाँये कुचपर तिल वा मस्सेका लाल चिह्न होवे ॥ ४ ॥ वह नारी एक पुत्र पैदा होनेके बाद विधवा होती है ॥

अथ दक्षिणगुह्ये तिलचिह्नमाह ।

गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलकं यदि योषितः ॥ ५ ॥
तदा क्षितिपतेः पत्नी सूते वा क्षितिपं सुतम् ॥

अर्थ-जिस औरतके गुह्यस्थान अर्थात् भगके दहने

भागमें तिल होवे वह नारी ॥ ५ ॥ राजाकी रानी होती है अथवा राज्य करनेवाले पुत्रको पैदा करती है ॥

अथ नासाग्रे तिलचिह्नमाह ।

नासाग्रे मशकः शोणो महिष्या एव जायते ॥ ६ ॥
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्याः पुंश्चल्याश्च प्रकीर्तितः ॥

अर्थ-जिस औरतके नाकके अग्रभागमें लाल मस्सा होय वह नारी रानी होती है ॥ ६ ॥ और वही मस्सा काले वर्णका होवे वह नारी स्वामीका नाश करनेवाली व्यभिचारिणी होती है ॥

अथ नाभेरधस्तात्तिलचिह्नमाह ।

नाभेरधस्तात्तिलकं मशको लांछनं शुभम् ॥ ७ ॥

अर्थ-जिस औरतके नाभिके नीचे तिल मस्सा लहसनम कोई चिह्न होवे तो वह शुभ होता है ॥ ७ ॥

अथ गुल्फे तिलचिह्नमाह ।

मशकस्तिलकं चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकृत् ॥

अर्थ-जिस नारीके गुल्फ याने जांवोंमें तिल मस्सा लहसन होवे तो दरिद्रकारक जानो ॥

अथ वामांगे चिह्नमाह ।

करे कर्णे कपोले वा कंठे वामे भवेद्यदि ॥ ८ ॥
एषां त्रयाणामेकं तु प्राग्गर्भे पुत्रदं भवेत् ॥

अर्थ-जिस नारीके हाथ कान गाल कंठ बायें अंगमें

तेल लहसन मस्सा इन तीनोंमेंसे एकभी होय तो वह नारी पहिले २ पुत्र पैदा करतीहै ॥ ८ ॥

अथ भाले त्रिशूलचिह्नमाह ।

भालगेन त्रिशूलेन निर्मितेन स्वयंभुवा ॥
नितंबीनीसहस्राणां स्वामित्वं योषिदाप्नुयात् ॥ ९ ॥

अर्थ—जिस औरतके माथेमें त्रिशूलका चिह्न ब्रह्माने बनाया होय वह नारी एक हजार स्त्रियोंकी स्वामिनी होती है ॥ ९ ॥

अथ दंतघर्षणलक्षणमाह ।

सुप्ता परस्परं यातु दंतान्किटिकिटायते ।
सुलक्षणाप्यशस्ता सा या किंचित्प्रलपेत्तथा ॥ १० ॥

अर्थ—जो नारी सोतेके बीचमें दाँतोको आपसमें किड़किड़ावे अथवा बिसे वह नारी अच्छे लक्षणोंसहितभी होवे तोभी नेष्ट होतीहै ॥ १० ॥

अथ रोमावर्तचक्रलक्षणमाह ।

पाणौ प्रदक्षिणावर्तो धन्यो वामो न शोभनः ।

अर्थ—जिस नारीके हाथोंमें दक्षिणावर्त चक्र होवे अथवा हाथोंकी पीठपे रोमावलीका दक्षिणावर्त चक्र होवे वह चक्र शुभ होताहै वामावर्त अशुभ होताहै ॥

अथ नाभौ चक्रलक्षणमाह ।

नाभौ श्रुतावुरसि वा दक्षिणावर्त ईडितः ॥ ११ ॥

अर्थ-जिस नारीके ठूडी व कान व हृदयपर रोमावलीका दक्षिणावर्त चक्र होवे वह शुभ होता है वामावर्त अशुभ होताहै ॥ ११ ॥

अथ पृष्ठे चक्रलक्षणमाह ।

सुखाय दक्षिणावर्तः पृष्ठवंशस्य दक्षिणे ।

अर्थ-जिस स्त्रीकी पीठके दहने भागमें रोमावलीका दक्षिणावर्त चक्र होवे वह शुभ होताहै ।

अथ पृष्ठे वर्तुलाकारचक्रमाह ।

अतः पृष्ठे नाभिसमो बह्वायुः पुत्रवर्द्धनः ॥ १२ ॥

अर्थ-और जिसकी पीठमें गोलाकार नाभिके समान बीचाबीचमें चक्र होवे वह नारी बडी उमरवाले पुत्रोंकी वृद्धि करतीहै ॥ १२ ॥

अथ भगललाटे चक्रमाह ।

राजपत्न्याः प्रदृश्येते भगमौलिप्रदक्षिणः ।
स चेच्छकटभंगः स्याद्बहुपुत्रसुखप्रदः ॥ १३ ॥

अर्थ-और जिस स्त्रीके भगके माथेपर दक्षिणावर्त चक्र हो वह नारी राजपत्नी होती है और जो टूटेहुए शकटकी तरह भगके ऊपर चिह्न होवे तो वह नारी बहुत पुत्रोंका सुख पाती है ॥ १३ ॥

अथ कटिगुह्यस्थले चक्रमाह ।

कटिगो गुह्यकावर्तः पत्यपत्यविनाशिनी ।

अर्थ-और जिसके कमरमें वा गुह्यस्थलमें रोमावलीका चक्र होवे वह नारी पति और पुत्रोंका नाश करतीहै ॥

अथ पृष्ठोदरे चक्रमाह ।

स्यातामुदरवेधेन पृष्ठावर्तौ न शोभनौ ॥ १४ ॥
एकेन हंति भर्तारं भवेदन्येन पुंश्चली ।

अर्थ-जिस नारीके पेट और पीठमें दोनों रोमावलीका चक्र होवे तो वह नारी शुभ नहीं होतीहै ॥ १४ ॥ जो एकचक्र होवे तो स्वामीका नाश करे और दोनों चक्र होंवे तो वह नारी व्यभिचारिणी होतीहै ॥

अथ कण्ठे चक्रलक्षणमाह ।

कंठगो दक्षिणावर्तो दुःखवैधव्यहेतुकः ॥ १५ ॥

अर्थ-और जो कण्ठमें रोमावलीका चक्र होवे तो वह नारी अनेकप्रकारव्याधियुक्त विधवा होती है ॥ १५ ॥

अथ सीमंतललाटे चक्रमाह ।

सीमंतेऽथ ललाटे वा त्याज्या दूरे प्रयत्नतः ।
सा पतिं हन्ति वर्षेण यस्या मध्ये कृकाटिकाम् ॥ १६ ॥

अर्थ-जिस नारीके मांगमें या माथेमें या काठीमें रोमावलीका चक्र होवे वह नारी एकवर्षके भीतरही पतिको नाश करती है उसको दूरहीसे त्याग करना चाहिये ॥ १६ ॥

अथ शिखास्थाने चक्रमाह ।

प्रदक्षिणो वा वामो वा रोम्णामावर्त्तकः स्त्रियाः ।

एको वा मूर्द्धनि द्वौ वा वामे वामगती अपि ॥ १७ ॥
आदशाहं पतिघ्नो तौ त्याज्यौ दूरात्सुबुद्धिना ।

अर्थ–जिस औरतके दक्षिणावर्त और वामावर्तमें रोमावलीका चक्र चोटीके स्थानमें एक अथवा दो हों तो वामावर्त चक्र नेष्ट है ॥ १७ ॥ वह नारी दशदिनके भीतर पतिको नाश करती है उसको बुद्धिमान् दूरसे त्याग करे ॥ १७ ॥

अथ कटिचक्रमाह ।

कट्यावर्ता च कुलटा–

अर्थ–जिसके कमरमें रोमावलीका वामावर्त चक्र होवे वह कुलटा होती है ।

अथ नाभौ चक्रलक्षणमाह ।

नाभ्यावर्ता पतिव्रता ॥ १८ ॥

अर्थ–जिसके टूंडीमें चक्र होवे वह पतिव्रता होती है ॥ १८ ॥

अथ पृष्ठे चक्रमाह ।

पृष्ठावर्ता च भर्तृघ्नी कुलटा वाथ जायते ॥ १९ ॥

अर्थ–जिसकी पीठमें वामावर्त चक्र होवे वह पतिको नाश करनेवाली व्यभिचारिणी होती है ॥ १९ ॥

स्कंद उवाच ।

अथ सुलक्षणावतीत्याज्यत्वमाह ।

सुलक्षणापि दुःशीला कुलक्षणशिरोमणिः ।

अर्थ-अब स्कंदजी कहते हैं जो स्त्री सर्वलक्षणसंपन्न हो और दुःशीला व्यभिचारिणी होय उसको सर्वथा त्याग करना चाहिये वह नारी कुलक्षणवती स्त्रियोंमें शिरोमणि समझना चाहिये ॥ १९ ॥

अथ कुलक्षणवतीग्राह्यत्वमाह ।

अलक्षणापि या साध्वी सर्वलक्षणसंयुता ॥ २० ॥

अर्थ-जो स्त्री संपूर्ण कुलक्षणों करके संयुक्त हो और पतिव्रता होय वह नारी सर्वलक्षणवती स्त्रियोंमें अग्रणी गिनी जाती है ॥ २० ॥

अथोत्तमस्त्रीप्राप्तियोगमाह ।

सुलक्षणा सुचारित्रा स्वाधीना पतिदेवता ।
विश्वेशानुग्रहादेव गृहे योषिदवाप्यते ॥ २१ ॥

अर्थ-सर्वशुभलक्षणवती नारी शुभचरित्रोंसे युक्त अपने पतिके अधीन निज पति है देव जिसके ऐसे श्री शिवजीकी कृपासे घरमें प्राप्त होती है ॥ २१ ॥

अथ स्त्रीणां सौंदर्यहेतुमाह ।

अलंकृताः सुवासिन्यो याभिः प्राक्तनजन्मनि ।
नानाविधैरलंकारैस्ताः सुरूपा भवन्ति हि ॥ २२ ॥
सुतीर्थेषु वपुर्याभिः क्षालितं वा विहाय तत् ।
ता लावण्यतरंगिण्यो भवंतीह सुलक्षणाः ॥ २३ ॥

एको वा मूर्द्धनि द्वौ वा वामे वामगती अपि ॥ १७ ॥
आदशाहं पतिघ्नौ तौ त्याज्यौ दूरात्सुबुद्धिना !

अर्थ–जिस औरतके दक्षिणावर्त और वामावर्तमें रोमावलीका चक्र चोटीके स्थानमें एक अथवा दो हों तो वामावर्त चक्र नेष्ट है ॥ १७ ॥ वह नारी दशदिनके भीतर पतिको नाश करती है उसको बुद्धिमान् दूरसे त्याग करे ॥ १७ ॥

अथ कटिचक्रमाह ।

कट्यावर्ता च कुलटा–

अर्थ–जिसके कमरमें रोमावलीका वामावर्त चक्र वह कुलटा होती है ।

अथ नाभौ चक्रलक्षणमाह ।

नाभ्यावर्ता पतिव्रता ॥ १८ ॥

अर्थ–जिसके टूंडीमें चक्र होवे वह पतिव्रता होती है

अथ पृष्ठे चक्रमाह ।

पृष्ठावर्ता च भर्तृघ्नी कुलटा वाथ जाय

अर्थ–जिसकी पीठमें वामावर्त चक्र है

नाश करनेवाली व्यभिचारिणी होती है ॥ १

स्कंद उवाच ।

अथ सुलक्षणावतीत्याज्यत

सुलक्षणापि दुःशीला _

अतः सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणैः ।
लक्षणानि परीक्ष्यादौ हित्वा दुर्लक्षणान्यपि ॥ २७ ॥
इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके तिलमशकादिलक्षणवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थ–अच्छे लक्षणोंकरके उत्तम चरित्रों करके थोडे आयुष्यवाले पतिको आनंदकरके दीर्घायु करदेती है ॥ २६ ॥ इस कारणसे विवाहके पहिले लक्षणोंकी परीक्षा करके और दुष्टलक्षणवतीको त्यागकरके सुलक्षणवती स्त्रीको बुद्धिमान् विवाह करे ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-भाषाटीकायां तिलमशकादिवर्णनो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

प्रोक्तुस्तुल्यं नरवनितयोर्जन्म होराविधिज्ञाः

---

१ वराहः–"यद्यत्फलं नरभवे क्षममङ्गनानां तत्तद्वदेत्पतिषु वा सकलं विधेयम् । तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु लग्नेन्दुगः शुभगजास्तमये पतिश्च ॥ १ ॥" तथा च–"लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्यं तयोः कलत्रे पतिवैम-वानि । सुताल्पभावे प्रसवोऽत्रगम्यो वैधव्यमस्याः किल चाष्टगेहे ॥ २ ॥ यज्जन्मकालाद्गदितं नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव । स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु यद्ययोग्यं तन्नायके तत्परिवेदितव्यम् ॥ ३ ॥" अन्यच्च ग्रन्थान्तरे–"स्त्रीपुरुषयोः सम न योग्या दशा प्रोक्तम् । यद्यद्योग्यं पतिसौभाग्यं तत्तत्सर्वं वदेत्स्वनाथेषु" ॥ ४ ॥

अर्थ--जिस नारीने पूर्वजन्ममें काँरी कन्या वा ब्राह्मणकी स्त्रियोंको अनेक वस्त्र और आभूषणोंकरके अलंकृत कियाहै वह नारी इस जन्ममें सुंदर रूपवती होती है ॥ २२ ॥ जिस स्त्रीने पूर्व जन्ममें अच्छे तीर्थोंमें शरीरको स्नानकराया अथवा उत्तम तीर्थमें देहको त्याग कियाहै वह नारी श्रेष्ठ रूपवती सर्व लक्षण संपन्न स्त्रियाँ होती हैं ॥ २३ ॥

अथ पतिवश्यमाह ।

आर्चिता जगतां माता याभिर्मृडवधूरिह ।
ता भवन्ति सुचारित्रा योषाः स्वाधीनभर्तृकाः॥२४॥
स्वाधीनपतिकानां च सुशीलानां मृगीदृशाम् ।
स्वर्गापवर्गावत्रैव सुलक्षणफलं हि तत् ॥ २५ ॥

-अर्थ- जिन स्त्रियोंने इस जन्ममें पार्वती वा दुर्गा भवानीका पूजन कियाहै सो नारी सर्वगुणसंपन्न अच्छे चरित्रोंवाली पतिको वशमें करनेवाली होतीहैं ॥ २४ ॥ और जिन स्त्रियों- के वशमें पति है और सुंदर है स्वभाव जिनका उन स्त्रियोंको स्वर्ग तथा मोक्ष इसी जगह है ये श्रेष्ठ लक्षणोंवाली स्त्रियोंका निश्चय करके फल जानना ॥ २५ ॥

अथ साध्वीप्रसंगाद्दीर्घायुष्यमाह ।

सुलक्षणैः सुचरितैरपि मंदायुषं पतिम् ।
दीर्घायुषं प्रकुर्वंति प्रमदाः प्रमदास्पदम् ॥ २६ ॥

अतः सुलक्षणा योषाः परिणेया विचक्षणैः ।
लक्षणानि परीक्ष्यादौ हित्वा दुर्लक्षणान्यपि ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादा-
त्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते
स्त्रीजातके तिलमशकादिलक्षणवर्णनो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थ–अच्छे लक्षणोंकरके उत्तम चरित्रों करके थोडे आयु-ष्यवाले पतिको आनंदकरके दीर्घायु करदेती है ॥ २६ ॥ इस कारणसे विवाहके पहिले लक्षणोंकी परीक्षा करके और दुष्टलक्षणवतीको त्यागकरके सुलक्षणवती स्त्रीको बुद्धिमान् विवाह करे ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजरा-
जज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरी-
भाषाटीकायां तिलमशकादिवर्णनो नाम
तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

प्रांहुस्तुल्यं नरवनितयोर्जन्म होराविधिज्ञाः

१ वराहः–"यद्यत्फलं नरभवे क्षममङ्गनानां तत्तद्वदेत्पतिषु वा सफलं विधेयम् । तासां तु भर्तृमरणं निधने वपुस्तु लग्नेन्दुगः शुभगजास्तमये पतिश्च ॥ १ ॥" तथा च–"लग्ने शशांके च वपुर्विचिन्त्य तयोः कलत्रे पतिवैभवानि । सुताख्यभावे प्रसवोऽनगम्यो वैधव्यमस्त्याः किल चाष्टगेहे ॥ २ ॥ यज्जन्मप्रश्नाद्वदित नराणां होराप्रवीणैः फलमेतदेव । स्त्रीणां प्रकल्प्यं खलु येद्ययोग्यं तत्रायके तत्परिवेदितव्यम् ॥ ३ ॥" अन्यच्च ग्रन्थान्तरे–"स्त्रीपुरुषयोः सम न योग्या दशा पूर्वोक्तम् । यद्यद्योग्यं पतिसौभाग्यं तत्तत्सर्वं प्रदेत्स्वनार्येषु" ॥ ४ ॥

किंतु स्त्रीणां फलमनुचितं तत्पतौ तत्प्रकल्प्यम् ॥
द्यूनाद्वाच्यः पतिशुभगते रंध्रगे भर्तृमृत्यु-
र्नीहारांशोरुदयगृहतस्तद्वपुश्चिंतनीयम् ॥ १ ॥

अर्थ–जो फल पुरुषोंके जन्मकालमें ज्योतिषशास्त्र जाननेवालोंने कहा है सो फल स्त्रियोंकोभी कहना चाहिये जैसे स्त्री पुरुषकी परमायुदशाका विचार इत्यादि दोनोंको बराबर कहना चाहिये और जो फल स्त्रियोंके कहने लायक नहीं होयँ जैसे राजयोग अन्धकारकादि पतिको सौभाग्यदायक सो योग स्त्रीके पतिको फलदायक कहना चाहिये और लग्नसे वा चंद्रमासे सप्तम स्थानसे पतिका शुभ फल कहना चाहिये और लग्न वा चंद्रमासे अष्टमस्थानसे भर्ताकी मृत्युका विचार करना और लग्न और चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित होय वहांसे स्त्रीके शरीरका विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

अथ स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यसुखसौंदर्य-
विचारस्थानमाह ।

वैधव्यं निधनगृहे पतिसौभाग्यं सुखं च यामित्रे ।
सौन्दर्यतां लग्नगृहे विचिन्तयेत्पुत्रसंपदं नवमे ॥ २ ॥

एषु स्थानेषु युवत्यः सौम्याः शुभदा बलान्विता ज्ञेयाः।
क्रूरास्तु नेष्टफलदा भवनेशविवर्जिताः सदा चिंत्याः ३॥

अर्थ–स्त्रियोंके विधवादियोग अष्टमस्थानसे विचारना

और पतिका सौभाग्य और पतिका सुख सप्तम स्थानसे विचार करना चाहिये. और शरीरकी खूबसूरती लग्नसे देखना चाहिये और पुत्रसंपदा नवम स्थानसे विचारना ॥ २ ॥ जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें पहिले कहेहुए स्थानोंमें शुभग्रह बैठे होवें तो शुभ फल देतेहैं और पापग्रह इन स्थानोंमें स्थित होवें तो नेष्ट फल देते हैं. केवल पूर्वोक्त स्थानोंके स्वामी पापग्रह अपने स्थानमें स्थित होवें तो उनको नेष्ट न कहना चाहिये किंतु वे श्रेष्ठफलदाता होवेंगे ॥ ३ ॥

अथ पुरुषाकृतियोगः ।

पुरुषर्क्षे पुरुषांशे लग्नेन्द्वोः पापयुक्तयोर्जाता ।
पुरुषाकृतिशीलयुताभर्तुरयोग्यासमंजसा कन्या ॥ ४॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मलग्नमें लग्न और चंद्रमा पुरुष राशि अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ राशियोंमें स्थित होवे और इन्हीं राशिके नवांशमें स्थित होय और वहां लग्न चंद्रमा पापग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय तो वह कन्या पुरुषस्वभाववाली पतिके लायक नहीं खराब होती है ॥ ४ ॥ तथा च गुणाकरः-"पुंदेहशीलसहितान्यतमस्थयोश्च पापाः खलैर्गतिवृता युतदृष्टयोस्तु" ॥

अथ स्त्र्याकृतियोगः ।

समराशौ समभागे लग्नेन्द्वोः स्त्रीगुणान्विता कन्या ।
सौम्ययुते दृष्टे वा सुभगा साध्वी सुविख्याता ॥ ५ ॥

किंतु स्त्रीणां फलमनुचितं तत्पतौ तत्प्रकल्प्यम् ॥
द्यूनाल्लग्नाच्चः पतिशुभगते रंध्रगे भर्तृमृत्यु-
र्नीहारांशोरुदयगृहतस्तद्वपुश्चिंतनीयम् ॥ १ ॥

अर्थ–जो फल पुरुषोंके जन्मकालमें ज्योतिषशास्त्र जाननेवालेंने कहा है सो फल स्त्रियोंकोभी कहना चाहिये जैसे स्त्री पुरुषकी परमायुदशाका विचार इत्यादि दोनोंको बराबर कहना चाहिये और जो फल स्त्रियोंके कहने लायक नहीं होयँ जैसे राजयोग अन्यकारकादि पतिको सौभाग्यदायक सो योग स्त्रीके पतिको फलदायक कहना चाहिये और लग्नसे वा चंद्रमासे सप्तम स्थानसे पतिका शुभ फल कहना चाहिये और लग्न वा चंद्रमासे अष्टमस्थानसे भर्ताकी मृत्युका विचार करना और लग्न और चंद्रमा जिस स्थानमें स्थित होय वहांसे स्त्रीके शरीरका विचार करना चाहिये ॥ १ ॥

अथ स्त्रीणां वैधव्यसौभाग्यसुखसौंदर्य-
विचारस्थानमाह ।

वैधव्यं निधनगृहे पतिसौभाग्यं सुखं च यामित्रे ।
सौन्दर्यता लग्नगृहे विचिन्तयेत्पुत्रसंपदं नवमे ॥ २ ॥

एषु स्थानेषु युवत्यः सौम्याः शुभदा बलान्विता ज्ञेयाः।
क्रूरास्तु नेष्टफलदा भवनेशविवर्जिताः सदा चिंत्याः ३॥

अर्थ–स्त्रियोंके विधवादियोग -अष्टमस्थानसे विचारना

और पतिका सौभाग्य और पतिका सुख सप्तम स्थानसे विचार करना चाहिये. और शरीरकी खूबसूरती लग्नसे देखना चाहिये और पुत्रसंपदा नवम स्थानसे विचारना ॥ २ ॥ जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें पहिले कहेहुए स्थानोंमें शुभग्रह बैठे होयँ तो शुभ फल देतेहैं और पापग्रह इन स्थानोंमें स्थित होयँ तो नेष्ट फल देते हैं. केवल पूर्वोक्त स्थानोंके स्वामी पापग्रह अपने स्थानमें स्थित होयँ तो उनको नेष्ट न कहना चाहिये किंतु वे श्रेष्ठफलदाता होयँगे ॥ ३ ॥

अथ पुरुषाकृतियोगः ।

पुरुषर्क्षे पुरुषांशे लग्नेन्द्वोः पापयुक्तयोर्जाता ।
पुरुषाकृतिशीलयुताभर्तुरयोग्यासमंजसा कन्या ॥ ४॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मलग्नमें लग्न और चंद्रमा पुरुष राशि अर्थात् १ । ३ । ५ । ७ । ९ । ११ राशियोंमें स्थित होवे और इन्हीं राशिके नवांशमें स्थित होय और वहां लग्न चंद्रमा पापग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय तो वह कन्या पुरुषस्वभाववाली पतिके लायक नहीं खराब होती है ॥ ४ ॥ तथा च गुणाकरः-"पुंदेहशीलसहितान्यतमस्थयोश्च पापाः खलैर्गतिवृता युतदृष्टयोस्तु" ॥

अथ स्त्र्याकृतियोगः ।

समराशौ समभागे लग्नेन्द्वोः स्त्रीगुणान्विता कन्या ।
सौम्ययुते दृष्टे वा सुभगा साध्वी सुविख्याता ॥ ५ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें समराशि अर्थात् २। ४ । ६ । ८ । १० । १२ इन राशियोंमें और इन्हींके नवांशमें लग्नचंद्रमा दोनों स्थित होवें तो वह नारी स्त्रियोंकीसी आकृतिवाली स्त्रीगुणोंसहित होती है उन्हीं समराशिस्थित लग्न चंद्रमाको शुभग्रह देखते होयँ वा युक्त होयँ तो वह नारी श्रेष्ठभाग्यवती पतिव्रता करके विख्यात संसारमें होती है ॥५॥ वराहः–"युग्मेषु लग्नशशिनोः प्रकृतिस्थिता स्त्री सच्छीलभूषणयुता शुभदृष्टयोश्च ॥ ओजस्थयोश्च मनुजाकृतिशीलयुक्ता पापा च पापयुतवीक्षितयोर्गुणोना ॥ १ ॥ गुणाकरः–"चन्द्राङ्गयोः समगृहे प्रकृतिस्थिता स्त्री रूपान्विता शुभनिरीक्षितयोः सुशीला "॥

अथ मिश्राकृतियोगः ।

लग्नेन्दू विषमर्क्षगौ शुभयुतौ सौम्यग्रहालोकितौ
नारी मिश्रगुणाकृतिस्थितिगतिप्रज्ञावती जायते ।
युग्मागारगतौ तु पापसहितौ पापेक्षितौ वा तथा
तद्राशीशयुतेक्षितग्रहबलादायुः समस्तं विदुः ॥ ६ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें लग्न चंद्रमा विषमराशि विषम नवांशके विषे स्थित होय और शुभग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय वह नारी मध्यम गुणोंवाली मिश्रचाल बुद्धिमती होती है और वही लग्न चंद्रमा समराशि समनवांशमें स्थित पाप ग्रहोंकरके युक्त वा दृष्ट होय तो वह नारी मिश्रस्वभाववाली मिश्र-

गुणा होतीहै अथवा लग्नचंद्र राशीशको जो ग्रह देखते होयँ उनका बल देखके सम्पूर्ण स्त्रीकी आयुष्य कहनी चाहिये ॥ ६ ॥

अथ त्रिंशांशबलविचारः ।

लग्नेंद्वोर्यो बलवांस्तस्य त्रिंशांशकैः फलं वाच्यम् ।
त्रिंशांशे बलवांस्तत्प्रोक्तफलानि निसर्गतो यान्ति७॥

अर्थ–स्त्रियोंके जन्मकालमें जन्मलग्न वा चंद्रमा इनमेंसे जो अधिक बलवान् होय तिसके त्रिंशांशसे फल कहना त्रिंशांशके बलसे स्वाभाविक फल कहताहुं ॥ ७ ॥

अथ त्रिंशांशवशात्फलमाह ।
अथ भौमगृहे लग्नेन्द्वोस्त्रिंशांशवशात्क्रमात्फलम् ।

लग्नयदेन्दोःकुजराशिगतेत्रिंशांशकस्थेकुजपूर्वकाणाम्
कन्यैवदुष्टासुशठाथसाध्वीदुर्वृत्तियुक्ताभवतीहदासी ८॥

अर्थ–जिस स्त्रीका लग्न और चंद्रमा मंगलके मेष या वृश्चिकराशिमें प्राप्त होय और पहिले मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह स्त्री विवाहके पहिले परपुरुषसे भोग करतीहै और वही- राशिस्थित लग्न चंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह स्त्री शठ माया रचनेवाली होती है. और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होयँ तो पतिव्रता होतीहै और शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह

कन्या खोटी जीविका करनेवाली अतिनिंद्य होती है और वही लग्न चंद्रमा १ वा ८ राशि स्थित शनैश्चरके त्रिंशांशमें होय तो वह कन्या दासी होती है ॥ ८ ॥ तथा च वराहः-"कन्यैव दुष्टा व्रजतीह दास्यं साध्वी समा या कुचरित्रयुक्ता ॥ भूम्यात्मजर्क्षे क्रमशोंशकेषु वक्रार्किजीवेन्दुजभार्गवाणाम् ॥ १ ॥" तथाच-"लग्नेन्द्वोर्बलवान्कुजस्य भवने शुक्रस्य खाग्न्यंशके कन्या स्यादतिनिन्दिता सुरगुरोः साध्वी नितांतं भवेत् ॥ दुष्टा भूतनयस्य नूनमुदिता सौम्यस्य मायाविनी दासी तिग्ममरीचिसूनुगगनाग्न्यंशे फलानि क्रमात् ॥" तथाच होरारत्ने-"भौमर्क्षे भौमांशे कन्या मृतसुतगुणैर्हीना । मन्दांशस्था प्रेष्या दुःशीला बहुविधा नारी ॥ १ ॥ पुत्रवती जीवांशे बहुव्ययार्ता पतिव्रता कन्या । सौम्यांशे बहुमाया मलिनाचाराल्पप्रसूतिः स्यात् ॥ २ ॥ कन्याजननी कन्या शुक्रांशे जारभोगसंतुष्टा ॥ भानोरप्येवं त्रिंशांशफलं समादेश्यम् ॥ ३ ॥

अथ बुधभवने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

तारानायकपुत्रभेऽवनिसुते त्रिंशल्लवे कापटा
शौके हीनमनोभवा शशिसुतस्यातीव युक्ता गुणैः ।
देवाधीशपुरोहितस्य हि भवेत्साध्वा नितांतं तथा
खाग्न्यंशेऽर्कसुतस्य सा निगदिता क्लीबस्य भार्या बुधैः ९॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न और चंद्रमा बुधकी राशि ३।६में स्थित मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या

छली होतीहै, और वही लग्न चंद्रमा शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित हो तो वह कन्या रतिक्रीडासे हीन होतीहै और वही लग्नचंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या बहुत गुणोंकरके युक्त होतीहै और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या निरंतर पतिव्रता होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शनिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या नपुंसक अर्थात् हिजडाकी स्त्री होती है ॥ ९ ॥ उक्तं च होरामकरंदे--'स्यात्कापटी गुणयुताथ सती बुधर्क्षे विक्षिप्तमन्मथमथो च नपुंसकश्च' । तथा च वराहः--'स्यात्कापटी क्लीबसमा सती च बौधे गुणाढ्या प्रविकीर्णकामा ॥' वृद्धयवनः-बुधभवने भौमांशे कन्या जारप्रियाल्पपुत्रा स्यात् ॥ मंदांशे क्लीबसमा मृतप्रजा वान्यभर्तृयुता॥ १ ॥ साध्वी पतिप्रिया वा जीवांशे क्षेत्रगते तुंगगे जीवे । सौम्यांशे च कुलाढ्या पशुधनभोगान्विता शुक्रे ॥ २ ॥

अथ गुरुभवने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

देवाचार्यगृहेऽमृतांशुरथवा लग्नं खवह्न्यंशक
भूसूनोर्गुणशालिनी सुरगुरोः ख्याता गुणानां गणैः ॥
ताराहस्वामिसुतस्य चारुविभवा शुक्रस्य साध्वी भवे-
न्नूनं भानुसुतस्यचाल्पसुरताकांता बुधैःकीर्तिता १०

अर्थ--जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न वा चंद्रमा बृहस्पतिकी राशिमें ९ । १२ में स्थित मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी स्त्रियोंमें गुणवती होतीहै, और वही लग्न

चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी अनेकगुणोंके गणकरके विख्यात होतीहै और वही लग्न चंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या उत्तम वैभवकरके संयुक्त होती है और शुक्रके त्रिंशांशमें लग्न चंद्रमा स्थित होय तो वह नारी पतिव्रता होती है, और वही लग्नचंद्रमा शनैश्वरके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या थोडी रति करनेवाली होती है ऐसा पंडितजनोंने वर्णन कियाहै ॥ १० ॥ तथा च वराहः–"जीवर्क्षे भौमांशे कन्या व्यभिचारिणी सुविख्याता । सौरांशे तु दरिद्रा कन्याजननी स्वतंत्रतानिरता ॥ १ ॥ जीवांशे तु धनाढ्या सौम्यांशे लोकपूजिता ललना । पुत्रवती शुक्रांशे षड्गुणयुक्ता पतिव्रतासाध्वी ॥ २ ॥ गुणाकरः–"गुणाढ्यैश्वर्यसंयुक्ता जीवर्क्षे गुणशालिनी । साध्वी स्वल्पगुणा प्रोक्ता भौमादीनामिहांशकैः ॥"

अथ भृगुभवने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

दैत्याचार्यगृहे सुरेंद्रसचिवस्याकाशवह्न्यंशके
लग्ने वाप्युडुनायके गुणवती भौमस्य दोषाधिका ।
सौम्यस्यातिकलाकलापकुशला शुक्रस्य चञ्चद्गुणै-
र्युक्ताद्यैर्निपुणैर्दिवामणिसुतस्यांशे पुनर्भूरिति ॥ ११ ॥

अर्थ–और जिस कन्याके जन्मकालमें लग्न और चंद्रमा शुक्रकी राशि २ । ७ में स्थित होकर बृहस्पतिके त्रिंशांशमें बैठे होंय वह कन्या स्त्रियोंमें गुणवती होतीहै और

वही लग्न चंद्रमा मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होवे तो वह कन्या दुष्टा होती है और बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या समस्त चातुरीकलामें कुशल होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या दीप्तिमान् गुणों-करके युक्त होती है और वही लग्न चंद्रमा शनैश्वरके त्रिंशांशमें स्थित होय तो उस नारीके दो विवाह होते हैं ॥ ११ ॥ अथातः होरामकरन्दे-'दुष्टा कलासु निपुणा गुणशालिनी च ख्याता गुणैर्भृगुगृहे वनिता पुनर्भूः' इति । अन्यच्च वृद्धयवनः- "सितभवने भौमांशे दुष्टा खलप्रिया पतिद्वेष्या । मन्दांशे च पुनर्भूर्मृतप्रजा रोगसंयुता नित्यम् ॥ १ ॥ रूपान्विता गुणाढ्या जीवांशे भर्तृपुत्रसंपन्ना ॥ कुचरित्रा सौम्यांशे काव्यकलागेयसंयुक्ता ॥ २ ॥ शुक्रांशे भोगवती विदग्धदयिता जगत्प्रिया ख्याता ॥ पापयुते वलहीने त्रिंशांशेनैव पुष्टफलमेति ॥ ३॥ "

अथ शनिभवने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

मन्दालये स्यादिलजे कुजस्य दासी च सौम्यस्य खला हि बाला । बृहस्पतेः स्यात्पतिदेवता स्त्री वन्ध्या भृगोर्नीचरतार्कसूनोः ॥ १२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें शनैश्वरके १० । ११ राशिमें लग्न वा चंद्रमा स्थित होकर मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या दासी होतीहै और वही लग्न चंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह स्त्री दुष्ट

होतीहै और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी पतिदेवता अर्थात् पतिव्रता होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी बाँझ होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शनैश्चरके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी नीच पुरुषोंसे गमन करनेवाली होतीहै ॥ १२ ॥ गुणाकरः–"दासी दुष्टा भर्तृभक्ता च वन्ध्या नीचासक्ता मन्दचन्द्रांशतन्वोः । त्रिंशांशे तु क्ष्मासुतादिग्रहाणामुक्तं ज्ञेयं तत्फलं वीर्ययोगात् ॥" अन्यच्च ग्रंथांतरे "मन्दर्क्षे भौमांशे दासी कुलटा मृतप्रजा वन्ध्या ॥ मन्दांशे संभृता नीचारतिश्च दुर्भगा वनिता ॥ १ ॥ भर्तृप्रिया च सुभगा जीवांशे नैकनामभिः ख्याता । भग्नव्रता च कुलटा बहुमाया सौम्यगस्यांशे ॥ शुक्रांशे प्रभुशीला वंध्या चारित्रलोचना वनिता ॥ त्रिंशांशफलमेवं वक्तव्यं दैवविद्भिरबलायाः ॥ २ ॥"

अथ सूर्यभवने त्रिंशांशवशात्फलम् ।

लग्ने वा विधुरर्कमंदिरगतो भौमस्य खाग्न्यंशके
स्वेच्छासंचरणोद्यता शशिसुतस्यातीव दुष्टाशया ।
देवाधीशपुरोधसो निगदिता सा राजपत्नी भृगोः
पौंश्चल्याभिरताशनेरतितरांपुंवत्प्रगल्भाङ्गना ॥ १३ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्न और चंद्रमा सूर्यके स्थानमें स्थित होकर मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी अपनी इच्छाचारी विचरनेवाली होतीहै और वही

लग्न चंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी अत्यंत दुष्टा होतीहै और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी राजपत्नी होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह कन्या वेश्याकर्ममें तत्पर होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शनिके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी पुरुषके समान प्रगल्भा होतीहै ॥ १३ ॥ तथा च होरामकरन्दे "स्वेच्छाचारा शिल्पिनी सद्गुणाढ्या दुःशीला स्यात्कांतिहा चेंदुराशौ । वाचाटा च ज्ञभके पुंश्चरित्रा भौमे भार्यागम्यगा पुंश्चली च ॥ १ ॥" अन्यच्च"वाचाटा रविभावे कुजभावे जारिणी विदेशरता ॥ कुशला कुशीलदरिद्रा मंदांशे वल्लभा ज्ञेया ॥ १ ॥ पुरुषाकृतिशीलयुता सौम्यांशे कार्यचौरिणी कुलटा ॥ कुपतिप्रियाल्पसुता शुक्रांशे नित्यरोगिणी भवति ॥ २ ॥"

अथ शशिभवने त्रिंशांशवशात्फलमाह ।

चन्द्रागारे स्वाग्निभागे कुजस्य स्वेच्छावृत्तिर्ज्ञस्य
शिल्पे प्रवीणा । वार्चा पत्युः सद्गुणा भार्गवस्य
साध्वी मंदस्य प्रियप्राणहंत्री ॥ १४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके चंद्रमाके स्थानमें ४ लग्न और चंद्रमा स्थित और मंगलके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी अपने इच्छानुसार विचरनेवाली हो और वही लग्न चंद्रमा बुधके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी राजगिरीके काममें चतुर होती है और वही लग्न चंद्रमा बृहस्पतिके त्रिंशांशमें स्थित होय

तो वह नारी अच्छे गुणवाली होतीहै और वही लग्न चंद्रमा शुक्रके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी पतिव्रता होतीहै और वही लग्नचंद्रमा शनैश्वरके त्रिंशांशमें स्थित होय तो वह नारी अपने स्वामीके प्राणोंको नाश करती है ॥ १४ ॥

अन्यच्च ग्रंथांतरे उक्तं च–"शशिभवने भौमांशे स्वच्छंदा कामिनी विनष्टसुता । मंदांशे पतिहीना कृच्छ्रेणोपजीवनं लभते ॥ १ ॥ अल्पसुता क्षीणयुता जीवांशे शिल्पिनी बुधस्यांशे ॥ वंध्या मृतप्रजा वा शुक्रांशेषु दुष्टतमा ॥ २ ॥

चन्द्रार्कस्फुटयोगात्त्रिंशांशफलं विनिर्दिशेत्तस्याः ।
लग्नेंद्वोर्योगवशात्त्रिंशांशबलं विनिर्दिशेदथवा ॥१५॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेव
प्रसादात्मजराजज्योतिषिकपंडितश्यामलाल
विरचिते स्त्रीजातके त्रिंशांशवशात्फलवर्ण-
नो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थ–चंद्रमा और सूर्यके स्पष्ट योगते तिस औरतका त्रिंशांशसे फल कहना चाहिये अथवा लग्न चंद्रमाके बलते त्रिंशांशका फल कहे ॥ १५ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां - श्यामसुन्दरी-
भाषाटीकायां त्रिंशांशफलवर्णनो नाम
चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

अथ स्त्रीस्त्रीमैथुनयोगमाह सारावल्याम् ।
शुक्रासितौ यदि परस्परभागसंस्थौ शौक्रेऽथ दृष्टि-
पथगावुदये घटांशः । स्त्रीणामतीव मदनाग्निमदप्र-
वृद्धः स्त्रीभिः समं च पुरुषाकृतिभिर्लभंते ॥ १ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुक्र और शनैश्वर परस्पर नवांशमें स्थित होवे अर्थात् शुक्रके नवांशमें शनैश्वर और शनैश्वरके नवांशमें शुक्र स्थित होय और अन्योन्य देखते होंय एको योगः । अथवा जन्मलग्न वृष वा तुला होय उसमें कुंभके नवांशका उदय होय तो यह स्त्री अन्य स्त्रीकी जंघामें किसी वस्तुका लिंग बंधाकर उसको पुरुषाकृति बनाकर कामदेवकी अग्निको शमन करातीहै ॥ १ ॥ वराहः "दृक्सं-स्थावसितसितौ परस्परांशे शौक्रे वा यदि घटराशिसम्भवांशः ॥ स्त्रीभिः स्त्रीमदनविषानलं प्रदीप्तं संशांतिं नयति नराकृतिस्थिताभिः ॥ १ ॥ " अन्यच्च होरामकरंदे "सवितृसुतसितौ स्वोन्योन्यभावं प्रयातौ यदि यदि भृगुराशौ लग्नगे कुंभभागे ॥ नरचरितरताभिः पंकजाक्षीभिरुच्चैः शमयति मदनाग्निं योगयुग्मेन योषा ॥ २ ॥ " जातकाभरणे " अन्योन्यभावेक्षणगौ सितार्कौ यद्वा सितर्क्षे तनुगे घटांशे ॥ कन्दर्पशांतिं कुरुते नितांतं नारी नराकारकराङ्गनाभिः ॥ ३ ॥ "

अथ कापुरुषयोगः गर्गजातके ।
शुक्रेऽस्ते दुर्बले यस्याः पापग्रहनिरीक्षिते ।
सौम्यग्रहदृशा हीने भर्ता कापुरुषो भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्नसे सातवां स्थानमें कोई ग्रह न होय और सप्तम स्थान निर्बल होय और सप्तम स्थानको पापग्रह देखता होय शुभग्रहोंकी दृष्टिसे हीन होय तो उस स्त्रीका पति निरुद्यमी, आलसी होताहै ॥ २॥ तथाच वराहः-"शून्ये कापुरुषो बलेस्तभवने सौम्यग्रहाऽवीक्षिते" तथा च ढुंढिराजः-"शून्ये मन्मथमन्दिरे शुभखगैर्नालोकिते निर्बले. बालायाः किल नायको मुनिवरैः कापुरुषः कीर्तितः ॥ १ ॥" गुणाकरः-"शून्ये बले कापुरुषः पतिः स्यात्सौम्यैरदृष्टे स्मरभेऽथ युक्ते ॥ १ ॥"

अथ क्लीबपतियोगः ।

बुधमंदयुतेऽस्ते च पतिः क्लीबसमो भवेत् ॥
वंध्या वा दुर्भगा वापि सा च नित्यं प्रवासिनी ॥ ३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तम स्थानमें बुध, शनि स्थित होंय उस स्त्रीका पति नपुंसकके समान होताहै वह स्त्री बांझ वा दुष्टभाग्यवाली और नित्यही परदेशमें विचरनेवाली होतीहै ॥ ३ ॥वराहः-"क्लीबोऽस्ते बुधमंदयोः"इति । होरामकरंदे-'स्मरभेऽथ युक्ते क्लीबो ज्ञशन्योः'इति । जातकाभरणे "जामित्रं बुधमंदयोर्यदि गृहं पंढो भवेन्निश्चितम् ॥ १ ॥"

अथ प्रवासशीलभर्तृयोगः ।

सप्तमे चरराशिस्थे तदीशे चरमांशके ।
भर्ता प्रवासशीलः स्यात्स्थिरभे स्वगृहे वसेत् ॥ ४ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें लग्नसे सातवें स्थानमें चरराशि १, ४, ७, १०, होवे और सप्तमभावका स्वामी भी चर राशिके नवांशमें स्थित होवे तो उस कन्याका पति हमेसा परदेशमें रहता है और जिसके सप्तम स्थानमें स्थिर राशि स्थित होय और सप्तम भावका स्वामी स्थिर नवांशमें स्थित होय तो उस नारीका पति हमेसा घरही रहता है और सप्तम ३, ६, ९, १२ राशि होवे और सप्तमेश इन्ही राशियोंके नवांशमें स्थित होय तो उस नारीका पति परदेश और घर दोनों जगह रहताहै परंतु बुद्धिमान् पुरुष सप्तमभावस्थित राशिको और सप्तमेशके नवांशस्थित दोनोंको देखकर फलादेश निजबुद्धिबलसे कहे ॥ ४ ॥ वराहः– "चरगृहे नित्यं प्रवसान्वितः" ग्रंथांतरे "राशौ तत्र चरे विदेश निरतो द्व्यंगे च मिश्रा स्थितिः" तथाच "चरभे प्रवासी स्थिरे गृहस्थो द्विरुचिर्द्विमूर्तौ" ॥

अथ पतित्यागयोगः ।

अस्तगेऽर्केऽरिभिर्दृष्टे तथोत्सृष्टा भवेत्स्वयम् ।

अर्थ–जिस औरतके जन्मकालमें जन्मलग्नसे सातवें घरमें सूर्य स्थित होय वह शत्रुओंकरके देखागया होय तो वह कन्या पतिकरके. त्यागी जाती है. उक्तं च जातकाभरणे "सप्तमे दिनपतौ पतिमुक्ता" होरामकरन्दे "त्यक्ता प्रियेणो मकरेस्तसंस्थे" वराहः " उत्सृष्टा रविणा " ॥

अथाक्षतायाः एव रंडायोगः ।

सप्तमस्थे धरासूनौ बाल्ये सा विधवा भवेत् ॥५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके सातवें स्थानमें मंगल स्थित होय वह नारी बालविधवा होतीहै ॥५॥ वराहः "रविणा कुजेन विधवा बाल्येऽस्तराशिस्थिते" गुणाकरः "बाल्येऽपि भौमे विधवा प्रदिष्टा" ग्रंथान्तरे-"क्षोणिजे च विधवा खलु बाल्ये" इति बहूनि वाक्यानि ।

अथ विवाहविहीनतायोगः ।

मन्दे सप्तमराशिस्थे तथा शत्रुनिरीक्षिते ।
कन्यैव विधवा भूत्वा सा जरामधिगच्छति ॥६॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें जन्मलग्नसे सप्तम राशिमें शनैश्चर बैठा होय तैसेही शत्रुग्रह देखते होंय तो वह कन्या ही विना व्याही वृद्धताको प्राप्त होती है ॥ ६ ॥ तथा च "पापखगे च विलोकनयाते मंदगे च युवती जरती स्यात्" अन्यच्च "पापग्रहालोकनवर्गपाते कन्यैव वृद्धा भवतीह भूमौ" उक्तं च " कन्यैवाऽशुभवीक्षितेर्कतनये द्यूने जरां गच्छति " ॥

अथ विधवायोगः ।

अस्तगाः पापखेटाश्चेत्पापर्क्षे विधवा भवेत् ।

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तम स्थानमें पापग्र पापराशियोंमें बैठे होंय तो वह नारी विधवा होती है. तथा " वैधव्यं क्रूरखेटैर्मदनगृहगतैः" बृहज्जातके "आग्नेयैर्विधवास्त

राशिसहितैः" अन्यच्च " कलत्रसंस्थैर्विबलैः खलाख्यैः सौम्यै रदृष्टैर्विभुना विमुक्ता । केचिन्मते " ॥

अथ पुनर्विवाहयोगः ।

द्यूने शुभाशुभैर्युक्ते पुनर्भूः सा भविष्यति ॥ ७ ॥

अर्थ–जिस औरतके सप्तमस्थानमें शुभाशुभग्रह बैठे होंय वह कन्या दोवार विवाही जाती है ॥ ७ ॥ वराहः–"मिश्रैः पुनर्भूर्भवेद" तथा "मदनगृहगतैर्विमिश्रैः स्यात्पुनर्भूः" ग्रन्थान्तरे " कांताविमिश्रैश्च भवेत्पुनर्भूः " ॥

अथ पतित्यक्तयोगः ।

बलहीनेस्तगे पापे सौम्यग्रहनिरीक्षिते ।
भर्त्रा वियुज्यते नारी नीचारिस्थे च स्वैरिणी ॥ ८ ॥

अर्थ–जिस औरतके जन्मकालमें बलकरके रहित सप्तम स्थानमें पापग्रह स्थित होय और उसको शुभ ग्रह नहीं देखते होंय वह नारी पतिकरके त्याग करी जाती है और वही पापग्रह सप्तमभवनमें नीचराशिस्थित वा शत्रुराशिस्थित होय तो वह व्यभिचारिणी होती है ॥ ८ ॥ गुणाकरः "पापेऽस्तो वीर्ययुक्ते भवति परिहृता प्रेयसा सौम्यदृष्टे" वराहः" क्रूरे हीनबलेऽस्तगे स्वपतिना सौम्येक्षिते प्रोज्झिता" तथाच"कलत्रसंस्थेविबले खलाख्ये सौम्येन दृष्टे पतिना विमुक्ता" ॥ ३ ॥ "

अथ परपुरुषगामिनीयोगो गर्गजातके ।
अन्योन्यांशे सितारौ चेज्जारसक्ता भवेद्वधूः ।

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकाल शुक्रके नवांशमें मंगल और मंगलके नवांशमें शुक्र स्थित हो तो वह नारी परपुरुषगामिनी होती है । यथा " अन्योन्यांशस्थयोश्च क्षितिसुतसितयोर्बंध-की योषिदुक्ता"वराहः"अन्योन्यांशगयोः सितावनिजयोर-न्यप्रसक्तांगना" होरामकरन्दे "अन्योन्यांशावस्थितौ भौम-शुक्रौ स्यातां कांता संगतान्येन नूनम् ॥ "

अथ पत्याज्ञया दुश्चरीयोगः ।

तथैव सप्तमे चंद्रे दुश्चरी पत्युराज्ञया ॥ ९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तमस्थानमें शुक्र चंद्रमा मंगल स्थित होय वह नारी अपने पतिकी आज्ञासे परपुरुषमें रत होतीहै ॥ ९ ॥ उक्तं च जातकाभरणे "चंद्रोपेतौ शुक्र वक्रौ स्मरस्थावाज्ञामेव स्वामिनश्चामनंति" अन्यच्च "चंद्रो-र्वीसूनुशुक्रौ यदि मदनगृहे प्रेयसोनुज्ञया तु" वराहः "द्यूने वा यदि शीतरश्मिसहितौ भर्तुस्तदानुज्ञया" इति वचनात् ।

अथ वन्ध्यायोगः ।

मंदारार्कविलग्नस्थौ शशिशुक्रौ यदा तदा ।
वन्ध्या भवति सा नारी पंचमे पापदृग्युते ॥ १० ॥

अर्थ--जिस नारीके जन्मकालमें शनि भौम रविकी राशिमें जन्म लग्न होय उसमें शशि और शुक्र बैठे होंय

जब पंचमस्थान पाप ग्रहोंकी दृष्टिसहित होय तो वह नारी वंध्या होतीहै ॥ १० ॥

अथ योनिव्याधियोगः ।

अर्कराशिगते भौमे सूर्य्यांशे स्वांशगावपि ।
सौरे कुजे क्रमाद्दृष्टे व्याधियोनिश्च दुर्भगा ॥ ११ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकाल सिंहके नवांशमें सप्तम मंगल बैठा होय १, अथवा सूर्य मंगल अपने नवांशमें सप्तम स्थित होंय २, वा सप्तम भावमें मंगल स्थित होवे वह शनैश्चरकरके युक्त वा दृष्ट होवे उस स्त्रीकी भगमें रोग होता है और वह खोटे भाग्यवाली होती है ॥ ११ ॥ तद्यथा " स्मरे कुजे सार्कसुतेन दृष्टे विनश्ययोनिश्च शुभाऽशुभांशे " तथाच ' कौजेशके मदगते शनिवीक्षिते च रुग्योनिरुत्तमदृशा शुभगाशुभांशे' अन्यच्च 'कौजेऽरंशे स्वैरिणीव्याधियोनिः' इति।

चारुयोनियोगः ।

अस्तर्क्षे शुभदृष्टे च शुभस्यांशे शुभेक्षिता ।
चारुश्रोणी प्रिया भर्तुर्वल्लभा भवने वधूः ॥ १२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तमस्थानस्थित राशिको शुभ ग्रह देखते होंय १ एको योगः, अथवा सप्तम स्थानमें शुभ ग्रहके नवांशाका उदय और उसको शुभग्रह देखते होंय तो उस स्त्रीकी भग श्रेष्ठ, भर्त्ताके प्यारी, स्थानमें वह नारी सबको प्रिय होती है ॥ १२ ॥ " चारुश्रोणी वल्लभा सद्ग्रहांशे " इति।

अथ मात्रा सह व्यभिचारि-
णीयोगः गुणाकरः ।

मंदारभे तनुगते ससुतोडुनाथो मात्रा सहैव कुलटाऽखिलखेटदृष्टे ॥ १३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें । १० । ११ । १।८ । इन राशियोंमें शुक्रके सहित चंद्रमा जन्मलग्नमें स्थित होय पापग्रह देखते होंय तो वह नारी माताकरके सहित व्यभि-चारिणी होती है ॥ १३ ॥ वराहः " सौरारर्क्षे लग्नगे सेन्दु-शुक्रे मात्रा सार्द्धं बंधकी पापदृष्टे " जातकाभरणे " लग्ने सितेन्दू कुजमन्दभस्थौ क्रूरेक्षितौ सान्यरता जनन्या" इति ।

अथ सप्तमभावगे स्वांशे सूर्यफलम् ।
अंस्तेर्कें स्वांशगे स्वर्क्षे भर्ता रतिपरो मृदुः ।

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सूर्य अपनी राशिनवांशमें ..त जन्मलग्नसे सप्तम बैठा होय उस कन्याका पति संभोग करनेमें मीठा होता है । वराहः "अतिमृदुरतिकर्मकश्च सिंहे भवति गृहेस्तमुपस्थितेऽशके वै" गुणाकरः "भानोरंशेऽथ राशौ मृदु रतिः" जातकाभरणे "भानोर्भे यदि वा लवाः स्मरगृहे संभोगमंदः पतिः" ।

अथ सप्तमभावे स्वांशगे चंद्रफलम् ।
चंद्रेस्ते स्वर्क्षगे स्वांशे मृदुः स्मरवशः पतिः ॥१४॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें अपनी राशि नवांशमें चंद्रमा सप्तम स्थित होयं तो उस नारीका पति कामके वश कोमल होता है ॥ १४ ॥ यथा-"चंद्रस्यातिमदो मृदुः" तथाच "मदनवशगतो मृदुश्चन्द्रे" ॥

अथ सप्तमस्थे स्वांशगे भौमफलम् ।

भौमेऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे स्त्रीलोलो निर्धनः पतिः ।

अर्थ-जिस स्त्रीक सप्तमभवनमें मंगल अपनी राशिनवांशमें स्थित होय उस नारीका पति स्त्रियोंको प्यारा धनहीन होता है यथा "क्षितिसुतस्य स्त्रीप्रियः क्रोधयुक्" तथाच "स्त्रीलोलः स्यात्क्रोधनश्चावनेयः" अन्यच "कुसुवः क्रोधनः स्त्रीषु लोलः"

अथ सप्तमस्थे स्वांशगे बुधफलम् ।

सौम्येऽस्ते स्वांशके क्षेत्रे भर्ता विद्वान्भवेत्सुखी १५॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तम भावमें बुध अपनी राशिनवांशमें स्थित होय तो उस कन्याका पति पंडित सुखी होता है ॥ १५ ॥ यथा "बौधे विद्वान्सुदक्षः" तथा च "विद्वाञ्ज्ञस्य" अन्यच "विद्वान्भर्ता नैपुणश्चैव बौधे" इति ॥

अथ सप्तमभावे जीवस्य राशिनवांशफलम् ।

जीवेऽस्ते स्वांशके स्वर्क्षे गुणवान्विजितेंद्रियः ।

अर्थ-जिस स्त्रीके सप्तम स्थानमें बृहस्पतिकी राशि नवांशका उदय होय उस कन्याका पति गुणवान् जितेंद्रिय होताहै ॥ अन्यच "गुरोर्वशी गुणयुतः" इति ।

अथ सप्तमभावे शुक्रस्य राशिनवांशफलम् ।
शुक्रेस्ते स्वांशके क्षेत्रे कन्येशो भाग्यवान्भवेत् ॥१६॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें सप्तमभावमें शुक्रकी राशिनवांशका उदय हो तो वह नारीका पति भाग्यवान् होताहै॥१६॥ यथा"शौक्रे सौभाग्ययुक्ता" अन्यच "शुक्रस्य भाग्यान्वितः" तद्यथा–"शौक्रे कान्तोऽतीव सौभाग्ययुक्तः ॥"

अथ सप्तमभावे शनिराशिनवांशफलम् ।
मंदेस्ते स्वांशके क्षेत्रे वृद्धो मूर्खो भवेत्पतिः ।
एवं सप्तमराशिस्थैर्ग्रहैर्नृणां वदेत्फलम् ॥ १७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके सप्तम घरमें शनैश्चरकी राशिनवांशका उदय होय उस स्त्रीका पति बूढा और बेवकूफ होता है इस प्रकार सप्तमभावस्थित ग्रह और राशियोंका फल स्त्रियोंके जन्मकालमें कहे ॥ १७ ॥

अस्तराशिफलं प्रोक्तं लग्नराशिफलं तथा ।
भवत्येव हि दंपत्योर्ग्रहयोगबलाद्भवेत् ॥ १८ ॥

अर्थ–सप्तमभावस्थित राशिका फल कहा इसी प्रकार पुरुषके लग्नराशिका फल जानो इस प्रकार स्त्रीपुरुषके ग्रहोंके योगके बलकरके फल कहना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ सप्तमराशिस्थितग्रहफलम् ।
शुक्रेन्दू स्मरगौ स्त्रियं प्रकुरुतः सेर्ष्यां सुखेनान्वितां
सौम्येंदू च कलासुखोत्तमगुणां शुक्रेन्दुपुत्रावथ ॥

चंचन्द्रागयकलाज्ञताभिरुचिरां सौम्यग्रहेंद्रास्तनो
नानाभूषणसद्गुणाम्बरसुखां पापग्रहैस्त्वन्यथा ॥ १९ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुक्र चंद्रमा सातवें घरमें बैठे होंय वह नारी ईर्ष्यासहित सुख करके युक्त होती है और बुध चंद्रमा सप्तम स्थानमें बैठे होंय तो वह नारी उत्तम कला ओंकरके सहित श्रेष्ठ गुणवती होती है और जो सप्तमस्थानमें शुक्र बुध स्थित होय तो वह नारी प्रकाशवान् भाग्यकी चातुरी कलाओंको जाननेवाली शोभायमान होतीहै और जिस स्त्रीके शुभग्रह जन्मलग्नमें बैठे होंय तो वह नारी अनेक प्रकारके भूषण और वस्त्र उत्तम गुण और सुखोंकरके सहित होती है और जो पाप ग्रह लग्नमें होय तो विपरीत फल नेष्ट देते हैं ॥ १९ ॥

यथा होरामकरन्दे "शुक्रेंदू चेत्तु लग्ने भवंति सुखपरा स्त्री बुधेन्द्वोः कलाज्ञा सौख्योपेता गुणाढ्या भृगुसुतबुधयोश्चारुमूर्तिः प्रदिष्टा ॥ त्रिष्वप्येतेष्वनेकद्रविणसुखगुणैरन्विता सत्सु चैवम्" इति । वराहः "ईर्ष्यान्वितासुखपरा शशिशुक्रलग्ने ज्ञेंद्वोः कलासु निपुणा सुखिता गुणाढ्या ॥ शुक्रज्ञयोस्तु सुभगा रुचिरा कलाज्ञा त्रिष्वप्यनेकवसुसौख्यगुणा शुभेषु ॥"

अथ पितृगृहे सौख्यवतीयोगः ।

सौम्यक्षेत्रोदये चन्द्रे युक्ते शुक्रेण सा वधूः ।
सुखी पितृगृहे नारी नित्यमस्थिरचारिणी ॥ २० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बुधके क्षेत्रमें चंद्रमाका उदय होय शुक्रकरके युक्त होय तो वह नारी हमेशा पिताके घरमें सुखी रहती है और नित्यही चंचलचारिणी होती है ॥२०॥

अथ ब्रह्मवादिनीयोगः ।

चन्द्रज्ञौ यदि लग्नस्थौ कुलाढ्या ब्रह्मवादिनी ।
ज्ञशुक्रौ यदि लग्नस्थौ समस्थाने कुलाढ्यता ॥२१॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें चंद्रमा और बुध लग्नमें स्थित होय वह नारी कुलाढ्या ब्रह्मविचार करनेवाली होतीहै और जिसके बुध शुक्र लग्नमें स्थित होंय और समस्थानमें होंय तो वह नारी ब्रह्मवादिनी कुलाढ्या होतीहै ॥ २१ ॥

तथा च होरामकरन्दे ।

सितारजीवेन्दुसुतेषु शक्त्या युक्तेषु लग्नेऽपि च युग्मराशौ॥
अनेकशास्त्रागमवेदिनी सा स्त्री ब्रह्मवादिन्यवनौ प्रसिद्धा ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुक्र मंगल बृहस्पति बुध बलकरके सहित समराशिमें लग्नमें स्थित होय वह नारी अनेकशास्त्रोंके जाननेवाली वेदवेदांतकी वक्ता ब्रह्मवादिनी-करके धरतीपै विख्यात होतीहै ॥ २२॥ उक्तंच जातकाभरणे "समे विलग्ने यदि संस्थिताः स्युर्बलान्विताः शुक्रबुधेंदुजीवाः । स्यात्कामिनीब्रह्मविचारचर्चोपरागमज्ञानविराजमाना ॥ १ ॥ ", तथाच बृहज्जातके " जीवारास्फुजिदैंदवेषु बलिषु प्राग्लग्नराशौ समे विख्याता भुवि नैकशास्त्रनिपुणा स्त्री ब्रह्मवादिन्यपि ॥ १ ॥"

अथ बहुगुणान्वितयोगः ।

चांद्रिचंद्रसिता लग्ने बहुसौख्यगुणान्विता ।
जीवे लग्नेऽतिसंपन्ना पुत्रवित्तसुखान्विता ॥ २३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बुध चंद्रमा शुक्र लग्नमें स्थित होय तो वह नारी बहुत सुखगुणोंकरके युक्त होती है और बृहस्पतिकरके युक्त पूर्वोक्त ग्रह होय तो वह नारी पुत्र और धन सुखसहित होती है ॥ २३ ॥ तथाच गुणाकरः-"सौरूप्योपेता गुणाढ्या भृगुसुतबुधयोश्चारुमूर्त्यां प्रदिष्टा त्रिष्वप्येतेष्वनेकद्रविणसुखगुणैरन्विता सत्सु चैवम्" इति ॥

अथ विधवायोगः ।

क्रूरेऽष्टमे च विधवा पापक्षेत्रे विशेषतः ।

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें पापग्रह जन्मलग्नते अष्टम स्थित होय वह नारी विधवा होतीहै और वही पापग्रह अष्टमस्थानमें स्थित पापग्रहोंकी राशिमें होय तो विशेष करके विधवा होती है ॥

अशुभोऽपि शुभप्रदयोगः ।

क्षेत्रोच्चसंस्थिता लग्ने अशुभास्ते शुभप्रदाः ॥ २४ ॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें उच्चराशिमें पापग्रह लग्नमें होय तो शुभफलके दाता होते हैं ॥ २४ ॥

तथा च ग्रंथांतरे विधवायोगः ।

वैधव्यं स्यात्पापखेटेऽष्टमस्थे ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें पापी ग्रह स्थित होंय तो विधवा होतीहै ॥

अथ मृत्युकालयोगः ।

रंध्रस्वामी संस्थितो यस्य चांशे
मृत्युः पाके तस्य वाच्योऽङ्गनायाः ॥

अर्थ–और अष्टम स्थानका स्वामी जिस ग्रहके नवांशमें स्थित हो तिस ग्रहकी दशामें उस स्त्रीकी मृत्यु कहना चाहिये॥

अथ निजदोषेण मृत्युयोगः ।

सौम्यैरर्थस्थानगैः स्यात्स्वयं हि ॥ २५ ॥

अर्थ–और शुभग्रह जिसके द्वितीयभावनमें स्थित होंय तो वह कन्या अपने दोष करके मरती है ॥ २५ ॥ तथा च वराहः–"क्रूरे मृत्युगते भवेद्विधवता यस्यांशके मृत्युपः पाके तस्य शुभेषु चार्थभवने तस्याः स्वयं पंचता" इति । अन्यच्च "क्रूरेऽष्टमे विधवता निधनेश्वरांशो यस्य स्थितो वयसि तस्य समे प्रदिष्टा । सत्स्वर्थगेषु मरणं स्वयमेव तस्याः" ॥

अथ भर्तुः प्राङ्मृत्युयोगः ।

निधनस्थे हीनचन्द्रे दशायां निश्चितं भवेत् ।
सौम्येऽष्टमस्थे कन्याया भर्तुः प्रागेव संमृतिः॥२६॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें हीन चंद्र सूर्य मंगल शनि हों तो वह स्त्री विधवा होती है पूर्वोक्त ग्रहकी दशा

अंतर्दशामें निश्चय विधवा होती है और जिस कन्याके शुभग्रह अष्टम बैठे होयँ वह नारीकी भर्ताके पहिले मृत्यु होतीहै २६॥

अथ पतिपत्नीतुल्यकालमृत्युयोगः ।

पापसौम्ययुते तस्मिन्समकाले पतो मृतिः ।
बलाबलं तयोर्ज्ञात्वा पुरुषेषु विनानता ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें पापी और शुभग्रह अष्टम स्थानमें स्थित होय तब वह नारी और पति दोनों तुल्य कालमें मृत्युको प्राप्त होते हैं स्त्रीपुरुष दोनोंके ग्रहोंका बल जानके विद्वान् फल कहे ॥

तथा च जातकाभरणे तुल्यमृत्युयोगः ।

रंध्रे मिश्रबले शुभाशुभखगैरालोकिते वा युते
दंपत्योः समकालमृत्युमखिलज्योतिर्विदः संविदुः ॥
एकस्थो मदलग्नपौ च यदि वा लग्नास्थिते कामपे
कामस्थे तनुपे शुभग्रहयुते मृत्युस्तयोस्तुल्यतः २७ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मलग्नमें अष्टमस्थानमें पापी और शुभग्रह मध्यबली होकर स्थित होवे और अष्टमस्थानको देखते होयँ तो वे स्त्रीपुरुष दोनों एककालमें मृत्युको प्राप्त होते हैं इस प्रकार ज्योतिःशास्त्रज्ञाता कहते हैं अथवा एक स्थानमें सप्तमेश और लग्नेश स्थित होय, अथवा लग्नेश सप्तम और सप्तमेश लग्नमें स्थित होय शुभग्रहकरके युक्त होय तो वह नारीपुरुषकी एककालमें मृत्यु होती है ॥ २७ ॥

अथ दीर्घायुर्योगः ।

भाग्यस्थाने सिते सौम्ये सपापे चाष्टमेऽपि वा ।
भर्तृपुत्रसुतासार्धं बहुकालं च जीवति ॥ २८ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें भाग्यभवनमें शुक्र बुध और पापग्रहोंसहित अष्टमस्थित होय तो वह नारी पति, पुत्र, कन्यासहित बहुत कालपर्यंत जीती है ॥ २८ ॥

अथाल्पपुत्रायोगः ।

धनुःकर्कयमे लग्ने भर्तृपुत्रादिदुःखदा ।
सिंहालिवृषकन्यासु चंद्रे तिष्ठति पंचमे ॥ २९ ॥
अल्पापत्यं विजानीयात्पुरुषेषु तदा वदेत् ॥ ३० ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें धन, कर्क, मकर, कुम्भ लग्न स्थित होवे वह कन्या भर्तापुत्रादिकोंको दुःखदेती है वा उनसे आप दुःख पाती है और जिस कन्याके सिंह, वृश्चिक वृष, कन्याराशिमें चंद्रमा पंचम स्थित होय वह कन्या थोडे पुत्रवाली कहना चाहिये ॥ २९ ॥ ३० ॥ होरा मकरंदे "कन्यासिंहालिगोषु स्थितवति शशिनि स्वल्पपुत्रा प्रदिष्टा" अथ वराहः 'कन्यालिगो हरिषु चाल्पसुतत्वमिन्दोः' उक्तं च जातकाभरणे "कन्यालिगे सिंहगते शशांके पंकेरुहाक्षी खलु साल्पपुत्रा" इति ।

अथ बहुपुत्रवतीयोगः ।

सुताख्यं चेच्छुभखेचरेन्द्रैर्दृष्टं युतं वा बहुता च तेषाम् ।

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें पंचमस्थानमें शुभग्रह स्थित होंय वा देखते होंय तो वह नारी बहुत पुत्रोंवाली होती है। तथा च गर्गजातके "सौम्यग्रहैः सुतगतैर्बहुप्रसवमादिशेत्॥ कन्याप्रदानकाले तु शोक्तमार्ग विचिंतयेत्" ॥

अथ बहुदुःखान्वितयोगः ।

लग्नाच्चाष्टमभावस्थैःपापैर्दुःखफलान्विता ।
सौम्यग्रहैरसंमिश्रैः सर्वथा क्लेशमाप्नुयात् ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्नसे अष्टमस्थानमें पाप ग्रह स्थित होय वह नारी हमेशा दुःखयुक्त होती है उसी अष्टमस्थानमें शुभग्रह पापग्रह दोनों स्थित होंय तो भी वह नारी हमेशा क्लेश भोगती है ॥ ३१ ॥

अथ पुंश्चेष्टितयोगः ।

रिक्ते बुधेन्दुभृगुजे रविजे च मध्ये शेषैर्बलेन सहितैर्विषमक्षेलग्ने ॥ जाता भवेत्पुरुषरूपिणी युवतिः सदैव पुंश्चेष्टिताच्च चरति प्रथिता च लोके ॥ ३२ ॥

अर्थ-तिस स्त्रीके जन्मकालमें बुध चंद्रमा शुक्र बलहीन होय और शनैश्चर मध्यमबली होय वाकीके सम्पूर्ण ग्रह बलवान् होंय विषमराशियोंमें स्थिति होंय १ । ३ । ५ । ७ । ९ ११ ऐसे योगमें उत्पन्न भई कन्या पुरुषोंकेसे स्वभाववाली स्त्रियोंके चरित्रोंमें अग्रणीय संसारमें होती है ॥ ३२ ॥

अन्यच्च ग्रंथान्तरे योगमाह ।

शुक्रेन्दुसौम्या विरला भवेयुः शनैश्चरो मध्यबलो
यदि स्यात् । शेषास्सवीर्या विषमे च लग्ने योषा
विशेषात्पुरुषप्रगल्भा ॥ ३३ ॥

अर्थ–शुक्र चंद्रमा बुध निर्बल होंय शनि मध्यबली होय शेष ग्रह बली होकर विषमराशिमें स्थित होंय तो वह नारी विशेष करके प्रगल्भ पुरुषके समान स्वभाववाली होती है॥ ३३॥ तथा च होरामकरंदे–"निर्वीर्यैः सितचंद्रविद्भिरसितैर्मध्यं बलं संश्रिते लग्ने ओजगृहे भवेत्पुरुषिणी शेषैश्च वीर्योत्कटैः" उक्तं च बृहज्जातके "सौरे मध्यबले बलेन रहितैः शीतांशुशुक्रेन्दुजैः शेषैर्वीर्यसमान्वितैः पुरुषिणी यद्योजराश्युद्गमे ॥ १ ॥"

अथ संन्यासिनियोगमाह ।

क्रूरे यामित्रगते नवमे यदि खेचरा भवंति नूनम् ।
प्रव्रज्यामाप्नोति नवमे ग्रहसंभवो नैव ॥ ३४ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तम घरमें पापीग्रह स्थित होंय और नवमस्थानमें जो ग्रह निश्चय करके होय तो वह नारी फकीरी लेती है परंतु नवमस्थानमें जो ग्रह स्थित होय उसी ग्रहके समान फकीरी लेती है जैसे सूर्य बली होय तो तप करनेवाली, चंद्रमासे कपालिनी, मंगलसे गेरुएवस्त्र धारण करनेवाली, बुधकरके दंडिनी, बृहस्पति करके कपालिनी. शुक्रकरके चक्रधारण करनेवाली, शनि करके

नंगी होती है. ऐसे योग विवाहसे पहले और जन्म-पत्र मेलनके समय अथवा वरवरण करनेके समय अर्थात् कन्यादानसे पहिले अवश्य देखलेना चाहिये ॥ ३४ ॥ तथाच वराहः"पापेऽस्ते नवमगतग्रहस्य तुल्या प्रव्रज्या युवति-रुपैत्यसंशयेन ॥ उद्वाहे वरणविधौ प्रदानकाले चिंत्यं तत्सकलं विधेयमेतत् ॥" अन्यच्च ग्रंथांतरे "अस्ते पापे लग्नपाते ग्रहोक्ता प्रव्रज्या स्यात्स्त्रीपतेः संशयो न । दानोद्वाहे प्रश्नकालेषु चैवं चिंत्यं सर्वं होरिकैस्तत्र युक्त्या " ॥ १ ॥ जो संन्यासयोग लाभ पहिले कह आये हैं वे स्त्रीको प्रव्रज्या कदाचित् न करें तो उसके पतिको संन्यासी करते हैं ऐसाभी किसी २ आचा-र्यका मत है ॥ १ ॥ तथाच ढुंढिराजः " पापे स्मरस्थे न खगे च धर्मे किलाङ्गना प्रव्रजितत्वमेति" इति ।

अथ शास्त्रज्ञयोगमाह ।

बलिभिर्बुधगुरुशुक्रैः शशांकसहितैर्विलग्नगे शशिभे ।
स्त्री ब्रह्मवादिनी स्यादनेकशास्त्रेषु कुशला च ॥ ३५॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बुध, बृहस्पति, शुक्र, चंद्रमा, बलसहित जन्मलग्नमें चंद्रमाकी राशिमें स्थित होंय तो वह स्त्री ब्रह्मवादिनी करके विख्यात सर्वशास्त्रोंमें कुशल होती है ॥ ३५ ॥

अथ विषकन्यायोगः यवनजातके ।

भाद्रा तिथिर्यदाश्लेषा शततारा च कृत्तिका ।
मन्दाररविवारेषु विषकन्या प्रजायते ॥ ३६ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें द्वितीया तिथि आश्लेषा नक्षत्र शनैश्चर वार एको योगः । सप्तमी तिथि शतभिषानक्षत्र मंगलवार द्वितीयो योगः । द्वादशीतिथि कृत्तिकानक्षत्र रविवार तृतीयो योगः । ऐसे योगोंमें पैदा भई कन्या विषकन्या कहलाती है पतिको नाश करतीहै ॥ ३६ ॥ तथाच "द्वादशी वारुणं सूर्ये विशाखा सप्तमी कुजे ॥ मंदे श्लेषा द्वितीया च जायते विषकन्यका" ॥ तथाच जातकालंकारे " भौजंगे कृत्तिकायां शतभिषाजे तथा सूर्यमंदारवारे भद्रासंज्ञे तिथौ या किल जननमियात्सा कुमारी विषाख्या " ॥ तथा च मुहूर्तगणपतिः "सूर्यभौमार्किवारेषु तिथिभद्राशताभिधम् ॥ आश्लेषा कृत्तिका चेत्स्यात्तत्र जाता विषांगना ॥ १ ॥"

तथा च मुहूर्त्तगणपतिः ।

जनोलंग्ने रिपुक्षेत्र संस्थितः पापखेचरः ।

द्वौ सौम्यावपि योगेऽस्मिन्संजाता विषकन्यका॥ ३७॥

अर्थ–जिस कन्याकी जन्मलग्नमें शत्रुक्षेत्री पापग्रह दो स्थित होय और लग्नमें शुभ ग्रह होय उसमें एक पापी ग्रह होय ऐसे योगमें पैदाभई स्त्री विषांगना होतीहै ॥ ३७ ॥ तथाच त्रैलोक्यप्रकाशे " रिपुक्षेत्रस्थितौ द्वौ तु लग्ने यत्र शुभग्रहैः । क्रूरश्चैकस्तदा जाता भवेत्स्त्री विषकन्यका ॥ १ ॥ " अन्यच जातकालंकारे " लग्नस्थौ सौम्यखेटावशुभगगनगश्चैक आसीत्ततो द्वौ वैरिक्षेत्रानुयातौ यदि जनुषि तदा सा कुमारी विषाख्या ॥ १ ॥

अन्यच्च विषाङ्गनायोगः जातकालंकारे ।

मन्दाश्लेषा द्वितीया यदि तदनु कुजे सप्तमी वारुणर्क्षे द्वादश्यां च द्विदैवं दिनमणिदिवसे यज्जनिः सा विषाख्या । धर्मस्थो भूमिसूनुस्तनुसदनगतः सूर्य्यसूनुस्तदानीं मार्तण्डः सूनुयातो यदि जनिसमये सा कुमारी विषाख्या ॥ २८ ॥

अर्थ–शनैश्चर, आश्लेषानक्षत्र, द्वितीयातिथि, एको योगः । मंगलवार, शतभिषानक्षत्र, सप्तमी तिथि, द्वितीयो योगः । द्वादशी तिथि, विशाखानक्षत्र, रविवार दिन, तृतीयो योगः । इन तीनों योगोंमें पैदा भई कन्या विषकन्या कहलाती है १ । और जिसके जन्म कालमें नवमस्थानमें मंगल और लग्नमें शनैश्वर और सूर्य पंचम स्थानमें प्राप्त होय ऐसे योगमें पैदा भई कुमारी विषाङ्गना कहलातीहै ॥ २८ ॥ तथाच योगजातके "लग्ने सौरी रविः पुत्रे धर्मस्थे धरणीसुते । अस्मिन्योगे तु जाता स्त्री सा भवेद्विषकन्यका ॥ १ ॥ " तद्यथा मुहूर्तगणपतिः " लग्ने शनैश्चरो यस्याः सुतेऽर्को नवमे कुजः । विषाख्या सापि नोद्वाह्या त्रिविधा विषकन्यका ॥ १ ॥ "

अथ विषकन्यादोषापवादः ।

लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च । द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाङ्गनाख्यम् ॥ २९ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें लग्नते अथवा चंद्रमाते शुभग्रह वा सप्तमभावका स्वामी सप्तम भावमें बैठा होय तो विधवादोष निःसंतानदोष और विषाङ्गनादोषको नाशकरता है ॥ ३९ ॥

उक्तं च जातकालंकारे ।

लग्नादिन्दोः शुभो वा यदि मदनपतिर्हूनपापी विषाख्या
दोषं चैवानपत्यं तदनु च नियतं हन्ति वैधव्यदोषम् ।
इत्थं ज्ञेयं ग्रहज्ञैः सुमतिभिरखिलं योगजातं ग्रहाणा-
मार्यैरार्यानुमत्या गतमिह गदितं जातके जातकानाम् ॥

अर्थ–लग्नते वा चंद्रमाते शुभग्रह सप्तम बैठा होय एको योगः । अथवा लग्न चंद्रमाते सप्तमस्थानपति सप्तम बैठा होय तो विषांगनादोष निःसंतान दोष वैधव्यदोषको निरंतर नाश करताहै. इस प्रकार ज्योतिषशास्त्रके ज्ञाताओंकरके जान कर बुद्धिमान् ग्रहोंके योगकरके सम्पूर्ण प्राचीन ऋषियोंकी अनुमति लेकर मनुष्योंके जन्मकालमें कहना चाहिये ॥ ४० ॥

विषकन्यादोषपरिहारः मुहूर्तगणपतिः ।

सावित्र्याश्च व्रतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये ।
अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तां चिरजीविने ॥ ४१ ॥

अर्थ–जो किसी स्त्रीके जन्मकालमें विधवा या विषाङ्गना दोष होय तो वह कन्या सावित्रिका व्रत विधवादोषनिवृत्तिके लिये करे अथवा उस कन्याका वरके साथ विवाह कर-

नेके पहिले पीपल वृक्ष अथवा शालग्राम या विष्णु मूर्तिके साथ विवाह करके फिर दीर्घजीवी वरको कन्यादान करें ॥ ४१ ॥

अथ वंध्यायोगः ।

रन्ध्रगौ सूर्यचंद्रौ चेद्विजग्यान्निजराशिगे ॥ वन्ध्या-

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें सूर्य चंद्रमा अपनी राशिमें स्थित होवें तो कन्या बाँझ होतीहै ॥

अथ काकवन्ध्यायोगः ।

-ऽष्ट चन्द्रमाः सौम्यः काकवंध्या तदा भवेत् ॥ ४२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें लग्नसे अष्टम स्थानमें चंद्रमा बुध अपनी राशिमें स्थित होय वह नारी काकवंध्या अर्थात् एकवारप्रसूता होतीहै ॥ ४२ ॥

अथ वन्ध्यायोगः वीरजातके ।

शनिभौमगृहे लग्ने चंद्रे च सितसंयुते ।
पापदृष्टेऽथ सा नारी वन्ध्यात्वमुपगच्छति ॥ ४३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें शनैश्वर वा मंगलके घरकी राशिमें १०।११।१।८ चंद्रमा शुक्र सहित स्थित होय और पापग्रहों करके दृष्ट होय तो वह नारी बाँझ होती है ॥ ४३ ॥

अथ मृतप्रजायोगः ।

रवौ मृतप्रजा प्रोक्ता राहुणापि तथैव च ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें सप्तम सूर्य व राहु बैठा

होय उसको शनि देखता होय तो उस नारीके संतान पैदा होकर मरजावे ॥

अथ कन्याजन्मयोगः ।

चंद्रे बुधे तु सा नारी कन्याजन्मवती भवेत् ॥ ४४ ॥

अर्थ–जिस नारीके सप्तम चंद्रमा बुध बैठा होय उसको शनैश्चर देखता होय तो वह नारी कन्याओंकी औलाद पैदाकरै ४४

अथ गर्भस्रावयोगः ।

सप्तमस्थः कुजश्चैव दृष्टः सौरेण सोऽपि चेत् ।
गलद्गर्भा तु सा ज्ञेया शनौ रोगयुतप्रजा ॥ ४५ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें सातवें घरमें मंगल बैठा होय उसको शनि देखता होय तो वह नारी गर्भस्रवा होतीहै और सप्तमस्थानमें मंगल स्थित होय शनैश्चरयुक्त होय तो उस नारीके रोगी संतान पैदा होय ॥ ४५ ॥

अन्यच्च मृतप्रजायोगः ।

मृतापत्या च शुक्रेज्यौ–

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें शुक्र बृहस्पति स्थित होय तो उस स्त्रीको मृतसंतान होतीहै ॥

अन्यच्च गर्भस्रावयोगः ।

–सारो गर्भस्रवा भवेत् ॥ ४६ ॥

अर्थ–और अष्टमस्थानमें शुक्र बृहस्पति मंगल स्थित होय तो गर्भस्रवा योग होताहै ॥ ४६ ॥

अथ रण्डायोगः ।

व्ययाष्टगे कुजे क्रूरयुते राहौ सलग्नगे ।
रंडाथ लग्नगे सूर्ये सभौमे दुर्भगा शनौ ॥ ४७ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें बारहवें आठवें मंगल पापग्रहसहित और राहु पापयुक्त लग्नमें बैठा होय सो नारी रांड होतीहै और जिसके जन्मलग्नमें सूर्य मंगल होय तोभी रंडा होतीहै और पूर्वोक्तयोग होते शनैश्चरयुक्त होय तोभी दुर्भगा विधवा होती है ॥ ४७ ॥

अन्यच्च रंडायोगः ।

मूर्तौ राहर्कभौमेषु रंडा भवति कामिनी ।
एषु शुक्रे द्वितीयस्थे पतिमन्यं चिकीर्षति ॥ ४८ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें जन्मलग्नमें राहु सूर्य मंगल स्थित होय तो वह नारी विधवा होती है और पूर्वोक्त योग हो तो दूसरे घरमें शुक्र स्थित होय तो वह नारी विवाहके बाद अन्य पतिकी इच्छा करती है ॥ ४८ ॥

अथ भर्तुरग्रे मृत्युयोगः ।

तथाष्टगाः क्रूरखगा विलग्नाद्वितीयगा शोभन-
खेचरास्तु । सा भर्तुरग्रे म्रियते च नारी गोसिंह-
कौपद्रुगतेऽल्पपुत्रा ॥ ४९ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्नसे अष्टमस्थानमें

पापग्रह बैठे होय और दूसरे स्थानमें शुभग्रह बैठे होयँ सो नारी भर्ताके आगे मृत्युको प्राप्त होती है और जिसके सिंह वृष वृश्चिक राशिगत चंद्रमा पंचम स्थित होय वह अल्पपुत्रा होती है ॥ ४९ ॥

अथ पितृश्वशुरकुलहंतृयोगः शौनकः ।

पापद्वयमध्यगते चंद्रे लग्ने च कन्यका जाता ॥
निजपितृकुलं समस्तं श्वशुरकुलं हंति निःशेषात्॥५०॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें पाप ग्रहोंके बीचमें चंद्रमा बैठा होय कन्यालग्नमें वह नारी अपने समस्त पिताके कुलको और ससुरके कुलको निःशेष करती है ॥ ५० ॥

अन्यच्च सिद्धान्तसारे बहुपुत्रवतीयोगः ।

नारीणां जन्मकाले कुजशनितमसः केन्द्रकोणेषु शस्ता-
श्चंद्रोऽस्तेषु प्रशस्तो बुधसितगुरवः सर्वभावेषु शस्ताः ॥
लग्नेशः कामभावे मदनगृहपतिर्लग्नभावे बलस्थो
लाभेशः पुत्रभावे वदति मुनिवरो बह्वपत्या भवन्ति॥५१॥

अर्थ–स्त्रियोंके जन्मकालमें मंगल शनैश्चर राहु १, ४, ७, १०, ९, ५, इन स्थानोंमें शुभफलदाता होते हैं और पहिले स्थानोंमें चंद्रमा भी शुभ होता है और बुध शुक्र बृहस्पति सब भावोंमें श्रेष्ठ होतेहैं और लग्नेश सप्तम भवनका स्वामी लग्नभावमें बलवान् होय और लाभेश पुत्रभवनमें बैठा होय तो वह नारी बहुतसं तानवालीहोतीहै ये मुनीश्वरोंने कहाहै ॥ ५१ ॥

अथ पतिपूज्यतायोगः ।

पंचमस्थौ गुरुसितौ बहुपुत्रयुता भवेत् ।
सुभगा पतिपूज्या च गुणयुक्ता तु सुव्रता ॥ ५२॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें पंचमभवनमें बृहस्पति शुक्र स्थित होय तो वह नारी बहुपुत्रवती होती है और वह नारी सुभगा पतिकरके पूज्य गुणोंकरके युक्त पतिव्रता होती है ॥ ५२ ॥

अथ लोलपतियोगः ।

चान्द्रीसमंदेंदुयुतेऽथ दृष्टे शुक्रेणलोलस्तु पतिस्तु तस्याः ।
चलस्वभावश्चपलो नितांतं भ्रमेण युक्तस्तु विवेकहीनः॥५३

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें बुध शनैश्वर चंद्रमा एक स्थानमें स्थित होय और शुक्रकरके दृष्ट होय उस नारीका पति लोल चलस्वभाव निरंतर चपल भ्रम करके युक्त चतु-रताकरके हीन होता है ॥ ५३ ॥

अथ शैलाग्रपातान्मृत्युयोगः ।

सूर्यारौ खजलाश्रितौ हिमवतः शैलाग्रपातान्मृतिः ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य मंगल चंद्रमाते दशम चतुर्थ स्थानमें स्थित होय वह नारी पहाडसे गिरकर मरतीहै ॥

अथ कूपेन मृत्युयोगः ।

भौमेंद्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल दूसरे, चंद्रमा सातवें, शनैश्चर चौथे स्थित होय तो वह नारी कुएँ वा बावडीमें गिरकर मरती है ।

अथ बंधनान्मृत्युयोगः ।

सूर्य्याचंद्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बंधनात् ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा पापग्रहों-करके युक्त वा दृष्ट होवे और कन्या राशिमें स्थित होवे तो वह नारी बंधनसे मरतीहै ।

अथ जलेन मृत्युयोगः ।

तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्ना-
त्स्वतः ॥ ५४ ॥

अर्थ–जिस कन्याका जन्मकालमें लग्नसे सूर्य चंद्रमा ३ । ६ । ९ । १२ इन राशियोंमें स्थित होकर लग्नमें स्थित होय तो वह कन्या आपही जलमें डूबकर मर-तीहै ॥ ५४ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः ।

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् । किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥ ५५ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें शनैश्वर कर्कराशिमें और चंद्रमा मकर राशिमें स्थित होवे तब वह नारी जलोदर रोगसे मरतीहै ॥ ५५ ॥

अथ शस्त्राग्निकोपेन मृत्युयोगः ।

निशाकरः पापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति । पृच्छाविलग्ने वरवर्णकाले विवाहदाने परिचिंतनीयम् ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके विविधयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें स्थित होय मंगलकी राशि १।८ में तो वह नारी शस्त्र वा अग्नि करके मरती है यह सम्पूर्ण योग प्रश्न कालमें सगाई करनेके समय विवाहके वर वरण व कन्यादानके समय अवश्य विचार करना चाहिये ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां शुभाशुभयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ कूपेन मृत्युयोगः ।

भौमेंद्वर्कसुताः स्वसप्तजलगाः स्यात्कूपवाप्यादितः ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें मंगल दूसरे, चंद्रमा सातवें, शनैश्वर चौथे स्थित होय तो वह नारी कुएँ वा बावडीमें गिरकर मरती है ।

अथ बंधनान्मृत्युयोगः ।

सूर्य्याचंद्रमसौ खलेक्षितयुतौ कन्यास्थितौ बंधनात् ।

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्य चंद्रमा पापग्रहों-करके युक्त वा दृष्ट होवे और कन्या राशिमें स्थित होवे तो वह नारी बंधनसे मरतीहै ।

अथ जलेन मृत्युयोगः ।

तौ चेद्द्व्यङ्गविलग्नसंस्थितिकरौ तोये विलग्ना-
त्स्वतः ॥ ५४ ॥

अर्थ–जिस कन्याका जन्मकालमें लग्नसे सूर्य चंद्रमा ३ । ६ । ९ । १२ इन राशियोंमें स्थित होकर लग्नमें स्थित होय तो वह कन्या आपही जलमें डूबकर मर-तीहै ॥ ५४ ॥

अथ जलोदरेण मृत्युयोगः ।

रविसुतो यदि कर्कमुपागतो हिमकरो मकरोपगतो भवेत् । किल जलोदरसंजनिता तदा निधनता वनितासु च कीर्तिता ॥ ५५ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें शनैश्वर कर्कराशिमें और चंद्रमा मकर राशिमें स्थित होवे तब वह नारी जलोदर रोगसे मरतीहै ॥५५॥

अथ शस्त्राग्निकोपेन मृत्युयोगः ।

निशाकरः पापखगांतरस्थः शस्त्राग्निमृत्युं कुजभे करोति । पृच्छाविलग्ने वरवर्णकाले विवाहदाने परिचिंतनीयम् ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके विविधयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

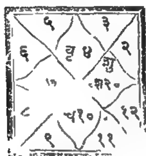
अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा पापग्रहोंके बीचमें स्थित होय मंगलकी राशि १।८ में तौ वह नारी शस्त्र वा अग्नि करके मरती है यह सम्पूर्ण योग प्रश्न कालमें सगाई करनेके समय विवाहके वर वरण व कन्यादानके समय अवश्य विचार करना चाहिये ॥ ५६ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां शुभाशुभयोगवर्णनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

अथ राजयोगाध्यायप्रारम्भः ।

तथाच वृद्धयवनः ।

राजयोगकुंडलीयम् १.

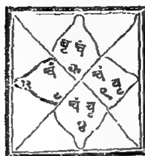


मूर्तौ सुरेज्योऽस्तगतः शशाङ्कोऽ-
थवा स्ववर्गे गगने च शुक्रः ॥
जातान्त्यजानामपि जातिरत्र
योगे भवेत्पार्थिववल्लभा च ॥ १ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्मलग्नमें बृहस्पति और सप्तम चंद्रमा और दशमस्थानमें अपने वर्गका शुक्र ऐसे योगमें अन्त्यजजातिमें उत्पन्न भईभी कन्या राजाकी प्यारी होतीहै ॥ १ ॥

अथ द्वितीययोगः ।

द्वितीयराजयोगः २.



एकोपि जीवः षड्वर्गशुद्धः केंद्रे यदा चंद्रनिरीक्षितश्च ।
राज्ञी भवेत्स्त्री सधनात्र जाता वरेभदानार्द्रनितंबबिंबा २

अर्थ--जिस स्त्रीके जन्मकालमें एकही बृहस्पति षड्वर्गमें शुद्ध होकर १ । ४ । १० । ७ इन स्थानोंमेंसे किसी स्थानमें बैठा होय और चंद्रमा देखता होय ऐसे योगमें उत्पन्न भई कन्या रानी होतीहै धनवान् श्रेष्ठ हाथियोंके मदकरके आर्दित है नितंबबिंब जिसका ऐसी होतीहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयराजयोगः ।

तृतीयराजयोगकुंडली ३.

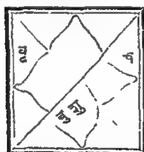


केन्द्रेषु सौम्या अरिबंधुलाभे पापाः कलत्रे च मनुष्यराशिः । राज्ञी भवेत्स्त्री बहुकोशयुक्ता नित्यं प्रशांता च सुपुत्रिणी स्यात् ॥ ३ ॥

अर्थ--जिस स्त्रीके जन्मकालमें १।४।७।१०। इन स्थानोंमें शुभग्रह स्थित होय और पापग्रह सू. मं. श. रा. ३। ६।११ इन स्थानोंमें स्थित होंय और सप्तमभावमें मनुष्य राशि स्थित होय ऐसे योगमें उत्पन्न भई स्त्री रानी होतीहै बहुत खजानेकरके युक्त हमेशा शांतस्वरूप श्रेष्ठ पुत्रवती होतीहै ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो राजयोगः ।

चतुर्थकुंडली ४.



लाभाश्रितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः । जीवेन दृष्टे कुरुतेऽत्र राज्ञीं लोकैः स्तुतां वंदिवरैः सदैव ॥ ४ ॥

अर्थ--जिस कन्याके जन्मकालमें ग्यारहवें स्थानमें चंद्रमा स्थित होय और सप्तमस्थानमें बुधकरके युक्त शुक्र स्थित होय

और बृहस्पतिकरके दृष्ट होय ऐसे योगमें पैदा भई स्त्रियां रानी होती हैं और संसारमें वंदीजनोंकरके स्तुती की हुई हमेशा होती हैं ॥ ४ ॥

अथ पंचमो राजयोगः ।

पंचमो राजयोगः ५



बुधे विलग्ने यदितुङ्गभाजि लाभास्थितेदेवपुरोहिते च ॥
नरेन्द्रपत्नीभवितामसंगे तदा प्रसिद्धाभवतीह भूमौ ॥ ५॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मलग्नमें बुध जन्मकालमें जो उच्चका स्थित होय और ग्यारहवें स्थानमें बृहस्पति स्थित होय ऐसे योगमें उत्पन्न भई कन्या राजाकी पत्नी होती है स्त्रियोंके प्रसंगमें धरतीपर प्रसिद्ध होती है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठो राजयोगः ।

षष्ठराजयोगकुंडली ६.



तृतीयगः सोमसुतोम्बुसंस्थः षड्वर्गशुद्धो यदि देवमंत्री । लग्ने भृगुः पार्थिवतुल्यतां च करोति नारीं बहुवाजिवृंदाम् ॥ ६ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे घरमें बुध स्थित होय और षड्वर्गमें शुद्ध बृहस्पति चतुर्थ स्थित होय और जन्मलग्नमें शुक्र होय तो वह उस स्त्रीको राजाके समान बहुतसे घोडोंके समूहोंकरके करता है अर्थात् उस रानीकी सेना बहुत सवारोंकी होतीहै ॥ ६ ॥

अथ सप्तमो राजयोगः ।

त्रिभिरुच्चग्रहैः



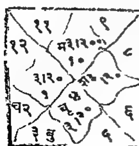
चतुर्भिरुच्चग्रहैः



पंचभिरुच्चग्रहैः



षड्भिरुच्चग्रहैः



सप्तभिरुच्चग्रहैः



रुक्मिणीजन्मलग्नम्



षड्वर्गशुद्धिस्त्रिभिरेव मंत्री चतुर्भिरीशस्य तथैव पत्नी ॥ पंचादिभिर्दिव्यविमानभाजा त्रैलोक्यनाथप्रमदा तदा स्यात् ॥ ७ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें षड्वर्गमें शुद्ध तीन ग्रह उच्चके होंय तो वह नारी युवराजकी पत्नी होती है और चार ग्रह उच्चमें होंय तो वह नारी राजाकी पत्नी होती है और पांच ग्रह जिसके उच्चमें होंय तो वह नारी महाराजाकी पत्नी होती है और छः वा सात ग्रह अपने उच्च वा स्वक्षेत्रमें स्थित होंय तो वह नारी त्रिलोकीनाथकी पत्नी होतीहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमो राजयोगः ।

अथाष्टमराजयोगकुंडली ।



कर्कोदये सप्तमगे शशांके चतुष्टयं पापविवर्जितं च । राज्ञी भवेद्भूरिगजाश्वयुक्ता पतिप्रधाना विजितारिपक्षा ॥ ८ ॥

अर्थ--जिस नारीके जन्मकालमें कर्कलग्नका उदय होय

सातवें स्थानमें चंद्रमा और केंद्र स्थानमें कोई पापग्रह न होय ऐसे योगमें उत्पन्न भई नारी रानी होती है बहुतसे हाथी घोडों करके युक्त जीते हैं शत्रुदल जिसने और पति है प्रधान जिसके ऐसी होतीहै ॥ ८ ॥

अथ कुलद्वयोन्नतिकारिणीयोगः ।

कुलद्वयोन्नतिकारिणीकुण्डली ।



वाचस्पतिर्नवमपंचमकंटकस्थो जाताङ्गना भवति पूर्णविभूतियुक्ता । साध्वी सुपुत्रजननी सगुणा सुरूपा नूनं कुलद्वयमहोन्नतिकारिणी सा ॥ ९ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें बृहस्पति उच्च वा स्वक्षेत्रराशियोंमें स्थित होकर ९ । ५ । १ । ४ । ७ । १० इन स्थानोंमेंसे किसी एक स्थानमें स्थित होय वह नारी समस्त विभूतियोंकरके युक्त पतिव्रता सत्पुत्रोंकी पैदा करनेवाली अच्छे गुणोंकरके युक्त उत्तम रूपसहित निश्चय करके मातृकुल और श्वशुरकुलकी बडी उन्नती करनेवाली होतीहै ॥ ९ ॥

अथ नवमो राजयोगः ।

नवमराजयोगकुंडली ।



तुङ्गाश्रिते शीतकरे सुखस्थे जीवेन दृष्टे परिपूर्णदेहे ॥ विद्याधरी चात्र भवेत्प्रधाना राज्ञी जितारिर्बहुपुत्रपौत्रा ॥ १० ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें उच्चराशिमें स्थित होकर परिपूर्ण चंद्रमा चतुर्थ स्थित होय उसको बृहस्पति देखता होय तो वह स्त्री ऐसे योगमें स्त्रियोंमें प्रधान रानी जीते हैं शत्रु जिसने बहुत पुत्र पौत्रोंकरके युक्त होती है ॥ १० ॥

अथ दशमो राजयोगः ।

दशमराजयोगकुंडली ।



स्वक्षेत्रगः सोमसुताम्बुसंस्थः षड्वर्गशुद्धोऽसु-

रराजमंत्री । शुक्रेण दृष्टः प्रमदां प्रसूते राज्ञीं महाशब्दसमन्वितां च ॥ ११ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें अपनी राशिका बुध षड्वर्गमें शुद्ध बृहस्पति करके युक्त स्थित होय और शुक्रकरके दृष्ट होय तो वह नारी डंका निशान नौबत नगाडेके शब्दोंसहित रानी होती है ॥ ११ ॥

अथैकादशो राजयोगः ।

एकादशराजयोगकुंडलीयम् ।

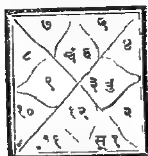


वक्रस्तृतीये रिपुसंस्थितोऽपि वा षड्वर्गशुद्धो रविजश्च लाभे । स्थिरे विलग्ने गुरुणा च युक्ते राज्ञी भवेत्स्त्री पतिवल्लभा च ॥ १२ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें मंगल तीसरे वा छठे स्थित होय और षड्वर्गमें शुद्ध शनैश्चर ग्यारहवें स्थित होय और स्थिर लग्नमें बृहस्पति जन्मकालमें स्थित होय तो वह नारी रानी होती है पतिको प्यारी होय ॥ १२ ॥

अथ द्वादशो राजयोगः ।

अथ द्वादशराजयोगचक्रम् ।

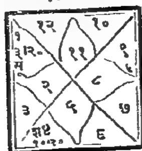


आयुःस्थितस्तीक्ष्णकरः स्वतुंगे मूर्तौ शशांकः परिपूर्णदेहः । सौम्योम्बरस्थः कुरुते च राज्ञीं पतिप्रधानां बहुपुत्रपौत्राम् ॥ १२ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें स्थित उच्चका सूर्य और बलवान् पौर्णमासीका चंद्रमा लग्नमें और बुध दशम स्थित होय ऐसे योगमें पैदाभई स्त्रियाँ बहुत पुत्रपौत्र सहित पति है प्रधान जिनके ऐसी होती हैं ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशो राजयोगः ।

अथ त्रयोदशराजयोगचक्रम् ।



षड्वर्गशुद्धे दिवसाधिनाथे तृतीयगे सूर्यसुते रिपुस्थे॥
भवेन्नृजाता प्रमदा सुराज्ञी धर्मप्रधाना पतिवल्लभा च१४

अर्थ--जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें षड्वर्ग शुद्ध सूर्य तीसरे स्थानमें स्थित होय और शनैश्चर छठे ऐसे योगमें पैदा भई नारी रानी होतीहै धर्म प्रधान जिनके पतिको प्यारी होती है ॥ १४ ॥

अथ चतुर्दशो राजयोगः ।

अथ चतुर्दशराजयोगकुंडलीचक्रम् ।



स्थिरे विलग्ने शशितुंगयाते बुधेन युक्तेप्यथ वीक्षिते वा ॥ लाभस्थिते दैत्यपुरोधसा वा यरेभवृन्दानुगता तदा स्यात् ॥ १५ ॥

अर्थ--जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें स्थिर लग्न होय उसमें चंद्रमा उच्च राशिका स्थित होय और बुध करके युक्त वा देखा गया होय और लाभस्थानमें शुक्र स्थित होय ऐसे योगमें पैदा भई नारी हाथियोंके हलकेमें चलती है ॥ १५ ॥

अथ पंचदशो राजयोगः।

पञ्चदशराजयोगकुण्डलीयम्।



लाभस्थितः शीतकरो भृगुश्च कलत्रगः सोमसुतेन युक्तः। जीवेन दृष्टो भवतीह राज्ञी ख्याता धरायां सकलैः स्तुता च ॥ १६ ॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें ग्यारहवें स्थानमें चंद्रमा और सप्तम स्थानमें शुक्र बुधसंहित बृहस्पति करके दृष्ट होय तो ऐसे योगमें पैदा भई स्त्रियाँ पृथ्वीमें समस्त जनों करके स्तुतिकरी हुई विख्यात रानी होती है ॥ १६ ॥

अथ षोडशो राजयोगः सिद्धान्तसारे।

जीवो वा भार्गवो वा परमबलयुतः कामभावेषु यासां कर्म्मेशो धर्म्मलाभे तनुसुखतनये कर्मकोशे बलस्थः। तासां चंद्राननानां कमलदलदृशां नायिका रूपयुक्ता राजंते राजलक्ष्म्या मणिमयशिविरे दासभावे सदैव ॥ १७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें बृहस्पति वा शुक्र अत्यंत-बली होकरके सातवें बैठे हो और दशम भावका स्वामी ९।

११।१।४।५।१०।२ इन स्थानोंमें बली होकर स्थित होय ऐसे योगमें पैदाभई स्त्रियाँ चंद्रमाके समान मुख जिनका और कमलके दलके समान नेत्र जिनके, ऐसी स्त्री रूपकरके युक्त शोभाको प्राप्त राजलक्ष्मी मणियोंकरके जटित महलोंमें हमेशा दासभावको प्राप्त हुए हैं पति जिनके ऐसी रहती है ॥ १७ ॥

अथ लज्जावतीयोगः ।

यदि शुभकरदृष्टा शिल्पिनी शुद्धचित्ता सततमिह सलज्जा चारुमूर्तिः सुपुत्रा । बहुधनसुखयुक्ता वल्लभे वल्लभत्वं व्रजति शुभशतानां भाजनत्वं च नारी ॥ १८ ॥

अर्थ–जिस कन्याकी जन्मलग्नको सम्पूर्ण शुभग्रह देखते होंय वह नारी चित्रकारी करनेवाली, शुद्धचित्त निरंतर लज्जा सहित सुन्दर स्वरूपवाली अच्छे पुत्रों युक्त बहुतसे धन सुख-सहित अपने पतिको प्यारी सैकडों शुभ कर्मोंकी भाजन होती है ॥ १८ ॥

अथ घनवद्भ्रातृयोगः ।

सहजभवननाथे पुंग्रहे पुंग्रहर्क्षे पुरुषखचरयुक्ते पुंग्रहालोकिते वा । नयनभवनकेन्द्रे कोणगे वा बलिष्ठे बहुधनसुखवंतं सोदरं याति जाता ॥ १९॥

अर्थ–जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें तीसरे स्थानका स्वामी

पुरुष ग्रहकी राशिमें स्थित और पुरुषग्रहकरके युक्त पुरुष ग्रह देखते होंय २।१।४।७।१०।५।९ इन स्थानोंमें बली होकर भ्रातृस्थानेश स्थित होय तो उस नारीका भाई बहुत धनवाला और सुखवाला होता है ॥ १९ ॥

अथ राजतेजोयुक्तभ्रातृयोगः ।

सहोदरस्थानपलाभनाथौ विलग्नतः पंचमराशियातौ ।
नृपालतेजोगुणरूपवन्तं सहोदरं जातवधूः समेति॥२०॥

अर्थ-जिन स्त्रियोंके जन्मकालमें तीसरे घरका और ग्यारहवें भावका स्वामी जन्म लग्नसे पंचम भावमें स्थित होय तो उस कन्याके राजतेजकरके युक्त और गुणवान् रूपवान् भ्राताकी प्राप्ति होती है ॥ २० ॥

अथ कांचनयुक्तपतियोगः ।

क्रोधान्विता सौख्यपरा सितेन्दौ लग्नस्थिते कांचनसंयुता च । बुधे कलाढ्या सुखभावयुक्ता गुणैर्युता शुक्रगुरुस्तथैव ॥ २१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुक्र चंद्रमा जन्मलग्नमें स्थित होय उस नारीका पति क्रोधयुक्त सौख्यवान् सुवर्णयुक्त होता है और जो लग्नमें बुध स्थित होय तो उस नारीका पति चतुर कलामें प्रवीण होता है और जो लग्नमें शुक्र बृहस्पति स्थित होय तो सुखसहित गुणवान् पति होताहै ॥ २१ ॥

अथ राजपूज्यपतियोगः ।

समराशिगते तत्र सप्तमे शुभसंयुते ।
शुभग्रहैस्तथा दृष्टे राजपूज्यः पतिर्भवेत् ॥ २२ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें सातवें स्थानमें शुभ ग्रहकी समराशि होय और शुभग्रहोंकरके युक्त और [illegible] होय तो उस नारीका पति राजाओंकरके पूजनीय होता है ॥ २२ ॥

अथ दास्यलंकृतयोगः ।

यदा शशी शुक्रबुधो विलग्ने त्रयोऽपि ते जीवसितेन्दुजाः स्युः । अनेकधा सौख्यगुणादियुक्ता नारी तु दासीभिरलंकृता स्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ-जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा शुक्र बुध लग्नमें स्थित होय अथवा बृहस्पति शुक्र चंद्रमा ये तीनों लग्नमें स्थित होयँ वह नारी अनेक सुख गुणोंकरके युक्त दासियों करके अलंकृत होती है ॥ २३ ॥

अथ स्त्रीणां पतिलक्षणम् ।

गौराङ्गः पतिरस्तगे दिनकरे कामी सरोजेक्षण-
श्चन्द्रे रूपगुणान्वितः कृशतनुर्भोगी रुगार्तो भवेत् ।
नम्रः क्रूररसोलसः पटुवचाः संरक्तकांतिः कुजे
विद्यावित्तगुणप्रपंचरसिकः सौम्ये मदस्थानगे ॥२४॥
दीर्घायुर्नृपतुल्यवित्तविभवः कामी च बाल्ये गुरोः
कान्तो नित्यविनोदकेलिचतुरः काव्यैककविः क्ष्मापतिः।
मन्दे वृद्धकलेवरोऽस्थिततनुः पापी पतिः कामगे
राहौ वा शिखिनिस्थितेमलिनधीर्नीचोऽथवा तत्समः॥

अर्थ-जिन कन्याओंके जन्मकालमें सातवें घरमें सूर्य स्थित होय उन स्त्रियोंके पति गौरवर्णके अंगवाला कामी क्रोधसहित नेत्रोंवाला होता है और चंद्रमा सप्तम स्थित होय तो रूपयुक्त गुणवान् दुर्बल शरीरवाला भोगी और रोगकरके दुःखी होता है. जो सातवें घरमें मंगल स्थित होय तो नम्र दुष्टस्वभाववाला चतुरवचन बोलनेवाला आलसी लालवर्णका होता है और सातवें घरमें बुध स्थित होय तो वह विद्या और धन गुणवान् प्रपंच जिसको प्यारा ऐसा होता है ॥ २४ ॥ और बृहस्पति सप्तम स्थित होय तो बडी उमरवाला राजाके तुल्य धन ऐश्वर्यकरके युक्त बालअवस्थामें कामी होता है और शुक्र सप्तमस्थित होय तो शोभायमान नित्यही आनंदस्थलमें चतुर काव्य जाननेवाला धरतीका पति होता है और शनैश्चर सप्तम स्थित हो तो बूढा देहवाला चलायमान देहवाला पापी होता है और राहु वा केतु सप्तम स्थित होय तो वह मलिन बुद्धिवाला नीच वा नीचके समान पति होताहै॥२५॥

अथ कन्याजन्मनि डिंभाख्यचक्रम् ।

उक्तं च स्वरोदये ।

मस्तके त्रीणि ऋक्षाणि सप्त भानि मुखे न्यसेत् ।
स्तनद्वयेष्टऋक्षाणि हृदये त्रीणि भानि च ॥ २६ ॥
नाभौ त्राण तथा गुह्ये क्रमात्सूर्यर्क्षतो न्यसेत् ।
कन्याजन्मनि डिम्भाख्यं चक्रमुक्तं स्वयंभुवा ॥२७॥

अर्थ-स्त्रियोंके जन्मकालमें डिंभाख्य चक्र कहते हैं मस्तकपर ३ नक्षत्र मुखमें ७ दोनों स्तनोंपै ४ । ४ हृदयमें ३ ॥ २६ ॥ टूडीमें ३ पेडूपर ३ नक्षत्र सूर्य्यनक्षत्र ते क्रमकरके न्यास करे कन्या जन्मकालमें डिंभाख्यचक्र ब्रह्माजीने कहा है ॥ २७ ॥

अथ चक्रस्थितनक्षत्रफलम् ।

शीर्षे संतापयुक्ता स्यान्मुखे धान्यधनान्विता ।
हृदि सौख्ययुता गुह्ये नारी स्याद्व्यभिचारिणी ॥२८॥

अर्थ-जो कन्याका जन्म नक्षत्र शिरपै आवे तो संताप करे और मुखपै आवे तो धनधान्ययुक्त करे हृदयपर आवे तो सौख्ययुक्त करे पेडूपर आवे तो व्यभिचारिणी करे ॥ २८ ॥

स्तने ऋक्षे जन्मपातः पतिसौख्यविवर्धकः ।
असंतुष्टा स्वामिरता नाभौ स्याज्जन्मकालके ॥२९॥

अर्थ-जो कन्याका जन्मनक्षत्र स्तनोंपर आवे तो पतिका सौख्य बढावे और नाभिपर आवे तो असंतुष्ट स्वामीमें रत होती है ॥ २९ ॥

अथ नारीचक्रमाह जातकाभरणे ।

नारीचक्रे मस्तके त्रीणि भानि वक्त्रे भानां सप्तकं स्थापनीयम् । प्रत्येकं स्युर्वेदतारा उरोजे तिस्रस्तारा हृत्प्रदेशे निवेश्याः ॥ ३० ॥ नाभौ देयं भत्रयं

त्रीणि गुह्ये भानोर्धिष्ण्याच्चंद्रधिष्ण्यावधीत्थम् ।
सत्संतापः शीर्षभे वक्त्रसंस्थे नित्यं मिष्टान्नान्नसौख्योपलब्धिः ॥ ३१ ॥ कामं स्वामिप्रेमवृद्धिः स्तनस्थे वक्षोदेशावस्थितेऽत्यंतहर्षः । पत्युश्चिंतानन्तवृद्धिश्च नाभौ गुह्यस्थे स्यान्मन्मथाधिक्यमुच्चैः ॥ ३२ ॥

अर्थ-अब वांचक कहते हैं सूर्यके नक्षत्रसे लेकर चंद्रनक्षत्रतकका फल कहा है यानी स्त्रियाकारस्वरूप बनाय करके सूर्यके नक्षत्रसे ३ नक्षत्र माथेपर स्थापित करे मुखपर ७ और प्रत्येक चूंचीपर ४ । ४ । और तीन ३ हृदय पर स्थापित करे ॥ ३० ॥टूंडीमें ३ और ३ गुह्यस्थानमें, जो शिरके नक्षत्रोंमें चंद्रमाका नक्षत्र पडे तो संताप और मुखके नक्षत्रोंमें चंद्र आवे तो नित्यही मिष्टान्न लाभ होता है ॥ ३१ ॥ स्तनके नक्षत्रमें चंद्रमा पडे तो पतिसे प्रीति अधिक कहना हृदयके नक्षत्रोंमें चंद्र पडे तो हर्ष प्राप्त होता है, नाभिमें नक्षत्र पडे तो स्वामीकी अत्यंत चिंता होतीहै गुह्यस्थानके नक्षत्रोंमें पडे तो काम करके पीडित कहना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथ स्त्र्याकारस्वरूपम् ।

पूर्वैर्यन्मुनिभिः सविस्तरतया स्त्रीजातके कीर्तितं
सम्यग्वाऽप्यशुभं च यन्मतिमता वाच्यं विदित्वा बलम् ।

योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा पाणिप्रग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेऽपि च ॥ ३३॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके राजयोगवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अर्थ—पहिले मुनीश्वरोंने स्त्रीजातकमें विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल भलेप्रकार जो कहाहै सो बुद्धिमानोंने बलाबल विचार करके पहिले कहेहुए योगोंको नियोजनकरके ये फल प्रश्नकालमें विवाहकालमें सगाई समय विचार करना चाहिये ॥ ३३ ॥

इतिश्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां राजयोगफलवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ तिथिजातफलाध्यायो निरूप्यते ।
उक्तं च श्यामदैवज्ञेन ।

अथ प्रतिपदि जातफलम् ।

नारी यदा त्वग्रितिथौ सुजाता सौभाग्ययुक्ता पतिवल्लभा च । सुपुण्यशीला बहुपुत्रपौत्रा परागमज्ञानविराजमाना ॥ १ ॥

अर्थ–जो नारी प्रतिपदातिथिमें पैदा होय वह स्त्री सौभाग्यकरके युक्त पतिको प्यारी अच्छे पुण्यमें है शील जिसका बहुतसे पुत्रपौत्रोंसहित वेदवेदांतके ज्ञानमें विराजमान होती है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाजातफलम् ।

नारी सुवेषा बहुकान्तियुक्ता दयान्विता पार्थिववल्लभा च । सुनेत्रकेशा बहुधर्मरक्ता सदा द्वितीयाप्रभवा मनोज्ञा ॥ २ ॥

अर्थ–जो नारी द्वितीयातिथिमें पैदा होय वह स्त्री अत्यंत कांतियुक्त उत्तम वेषवाली दयायुक्त राजाको प्यारी अच्छे नेत्र और वाल जिसके बहुतसे धर्ममें तत्पर मनकी जाननेवाली स्त्री होती है ॥ २ ॥

अथ तृतीयाजातफलम् ।

सौम्या तृतीयाप्रभवा सुसत्या भवेत्सुमन्दा चिरकालकृत्या । तीर्थानुरक्ता वनिताभिजाता गुणान्विता पुत्रवती सपौत्रा ॥ ३ ॥

अर्थ–जो स्त्री तृतीयातिथिमें पैदा भई होय वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवती पतिव्रता मंदा बहुतकालमें काम करनेवाली तीर्थोंमें आसक्त गुणोंकरके युक्त पुत्र पौत्रोंवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थीजातफलम् ।

सदा नृशंसा वनितातितीक्ष्णा सा स्त्री सकामा

योगानां च नियोजयेत्फलमिदं पृच्छाविलग्ने तथा
पाणिग्रहणे तथा च वरणे संभूतिकालेऽपि च ॥ ३२॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके राजयोगवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अर्थ–पहिले मुनीश्वरोंने स्त्रीजातकमें विस्तारपूर्वक अच्छा बुरा फल भलेमकार जो कहाहै सो बुद्धिमानोंने बलाबल विचार करके पहिले कहेहुए योगोंको नियोजनकरके ये फल मश्नकालमें विवाहकालमें सगाई समय विचार करना चाहिये ॥ ३२ ॥

इतिश्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवमसादात्मजराजज्यौतिषिकश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां राजयोगफलवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

अथ तिथिजातफलाध्यायो निरूप्यते ।
उक्तं च श्यामदैवज्ञेन ।

अथ प्रतिपदि जातफलम् ।

नारी यदा त्वग्रितिथौ सुजाता सौभाग्ययुक्ता पतिवल्लभा च । सुपुण्यशीला बहुपुत्रपौत्रा परागमज्ञानविराजमाना ॥ १ ॥

अर्थ–जो नारी प्रतिपदातिथिमें पैदा होय वह स्त्री सौभाग्यकरके युक्त पतिको प्यारी अच्छे पुण्यमें है शील जिसका बहुतसे पुत्रपौत्रोंसहित वेदवेदांतके ज्ञानमें विराजमान होती है ॥ १ ॥

अथ द्वितीयाजातफलम् ।

नारी सुवेषा बहुकान्तियुक्ता दयान्विता पार्थिववल्लभा च । सुनेत्रकेशा बहुधर्मरक्ता सदा द्वितीयाप्रभवा मनोज्ञा ॥ २ ॥

अर्थ–जो नारी द्वितीयातिथिमें पैदा होय वह स्त्री अत्यंत कांतियुक्त उत्तम वेषवाली दयायुक्त राजाको प्यारी अच्छे नेत्र और बाल जिसके बहुतसे धर्ममें तत्पर मनकी जाननेवाली स्त्री होती है ॥ २ ॥

अथ तृतीयाजातफलम् ।

सौम्या तृतीयाप्रभवा सुसत्या भवेत्सुमन्दा चिरकालकृत्या । तीर्थानुरक्ता वनिताभिजाता गुणान्विता पुत्रवती सपौत्रा ॥ ३ ॥

अर्थ–जो स्त्री तृतीयातिथिमें पैदा भई होय वह नारी श्रेष्ठ भाग्यवती पतिव्रता मंदा बहुतकालमें काम करनेवाली तीर्थोंमें आसक्त गुणोंकरके युक्त पुत्र पौत्रोंवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थीजातफलम् ।

सदा नृशंसा वनितातितीक्ष्णा सा स्त्री सकामा

व्यभिचारशीला । द्यूते रता धर्मविवेकहीना नारी चतुर्थीतिथिषु प्रजाता ॥ ४ ॥

अर्थ–हमेशा पराये द्रोहमें शील जिसका वह स्त्री तीक्ष्ण स्वभाववाली कामसहित व्यभिचारमें शील जिसका द्यूत अर्थात् जुवा खेलनेमें तत्पर धर्म और विवेकरहित ऐसी नारी चतुर्थी-तिथिमें पैदा होती है ॥ ४ ॥

अथ पंचमीजातफलम् ।

इर्ष्युता बंधुप्रिया सुशीला दक्षा सुकार्ये सुख-संयुता च । परोपकारे निरता विरक्ता यस्याः प्रसूतौ तिथिपंचमा स्यात् ॥ ५ ॥

अर्थ–बंधुगणों करके सहित भाइयोंको प्यारी सुशील-वती अपने कार्यमें चतुर सुखसहित पराये उपकारमें तत्पर जिसके जन्मकालमें पंचमी तिथि होय वह विरक्त होती है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठीजातफलम् ।

षष्ठ्यां प्रजाता वनिता सुसत्या नारी प्रधाना जनवल्लभा च । श्लेष्माधिका क्रोधपरा कठोरा महाव्यया नीतिविहीनगात्रा ॥ ६ ॥

अर्थ–जो नारी छठवीं तिथिमें पैदा होय वह पतिव्रता स्त्रियोंमें प्रधान मनुष्योंको प्यारी श्लेष्माका अधिक कोप

जिसको क्रोधयुक्त कठोर जादे खर्चकरनेवाली नीतिकरके हीन शरीरवाली होती है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमीजातफलम् ।

विशालनेत्रा प्रमदा मनोज्ञा नयान्विता देवगुरुप्रसक्ता । सुदानशीला नियमैः समेता तिथ्यर्कजाता विगताभिमाना ॥ ७ ॥

अर्थ—विशाल नेत्रोंवाली नारी मनके जाननेवाली नम्रता युक्त देवता और गुरुमें आसक्त अच्छे दानमें शील जिसका, नियमसहित और दूरहुआ है अभिमान जिसका ऐसी स्त्री सप्तमीतिथिमें पैदा होतीहै ॥ ७ ॥

अथाष्टमीजातफलम् ।

प्रियामिषा पानरता कुरूपा दुष्टस्वभावा सुतवित्तहीना । दयाविहीना विकृतानुकारा गौरीपतेर्यत्प्रसवे तिथिः स्यात् ॥ ८ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें पार्वतीके पति शिवजीकी अष्टमी तिथि होय उस नारीको मांस प्यारा, मद्यपानमें तत्पर, कुरूपवाली, दुष्टस्वभाव पुत्र और धनकरके हीन दयारहित भयंकर आकारवाली होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमीजातफलम् ।

कुटुंबहीना ललना कठोरा पराङ्मुखी सर्वगृहस्य

कार्ये । कन्यैव दुष्टा व्यसनैः प्रयुक्ता यस्याः प्रसूतौ नवमी तिथिर्भवेत् ॥ ९ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें नवमी तिथि होय वह नारी कुटुंबहीन कठोर सब घरके कामोंमें पराङ्मुखी होती है और वह विवाहके पहिले व्यभिचारिणी अनेक व्यसनोंकरके युक्त होती है ॥ ९ ॥

अथ दशमीजातफलम् ।

नारी भवेद्धर्मपरा सुहर्म्या प्रलंबकण्ठा च सुस्वप्रवीणा । देवार्चने प्रीतिकरा सुपुत्रा यस्या जनौ स्याद्दशमीतिथिस्तु ॥ १० ॥

अर्थ- जिस औरतके जन्मकालमें दशमी तिथि होय वह नारी धर्ममें तत्पर, अच्छे मकान, लंबा गला, सुन्दर आवाज वाली, चतुर, देवताओंके पूजनमें प्रीति करनेवाली अच्छे पुत्रोंवाली होती है ॥ १० ॥

अथैकादशीजातफलम् ।

देवद्विजार्चाव्रतदानशीला पुण्यैकचित्तोत्तमकर्मदक्षा । नानार्थविच्छास्त्रपरागमज्ञा चैकादशी जन्मतिथिर्भवेत्सा ॥ ११ ॥

अर्थ—देवता और ब्राह्मणोंके पूजन और व्रत दानमें शील जिसका, एक पुण्यमें उत्तम चित्त, उत्तमकर्म करनेमें समर्थ

अनेक प्रकारके अर्थोंको जाननेवाली, शास्त्रज्ञा, जिसकी जन्म तिथि एकादशी होती है वह स्त्री वेदांत जाननेवाली होतीहै ११ ॥

अथ द्वादशीजातफलम् ।

जलाशये प्रीतिकरा सुशीला निजालये वासवि-
लासयुक्ता । सुरेंद्रभात्तापररंध्रपक्षा या द्वादशीजा
वनिता प्रधाना ॥ १२ ॥

अर्थ—जलाशयोंमें प्रीतिकरनेवाली, सुशीला, अपने घरमें वास करै, विलासयुक्त पराये छिद्रको इंद्रके समान हजार नेत्रोंसे देखनेवाली यह द्वादशीतिथिमें पैदाहुई स्त्रियोंमें प्रधान होती है ॥ १२ ॥

अथ त्रयोदशीजातफलम् ।

रूपान्विता धर्मपरा सुसत्या सच्छास्त्रवेत्त्री च
सुखप्रवीणा । क्षमान्विता सर्वजितारिपक्षा या
कामिनी कामतिथौ प्रसूता ॥ १३ ॥

अर्थ—रूपकरके युक्त, धर्ममें तत्पर, पतिव्रता, अच्छे शास्त्रोंको जाननेवाली, श्रेष्ठ शब्दवाली, चतुरा, क्षमावाली सम्पूर्ण जीते हैं शत्रुदल जिसने ऐसी वह नारी होती है जो कि त्रयोदशीतिथिमें पैदा होती है ॥ १३ ॥

अथ चतुर्दशीजातफलम् ।

कंदर्पलीलारतकार्यदक्षा विरुद्धचेष्टा पतिपुत्र-
हीना । स्याद्रूपजीवा मलिना कुशीला चतुर्दशीजा
हि विचित्रचित्ता ॥ १४ ॥

अर्थ-कामकलामें रत, कार्यमें चतुरा, टेढी चेष्टा, गर्व करके हीना, वेश्यावृत्तिकरके आजीविका करनेवाली, मलिन, दुष्टशील जिसका, जो नारी चतुर्दशीतिथिमें पैदा भई वह पूर्ण रूखे गुणोंवाली और विचित्रचित्तवाली होती है ॥ १४ ॥

अथ पौर्णमासीजातफलम् ।

सुचारुमूर्तिः सुगुणा सलज्जा साध्वी सुपुत्रा
सुखिनी कलाज्ञा । विशालनेत्रा विधुवन्मुखी
सा यदुद्भवश्चांद्रतिथौ सुकांता ॥ १५ ॥

अर्थ-सुन्दर श्रेष्ठ मूर्तिमती, सुन्दरगुणवती लज्जासहित, पतिव्रता, सुन्दरपुत्रवती, सुखवाली, कलाओंकी जाननेवाली बडेनेत्र, चंद्रमाकासा मुख जिसका, जिसकी पैदायशके समय पौर्णमासी तिथि हो सो कांता सुन्दर होती है ॥ १५ ॥

अथ अमावस्याजातफलम् ।

सुचारुवक्त्रा द्विजदेवभक्ता पतिप्रिया साधुसुशीलदक्षा ।
गृहस्थकार्ये सुविधिप्रवीणा यदुद्भवो: दर्शतिथौ
सुपुण्या ॥ १६ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्र-
सादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलाल-
विरचिते स्त्रीजातके तिथिजातफलवर्णनं
नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अर्थ-सुन्दरमुख जिसका, ब्राह्मण और देवताओंकी भक्ति-वाली, पतिको प्यारी, साधुउत्तमशीलवती, चतुरा, घरके

काममें विधिपूर्वक प्रवीणा, जिसके जन्मकालमें अमावास्या तिथि होय वह नारी पुण्यवती होती है ॥ १६ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज-
राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां तिथिजातफलवर्णनं नाम
सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

अथ वारजातफलाध्यायो निरूप्यते ।

तीक्ष्णा च सुभगा चैव प्रचंडा तेजसान्विता ।
षड्साखादिनी कन्या जायते रविवासरे ॥ १ ॥

अर्थ—तीक्ष्णस्वभाववाली, सुभगा प्रचंडस्वरूपा, प्रकाशवाली, जिस कन्याके जन्मकालमें सूर्यवार होय वह छः रसोंके स्वादलेनेवाली होती है ॥ १ ॥

अथ चंद्रवारजातफलमाह ।

सुस्निग्धा सुभगा चैव सुस्मिता चारुभूषणा ।
जलकेलिकरा नित्यं जायते चंद्रवासरे ॥ २ ॥

अर्थ—सुंदर चिकनी देहवाली, श्रेष्ठभाग्यसहिता, उत्तम है हँसन जिसका, श्रेष्ठ आभूषणोंके धारण करनेवाली जलके खेल नित्यही करनेवाली कन्या सोमवारके दिन पैदा होती है ॥ २ ॥

अथ भौमवारजातफलमाह ।

प्रचण्डा तेजसा नित्यं कृतघ्ना क्रोधसंयुता ।
कौसुंभवस्त्रा निरता जायते भौमवासरे ॥ ३ ॥

अर्थ–प्रचण्ड तेजकरके नित्यही प्रकाशवाली, अहसान न माननेवाली, क्रोधकरके सहित, कुसुंभेके रंगे वस्त्रोंमें तत्पर कन्या मंगलवारमें पैदा होती है ॥ ३ ॥

अथ बुधवारजातफलमाह ।

शुभानिष्टेषु वाक्येषु रंजते मिष्टभाषिणी ।
धर्मकर्मरता नित्यं जायते बुधवासरे ॥ ४ ॥

अर्थ–अच्छे बुरे वचनोंमें प्रसन्न रहनेवाली, मिष्टवाक्य बोलनेवाली, धर्मकर्ममें नित्यही तत्पर हो वह कन्या बुधवारको पैदा होती है ॥ ४ ॥

अथ गुरुवारजातफलमाह ।

पापकर्मविहीना च धनधान्यसमन्विता ।
देवद्विजार्चिता नारी या जाता गुरुवासरे ॥ ५ ॥

अर्थ–पापकर्म जितने हैं उनसे रहित और धन धान्यकरके सहित देवता और ब्राह्मणोंके पूजन करनेवाली जो स्त्री होती है वह बृहस्पतिवारमें पैदा होती है ॥ ५ ॥

अथ भृगुवारजातफलमाह ।

वस्त्राभरणसंपन्ना गजवाजिसमन्विता ।
साध्वी पुत्रयुता कन्या या जाता भृगुवासरे ॥ ६ ॥

अर्थ-कपडे और गहनोंकरके संपन्न, हाथी और घोडों करके सहित पतिव्रता पुत्रकरके युक्त होती है वह शुक्रवारके दिन पैदा होती है ॥ ६ ॥

अथ शनिवारजातफलमाह ।

मलिना च कुवेषा च प्रजल्पा वैरकारिणी ॥
अल्पपुत्रा दयाहीना कन्या जाता शनेर्दिने ॥ ७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके वारजातफलवर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८॥

अर्थ-मलिन बुरे वेषवाली निर्भयवाक्य बोलनेवाली सबसे वैर करनेवाली थोडे पुत्रवती दयाकरके हीन जो कन्या होती है वह शनैश्चरके दिन पैदा होती है ॥ ७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुन्दरीभाषाटीकायां वारजातफलवर्णनो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

अथ नक्षत्रजातफलाध्यायो निरूप्यते ।

अथाश्विनीजातफलमाह-वृद्धयवनः ।

जाताश्विनीषु प्रमदामनोज्ञा प्रभूतकोशा प्रियदर्शना च ।
प्रियंवदा सर्वसहाभिरामा बुद्धयान्विता देवगुरुप्रसक्ता ॥ १ ॥

अर्थ—अश्विनीनक्षत्रमें पैदा भई नारी मनके जाननेवाली बहुत धनवती प्यारा दर्शन जिसका प्रियवाक्य कहनेवाली सबकी सहारनेवाली अत्यंत सुंदर बुद्धि करके सहित देवता और गुरु ब्राह्मणोंमें आसक्त होती है ॥ १ ॥ अन्यच्च ग्रंथांतरे "कन्या बलवती चैव त्वहंकारवती सदा ॥ व्यवहाररता दक्षा दस्रभे जायते हि सा" इति ॥

अथ भरणीजातफलमाह ।

स्त्रीवर्गयुक्ता भरणीषु जाता भवेन्नृशंसा कलहप्रिया च ।
सुदुष्टचित्ता विभवैर्विहीना हतप्रतापा सततं कुचैला॥२॥

अर्थ—भरणीनक्षत्रमें पैदाभई नारी स्त्रीगणोंकरके युक्त परद्रोह शील जिसका, कलहप्रिय, भलेप्रकार दुष्ट चित्तवाली, वैभवकरके हीन नष्ट प्रतापवाली निरंतर मलिन होती है ॥ २ ॥

अन्यच—"अत्यंतसुखिनी कन्या चार्वंगी हास्यकारिणी ।
मातृपितृप्रशस्ता च जायते यमदैवते " इति ।

अथ कृत्तिकाजातफलमाह ।

जाता भवेत्स्त्री त्वथ कृत्तिकासु क्रोधाधिका
युद्धपरा विरक्ता । प्रद्वेषिणी बंधुजनेन हीना
श्लेष्माधिका क्षामतनुः सदैव ॥ ३ ॥

अर्थ—कृत्तिकानक्षत्रमें पैदा भई स्त्री अधिक क्रोधयुक्त युद्धमें रक्त विरक्त हमेशा वैर करनेवाली, बंधुजनों करके

हीन श्लेष्मा अधिक दुर्बल शरीर हमेशा रहता है ॥ ३ ॥

अन्यच्च ग्रंथांतरे "तेजस्विनी यशोयुक्ता परसक्ता तु कन्यका ॥ बह्वाशनी क्रूररूपा कृत्तिकायान्तु जायते ॥"

अथ रोहिणीजातफलमाह ।

जाता भवेत्स्त्रीत्वथ रोहिणीषु प्रभूतगात्राशुचिरप्रमत्ता । पतिप्रधाना पितृमातृभक्तासुपुत्रकन्याविभवैः समेता॥४॥

अर्थ–रोहिणीनक्षत्रमें पैदाहुई नारी बडे शरीर वा पवित्र मदकरके हीन पति है प्रधान जिसके पितामाताकी भक्ता अच्छे पुत्र कन्या वैभवकरके सहित होती है ॥ ४ ॥

अन्यमतांतरे "आयुष्मती सुतवती कन्यका कुलवर्द्धिनी ॥ धन्या मानवती चैव रोहिण्यां जायते हि सा ॥"

अथ मृगशिरोजातफलमाह ।

मृगे तु मान्या वनिता सुरूपा प्रसन्नवाक्या
प्रियभूषणा च । नानार्थविच्छास्त्रपरा सुपुत्रा
धर्म्माश्रया शुभ्रतनुः प्रसक्ता ॥ ५ ॥

अर्थ–मृगशिरानक्षत्रमें पैदाहुई नारी सुरूपवती मानयुक्त प्रसन्नचित्त प्रियवाक्य बोलनेवाली भूषणोंसहित अनेक अर्थोंके जाननेवाली शास्त्रज्ञ श्रेष्ठ पुत्रोंसहित धर्मके आश्रयमें तत्पर श्वेत शरीरवाली होती है ॥ ५ ॥

अन्यच्च–"मातुः पितुः प्रशस्ता च कन्यका धनभागिनी ॥ कृपणा चान्यसक्ता च जायते सोमदैवते ॥"

अथ आर्द्राजातफलमाह ।

आर्द्रासु नारी कृतमन्युयुक्ता दुष्टस्वभावा कफपित्तभाजा । सुरेंद्रभावा परंध्रदक्षा महाव्ययां कृत्रिमपंडिता च ॥

अर्थ–आर्द्रानक्षत्रमें पैदाभई नारी बनाये हुए अभिमान-युक्त दुष्ट स्वभाववाली कफ पित्त भोगनेवाली पराये छेदको इंद्रके समान हजार आँखों करके देखनेवाली बहुत खर्च करै बनावटकी पंडिता होती है ॥ ६ ॥

अन्यच्च–"पापकर्मप्रसक्ता च कुरूपा कलहप्रिया ॥ कन्यका दृढवैरा च जायते रौद्र दैवते ॥"

अथ पुनर्वसुजातफलमाह ।

पुनर्वसौदंभविहीनभावा श्रुत्याधिका पुण्यपरस्वभावा । नारी भवेद्धर्मपरा मनोज्ञा सुपूजिता नाथवती सदैव ॥

अर्थ–पुनर्वसुनक्षत्रमें पैदाभई नारी अभिमान रहित श्रवण कराहुआ याद बहुत रहे पुण्यवान् स्वभाव जिसका, धर्मवती मनकी जाननेवाली मनुष्योंकरके पूजनीय सदा पतिसहित सौभाग्यवती होती है ॥ ७ ॥

अन्यच्च–"क्षमाशीलप्रसक्ता च कन्यका बांधवप्रिया ॥ अवैरा परलोकार्थां जायते रौद्रदैवते ॥"

अथ पुष्यजातफलमाह ।

पुष्येषु जाता वनिता सुरूपा प्रसिद्धकृत्या सुभगा सुगात्रा । देवद्विजार्चाप्रणया सुहर्म्या सुखाधिका बांधववल्लभा च ॥ ८ ॥

अर्थ-पुष्यनक्षत्रमें पैदा भई नारी सुरूपवती कर्मोंकरके प्रसिद्ध श्रेष्ठ भाग्यवाली सुंदर शरीरवाली देवताब्राह्मणोंका पूजन करनेवाली नम्रतासहित उत्तम मकान सुख अधिक भाइयोंकी प्यारी होतीहै ॥ ८ ॥

अन्यच्च-"धर्मबुद्धिसदारूढा सर्वकार्यकरी सदा ॥ प्रशस्ता कन्यका चैव जायते गुरुदैवते ॥"

अथाश्लेषाजातफलमाह ।

सार्पे कुरूपा व्यसनाभिभूता क्रियाविहीनाति-
कठोरवाक्या । नारी भवेत्सत्यविहीनकृत्या
दंभान्विता पापरता कृतघ्ना ॥ ९ ॥

अर्थ-जो नारी आश्लेषानक्षत्रमें पैदाभई वह अनेक व्यसनोंसे युक्त प्रिय कर्मोंकरके हीन अति कठोर वाणी बोलनेवाली सत्यकरके हीन कर्म करनेवाली क्रोधसहित पापकर्ममें तत्पर अहसान न माननेवाली होतीहै ॥ ९ ॥

तद्यथा-"प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलहप्रिया ॥ कन्यका प्रेमसक्ता च जायते नागदैवते ॥"

अथ मघाजातफलमाह ।

मघासु मान्या बहुशास्त्रपक्षा श्रियाधिका पाप-
विवर्जिता च । भक्ता गुरूणां प्रणता द्विजानां
नारी भवेत्पार्थिवसौख्ययुक्ता ॥ १०

अथ आर्द्राजातफलमाह ।

आर्द्रासु नारी कृतमन्युयुक्ता दुष्टस्वभावा कफपित्तभा-
जा । सुरेंद्रभावा पररंध्रदक्षा महाव्यया कृत्रिमपंडिता च ॥

अर्थ–आर्द्रानक्षत्रमें पैदाभई नारी बनाये हुए अभिमान-
युक्त दुष्ट स्वभाववाली कफ पित्त भोगनेवाली पराये छेदको
इंद्रके समान हजार आँखों करके देखनेवाली बहुत खर्च करै
बनावटकी पंडिता होती है ॥ ६ ॥

अन्यच्च–"पापकर्मप्रसक्ता च कुरूपा कलहप्रिया ॥
कन्यका दृढवैरा च जायते रौद्र दैवते ॥"

अथ पुनर्वसुजातफलमाह ।

पुनर्वसौदंभविहीनभावा श्रुत्याधिका पुण्यपरस्वभावा ।
नारी भवेद्धर्मपरा मनोज्ञा सुपूजिता नाथवती सदैव ॥

अर्थ–पुनर्वसुनक्षत्रमें पैदाभई नारी अभिमान रहित
श्रवण कराहुआ याद बहुत रहे पुण्यवान् स्वभाव जिसका,
धर्मवती मनकी जाननेवाली मनुष्योंकरके पूजनीय सदा
पतिसहित सौभाग्यवती होती है ॥ ७ ॥

अन्यच्च–"क्षमाशीलप्रसक्ता च कन्यका बांधवप्रिया ॥
अवैरा परलोकार्था जायते रौद्रदैवते ॥ "

अथ पुष्यजातफलमाह ।

पुष्येषु जाता वनिता सुरूपा प्रसिद्धकृत्या सुभगा
सुगात्रा । देवाद्विजार्चाप्रणया सुहर्म्या सुखाधिका
बांधववल्लभा च ॥ ८ ॥

अर्थ–पुष्यनक्षत्रमें पैदा भई नारी सुरूपवती कर्मोंक-रके प्रसिद्ध श्रेष्ठ भाग्यवाली सुंदर शरीरवाली देवताब्राह्मणोंका पूजन करनेवाली नम्रतासहित उत्तम मकान सुख अधिक भाइयोंकी प्यारी होतीहै ॥ ८ ॥

अन्यच्च–"धर्मबुद्धिसदारूढा सर्वकार्यकरी सदा ॥ प्रशस्ता कन्यका चैव जायते गुरुदैवते ॥ "

अथाश्लेषाजातफलमाह ।

सार्पे कुरूपा व्यसनाभिभूता प्रियाविहीनाति-कठोरवाक्या । नारी भवेत्सत्यविहीनकृत्या दंभान्विता पापरता कृतघ्ना ॥ ९ ॥

अर्थ–जो नारी आश्लेषानक्षत्रमें पैदाभई वह अनेक व्यसनोंसे युक्त प्रिय कर्मोंकरके हीन अति कठोर वाणी बोलनेवाली सत्यकरके हीन कर्म करनेवाली क्रोधसहित पापकर्ममें तत्पर अहसान न माननेवाली होतीहै ॥ ९ ॥

तद्यथा–"प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलहप्रिया ॥ कन्यका प्रेमसक्ता च जायते नागदैवते ॥ "

अथ मघाजातफलमाह ।

मघासु मान्या बहुशास्त्रपक्षा श्रियाधिका पाप-विवर्जिता च । भक्ता गुरूणां प्रणता द्विजानां नारी भवेत्पार्थिवसौख्ययुक्ता ॥ १०

अर्थ—मघानक्षत्रमें पैदा भई नारी सत्पुरुषोंकरके मान्य बहुत शास्त्र जाननेवाली लक्ष्मी सहित पापकरके रहित ब्राह्मणोंसे नम्र गुरुजनोंकी भक्ता राजाओंकरके सुखयुक्त होती है ॥ १० ॥

अन्यच्च—"महार्हभोजने सक्ता कन्या भोगवती तु सा । पितृदेवार्चने रक्ता जायते पितृदैवते ॥ "

अथ पूर्वाफाल्गुनीजातफलमाह ।

भाग्यैर्जितारिः सुभगा सुपुत्रा नयान्विता सद्व्यवहारदक्षा ॥ शास्त्रानुरक्ता प्रियवादिनी च स्वप्राप्तपुण्या हि भवेत्कृतज्ञा ॥ ११ ॥

अर्थ—भाग्यकरके जीते हैं शत्रु जिसने श्रेष्ठ भाग्यवती उत्तम पुत्रवती नम्रतासहित अच्छे व्यवहारमें चतुर शास्त्रमें आसक्त प्यारी वाणी बोलनेवाली आपही प्राप्त किया है पुण्य जिसने अहसान माननेवाली होती है ॥ ११ ॥

अन्यच्च—"त्यागशीलाविहीना च लोभक्रोधविवर्द्धिनी । कन्यका दृढकामा च जायते भाग्यदैवते " ॥

अथोत्तराफाल्गुनीजातफलमाह ।

जातोत्तरायां स्थिरचित्तवित्ता नयप्रधाना गृहकृत्यदक्षा ॥ गुणानुरक्ता व्यसनैर्वियुक्ता नारी भवेद्रोगविवर्जिताङ्गा ॥ १२ ॥

अर्थ—जो कन्या उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमें पैदाहुई वह कन्या स्थिरचित्तवाली धनवाली नम्रता है प्रधान जिसके घरमें

कार्योंमें चतुर गुणोंमें आसक्त दुर्व्यसनोंकरके रहित रोगक-
रके रहित शरीरवाली होतीहै ॥ १२ ॥

अन्यच्च-"अर्थसंचयसंयुक्ता कन्यका छिद्रकारिणी ॥
किंचिद्धर्मवती चैव जायतेऽर्यमदैवते ॥"

अथ हस्तजातफलमाह ।

हस्ते सुंदरता शुभनेत्रकर्णा क्षमान्विता शीलधना
विधिज्ञा । भवेन्नितांतं वनिता सुभासा महासुखैर्व-
र्द्धितगात्रकीर्त्तिः ॥ १३ ॥

अर्थ-जो कन्या हस्तनक्षत्रमें पैदा भई वह सुन्दर हाथ नेत्र
कानवाली क्षमासहित और शीलवती धनवती अनेक
विधिको जाननेवाली निरंतर वह नारी सुन्दरकांतिवाली बहुत
सुखकरके बढतीहै शरीरकी कीर्ति जिसकी ऐसी होतीहै १३॥

अन्यच्च-"तीक्ष्णा च दृढकामा च परद्रव्यापहारिणी ॥
स्वकर्मकुशला कन्या जायते चार्कदैवते ॥"

अथ चित्राजातफलमाह ।

चित्रासु चित्राभरणा सुरूपा चतुर्दशीमेकतमां
हि हित्वा । तथा च कृष्णे विषकन्यका स्याच्छु-
क्ले दरिद्रा त्वथ बंधकी च ॥ १४ ॥

अर्थ-जो कन्या चित्रानक्षत्रमें पैदाभई वह कन्या विचित्र
आभरणरूपवाली होतीहै परंतु चतुर्दशीतिथि जन्मकी नहीं
होय जो कृष्णपक्षकी चतुर्दशीमें जन्म होय तो विषकन्या

होती है और शुक्लपक्षकी चतुर्दशी चित्रानक्षत्रमें जन्म होय तो वह नारी दरिद्रिणी और पापिनी होती है ॥ १४ ॥

अन्यच्च-"शुक्लांबरधरा कन्या हास्यकामिजनप्रिया । पितृदेवार्चने सक्ता जायते त्वाष्ट्रदेवते ॥"

अथ स्वातीजातफलमाह ।

स्वातीषु जाता सततं सुताढ्या चित्राधिका सत्य-
धनाल्पपाना । नारीभवेत्कीर्तिसमन्विता च
प्रभूतमित्रा विजितारिपक्षा ॥ १५ ॥

अर्थ-जो नारी स्वातीनक्षत्रमें पैदा भई होय वह निरंतर पुत्रोंसहित अधिक चतुर सत्य और धनसहित थोडा पान करनेवाली यशकरके सहित बहुत मित्रोंवाली जीते हैं शत्रुदल जिसने ऐसी होतीहै ॥ १५ ॥

अन्यच्च-"निरालस्यातिरूपा च कुत्सिता च जया-न्विता । कन्यका चाप्रमादी च जायते वायुदेवते ॥"

अथ विशाखाजातफलमाह ।

भवेद्विशाखासु सुहृत्प्रभावा सुकोमलांगी विभ-
वैः समेता । तीर्थानुरक्ता व्रतधर्मदक्षा रामा भवे-
द्बांधववल्लभा च ॥ १६ ॥

अर्थ-विशाखानक्षत्रमें पैदा भई कन्या अपने मित्रोंके प्रभाववाली कोमल शरीर वैभवकरके युक्त तीर्थोंमें आसक्त व्रत धर्ममें चतुर बांधवोंको प्यारी होती है ॥ १६ ॥

अन्यच्च-"धर्ममूलविनीता च प्रज्ञाधनसमन्विता । द्विदैवते हि संजाता कन्यका सत्यवादिनी ॥"

अथानुराधाजातफलमाह ।

मैत्रे सुमित्रा विगताभिमाना प्रसन्नमूर्तिः प्रभुतासमेता ।
विनीतवेषाभरणा सुमध्या भक्ता गुरूणां पतिभक्तियुक्ता॥

अर्थ--अनुराधानक्षत्रमें पैदा भई जो कन्या वह अच्छे मित्रोंसहित अभिमानरहित हमेशा प्रसन्नमूर्ति ऐश्वर्ययुक्त नम्रता लिये स्वरूप जिसका आभरणयुक्त बडेपुरुष तथा पतिकी हमेशा भक्ता होती है ॥ १७ ॥

अन्यच्च--"बहुसुखलोभसंपन्ना मद्यमांसरता सदा । कन्यका चान्यसंसक्ता जायते मित्रदैवते ॥"

अथ ज्येष्ठाजातफलमाह ।

ज्येष्ठासु रम्या वनिता प्रगल्भा सुचारुवाक्या वि-
नयान्विता च । प्रभूतकोपा सुभगा सुताढ्या बंधु-
प्रिया सत्यसमन्विता च ॥ १८ ॥

अर्थ--ज्येष्ठानक्षत्रमें पैदा भई कन्या शोभायमान निर्भय वाक्य बोलनेवाली श्रेष्ठ वचन जिसका नम्रतायुक्त बहुतकोध करनेवाली श्रेष्ठ भाग्यवाली पुत्रोंसहित भाइयोंको प्यारी सत्यकरके सहित होती है ॥ १८ ॥

अन्यच्च ग्रंथांतरे--"शस्त्रोपघातिनी चैव महाकलहकारिणी। कन्यका चातितीक्ष्णा च जायते इंद्रदैवते ॥"

अथ मूलजातफलमाह ।

मूलेऽल्पसौख्या विधवा दरिद्रा रोगाभिभूता

बहुशास्त्रपक्षा । नारी भवेद्बान्धवलोकहीना पराभिभूता बहुनीचगर्वा ॥ १९ ॥

अर्थ--मूलनक्षत्रमें पैदा भई कन्या थोडा सुखवाली विधवा दरिद्रिणी रोगयुक्त बहुत शास्त्रको जाननेवाली बंधुजनोंकरके हीन पराश्रयवती बहुत नीच अभिमानकरकेसहित होतीहै १९॥

अन्यच्च-"पापकर्मा प्रचण्डा च कुकार्यनिरता सदा । कुलक्षयकरी कन्या जायते मूलभे च या ॥"

अथ पूर्वापाढजातफलमाह ।

आप्येनुकूला कुलबंधुमुख्या सुपूज्यकर्म्मातुलवीर्यसत्या । विशालनेत्राद्भुतरूपयुक्ता नारी भवेत्कीर्तियुता सदैव ॥ २० ॥

अर्थ--पूर्वापाढानक्षत्रमें पैदाभई कन्या अपने कुलके अनुकूल बंधुगणोंमें मुख्य पूजनीय कर्मकरनेवाली बहुत बलवान् पतिव्रता बडे नेत्रवाली अद्भुतरूपसहित संसारमें यशवाली होती है ॥ २० ॥

अन्यच्च-"धर्मशीला विनीता च कन्यका सत्यवादिनी । पुण्यकर्मरता चैव जायते जलदैवते ॥"

अथोत्तरापाढजातफलमाह ।

वैश्वे तु जाता वनिता मनोज्ञा भवेद्द्वितीया प्रथिता च लोके । नानार्थभोगैः सहिता प्रधाना संतुष्टचित्ता पतिवल्लभा च ॥ २१ ॥

अर्थ--उत्तरापाढानक्षत्रमें पैदाभई कन्या मनकी जानने

वाली संसारकी स्त्रियोंमें अग्रणी द्वितीया होती है अनेक प्र-कारके धनका भोगकरके सहित प्रधान संतुष्टचित्त पतिको प्यारी होती है ॥ २१ ॥

अन्यच्च-"सती नियतचाश्चैव नित्यं चातिथिपूजिनी ।
कन्यका जायते या तु वैश्वदेवे सुलान्विता ॥"

अथ श्रवणजातफलमाह ।

प्रभूतरूपा हरिभे सुविज्ञा शास्त्रानुरक्ता प्रचुर-प्रभावा ॥ स्त्री सर्वदा दानरता सुसत्या परोप-कारे प्रणता च नित्यम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जो नारी श्रवणनक्षत्रमें पैदा भई वह नारी बहुतरूप वाली बुद्धिमती शास्त्रोंमें आसक्त बडा है प्रभाव जिसका हमेशा दानमें तत्पर पतिव्रता पराया उपकारकरनेवाली नम्रता सहित नित्य ही होती है ॥ २२ ॥

अन्यच्च-"विनीता श्रद्धाना च कथालापप्रियासती ।
कन्यका स्वकुले पूज्या जायते विष्णुदेवते ॥"

अथ धनिष्ठाजातफलमाह ।

भवेद्धनिष्ठासु कथानुरक्ता नारी प्रभूतान्नसुव-स्त्रभाजा । नानार्थदा प्राणिदयानिपण्णा गुणा-धिका सद्गुणचेष्टिता स्यात् ॥ २३ ॥

अर्थ-जो नारी धनिष्ठानक्षत्रमें पैदाभई वह कथाश्रवण करनेमें आसक्त बहुतसे अन्नवाली श्रेष्ठवस्त्रोंको पहिरनेवाली अनेक प्रकारके धन देनेवाली प्राणीमात्रपर दया करनेवा-

तैयार बैठी गुणोंमें अच्छे गुणोंकीसी चेष्टा जिसकी ऐसी होती है ॥ २३ ॥

अन्यच्च-"अर्थार्थिनी च लुब्धा च पुष्पमाल्यांबरप्रिया । कन्यका ह्यन्यसक्ता च जायते वसुदैवते ॥ "

अथ शतभिषाजातफलमाह ।

अभेत्सुदात्री त्वथ वारुणर्क्षे स्त्रीसंमता पूज्यतमा स्ववर्गे । देवार्चने श्रेष्ठजनानुरक्ता सदा हिता सर्वकुतूहलानाम् ॥ २४ ॥

अर्थ-जो स्त्री शतभिषानक्षत्रमें पैदाहुई वह दाता स्त्रियोंके सलाह देनेवाली अपने कुटुम्बमें पूज्य देवताओंके पूजनकरनेवाली सबको हर्षदायिनी होती है ॥ २४ ॥

अन्यच्च-"पापकर्मप्रचण्डा च नित्यमुद्वेगकारिणी । परोपकारिणी कन्या जाता वरुणदैवते ॥ "

अथ पूर्वभाद्रपदजातफलमाह ।

अजैकपादे वनिताभिजाता प्रभूतकोशा श्रुतलालसा च । सत्पात्रदा साधुसमागमोक्ता विद्यान्विता भूरिधनप्रधाना ॥ २५ ॥

अर्थ-जो नारी पूर्वाभाद्रपदके प्रथम चरणमें पैदाहुई वह बहुत धनवाली कथाश्रवणमें है लालसा जिसकी अच्छे पात्रोंको दान देनेवाली साधुओंके समागमकरनेवाली विद्या करके सहित बहुतधनवाली प्रधान होती है ॥ २५ ॥

अन्यच्च-"पापकर्मरता नित्यं कन्यका सर्वभक्षिणी । मायाविनी देवभक्ता जायतेऽजैकपादगे" ॥

अथोत्तराभाद्रपदाजातफलमाह ।

उपांत्यभे स्वामिहितानुरक्ता क्षमान्विता प्रीतिकरा गुरूणाम् । प्रशांतगर्वा सुतसौख्ययुक्ता विवेकिनी सत्यपरा सदैव ॥ २६ ॥

अर्थ–उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें पैदाभई कन्या अपने पतिके हित करनेमें तत्पर क्षमासहित बडे जनोंमें प्रीति करनेवाली शांत है अभिमान जिसका पुत्रसौख्य सहित चतुर सत्यमें तत्पर सदा रहतीहै ॥ २६ ॥

अन्यच्च–"सुबुद्धिधर्मसक्ता च गुणशीलसमन्विता । अहिर्बुध्न्यदैवते तु कन्यका जायते हि या ॥"

अथ रेवतीजातफलमाह ।

पौष्णेसुपुष्टा बहुमित्रपक्षा स्वभावशुद्धा व्रतचारिणी च । तेजोन्विता भूरिचतुष्पदाढ्या हतारिपक्षाप्रियदर्शनाच२७

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके नक्षत्रजातफलवर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अर्थ–जो नारी रेवतीनक्षत्रमें पैदा हुई वह पुष्ट बहुतसे मित्र स्त्रियों जिसकी स्वभावहीसे शुद्ध व्रत तप करनेवाली तेजकरके सहित बहुतसे चतुष्पद सवारीवगैरहकरके युक्त नाश करे हैं शत्रु दल जिसने प्यारा है दर्शन जिसका ऐसी होतीहै ॥ २७॥

अन्यच्च—"मातापितृश्वश्रूश्वशुराणां देवब्राह्मणसेविनी । अनुकूला हि कन्याथ जायते पौष्णदैवते ॥"

इति श्रीवंशवरोलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज राजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां नक्षत्रजातफलवर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

अथ योगजातफलाध्यायो निरूप्यते ।

उक्तं च श्यामदैवज्ञेन ।

अथ विष्कुंभजातफलमाह ।

विष्कुम्भयोगे वनिता सुजाता पुत्रादिसौख्या पतिवल्लभा च । स्वातन्त्र्यकार्ये गृहकर्मदक्षा उदारचित्ताः सततं विनीता ॥ १ ॥

अर्थ–जो नारी विष्कुंभयोगमें पैदाभई वह पुत्र मित्रादिकोंके सौख्यसहित स्वामीको प्यारी सब कामोंमें स्वतंत्र घरके कामोंमें चतुर उदारचित्त निरंतर नम्रतासहित होती है ॥ १ ॥

अथ प्रीतियोगे जातफलमाह ।

या प्रीतियोगप्रभवा पुरंध्री सच्छास्त्रविज्ञा धनधान्ययुक्ता । रूपान्विता दानकरा प्रवीणा प्रसन्नगात्रा जनवल्लभा च ॥ २ ॥

अर्थ–जो नारी प्रीतियोगमें पैदा भई वह अच्छे शास्त्रको जाननेवाली धन और धान्यसहित रूपकरके युक्त दान

करने वाली चतुर हमेशा प्रसन्न देहवाली मनुष्योंकी प्यारी होती है ॥ २ ॥

अथ आयुष्मद्योगजातफलमाह ।

आयुष्मति स्याच्चिरजीविनी वै जाताङ्गना कान्तिभराकुरा सा । वनाद्रिदुर्गेषु नदीषु सक्ता विनीतवेषा बहुधर्मशीला ॥ ३ ॥

अर्थ—जो नारी आयुष्मान्‌योगमें पैदाभई वह बडी उमरवाली बहुत कांतिकरके युक्त वन, पर्वत, किला, नदी इत्यादिकोंमें आसक्त नम्रतालिये वेप जिसका बहुत धर्मवाली शीलवती होतीहै ॥ ३ ॥

अथ सौभाग्ययोगजातफलमाह ।

सौभाग्ययोगे सुभगा सुकन्या प्रज्ञायुता सत्यपरा धनाढ्या । सुमंदहास्या प्रियवादिनी च सुगर्विता रूपबलेन नित्यम् ॥ ४ ॥

अर्थ—जो कन्या सौभाग्ययोगमें पैदाभई वह श्रेष्ठभाग्य बुद्धिकरके सहित सत्यमें तत्पर धनवती अच्छे मंद है हास्य जिसका प्यारी वाणी बोलनेवाली अपने रूप बलकरके नित्य ही गर्वित होती है ॥ ४ ॥

अथ शोभनयोगजातफलमाह ।

नारी भवेच्छोभनयोगमध्ये शोभान्विता ह्याशु रुदुत्तरा सा । बुद्ध्यान्विता दंभविहीनगात्रा पुत्रान्विता सद्व्यवहारदक्षा ॥ ५ ॥

अर्थ–जो नारी शोभनयोगमें पैदाभई वह शोभाकरके सहित जल्दी जवाब देनेवाली बुद्धिकरके सहित पाखंड करके रहित शरीर जिसका पुत्रकरके युक्त अच्छे व्यवहारमें चतुर होती है ॥ ५ ॥

अथातिगंडयोगे जातफलमाह ।

जातातिगंडे प्रमदा मनोज्ञा विशालवक्त्रा समुदा सरोषा । कलिप्रिया क्रोधयुता कुरूपा विवेकहीना व्यसनाभिभूता ॥ ६ ॥

अर्थ–जो नारी अतिगंडयोगमें पैदा भई वह मनकी जाननेवाली विशाल मुख जिसका अभिमानसहित क्रोधवाली लडाई जिसको प्यारी क्रोधसहित कुरूपवाली विवेककरके हीन व्यसनोंमें तत्पर होती है ॥ ६ ॥

अथ सुकर्मयोगे जातफलमाह ।

सुकर्मयोगे प्रमदा प्रसूता प्रज्ञाधिका सर्वकलाप्रवीणा ॥ सत्साहसा दानरता कृतज्ञा परोपकारे निरता सदैव ॥ ७ ॥

अर्थ–जो नारी सुकर्मयोगमें पैदा हुई वह बुद्धिमान् अधिक सब कलाओंमें प्रवीण उत्तम साहसवाली दानमें तत्पर अहसान माननेवाली पराये उपकार करनेमें हमेशा तत्पर होती है ॥ ७ ॥

अथ धृतियोगे जातफलमाह ।

धृत्याख्ययोगे वनिता विधिज्ञा प्रज्ञाधिका सत्य-
परायणा च । नयान्विता सा नियमेन युक्ता प्रशां-
तगर्वा बहुपुत्रपौत्रा ॥ ८ ॥

अर्थ–धृतियोगमें पैदाभई नारी सम्पूर्ण विधियोंको जाननेवाली बुद्धिमती अधिक सत्यमें तत्पर हमेशा रहती है नम्रतासहित व्रतनियमोंमें युक्त शांत है अभिमान जिसका बहुत पुत्र पौत्रोंवाली होती है ॥ ८ ॥

अथ शूलयोगे जातफलमाह ।

शूले कुरूपा शुभबुद्धिहीना सत्कर्मविद्याविन-
योर्विहीना ॥ शूलस्य रुक्जठरे नितांतं दंभा-
न्विता पानपरा कृतघ्ना ॥ ९ ॥

अर्थ–शूल योगमें पैदाभई नारी शुभबुद्धिहीन अच्छे कर्म और विद्या नम्रता करके हीन होतीहै तिसके उदरमें शूलका रोग निरंतर अभिमानसहित मद्यपानमें तत्पर करे हुए अहसानको न माननेवाली होती है ॥ ९ ॥

अथ गंडयोगे जातफलमाह ।

दुष्टा सुहृत्कार्यपराङ्मुखी सा क्रोधान्विता
बंधुजनेन हीना । या गंडयोगे प्रमदा सुजाता
प्रचण्डगण्डा पुरुषस्वभावा ॥ १० ॥

अर्थ–जो नारी गंडयोगमें पैदाभई वह व्यभिचारिणी और अपने मित्रोंके कार्यकरनेमें पराङ्मुख क्रोधसहित भाईयोंकरके हीन बडे भारी गंडस्थल जिसके पुरुषोंकेसे स्वभाववाली होती है ॥ १० ॥

अथ वृद्धियोगे जातफलमाह ।

जाता सुनारी किल वृद्धियोगे धनान्विता दंभविहीनगात्रा ॥ सुसंग्रहे प्रीतिकरा सुदक्षा सुपूजिता पुण्यवती सुशीला ॥ ११ ॥

अर्थ–जो नारी निश्चयकरके वृद्धियोगमें पैदाभई वह धनकरके सहित पाखण्ड करके रहित रूपवाली अच्छे संग्रह करनेमें तत्पर प्रीतिकरनेवाली अतिचतुर मनुष्योंकरके पूजनीय पुण्यवाली उत्तम शीलवती होती है ॥ ११ ॥

अथ ध्रुवयोगे जातफलमाह ।

ध्रुवे सुमान्या सुभगा सुपुत्रा क्षमान्विता सद्व्यवहारदक्षा ॥ प्रसन्नवाक्या धनधान्ययुक्ता शास्त्रानुरक्ता जनवल्लभा च ॥ १२ ॥

अर्थ–जो नारी ध्रुवयोगमें पैदाभई वह सुन्दरभाग्यवाली सुपुत्रवाली क्षमाकरके सहित अच्छे व्यवहारमें चतुर प्रसन्न वाक्य बोलनेवाली धन धान्यकरके युक्त शास्त्रोंमें तत्पर मनुष्योंको प्यारी होतीहै ॥ १२ ॥

अथ व्याघातयोगजातफलमाह ।

**व्याघातजाता खलु घातकर्त्री ह्यसत्यगा प्रीति-
विहीनगात्रा ॥ दयाविहीना कृपणा कृतघ्ना
दंभान्विता युद्धपरा विरक्ता ॥ १३ ॥**

अर्थ—व्याघात योगमें पैदाभई नारी निश्चय करके घात करनेवाली असत्यमें तत्पर प्रीतिकरके हीन है शरीर जिसका दयाकरके रहित कृपण अहसान न माननेवाली पाखण्डसहित संग्राममें तत्पर विरक्त होती है ॥ १३ ॥

अथ हर्षणयोगे जातफलमाह ।

**जाताबला हर्षणनामयोगे प्रसिद्धकृत्या सुभगा
कृतज्ञा । रक्तांबरा हेमविभूषणाढ्या सुस्निग्ध-
गात्रा सुखकीर्तियुक्ता ॥ १४ ॥**

अर्थ—जो नारी हर्षणयोगमें पैदाभई वह अपने कृत्यों करके प्रसिद्ध सुन्दर भाग्यवाली अहसान माननेवाली लाल कपडेवाली सुवर्णके भूषणोंकरके युक्त उत्तम चिकना शरीर सुखकीर्ति करके युक्त होती है ॥ १४ ॥

अथ वज्रयोगे जातफलमाह ।

**या वज्रयोगे प्रमदाभिजाता सा वज्रमुक्ता शुभ-
भूषणाढ्या ॥ प्रज्ञाधिका बंधुजनेन सक्ता सत्या-
न्विता दानरता सुदक्षा ॥ १५ ॥**

अर्थ–जो नारी वज्रयोगमें पैदाभई वह हीराजटित उत्तम आभूषणोंकरके युक्त बुद्धिमती अधिक अपने बंधुजनोंकरके आसक्त सत्यकरके सहित दानमें तत्पर सुन्दर चतुर होती है ॥ १५ ॥

अथ सिद्धियोगे जातफलमाह ।

या सिद्धियोगे वनिता प्रसूता उदारचित्ता सुभगा सुकृत्या ॥ सच्छास्त्रयुक्ता प्रणता द्वि-जानां नारी भवेद्रोगविवर्जिता च ॥ १६ ॥

अर्थ--जो नारी सिद्धियोगमें पैदाभई वह उदारचित्त सुन्दर भाग्यवाली अच्छे कर्मोंके करनेवाली अच्छे शास्त्रयुक्त ब्राह्मणोंसे नम्र रोगकरके हीन शरीरवाली होती है ॥ १६ ॥

अथ व्यतीपातयोगे जातफलमाह ।

जाताङ्गना या व्यतिपातयोग तदा कुरूपा कलहप्रिया च ॥ रोगान्विता पापरता प्रगल्भा जनैर्विहीना विकृताकारा ॥ १७ ॥

अर्थ–जो नारी व्यतीपातयोगमें पैदाभई वह कुरूपवाली लडाई जिसके प्रिय रोगकरके सहित पापकर्ममें तत्पर प्रगल्भ मनुष्योंकरके हीन भयकर आकारवाली होती है ॥ १७ ॥

अथ वरीयान्योगे जातफलमाह ।

वरीयसि स्यात्प्रमदा सुजाता नयान्विता प्रीतिकरा

गुरूणाम् । सा सर्वदा दानरता सुदक्षा नारी भवेत्कीर्तियुता सुरूपा ॥ १८ ॥

अर्थ-जो नारी वरीयान् योगमें पैदा भई नम्रताकरके युक्त बडे जनोंमें प्रीतिकरनेवाली वह स्त्री हमेशा दानकरनेमें तत्पर अतिचतुर कीर्तिकरके युक्त रूपवती होतीहै ॥ १८ ॥

अथ परिघयोगे जातफलमाह ।

जाता भवेत्स्त्री परिघाभिधाने असत्यरक्ता क्षमया विहीना । सदाल्पभाषी विजितारिपक्षा महाव्यया पानपरा सदैव ॥ १९ ॥

अर्थ-जो नारी परिघनामयोगमें पैदाभई वह असत्यमें तत्पर क्षमाकरके रहित हमेशा थोडा बोलनेवाली जीते हैं शत्रु-दल जिसने अधिक खर्चकरनेवाली मद्यपानकरनेवाली हमेशा. होती है ॥ १९ ॥

अथ शिवयोगफलमाह ।

सन्मंत्रशास्त्राभिरता नितांतं जितेंद्रिया चारुवचाः सुशीला । शिवे सुयोगे प्रमदाभिजाता तस्याः शिवं स्याच्छिवसुप्रसादात् ॥ २० ॥

अर्थ-जो नारी शिवनामयोगमें पैदाभई वह अच्छे मंत्र शास्त्रोंमें तत्पर हमेशा इन्द्रियोंकी जीतनेवाली श्रेष्ठ वचन कह-नेवाली उत्तम शील जिसका तिसका कल्याण नित्य शिवकी कृपासे होता है ॥ २० ॥

अथ सिद्धियोगे जातफलमाह ।

या सिद्धियोगे प्रमदाभिजाता सुखान्विता सत्यरता सुगौरा । प्रज्ञाधिका दानदयानुरक्ता सिद्ध्यंति कार्याणि कृतानि तस्याः ॥ २१ ॥

अर्थ–जो नारी सिद्धियोगमें पैदाभई वह सुख करके सहित सत्यमें तत्पर गौरवर्ण बुद्धिमती विशेष दानदयामें आसक्त तिसके करेहुए सम्पूर्ण काम सिद्धिको प्राप्त होते हैं ॥ २१ ॥

अथ साध्ययोगे जातफलमाह ।

या साध्ययोगे वनिता सुरूपा नूनं विनीता धन-धान्ययुक्ता । सन्मंत्रविद्याविधिनेव सर्वं संसाधये-ल्लोजनवल्लभा च ॥ २२ ॥

अर्थ–जो नारी साध्ययोगमें पैदाभई वह स्त्री सुरूपवाली निश्चयकरके नम्रता लिये स्वभाव जिसका धनधान्यकरके युक्त अच्छी मंत्र विद्याकी विधि सम्पूर्ण भले प्रकार साधन करने वाली मनुष्योंकी प्यारी होती है ॥ २२ ॥

अथ शुभयोगे जातफलमाह ।

शुभे सुयोगे प्रमदा प्रमत्ता विशालनेत्रा शुभवा-ग्विलासा । शुभोपदेशं प्रकरोति सर्वं शुभस्य कर्त्री शुभलक्षणा च ॥ २३ ॥

अर्थ–जो नारी साध्ययोगमें पैदाभई वह मदवाली विशाल

मैत्रीवाली शुभवाणीको बोलनेवाली सबको शुभ उपदेश करे सब शुभलक्षणों करके सहित होती है ॥ २३ ॥

अथ शुक्रयोगे जातफलमाह ।

शुक्लोद्भवा या वनिता कृतज्ञा सन्मानशुक्लांबर-
धारिणी च । जितेंद्रिया सत्यरता सुसाध्वी
भवेद्विनीता विजितारिपक्षा ॥ २४ ॥

अर्थ–शुक्ल योगमें पैदा भई नारी अहसान माननेवाली सन्मानसहित सफेद वस्त्रोंके धारण करनेवाली इन्द्रियोंको जीतनेवाली सत्यमें रत पतिव्रता नम्रता सहित जीते हैं शत्रु दल जिसने ऐसी होतीहै ॥ २४ ॥

अथ ब्रह्मयोगे जातफलमाह ।

या ब्रह्मयोगे विधिवत्सविज्ञा सत्यान्विता दानरता
सुहर्म्या । शास्त्रानुरक्ता प्रचुरप्रभावा सुपंडिता
वादविवादशीला ॥ २५ ॥

अर्थ–जो नारी ब्रह्मयोगमें पैदा भई वह विधिपूर्वक कर्म-मार्गमें चतुर सत्यसहित दानमें रत अच्छे मकानवाली शास्त्रोंमें तत्पर बडाहै प्रभाव जिसका सो पंडिता वादविवादमें शील जिसका ऐसी होतीहै ॥ २५ ॥

अथ ऐंद्रयोगे जातफलमाह ।

या चैन्द्रयोगे प्रमदाभिजाता नोंद्रपत्नी प्रथिता च

लोके । श्लेष्माधिका दानरता सुदक्षा बंधुप्रिया सत्यसमन्विता च ॥ २६ ॥

अर्थ-जो नारी ऐन्द्रयोगमें पैदाहुई वह राजाकी पत्नी संसारमें अग्रणी श्लेष्मा है अधिक जिसको दान करनेमें तत्पर श्रेष्ठ चतुर भाइयोंको प्यारी सत्यसहित होतीहै ॥ २६ ॥

अथ वैधृतियोगे जातफलमाह ।

या वैधृतीयोगभवा पुरंध्री कठोरचित्ता कुटिलस्वभावा । दंभान्विता दुष्टजनेऽनुरक्ता दयाभयाभ्यां रहिता सदैव ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके योगजातफलवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अर्थ-जो नारी वैधृतियोगमें पैदाहुई वह कठोरचित्तवाली कुटिल है स्वभाव जिसका पाखण्ड करके सहित दुष्ट मनुष्योंमें तत्पर दया और भयकरके रहित हमेशा रहतीहै ॥ २७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां योगजातफलवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

अथ करणजातफलाध्यायो निरूप्यते
उक्तं च श्यामदैवज्ञेन ।

अथ ववकरणजातफलमाह ।

ववाभिधाने वनिताभिजाता सुकांतिरूपा सुभगा सुशीला । तस्या गृहं सर्वसमृद्धियुक्तं स्वप्राप्तपुण्या हि भवेत्कृतज्ञा ॥ १ ॥

अर्थ—ववनाम करणमें पैदा भई नारी अच्छी कांतियुक्त रूपवाली श्रेष्ठ भाग्यशाली उत्तम शीलवती तिसके घरमें सब तरहकी ऋद्धियाँ होती हैं और अपने आप प्राप्त कियाहै पुण्य जिसने ऐसी और कृतज्ञा होती है ॥ १ ॥

अथ बालवकरणजातफलमाह ।

या बालवे स्याद्वनिताभिजाता प्रज्ञान्विता चारुविलासयुक्ता । बलाधिका धर्मपरा मनोज्ञा गुणान्विता युद्धपरा सुमध्या ॥ २ ॥

अर्थ—जो बालवकरणमें पैदाभई नारी बुद्धिकरके सहित श्रेष्ठ विलाससहित अधिक बलवती धर्ममें तत्पर मनकी जानने वाली गुणोंसहित युद्धमें चतुर स्त्री होतीहै ॥ २ ॥

अथ कौलवकरणजातफलमाह ।

जाता यदा कौलवनामकरणे नूनं स्वतंत्रा बहुमित्रपुत्रा । दयान्विता सत्यरता प्रगल्भा सुकोमलांगी प्रियवादिनी च ॥ ३ ॥

अर्थ—जो कौलवकरणमें नारी पैदा होय वह निश्चय करके स्वतंत्र बहुत मित्रपुत्रोंवाली दया करके सहित

हृदयमें तत्पर प्रगल्भ कोमलशरीरवाली प्रियवाणीकी बोलनेवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ तैतिलकरणजातफलमाह ।

या तैतिले स्याद्वनिता सुमध्या प्रज्ञायुता चारुवचाः कलाज्ञा । सुकांतियुक्ता गृहकर्मदक्षा विनीतवेषाभरणा सुशीला ॥ ४ ॥

अर्थ—जो नारी तैतिलकरणमें पैदा भई वह बुद्धि करके सहित श्रेष्ठवाणीकी बोलनेवाली सर्व कलाओंके जाननेवाली अच्छी कांति करके युक्त घरके कामोंमें चतुर नम्रता लिये स्वरूप जिसका अच्छे आभरणसहित उत्तम शीलवती होती है ॥ ४ ॥

अथ गरकरणजातफलमाह ।

रामा गराख्ये करणेऽभिजाता शूरातिधीरातितरामुदारा । सच्छास्त्रयुक्ता विजितारिपक्षा परोपकारे निरता सुदेहा ॥ ५ ॥

अर्थ—जो नारी गरकरणमें पैदा भई वह शूर अत्यन्त धीर निरंतर उदार अच्छे शास्त्रोंमें युक्त जीते हैं शत्रुदल जिसने पराये उपकार करनेमें तत्पर उत्तमदेहवाली होतीहै ॥ ५ ॥

अथ वणिजकरणजातफलमाह ।

यस्याः प्रसूतिर्वणिजे प्रवीणा वाणिज्यकार्ये कुशला कलाढ्या । प्रज्ञायुता मानविभूषणाढ्या सुमंदहास्या धनधान्ययुक्ता ॥ ६ ॥

अर्थ--जिस नारीके जन्मकालमें वणिजकरण होय वह प्रवीणा वाणिज्यकार्यमें कुशल होती है चतुर कलाओंकरके युक्त बुद्धिसहित मान और भूषणोंकरके सहित मंदमंद हास्य जिसका धनधान्यसहित होती है ॥ ६ ॥

अथ विष्टिकरणजातफलमाह ।

भद्रासु जाता वनिता कुरूपा कठोरवाक्या
पुरुषानुकारा । प्रियाविहीना सततं कुचैला
दुष्टा कुमित्रा व्यभिचारशीला ॥ ७ ॥

अर्थ--जो नारी विष्टिकरणमें पैदाभई वह कुरूपा कठोर वाक्य बोलनेवाली पुरुषोंकेसे आकारवाली प्यार करके हीन निरंतर मलीन दुष्टा खोटे मित्रोंवाली व्यभिचारिणी होती है ॥ ७ ॥

अथ शकुनिकरणजातफलमाह ।

यदि शकुनिषु जाता शाकुनज्ञानशीला अति-
सुललितदेहा मंत्रविद्याप्रवीणा । बहुयुवतिसु-
सख्या चारुसौभाग्ययुक्ता गुणगणपरियुक्ता
सर्वदा सावधाना ॥ ८ ॥

अर्थ--जो नारी शकुनिकरणमें पैदाभई वह शकुनज्ञानमें चतुर अत्यन्तशोभायमानदेहवाली मंत्रविद्यामें प्रवीण बहुत स्त्रियोंके साथ मित्रता रखनेवाली उत्तमभाग्यसहित गुणोंके समूहकरके युक्त हमेशा सावधान होती है ॥ ८ ॥

अथ चतुष्पदकरणजातफलमाह ।

चतुष्पदे स्याद्वनिता विनीता चतुष्पदास्त्र-
स्त्वयुता सुशीला । असंमहा क्षीणशरीरबन्धा
स्वाचारहीना विकृतानुकारा ॥ ९ ॥

अर्थ–जो नारी चतुष्पदकरणमें पैदाभई वह विनीत चतु-
ष्पदोंके बलकरके युक्त उत्तमशीलवती संग्रहकरनेवाली क्षीण-
शरीर आचारकरके हीन बुरे आकारवाली होतीहै ॥ ९ ॥

अथ नागकरणजातफलमाह ।

नागेषु जाता प्रमदा प्रमत्ता दंभान्विता दुष्ट-
वचाः कुशीला । कलिप्रिया द्रोहरता कठोरा
असत्यरक्ता कुलघातिनी सा ॥ १० ॥

अर्थ–जो नारी नागकरणमें पैदाभई वह मदवाली पाखंड
सहित दुष्टवाणी बोलनेवाली खोटे शीलकी लडाई प्यारी
जिसको वैरमें तत्पर कठोरचित्त झूठमें आसक्त कुलकी घात
करनेवाली होती है ॥ १० ॥

अथ किंस्तुघ्नकरणजातफलमाह ।

किंस्तुघ्नजाता वनिता प्रगल्भा धर्मेप्यधर्मे
समतामतिश्च । मैत्र्याममैत्र्यां स्थिरता न
किंचिदंगेप्यनङ्गे विरता सदैव ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसा-
दात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविर-
चिते स्त्रीजातके करणजातफलवर्णनो
नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अर्थ-जो नारी किंस्तुघ्न करणमें पैदाभई वह प्रगल्भ वाणी बोलनेवाली धर्म और अधर्ममें एकसमान है पति जिसकी मित्रता और शत्रुतामें एकसमान रहै, जो अंग और कामकलामें सदा निर्बल रहती है ॥ ११ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां स्त्रीसुन्दरीभाषाटीकायां करणजातफलवर्णनो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

अथ लग्नजातफलाध्यायो निरूप्यते ।

बृहद्यवनः ।

अथ मेषलग्नजातफलमाह ।

मेषोदये सत्यपरा नृशंसा नारी भवेत्क्रोधपरा सदैव । श्लेष्माधिका निष्ठुरवाक्ययुक्ता सदा विरक्ता निजबन्धुवर्गे ॥ १ ॥

अर्थ-जो स्त्री मेषलग्नमें उत्पन्नभई होय वह नारी सत्यमें तत्पर निर्भय हमेशा क्रोधयुक्त श्लेष्मप्रकृतियुक्त निष्ठुरवाक्य बोलनेवाली अपने बंधुवर्गोंसे सर्वकाल विरक्त रहतीहै ॥ १ ॥

अथ वृषलग्नजातफलम् ।

वृषोदये सत्यरता मनोज्ञा विनीतचेष्टा पतिवल्लभा च । नारी भवेत्सर्वकलासु दक्षा स्वर्गानुरक्ता द्विजदेवभक्ता ॥ २ ॥

अर्थ-जो स्त्री वृषलग्नमें पैदाभई वह नारी सत्यमें तत्पर

मनकी जाननेवाली नम्रतालिये स्वरूप जिसका अपने पतिको प्यारी सम्पूर्ण कलाओंमें चतुर अपने बंधुवर्गोंमें तत्पर ब्राह्मण और देवताओंकी भक्ता होती है ॥ २ ॥

अथ मिथुनलग्नजातफलमाह ।

तृतीयलग्नेऽतिकठोरवाक्यास्त्रीकामहीनागुणवर्जिताच ।
सदानृशंसाकफवातयुक्तामहाव्ययाक्रूरविचेष्टिताच ॥ ३ ॥

अर्थ–जो स्त्री मिथुनलग्नमें पैदाभई वह नारी कठोरवाक्य बोलनेवाली और कामसे रहित गुणोंकरके हीन हमेशा निर्दय कफवातसहित बहुत खर्च करनेवाली विकराल चेष्टाकी होती है ॥ ३ ॥

अथ कर्कलग्नजातफलम् ।

लग्ने कुलीरे च भवेत्प्रसूता नारी प्रभूता विनयैः समेता ।
बन्धुप्रियासाधुसुशीलदक्षाप्रजान्वितासर्वसुखैःसमेता ॥ ४ ॥

अर्थ–जो नारी कर्कलग्नमें पैदा भई वह स्त्री बहुत नम्रता करके सहित भाइयोंको प्यारी अच्छे शील करके युक्त चतुर संतानसहित सर्वसुखोंकरके युक्त होती है ॥ ४ ॥

अथ सिंहलग्नजातफलम् ।

सिंहे विलग्ने वनितातितीक्ष्णा भवेत्कफाढ्या
कलहप्रिया वा । नानागदैर्युक्तशरीरगात्रा परो-
पकारे निरता सदैव ॥ ५ ॥

अर्थ–जो कन्या सिंहलग्नमें पैदाभई वह नारी अत्यंत तीक्ष्णस्वभाववाली कफकी प्रकृतिवाली लडाई जिसको प्यारी

अनेक प्रकारके रोगोंकरके सहित देह जिसकी पराये उपकारमें तत्पर हमेशा होती है ॥ ५ ॥

अथ कन्यालग्नजातफलम् ।

कन्योदये या वनिताभिजाता सौभाग्यसौख्यैः सहिता हिता च । भवेत्स्ववर्गे बहुधर्मरक्ता जितेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा ॥ ६ ॥

अर्थ-जो नारी कन्यालग्नमें पैदाभई वह स्त्री सौभाग्यसौख्यकरके सहित हित करनेवाली और अपने वर्गमें बहुत धर्ममें तत्पर इंद्रियोंके जीतनेवाली सम्पूर्णकलाओंमें चतुर होती है ॥ ६ ॥

अथ तुलालग्नजातफलम् ।

लग्ने तुलाख्ये चिरकालकृत्या भवेत्सुमंदा प्रणयेन हीना । सुगर्विता कान्तिविवर्जिता च तृष्णाधिका नीतिविहीनगात्रा ॥ ७ ॥

अर्थ-जो नारी तुला लग्नमें पैदाभई वह नारी बहुतकालमें काम करनेवाली मंदबुद्धि नम्रतारहित गर्वकरके सहित शोभा रहित अधिक तृष्णा जिसको नीति करके हीन होती है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकलग्नजातफलम् ।

नारी भवेद्वृश्चिकलग्नजाता सुरूपगात्रा नयनाभिरामा । सुपुण्यशीला च पतिव्रताच गुणाधिका कृत्यपरा सदैव ॥ ८ ॥

अर्थ-जो नारी वृश्चिक लग्नमें पैदा भई वह कन्या रूपमें श्रेष्ठ शरीरवाली आनंद देनेवाले हैं नेत्र जिसके श्रेष्ठ पुण्यमें

है शील जिसका पतिव्रता गुणोंमें अधिक सत्यमें हमेशा तत्पर रहती है ॥ ८ ॥

अथ धनुर्लग्नजातफलम् ।

चापोदये या वनिताभिजाता सा बुद्धिशूरा पुरुषानुकारा। सामैकसाध्या विधिना कठोरा निःस्नेहयुक्ता प्रणयेन हीना ॥ ९ ॥

अर्थ–जो कन्या धन लग्नमें पैदाभई वह नारी बुद्धिमानोंमें शूर अतिबुद्धिवाली पुरुषोंकेसे आकारवाली सो एक साध्य विधिकरके युक्त कठोर विना स्नेहकरके नम्रता रहित होती है ॥ ९ ॥

अथ मकरलग्नजातफलम् ।

मृगोदये स्त्री सुभगा सुसत्या तीर्थानुरक्ता हतशत्रुपक्षा । प्रधानकृत्या प्रथिता च लोके गुणान्विता पुत्रवती सदैव ॥ १० ॥

अर्थ–जो मकर लग्नमें पैदाभई नारी सो श्रेष्ठ भाग्योंवाली सत्यमें तत्पर तीर्थमें आसक्त नाश करे हैं शत्रुदल जिसने सब कामोंमें प्रधान संसारमें अग्रणी गुणोंकरके सहित पुत्र करके सहित होती है ॥ १० ॥

अथ कुम्भलग्नजातफलम् ।

कुम्भे च लग्ने वनिता सुजाता स्त्री जन्मदक्षा क्षतजार्दिता च । नित्यं गुरूणां सुविरुद्धचेष्टा व्ययाधिका पुण्यपरा कृतघ्ना ॥ ११ ॥

अर्थ--जो नारी कुम्भलग्नमें पैदाभई वह स्त्री जन्मतेही चतुरूरोग वा घाव रक्त करके दुःखी हमेशा वडे पुरुषोंसे विरुद्ध है चेष्टा जिसकी ज्यादे खर्चकरनेवाली पुण्यवाली अहसान न माननेवाली होतीहै ॥ ११ ॥

अथ मीनलग्नजातफलम्।

मीनोदये स्त्री बहुपुत्रपौत्रा पतिप्रिया बांधवलोकमान्या। सुनेत्रकेशा सुरविप्रभक्ता नयान्विता प्रीतिपरा गुरूणाम् ॥ १२ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके लग्नजातफलवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अर्थ--जो नारी मीनलग्नमें पैदा भई वह स्त्री बहुत पुत्रपौत्रादिकों करके सहित पतिको प्यारी भाइयोंको और मनुष्योंको मान्य अच्छे नेत्र और बाल सुन्दर जिसके देव ब्राह्मणोंकी भक्ता नम्रतासहित गुरुओंकी प्रीतिमें तत्पर होतीहै ॥ १२ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक पं०श्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां लग्नजातफलवर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अथ कन्याजन्मनि चंद्रराशिजातफला-
ध्यायो निरूप्यते-वृद्धयवनः ।

अथ मेषराशिजातफलम् ।

चंद्रे क्रियस्थे वनिता प्रगल्भा जाता भवेत्कृत्य-
परा प्रधाना । पुत्रान्विता प्रीतिरता सुसत्या
सदा गुरूणां प्रणयानुरक्ता ॥ १ ॥

अर्थ-जो स्त्री मेषराशिमें पैदा होय वह नारी प्रगल्भा होतीहै सत्यमें रत प्रधान पुत्रोंकरके सहित प्रीतिमें तत्पर पतिव्रता हमेशा बडे जनोंसे नम्रतासहित होती है ॥ १ ॥

अथ वृषराशिजातफलम् ।

वृषाश्रिते शीतकरे सुशीला विद्याविवेकागमशा-
स्त्ररक्ता । तीर्थप्रसक्ता बहुपुत्रपौत्रा पतिप्रिया
कामकलाप्रवीणा ॥ २ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें वृषराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी विद्यामें चतुर वेदवेदांतशास्त्रमें रत तीर्थमें आसक्त बहुतसे पुत्र पौत्रोंसहित पतिको प्यारी कामकलामें चतुर होतीहै ॥ २ ॥

अथ मिथुनराशिजातफलम् ।

नृयुस्थिते शीतकरे विनीता भवेत्सुगात्रा प्रियद-
र्शना च । नानार्थमानैः सहिता विदग्धा परोपकारे
निरतोत्पलाक्षी ॥ ३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें मिथुनराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी अच्छे शरीरवाली प्यारा है दर्शन

जिसका अनेक प्रकारके धन और मानसहित चतुर परापे-
उपकारमें तत्पर तथा कमलसे नेत्रवाली होतीहै ॥ ३ ॥

अथ कर्कराशिजातफलमाह ।

कर्कस्थिते शीतकरे तु जाता नारी भवेत्पूज्यत-
मा स्ववर्गात् । सुमानिनी बांधवलोकमान्या
हतारिपक्षा द्विजदेवभक्ता ॥ ४ ॥

अर्थ—जिस कन्याके जन्मकालमें कर्कराशिमें स्थित चंद्रमा होय वह नारी अपने कुटुंबियोंकरके पूज्य श्रेष्ठ मानवती अपने भाइयोंकरके मान्य, नाश करे हैं शत्रुदल जिसने ब्राह्मण देवताओंकी भक्ता होतीहै ॥ ४ ॥

अथ सिंहराशिजातफलम् ।

सिंहस्थिते चंद्रमसि प्रधाना नारी भवेच्छौर्य-
समन्विता च ॥ प्रियामिषा भूषणवस्त्रभाजा
क्षमान्विता शौचपरा सदैव ॥ ५ ॥

अर्थ—जिस कन्याके जन्मकालमें सिंहराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी शूरतासहित प्यारा है मांस जिसको आभूषण और वस्त्रोंको भोगनेवाली क्षमासहित पवित्रतामें तत्पर होती है ॥ ५ ॥

अथ कन्याराशिजातफलमाह ।

कन्याश्रिते शीतकरे तु जाता नारी भवेद्वित्त-
चतुष्पदाढ्या । प्रीतिप्रधाना जितशत्रुपक्षा
उदारचेष्टा सुभगा सुरूपा ॥ ६ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें कन्याराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी धन और घोडे गौओंकरके युक्त प्रीतिमें प्रधान जीते हैं शत्रुदल जिसने उदार स्वरूपवाली श्रेष्ठ भाग्यवाली अच्छे रूपवाली होती है ॥ ६ ॥

अथ तुलाराशिजातफलम् ।

तुलाधरस्थे शशिनि व्रताढ्या जाता भवेत्स्त्री हितबंधुवर्गा । पतिव्रता पुत्रवती मनोज्ञा विवर्जिता दंभमनोभवाभ्याम् ॥ ७ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें तुलाराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी अपने बंधुवर्गसे हितकरनेवाली पतिव्रता पुत्रोंकरके सहित मनकी जाननेवाली और पाखंड तथा कामबलाकरके रहित होती है ॥ ७ ॥

अथ वृश्चिकजातफलमाह ।

चन्द्रेऽलिसंस्थे तु सुगुप्तचिता स्थिरस्वभावा सुविदग्धचेष्टा । हिता गुरूणां नियमैः समेता प्रभूतकोशा विगताभिमाना ॥ ८ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें वृश्चिकराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी स्थिर स्वभाववाली श्रेष्ठ चतुर चेष्टावाली बडेजनोंमें हितकरनेवाली व्रतनियमसहित बहुतधनवाली दूर हुआ है अभिमान जिसका ॥ ८ ॥

अथ धनूराशिजातफलम् ।

धनुर्धरस्थे शशिनि व्रताढ्या नारी भवेद्दान-

पेरा सुरागा । गीतिप्रिया प्राणहितानुकूला प्रिया-
नना स्त्रीजननी हतारिः ॥ ९ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें चंद्रमा धन राशिमें स्थित होय वह नारी वलोंकरके युक्त दान करनेमें तत्पर लाल ओठवाली गीतादिकोंका प्यारकरे प्राणीमात्रके हितके अनुसार करनेवाली प्यारा है मुख जिसका नाश किये हैं शत्रु जिसने वह कन्याकी संतान पैदा करतीहै ॥ ९ ॥

अथ मकरराशिजातफलम् ।

चन्द्रे मृगस्थे विकरालदंष्ट्रा नारी भवेद्धैर्यपरा
मनोज्ञा । विद्याधिका सत्ययुता सुरूपा दया-
न्विता नीतिपरा विनीता ॥ १० ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें चंद्रमा मकरराशिमें स्थित होय वह नारी विकरालदाढवाली धीरजवाली मनकी जाननेवाली अधिकविद्यासहित सत्यसे युक्त श्रेष्ठरूपवाली दयासहित नीतिमें तत्पर नम्रतासहित होती है ॥ १० ॥

अथ कुम्भराशिजातफलम् ।

घटाश्रिते शीतकरे तु जाता नारी भवेच्चंद्रसमा-
नवक्त्रा । सुदानशीला सुतवित्तयुक्ताशुभानुकारा
प्रथिताभिमाना ॥ ११ ॥

अर्थ–जो नारी कुम्भराशिस्थितचंद्रमामें पैदा होय वह नारी चंद्रसमानमुखवाली श्रेष्ठ दान करनेमें स्वभाव जिसका पुत्र और धनसहित शुभकर्मकरनेवाली यथोचित अभिमानी होतीहै ॥

अथ मीनराशिजातफलमाह ।

मीनस्थिते वै हिमगौ सुताढ्या नारी भवेद्धर्मपरा सुशीला ॥ जितेन्द्रिया सर्वकलासु दक्षा लज्जान्विता मानयुता मनोज्ञा ॥ १२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते बालवर्णाजातके चंद्रराशिफलवर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मकालमें मीनराशिमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी पुत्रवाली धर्ममें तत्पर सुशीला इंद्रियोंकी जीतनेवाली सम्पूर्णकलाओंमें चतुर लज्जासहित मानयुक्त मनकी जाननेवाली होती है ॥ १२ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां चंद्रराशिगुणवर्णनो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

अथ सूर्यादीनां द्वादशभावफलाध्यायः ।

अथ तनुभावस्थितसूर्यफलम् ।

मूर्तौ रविस्तीव्रमुखां प्रसुते नारीं तथा तीव्ररुजासमेताम् । दुष्टस्वभावां सुकृशां कृतघ्नीं परान्नरक्तां प्रभया विहीनाम् ॥ १ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें लग्नमें सूर्य स्थित होय वह स्त्री तीव्र मुखवाली तीव्ररोगों करके सहित दुष्ट स्वभाववाली

दुर्बल शरीर अहसान न माननेवा ी पराये अन्नमें रत भय-करके हीन होती है ॥ १ ॥

अथ धनभावस्थितसूर्यफलम् ।

धनस्थितोऽर्को धनधान्यहीनां कठोरवाक्यां गतभक्तिभावाम् । युद्धप्रियां द्वेषरतां खलां च नारीं प्रसूते गतसौहृदां च ॥ २ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें धनभावमें सूर्य स्थित होय वह नारी धनधान्यकरके हीन कठोर वाक्य बोलनेवाली दूर हुआ है भक्तिभाव जिसका लडाई जिसको प्यारी वैरमें तत्पर खोटी दूर करा है मित्रभाव जिसने ऐसी होतीहै ॥ २ ॥

अथ तृतीयभावस्थितसूर्यफलम् ।

तृतीयगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते सौख्येन हीनां वनितां सदैव । नीरोगदेहां च सुरूपवक्त्रां विशालवक्षोजनतां नितान्तम् ॥ ३ ॥

अर्थ-जिस औरतके जन्मकालमें तीसरे घरमें सूर्य स्थित होय वह नारी सौख्यकरके हीन हमेशा रोगरहित शरीर अच्छे स्वरूप और मुखवाली ऊंचा है वक्षस्थल जिसका निरंतर वह यशवाली होती है ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितसूर्यफलम् ।

चतुर्थगस्तीक्ष्णकरः प्रसूते सौख्येन हीनां वनितां सदैव । सरोगदेहां विकरालदंष्ट्रां प्रभाविहीनां जनताविरुद्धाम् ॥ ४ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें सूर्य स्थित

होय वह नारी सुखकरके हीन हमेशा रोगसहित शरीरवाली विकराल है दाँढ जिसकी शोभारहित मनुष्योंसे विरुद्धरहने वाली होती है ॥ ४ ॥

अथ पंचमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सुताश्रितः स्वल्पसुतां प्रसूते नारीप्रधानां व्रत-
संयुतां च । स्थूलास्यदंतां पितृमातृभक्तां प्रि-
यंवदां ब्राह्मणसंमतां च ॥ ५ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें पंचमभावमें सूर्य स्थित होय वह नारी थोडे पुत्रवाली स्त्रियोंमें प्रधान व्रत नियम सहित स्थूल मुख और दाँतोंवाली पिता माताकी भक्ता प्यारी वाणी बोलनेवाली ब्राह्मणोंकी भक्ता होती है ॥ ५ ॥

अथ षष्ठभावस्थितसूर्यफलम् ।

षष्ठे दिनेशः कुरुते प्रगल्भां हतारिपक्षां वनितां
विदग्धाम् । प्रशांतचर्य्यां प्रियधर्मकृत्यां धर्मा-
नुरक्तां सुभगां सुरूपाम् ॥ ६ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें छठेभावमें सूर्य स्थित होय वह नारी प्रगल्भा नाश करे हैं शत्रुदल जिसने स्त्रियोंमें चतुर शांति है स्वभाव जिसका प्रिय है धर्मकृत्य जिसको धर्ममें तत्पर श्रेष्ठ भाग्यवाली रूपवती होती है ॥ ६ ॥

अथ सप्तमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सूर्येऽस्तसंस्थे पतिभावमुक्ता नारी भवेत्सर्वसु-
खैर्विमुक्ता ॥ सदैव रौद्रा प्रणयेन हीना कफाश्र-
या किल्बिषिणी कुरूपा ॥ ७ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें सूर्य सप्तमभावमें स्थित होय वह नारी पतिभावमें रहित हमेशा सम्पूर्ण सुखोंसे हीन सर्वकाल क्रोधालिये स्वभाव जिसका नम्रतारहित कफ प्रकृति पापिनी खोटेहृदयवाली होती है ॥ ७ ॥

अथाष्टमभावस्थितसूर्यफलम् ।

सूर्योऽष्टमस्थानगतः प्रसूते दारिद्र्यदुःखान्वित-
बंधुगोत्राम् । नारीं कुधर्मान्वितसर्वकृत्यां
विषादयुक्तां क्षतजार्दितांगीम् ॥ ८ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें सूर्य स्थित होय वह नारी दारिद्र और दुःख सहित अपने गोत्री भाइयोंसे युक्त पापमें तत्पर खोटे कर्म करनेवाली विषादस- हित घाव करके सहित शरीरवाली होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितसूर्यफलम् ।

धर्मस्थितो वासरपः प्रसूते नारीं कुधर्मां प्रिय-
साहसां च । भाग्यैर्विहीनां बहुशत्रुपक्षां प्रभू-
तरोगां विभवैर्विहीनाम् ॥ ९ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें नवमभावमें स्थित सूर्य होय वह नारी कुछ धर्मप्रिय साहसी होती है और भाग्य- करके हीन बहुत शत्रुओंसहित बहुत रोग करके युक्त वैभव हीन होती है ॥ ९ ॥

अथ दशमभावस्थितसूर्यफलम् ।

कर्माश्रितो वासरपः प्रसूते कुकर्मरक्तां वनितां

सदैव । प्रभावहीनां शिथिलां स्वकृत्ये स्व-
भावकृच्छ्राभ्यधिकां नितान्तम् ॥ १० ॥

अर्थ-जिस औरतके दशम स्थानमें सूर्य स्थित होय तो वह नारी हमेशा खोटे कर्मोंमें तत्पर कांतिहीन अपने कामोंमें शिथिल स्वाभाविक दुष्ट अधिक होती है ॥ १० ॥

अथ लाभभावस्थितसूर्यफलम् ।

लाभाश्रितः संकुरुते दिनेशो नारीं सलाभां
बहुपुत्रपौत्राम् । जितेन्द्रियां सर्वकलासु दक्षां
क्षमान्वितां बांधवपूजितां च ॥ ११ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें लाभस्थानमें सूर्य स्थित होय वह नारी लाभसहित बहुत पुत्रपौत्रवती होतीहै इंद्रियोंको जीतनेवाली सर्वकलाओंमें चतुर क्षमाकरके सहित बांधवोंकरके पूजनीय होती है ॥ ११ ॥

अथ द्वादशभावस्थितसूर्यफलम् ।

असद्व्यया द्वादशगे दिनेशे नारी प्रसूता विनयेन हीना ।
बहुव्ययापानरतानृशंसासर्वाशयाशौचविवर्जिताङ्गी१२॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें बारहवें स्थानमें सूर्य स्थित होय वह स्त्री खोटेकर्ममें धन खर्च करनेवाली नम्रतारहित बहुत खर्च करनेवाली मद्यपानमें तत्पर निर्भय भक्ष्याभक्ष्य खानेवाली पवित्रतारहित शरीरवाली होती है ॥ १२ ॥

अथ लग्नस्थितचंद्रफलम् ।

चंद्रोविलग्नेयदिशुक्लपक्षेनारींप्रसूतेऽतिसुरूपगात्राम् ।
कृष्णेकृशांदीनतरांसरोगांविवादशीलांसततंकुचैलाम् ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें शुक्लपक्षका चंद्रमा लग्नमें स्थित होय वह नारी अत्यंत रूपयुक्त शरीरवाली होती है और जो कृष्ण पक्षका चंद्रमा लग्नमें स्थित होय तो वह नारी दीन रोगसहित झगडा करनेका स्वभाव जिसका निरंतर मलिन होती है ॥ १३ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितचन्द्रफलम् ।

धनाश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतवित्तां प्रणयप्रधानाम् । धर्म्मानुकूलां पतिकृत्यदक्षां नयाधिकां ब्राह्मणदेवभक्ताम् ॥ १४ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें धन भावमें चंद्रमा बैठा होय वह स्त्री बहुत धनवाली नम्रता है प्रधान जिसके धर्मके अनुसार स्वामीकी सेवकाईमें चतुर नम्रता अधिक देवताओं और ब्राह्मणोंकी भक्ता होती है ॥ १४ ॥

अथ तृतीयभावस्थितचन्द्रफलम् ।

चन्द्रस्तृतीये कफवातसारां नारीं प्रसूतेतिकठोरवाक्याम् । क्रुत्संस्थितां नीतिविवर्जितां च स्वभावदुष्टां कृपणां कृतघ्नाम् ॥ १५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें चंद्रमा तीसरे घरमें बैठा हो वह स्त्री कफवात अतीसारके रोगकरके पीडित कठोर वाक्य बोलनेवाली क्रोधमें स्थित नीति करके हीन स्वाभाविक दुष्ट कृपण और कृतघ्न होती है ॥ १५ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितचंद्रफलम् ।

चंद्रः सुखस्थो बहुसौख्ययुक्तां नारीं प्रसूतेऽ-

द्भुतभूषणां च । स्थिरस्वभावां श्रुतधर्मकृत्यां भोगाधिकां देवगुरुप्रसक्ताम् ॥ १६ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें चंद्रमा सुखभावमें स्थित होय वह स्त्री बहुत सौख्यसहित अद्भुत आभूषण धारण करनेवाली स्थिरस्वभाव वेदके धर्मकरनेवाली अधिक भोग करनेवाली देवता और ब्राह्मणोंमें आसक्त होती है ॥ १६ ॥

अथ पंचमस्थितचंद्रफलम् ।

सुताश्रितः शीतकरः सुपुत्रां करोति नारीं गुणगौरवाढ्याम् । प्रभूतभृत्यां सुतसौख्ययुक्तां धनान्वितां सद्व्यवहारशीलाम् ॥ १७ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें पंचम घरमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी अच्छे पुत्रों सहित गुण गौरवता करके सहित बहुतसे नौकरोंवाली पुत्रसौख्यसहित धन करके सहित अच्छे व्यवहारमें है शील जिसका ॥ १७ ॥

अथ षष्ठस्थितचन्द्रफलम् ।

चंद्रोऽरिसंस्थः कुरुतेऽल्पवित्तां प्रभूतवैरां विनयेन हीनाम् । चलस्वभावां क्षतसर्वगात्रां पतिप्रयुक्तामनिशं सुरूपाम् ॥ १८ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें चंद्रमा छठे स्थानमें स्थित होय वह स्त्री थोडे धनवाली बहुत दुस्मनाई करनेवाली नम्रतारहित चलायमानस्वभाव सब शरीरमें घाव स्वरूपयुक्त पतिकरके सहित होती है ॥ १८

अथ सप्तमस्थितचन्द्रफलम् ।

चंद्रोऽस्तसंस्थः कुरुते विदग्धां पतिप्रियां धर्म-
विवेकयुक्ताम् । सुचारुवाचं विभवैः समेतां
तेजोन्वितां पुण्यपरां सुसत्याम् ॥ १९ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें चंद्रमा सप्तमस्थानमें स्थित होय वह नारी चतुर पतिको प्यारी धर्म और विवेक करके युक्त श्रेष्ठ उत्तमवाणी बोलनेवाली वैभवसहित तेजकरके सहित पुण्यमें तत्पर पतिव्रता होती है ॥ १९ ॥

अथाष्टमस्थितचंद्रफलम् ।

चंद्रोऽष्टमस्थः कुरुते नृशंसां नारीं कुनेत्रां कुकु-
चां कुयोनिम् । विहीनवेषाभरणां सरोगां निता-
न्तमत्यद्भुतगर्हणां च ॥ २० ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें अष्टमस्थानमें चंद्रमा स्थित होय वह स्त्री निर्दय बुरे नेत्रोंवाली बुरे हैं कुच और योनि जिसकी स्वरूपरहित आभरणहीन रोगसहित निरंतर अत्यंत अद्भुत निंदित कर्म करनेवाली होती है ॥ २० ॥

अथ नवमभावस्थितचंद्रफलम् ।

धर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतधर्मां वनितां
विदग्धाम् । भाग्याधिकां कल्पतमां मनोज्ञां
सुभृत्यपुत्रां च सुभूरिसौख्याम् ॥ २१ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके जन्मकालमें नवमभावमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी बहुत धर्मकरनेवाली स्त्रियोंमें चतुर भाग्यवाली

प्रशंसालायक रूप जिसका मनकी जाननेवाली श्रेष्ठ नौकर और पुत्रोंकरके बहुत सौख्य पाती है ॥ २१ ॥

अथ दशमभावस्थितचंद्रफलम् ।

कर्माश्रितः शीतकरः प्रसूते प्रभूतहेमद्रविणां प्रसिद्धाम् । नारीं निरीहां कुलसर्वमुख्यां त्यागान्वितां पुण्यपरां सुसत्याम् ॥ २२ ॥

अर्थ-जिस नारीके दशमभावमें चंद्रमा स्थित होय वह नारी बहुत सुवर्ण और धनवानोंमें प्रसिद्ध कुछ इच्छा न करे अपने कुलमें सबमें मुख्य त्यागकरके सहित पुण्यमें तत्पर पतिव्रता होती है ॥ २२ ॥

अथ लाभस्थितचंद्रफलम् ।

लाभाश्रितः शीतकरः सलाभां भव्यां विधिज्ञां कुरुते सुधात्रीम् । नारीं प्रसन्नां प्रणयेन युक्तां दानान्वितां रोगविवर्जिताङ्गीम् ॥ २३ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें ग्यारहवें भावमें चंद्रमा स्थित होय वह स्त्री लाभसहित प्रकाशवती विधियोंकी जाननेवाली दाता प्रसन्न नम्रतायुक्त दानकरनेवाली रोगकरके रहित शरीरवाली होती है ॥ २३ ॥

अथ व्ययभावस्थितचंद्रफलम् ।

करोति चंद्रो व्ययगो व्ययाढ्यां गतप्रभावां वनितां सुतीव्राम् । दीनां नतां नीतिविवर्जितां च क्षमाविहीनां सरुजां सदैव ॥ २४ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें चंद्रमा बारहवें स्थानमें

स्थित होय वह स्त्री खर्चकरनेवाली दूर हुआ है प्रभाव जिसका तीव्रस्वभाववाली दीन नीतिकरके रहित क्षमाविहीन हमेशा रोगसहित होती है ॥ २४ ॥

अथ लग्नस्थितभौमफलम् ।

लग्नाश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं महारक्तसुदुः-खिताङ्गीम् । गतप्रभावं पतिना निरस्तां सुदु-र्भगां गर्वसमन्वितां च ॥ २५ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें लग्नवर्ती मंगल होय तो वह नारी बहुत खूनके रोगकरके दुःखित शरीरवाली दूर हुआ है प्रभाव जिसका पतिकरके त्यागीगई दुष्टभाग्यवती अभिमान-सहित होती है ॥ २५ ॥

अथ धनभावस्थितभौमफलम् ।

धनाश्रितो भूतनयो विशालधनेन हीनां कुरुते कुकांताम् । पराधिकां कामपरां सरोगां क्लेशा-धिकां क्लेशविवर्जितां च ॥ २६ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मक में धनभावमें मंगल स्थित होय वह स्त्री विशाल धनकरके हीन खोटी होती है और सौत भावसहित विषयासक्त रोगवती अधिक क्लेशोंकरके हीन होती है ॥ २६ ॥

अथ तृतीयभावस्थितभौमफलम् ।

तृतीयसंस्थः कुरुते कुपुत्रां नारीं नितांतं सुभ-गां सुशीलाम् । बंधुप्रियां साधुरतां प्रशस्तां विहीनरोगां प्रथितप्रभावाम् ॥ २७ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे घरमें मंगल स्थित होय वह स्त्री निरंतर श्रेष्ठ भाग्यवती उत्तम शीलवती भाइयोंको प्यारी साधुओंमें तत्पर शोभायमान रोगरहित यथोचित प्रभाव शाली होती है ॥ २७ ॥

अथ चतुर्थस्थितभौमफलम् ।

चतुर्थगो भूतनयः प्रसूते नारीं हताशां हतकर्म-
कृत्याम् । सौख्येन हीनामधनां विशीलां जनै-
र्निरस्तां सततं सरोषाम् ॥ २८ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें चौथे स्थानमें मंगल स्थित होय वह नारी नाश हुई है आशा जिसकी निंदितकर्म करनेवाली सौख्यकरके हीन खोटे स्वभाववाली मनुष्योंकरके त्यागीभई निरंतर क्रोधमूर्ती रहती है ॥ २८ ॥

अथ पंचमस्थितभौमफलम् ।

सुताश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं कुपुत्रां कृपया
विहीनाम् । कुसंमतिं पापविधानरक्तां श्रुतेन
हीनां हतबंधुवर्गाम् ॥ २९ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें पंचमभावमें मंगल स्थित होय वह नारी दुष्टपुत्रोंवाली कृपाकरके रहित खोटी सलाह देनेवाली पापकर्ममें तत्पर वेदकर्मसे हीना नाश करे है बंधुवर्ग जिसने वा आप बंधुवर्गोंसे हत होती है ॥ २९ ॥

अथ षष्ठस्थितभौमफलम् ।

रिपुस्थितो भूतनयः प्रसूते नारीं सनाथां हत-

शत्रुपक्षाम् । प्रभूतकेशां सुजनानुरक्तां विद्याधि-
कां रोगविवर्जितां च ॥ ३० ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें छठे घरमें मंगल स्थित होय वह नारी पतिकरके सहित नाश करे हैं शत्रुदल जिसने बहुत केशोंवाली अच्छे जनोंमें तत्पर अधिक विद्यावाली रोगकरके रहित शरीरवाली होतीहै ॥ ३० ॥

अथ सप्तमभावस्थितभौमफलम् ।

अस्ते स्थितो वै धरणीसुतस्तु बाल्ये प्रसूते
विधवां च नारीम् । दुष्टस्वभावां विभवेन
हीनां सुकुत्सिताङ्गीं गुणवर्जितां च ॥ ३१ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तमभावमें मंगल स्थित होय वह नारी विधवा दुष्ट स्वभाववाली वैभवकरके हीन बुरे शरीरवाली गुणोंकरके रहित होती है ॥ ३१ ॥

अथाष्टमभावस्थितभौमफलम् ।

मृतिस्थितो भूमिसुतः प्रसूते प्रभूतरोगां सुकृशां
विनाथाम् । दरिद्रदुःखां कृतशोकभाजां हिंसा-
धिकां कांतिविवर्जितां च ॥ ३२ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें अष्टमभावमें मंगल स्थित होय वह नारी बहुत रोगसहित दुर्बल शरीरवाली पतिरहित दरिद्र और दुःखोंकी भागी शोकसहित हिंसाकरनेवाली शोभाहीन होती है ॥ ३२ ॥

अथ नवमभावस्थितभौमफलम् ।

धर्माश्रितो भूतनयो विषमां करोति नारीं सुपु-

खां सरोगाम । भाग्यैर्विहीनां स्वजनैर्निरस्तां प्रियामिषां पानपरां सदैव ॥ ३३ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें नवमभावमें मंगल स्थित होय वह नारी धर्मरहित श्रेष्ठमुखवाली रोगसहित भाग्यकरके हीन अपने कुटुंबियोंकरके त्यागीभई प्रिय है मांस जिसको मद्यपानमें तत्पर होती है ॥ ३३ ॥

अथ दशमभावस्थितभौमफलम् ।

कर्म्माश्रितो भूतनयः प्रसूते नारीं कुकर्मश्रवणां कुभावाम् । शीलेन हीनां निरतां विधर्मां लज्जाविहीनां मतिवर्जितां च ॥ ३४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें दशमस्थानमें मंगल स्थित होय वह नारी कुकर्मके श्रवणकरनेवाली, खोटे स्वभावकी, शीलरहित, खोटे धर्ममें तत्पर, लज्जाविहीन, बुद्धिरहित होती है ॥ ३४ ॥

अथ लाभभावस्थितभौमफलम् ।

लाभाश्रितस्संकुरुते महीजः प्रभूतलाभां वनितां निरीहाम् । शुभस्वभावां विविधोपचारामम्वारतां ीतिपरां च धर्मे ॥ ३५ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें लाभस्थानमें मंगल स्थित होय वह स्त्री बहुत लाभसहित इच्छारहित अच्छे स्वभावकी अनेक उपचार करनेवाली मातामें तत्पर अरु धर्ममें प्रीति करनेवाली होती है ॥ ३५ ॥

अथ व्ययभावस्थितभौमफलम् ।

व्ययस्थितो भूतनयः प्रसूते नारीं कृतघ्नां गुणव-
र्जिताङ्गीम् । असद्व्ययां पानपरां नृशंसां सदातुरां
प्रीतिविवर्जितां च ॥ ३६ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें बारहवें स्थानमें मंगल स्थित होय वह स्त्री अहसान न माननेवाली गुणोंकरके रहित खोटे काममें धन खर्च करे मद्यपानमें तत्पर निर्दय हमेशा आतुर प्रीतिकरके रहित होती है ॥ ३६ ॥

अथ तनुभावस्थितबुधफलम् ।

करोति सौम्यस्तनुगः सुरूपां प्रीतिप्रधानां न-
यधर्मयुक्ताम् । विशालनेत्रां प्रचुरान्नपानां प्रियं-
वदां सत्यसमन्वितां च ॥ ३७ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें लग्नमें बुध स्थित होय वह स्त्री रूपसहित प्रीतिमें तत्पर नम्र और धर्मसहित बडेनेत्रोंवाली अधिक अन्न और पानादिसहित प्यारी वाणी बोलनेवाली सत्यसहित होती है ॥ ३७ ॥

अथ धनभावस्थितबुधफलम् ।

धनस्थितः सोमसुतः प्रसूते धनान्वितां शुद्धि-
युतां सुरूपाम् । नारीं द्विजाराधनतत्परां च
ऋतुप्रियां श्रीसहितां गुणाढ्याम् ॥ ३८ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें दूसरे स्थानमें बुध [स्थित]
होय वह स्त्री धनवती शुद्धतालिये स्वरूप जिसका ब्राह्मणोंका

सेवामें तत्पर यज्ञ प्रिय जिसको लक्ष्मीसहित शोभायुक्त गुणवती होती है ॥ ३८ ॥

अथ तृतीयभावस्थितबुधफलम् ।

तृतीयगः सोमसुतो धनाढ्यां नारीं प्रसूते सुतमानभाजम् । जनानुकूलां प्रभुतासमेतां बन्धुप्रियां त्राणयुतां सुभासम् ॥ ३९ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे घरमें बुध स्थित होय वह स्त्री धनवती पुत्रोंकरके मान भोगनेवाली मनुष्योंकी आज्ञानुसार चलनेवाली ऐश्वर्यसहित भाइयोंको प्यारी रक्षासहित शोभायमान कांतिवाली होती है ॥ ३९ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्यः सुखस्थः सुसुखां प्रसूते नतां प्रभूतैः सुजनैः सुभृत्यैः । देवद्विजाराधनतत्परां च प्रख्यातवंशां प्रियधर्मवर्णाम् ॥ ४० ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बुध चतुर्थभावमें स्थित होय वह नारी श्रेष्ठ सुखसहित बहुत नम्रता और अच्छेपुरुष श्रेष्ठ नौकरों करके सहित देवता और ब्राह्मणोंके आराधनमें तत्पर अपने वंशमें नामी अपने वर्णका धर्म है प्रिय जिसको ऐसी होती है ॥ ॥४० ॥

अथ पंचमस्थितबुधफलम् ।

सुतस्थितः सोमसुतोऽल्पपुत्रां स्वल्पान्नवित्तांकलहप्रियां च । वृथाटनां गर्हितसर्वकृत्यां लक्ष्म्या विहीनां हतसाधुपक्षाम् ॥ ४१ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके जन्मकालमें बुध पंचम स्थानमें स्थित होय वह नारी थोडे पुत्रवाली थोडा अन्न और धनसहित लडाई प्यारी जिसको वृथा भ्रमण करनेवाली निंदित काम करनेवाली लक्ष्मीरहित साधुओंसे विमुख होतीहै ॥ ४१ ॥

अथ षष्ठभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्यो रिपुस्थो हतशत्रुपक्षां नारीं प्रभूतैर्विभवैः समेताम् । गतायुषं तीव्रकशां सुकामां परोपकारव्यसनाभिसक्ताम् ॥ ४२ ॥

अर्थ—जिस नारीके बुध छठे स्थानमें स्थित होय वह स्त्री शत्रुपक्षको नाश करनेवाली वैभवकरके सहित दूर हुई है आयुष जिसकी बडे हाथ कामकलामें आसक्त पराये उपकारमें तत्पर तथा विषयमें आसक्त होती है ॥ ४२ ॥

अथ सप्तमभावस्थितबुधफलम् ।

सौम्यः कलत्रे प्रवरां विदग्धां शास्त्रानुरक्तां शुभभर्तृकां च । करोति नारीं नियमैरुपेतां शुभप्रभावां प्रणयान्वितां च ॥ ४३ ॥

अर्थ—जिस स्त्रीके जन्मकालमें सप्तम भावमें बुध स्थित होय वह नारी बडी भारी चतुर शास्त्रमें आसक्त श्रेष्ठपतिसहित वह औरत नियमों करके सहित श्रेष्ठ है प्रभाव जिसका नम्रतासहित होती है ॥ ४३ ॥

अथाष्टमभावस्थितबुधफलम् ।

मृत्युस्थितः सोमसुतः कृतघ्नां नारीं प्रसूते

विगताभिमानाम् । निरस्तधर्म्मां जनसंविरुद्धां सदातुरां भीतिसमन्वितां च ॥ ४४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें बुध स्थित होय वह नारी अहसान न माननेवाली दूर हुआ है अभिमान जिसका धर्मोंकरके रहित मनुष्योंसे विरुद्ध हमेशा आतुर भयकरके संयुक्त होती है ॥ ४४ ॥

अथ नवमभावस्थितबुधफलम् ।

धर्म्माश्रितः सोमसुतः सुकर्मां पतिप्रधानां वनितां प्रसूते । प्रभूतकोशां विनयान्वितां च सुवर्णभूषां व्रतदानयुक्ताम् ॥ ४५ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें नवम भवनमें बुध स्थित होय वह नारी अच्छे कर्म करनेवाली पति है प्रधान जिसके बहुत धन नम्रतासहित सुवर्णके भूषण और व्रतदानसहित होतीहै४५

अथ दशमभावस्थितबुधफलम् ।

कर्माश्रितः सोमसुतः सुधर्मां धन्यां प्रसूते वनितां विनीताम् । भाग्याधिकां कीर्तिपरां सुदक्षां क्षमाधिकां सत्यसमन्वितां च ॥ ४६ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें दशमभावमें बुध स्थित होय वह नारी अच्छे धर्मकरनेवाली स्त्रियोंमें धन्य नम्रतासहित अधिकभाग्यवाली कीर्तियुक्त श्रेष्ठ चतुर अधिक क्षमा और सत्यसहित होती है ॥ ४६ ॥

अथ लाभस्थितबुधफलम् ।

लाभाश्रितः सोमसुतः प्रसूते नारीं प्रभूत प्रिय-

पुष्टवित्ताम् । सुलाभयुक्तां शुभशीलभाजं पति
व्रतां बांधवसंमतां च ॥ ४७ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें बुध लाभ स्थानमें स्थित होय वह स्त्री बहुत प्रिय पुष्ट धनवती अच्छे लाभसहित अच्छे शीलयुक्त पतिव्रता भाइयोंकरके संमत होती है ॥ ४७ ॥

अथ व्ययभावस्थितबुधफलम् ।

व्ययाश्रितः सोमसुतः प्रसूते नारीमलक्ष्मीं
विगतप्रतापाम् । विवादशीलां विकलां कृशाङ्गीं
गुरोर्वियुक्तां सुजनैर्निरस्ताम् ॥ ४८ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बारहवें भवनमें बुध स्थित होय वह नारी लक्ष्मीरहित दूर हुआ है प्रताप जिसका विवाद करनेका है स्वभाव जिसका विकल दुर्बल शरीर बडे पुरुषोंसे रहित अच्छे जनोंकरके त्यागीभई होती है ॥ ४८ ॥

अथ लग्नस्थितगुरुफलम् ।

लग्नाश्रितो देवगुरुः प्रसूते सुसत्त्वयुक्तां सुमनोज्ञभोगाढ्य
गंभीरवाक्यां प्रियसाधुपक्षां सुरूपगात्रां प्रमदोत्तमां च ।

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें बृहस्पति लग्नमें स्थित होय वह नारी पतिमतत्वसहित श्रेष्ठ मनकी जाननेवाली भोगकरके सहित गंभीरवाणी बोलनेवाली प्यारे हैं साधु जिसको श्रेष्ठ रूप और शरीर करके स्त्रियोंमें उत्तम होती है ॥ ४९ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितगुरुफलम् ।

धनास्थितो देवगुरुः प्रसूते प्रभूतवित्तां सुभगां मनोज्ञाम्

अग्रणीय धर्ममें तत्पर सो स्त्री धन्यकर्मोंकरके विख्यात मा०
वाणी बोलनेवाली होती है ॥ ६२ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशुक्रफलम् ।

तृतीयगो दैत्यगुरुः प्रसूते नारीं सुकृत्यां विनयैः समेताम् । युक्तामनेकैः सुसहोदरैश्च सहोदरीभिश्च तथोत्तमाभिः ॥ ६३ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे घरमें शुक्र स्थित होय वह नारी श्रेष्ठ कर्मोंसहित नम्रतायुक्त श्रेष्ठ अनेक भाइयोंकरके सहित तैसेही श्रेष्ठ बहनोंकरके सहित होतीहै ॥ ६३ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशुक्रफलम् ।

चतुर्थगोदैत्यगुरुःप्रसूतेप्रभूतसौख्यांवनितांधनाढ्याम् । विलासशीलांपरधर्मकृत्यांजितेंद्रियांवंशविभूषणां च ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें चौथे घरमें शुक्र स्थित होय वह स्त्री बहुत सौख्यवाली धनवती विलासमें स्वभाव जिसका पराये धर्मको करे इंद्रियोंकी जीतनेवाली अपने वंशमें आभूषणसमान होती है ॥ ६४ ॥

अथ पंचमभावस्थितशुक्रफम् ।

करोति नारीं खलु पंचमस्थः साध्वीं समृद्धां बहुकन्यकाढ्याम् । रम्यानुकारां खलु संगहीनां नित्यं प्रधानां निजवंशमध्ये ॥ ६५ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें शुक्र पंचमभावमें बैठा होय वह नारी ऋद्धियोंसहित बहुत कन्यासंतानसहित शोभा-

समान आकारवाली निश्चयकरके संगहीन अपने वंशमें नित्यही प्रधान होती है ॥ ६५ ॥

अथ षष्ठस्थितशुक्रफलम् ।

शुक्रोरिसंस्थः प्रकरोति नारीमीर्ष्याप्रधानां बहुकोपयुक्ताम् । तीव्रस्वभावां विजितारिपक्षां सदा निरस्तां पतिपुत्रवर्गैः ॥ ६६ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें शुक छठे स्थानमें स्थित होय वह स्त्री द्रोहकरनेवालियोंमें प्रधान बहुत क्रोधसहित तीव्रस्वभाववाली जीते हैं शत्रुदल जिसने हमेशा पतिपुत्रादिकों करके निरादर करी गई होती है ॥ ६६ ॥

अथ सप्तमस्थितशुक्रफलम् ।

कलत्रगो दैत्यगुरुः प्रसूते नारीं प्रभूतां द्रविणप्रभावाम् । पतिप्रियां शास्त्ररतां प्रगल्भां हितां द्विजानां जनवल्लभां च ॥ ६७ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें सप्तम भवनमें शुक्र स्थित होय वह स्त्री अधिक धनके प्रभाव सहित पतिको प्यारी शास्त्रमें तत्पर प्रगल्भा ब्राह्मणोंका हित करनेवाली मनुष्योंकी प्यारी होती है ॥ ६७ ॥

अथाष्टमस्थितशुक्रफलम् ।

शुक्रोऽष्टमस्थः कुरुते प्रमत्तां विषादभाजां विभवैर्वियुक्ताम् । दयाविहीनां परवंचनार्तां कुचेलिनीं धर्मविवर्जितां च ॥ ६८ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें अष्टम भवनमें शुक्रस्थित

होय वह स्त्री मतवाली विपादकी भागी दयाकरके हीनमनुष्यों करके निंदित करी भई मलिन धर्मरहित होती है ॥ ६८ ॥

अथ धर्मभावस्थितशुक्रफलम् ।

धर्म्माश्रितो धर्मपरां प्रसूते शुक्रः सुमुख्यां वनितां च लोके । नानार्थवस्त्राश्रयभोजनाढ्यां सुपुष्टचित्तां पुरुषानुकाराम् ॥ ६९ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें नवम स्थानमें शुक्र स्थित होय वह नारी संसारकी स्त्रियोंमें अग्रणी अनेक प्रकारके वस्त्र और स्थान भोजन करके युक्त श्रेष्ठ पुष्ट चित्त पुरुषोंके माफिक उदार होती है ॥ ६९ ॥

अथ दशमभावस्थितशुक्रफलम् ।

कर्म्माश्रितोदैत्यगुरुःप्रसूतेनारींयशस्यांसुधनैःसमेताम् प्रसिद्धकर्मप्रतिपूजितांगींरूपाधिकांकल्पतरांसुसत्याम्

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें दशम स्थानमें शुक्र बैठा होय वह नारी यशवाली श्रेष्ठ धनसहित कर्मोंकरके प्रसिद्ध कर्म करनेवाली पूजित शरीरवाली बुद्धिमती प्रशंसायोग्य है रूप जिसका ऐसी श्रेष्ठ पतिव्रता होती है ॥ ७० ॥

अथैकादशभावस्थितशुक्रफलम् ।

लाभाश्रितो दैत्यगुरुः प्रसूतेप्रभूतलाभां वनितां सदैव । विमुक्तदोषां बहुशास्त्ररक्तां महाप्रभावांविविधालयां च ।

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें लाभस्थानमें शुक्र दशम स्थित होय वह स्त्री बहुत लाभसहित सदा होती है सर्व

दोषोंसे रहित बहुत शास्त्रोंमें तत्पर बडे प्रभाववाली अनेक स्थान सहित होती है ॥ ७१ ॥

अथ व्ययभावस्थितशुक्रफलम् ।

व्ययाश्रितोऽसद्व्ययदुःखभाजं नारीं प्रसूते भृगुजः समायाम् । क्रोधाधिकां कृत्रिमवाक्यरक्तां रोगान्वितां बुद्धिविहीनदुष्टाम् ॥ ७२ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें बारहवें भावमें शुक्र स्थित होय वह स्त्री अच्छे काममें धनखर्च करनेवाली बनावटके वचन बोलनेवाली रोगसहित बुद्धिहीन दुष्टा अर्थात् पर-पुरुषगामिनी होती है ॥ ७२ ॥

अथ लग्नस्थितशनिफलम् ।

करोतिः शौरः खलु लग्नसंस्थो विरूपदेहां वनितां नितांतम् । ह्यामाधिकां कीर्तिविवर्जितांगीं स्थूलास्थिदंतां नयनैर्विहीनाम् ॥ ७३ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें जन्म लग्नमें शनैश्चर स्थित होय वह नारी बुरे रूपवाली देहकी निरंतर होती है आमातिसार रोगसहित यश करके हीन मोटे हाड और दांत जिसके नेत्रहीन होती है ॥ ७३ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितशनिफलम् ।

धनाश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते धनेन हीनां वनितां निरस्ताम् । सदाभिभूतां प्रणयेण हीनां नृशंसभा-

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें दूसरे घरमें शनैश्चर स्थित होय वह नारी धनकरके हीन मनुष्यों करके निरादर करी गई नम्रताहीन निर्भयस्वभाववाली रोगसहित होती है ॥ ७४ ॥

अथ तृतीयभावस्थितशनिफलम् ।

तृतीयसंस्थो रविजः प्रसूते दक्षां प्रधानां वनितां सुधन्याम् । बहुप्रजां त्राणविधानसक्तां प्रशंसितां साधुजनेन नित्यम् ॥ ७५ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे घरमें शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री चतुर स्त्रियोंमें प्रधान धन्य होती है बहुत संतानसहित रक्षाकरनेमें तत्पर हमेशा साधु मनुष्यों करके प्रशंसा करी जाती है ॥ ७५ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितशनिफलम् ।

करोति मन्दः सुखगोऽल्पसौख्यां मतिप्रहीणां वनितां कृतघ्नाम् । चलस्वभावां विभवैर्विहीनां सदाहितां नीचसमागमां च ॥ ७६ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें चतुर्थ स्थानमें शनैश्चर स्थित होय वह नारी मतिहीन अहसानको न माननेवाली चलायमान स्वभाव जिसका वैभवकरके हीन हमेशा अहित करनेवाली नीच पुरुषोंके साथ रहती है ॥ ७६ ॥

अथ पंचमस्थितशनिफलम् ।

सुताश्रितो भास्करजो विपुत्रां नारीं प्रसूत घृणया विहीनाम् । प्रभूतदर्पां गणिकानुकारां विवर्जितां साधुसमागमेन ॥ ७७ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें पंचम भावमें शनैश्चर स्थित होय वह नारी घृणाकरके रहित बडे अभिमानवाली वेश्याओंके समान आचार जिसका साधुओंके समागमसे रहित पुत्रहीन होती है ॥ ७७ ॥

अथ रिपुभावस्थितशनिफलम् ।

मन्दोऽरिसंस्थः कुरुते विमन्दां नारीं प्रधानां
तनयैः समेताम् । प्रभूतवस्त्राभरणैः समेतां
गुणानुरक्तां पतिवल्लभां च ॥ ७८ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें छठे भावमें शनैश्चर स्थित होय वह स्त्री मंदतारहित स्त्रियोंमें प्रधान पुत्रोंसहित बहुत वस्त्र आभूषणोंसहित गुणोंमें तत्पर अपने पतिको प्यारी होतीहै ॥ .

अथ सप्तमभावस्थितशनिफलम् ।

सौरोऽस्तसंस्थोविधवां प्रसूतेविवर्जितांवापतिनासदैव ।
रोगाधिकांपानपरां कुमित्रांप्रभूतदोषांबहुपापभाजम् ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें शनैश्चर सप्तमस्थानमें स्थित होय वह स्त्री विधवा होतीहै अथवा पति करके रहित हमेशा रहै अधिक रोगवती मद्यपानमें तत्पर दुष्ट मित्रोंवाली बहुत दोषोंसहित अनेक पापोंकी भागी होती है ॥ ७९ ॥

अथाष्टमभावस्थितशनिफलम् ।

स्थानेऽष्टमे सूर्यसुतः प्रसूते स्निग्धां च नारीं
निजकर्मदोषाम् । दुष्टस्वभावां गतकर्मधैर्यां
मलिम्लुचां वंचनतत्परांच ॥ ८० ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें अष्टम स्थानमें शनैश्वर स्थित होय वह नारी चिकने शरीरवाली अपकर्मोंके दोषोंसहित दुष्टस्वभाववाली नाश करे हैं कर्म और सत्यता जिसने मलिन स्वभाव निंदाकरनेमें तत्पर होती है ॥ ८ ॥

अथ नवमभावस्थितशनिफलम् ।

धर्माश्रितः सूर्यसुतः प्रसूते कुकर्मरक्तां वनितां सदैव ।
व्ययाधिकांलुब्धसुहृत्समेतांनिसर्गदुष्टांधनवर्जितां च ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें नवम भावमें शनैश्वर स्थित होय वह नारी खोटे कर्मोमें आसक्त हमेशा होती है ज्यादे खर्च-करनेवाली अपने मित्रों सहित कृपण विद्याहीन बहुत दुःख भागी होती है ॥ ८१ ॥

अथ दशमभावस्थितशनिफलम् ।

कर्माश्रितःसूर्यसुत प्रसूतेकुकर्मरक्तां विकृतानुकाराम् ।
कुशास्त्रसंगव्यसनाभिभूतां निसर्गदुष्टां धनवर्जितां च ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें दशम भावमें शनैश्वर बैठा होय वह स्त्री खोटेकर्मोंमें तत्पर विरूपदेह खोटे शास्त्रोंका संग करनेवाली व्यसनोंमें तत्पर स्वाभाविक दुष्ट धनकरके रहित होती है ॥ ८२ ॥

अथ लाभभावस्थितशनिफलम् ।

लाभाश्रितो भास्करजः प्रसूते रक्ताधिकां वात-
कफप्रगल्भाम् । विवेकहीनां कुटिलस्वभावां
सदा निरक्तां व्यसनाकुलां च ॥ ८३ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें लाभस्थानमें शनैश्वर

स्थित होय वह स्त्री सुनके फिसादसहित ज्यादे वात कफप्रकृतिवाली प्रगल्भा चतुरताहीन कुटिलस्वभाव हमेशा निरादर करीहुई व्यसनोंकरके आकुल होतीहै ॥ ८३ ॥

अथ व्ययभावस्थितशनिफलम्।

व्ययाश्रितेभास्करजःप्रसूतेव्ययेनयुक्तांकृपणस्वभावाम्।
असद्व्ययांपापरतांनिरस्तांनिसर्गदुष्टांधनवर्जितां च॥८४॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें बारहवें स्थानमें शनैश्वर स्थित होय वह स्त्री बहुत खर्च करनेवाली कृपण स्वभाववाली खोटे कर्ममें धन खर्च करनेवाली पापकर्ममें तत्पर निरादर करीहुई स्वाभाविक दुष्ट धनरहित होतीहै ॥ ८४ ॥

अथ लग्नभावस्थितराहुफलम्।

उक्तं च श्यामदेवज्ञेन ।

करोति राहुर्यदिलग्नसंस्थो विरूपदेहां वनितां विशीलाम् । रोगाधिकां मानविवर्जिताङ्गीं क्रोधान्वितां सर्वजनैर्निरस्ताम् ॥ ८५ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें राहु लग्नभावमें स्थित होय वह स्त्री बुरी देहवाली शीलरहित अधिक रोगसहित मान करके हीन शरीर जिसका क्रोधसहित सम्पूर्ण मनुष्योंकरके तिरस्कार करी जाती है ॥ ८५ ॥

अथ द्वितीयभावस्थितराहुफलम्।

द्वितीयभावे यदि राहुसंस्थितिर्वित्तैर्विहीनां

कुरुते कुकान्ताम् । सौख्यैर्विहीनां विधवां सरोगां दारिद्र्यदुःखान्वितपापभाजम् ॥ ८६ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें दूसरे घरमें राहु स्थित होय वहनारी धनहीन खोटी औरत होती है सौख्यरहित विधवा रोगसहित दरिद्र दुःखयुक्त पापोंकी भागी होतीहै ॥ ८६ ॥

अथ तृतीयभावस्थितराहुफलम् ।

तमस्तृतीये वनितां प्रसूते विहीनबन्धुं भगिनीविहीनाम् । सुपुष्टदेहां विजितारिवृन्दां क्षमान्वितां रोगविवर्जितां च ॥ ८७ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें तीसरे भावमें राहु स्थित होय वह स्त्री भाइयोंकरके हीन तथा बहिनोंकरके रहित बलवान् देहवाली जीते हैं शत्रुदल जिसने क्षमासहित रोगविहीन होती है ॥ ८८ ॥

अथ चतुर्थभावस्थितराहुफलम् ।

करोति राहुः सुखगोऽल्पवित्तां जनैर्विहीनां प्रमदां कृतघ्नाम् । चतुष्पदप्रीतिसरोगदेहां विवर्जितां मातृसुखैर्नितांतम् ॥ ८८ ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें चतुर्थस्थानमें राहु स्थित होय वह नारी थोडी धनवाली और मनुष्योंकरके हीन अहसान न माननेवाली चतुष्पद सवारी वगैरहसे प्रीति करे रोगसहित शरीर माताके सुखकरके रहित निरंतर होती है ॥ ८८ ॥

अथ पंचमस्थितराहुफलम् ।

सुताभिधाने भवने तमो वै नारीं प्रमत्तां प्रभु-
ताविहीनाम् । स्थूलास्यदंतां गणिकानुकारां
प्रभाविहीनां स्वजनैर्वियुक्ताम् ॥ ८९ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें पंचम घरमें राहु स्थित होय वह स्त्री मदमाती ऐश्वर्यहीन मोटे दांत और मुख जिसका वेश्याके समान कांतिरहित अपने जन बंधु पुत्रादिकोंसे त्याग करीगई होतीहै ॥ ८९ ॥

अथ षष्ठभावस्थितराहुफलम् ।

तमोरिसंस्थः कुरुते प्रगल्भां दयान्वितां सर्व-
जितारिपक्षाम् । प्रभूतविद्यां धनधान्ययुक्तां
सदा सुभाषां पतिवल्लभां च ॥ ९० ॥

अर्थ–जिस स्त्रीके जन्मकालमें छठे घरमें राहु स्थित होय वह नारी प्रगल्भा दयासहित समस्त जीते हैं शत्रुदल जिसने बहुत विद्या और धनधान्यसहित हमेशा मीठी वाणी बोलनेवाली पतिको प्यारी होती है ॥ ९० ॥

अथ सप्तमस्थितराहुफलम् ।

तमःकलत्रे पतिभावहीनां नारीं प्रसूते कुरुते
कुरूपाम् । सुदुष्टचित्तां कृपणां कृतघ्नां सदा
निरस्तां निजबंधुवर्गैः ॥ ९१ ॥

अर्थ–जिस नारीके जन्मकालमें राहु सप्तम स्थित होय वह स्त्री पतिहीन कुरूपा होती है सो दुष्टचित्त कृपण और कृतघ्न हमेशा अपने बंधुवर्गोंसे त्यागकरी हुई होती है ॥ ९१ ॥

अथाष्टमस्थितराहुफलम् ।

यदाष्टमस्थो दिननाथशत्रुः सरोगदेहां विधवां कुरूपाम् । कठोरचित्तां व्यभिचारशीलां महागदैः पीडितलोकहीनाम् ॥ ९२ ॥

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें आठवें स्थानमें राहु स्थित होय वह स्त्री रोगसहितदेहवाली विधवारूप सहित कठोरचित्त व्यभिचारमें शील जिसका बडे रोगकरके पीडित मनुष्योंकरके हीन होतीहै ॥ ९२ ॥

अथ नवमस्थितराहुफलम् ।

यदा तपस्थो रजनीशशत्रुर्नारीं विधर्मां परधर्मपक्षाम् । प्रियामिषांपानपरां नृशंसां वृथाटनां कीर्तिविवर्जितां च

अर्थ-जिस नारीके जन्मकालमें नवम स्थानमें राहु स्थित होय वह स्त्री धर्मरहित पराये धर्मका पक्ष करनेवाली मांस प्रिय जिसको, मद्यमें तत्पर निर्दय वृथा घूमनेवाली यश राहित होती है ॥ ९३ ॥

अथ दशमास्थितराहुफलम् ।

सिंहीसुतश्चेद्दशमे स्थितः स्यान्नारीं प्रसूते पितृमातृहीनाम् । पत्या निरस्तां स्वजनैर्विरुद्धां क्रोधान्वितां सर्वहतारिपक्षाम् ॥ ९४ ॥

अर्थ-जिस स्त्रीके जन्मकालमें दशमस्थानमें राहु स्थित होय वह नारी मातापिता करके हीन पति करके निरादरकरी भई अपने मित्रजनोंसे विरोध करनेवाली क्रोधसहित सब नाश करेंहैं शत्रुपक्ष जिसने ऐसी होती है ॥ ९४ ॥

अथ लाभस्थितराहुफलम् ।

लाभे तमोऽतिविसुरूपयुक्तां सदा विनीतां
पतिवल्लभां च । तुरंगनागैः सहितां प्रस-
न्नां सुभृत्यपुत्रैर्विनितां समेताम् ॥ ९५ ॥

अर्थ—जिस नारीके जन्मकालमें लाभस्थानमें राहु स्थित होय वह स्त्री रूपसहित हमेशा नम्रतासहित पतिको प्यारी घोडे हाथियोंसहित प्रसन्नचित्त श्रेष्ठ नौकर और पुत्रों करके युक्त होती है ॥ ९५ ॥

अथ व्ययभावस्थितराहुफलम् ।

राहुर्व्ययस्थः कुरुते कुकर्मासद्व्ययां दुःखदरी-
द्रभाजम् । जनैर्निरस्तां पतिपुत्रहीनां व्ययाधिकां
नेत्ररुजा समेताम् ॥९६॥ वसिष्ठगर्गादिमुनिप्रणी-
तान्वराहकल्याणकृतान्निरीक्ष्य । सज्जातके खेट-
फलं क्रमेण सुपोषितां सद्यशसे कृतं हि ॥९७॥
इति श्रीशिवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसा-
दात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविर-
चिते स्त्रीजातके ग्रहभावफलवर्णनो नाम
नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अर्थ—जिस कन्याके जन्मकालमें बारहवें स्थानमें राहु स्थित होय वह नारी खोटे कर्मोंमें तत्पर बुरे कामोंमें खर्च करनेवाली दुःख दरिद्र भोगनेवाली मनुष्योंकरके त्यागी हुई पति और पुत्रोंकरके हीन खर्च ज्यादे करनेवाली नेत्र

के रोग सहित होतीहै ॥ ९६ ॥ वासिष्ठ गर्गादि मुनीश्वरों करके प्रणीत और वराह कल्याण आचार्यों करके कहे हुए ग्रंथोंको देखकर ग्रहोंके फल क्रमसे उत्तम स्त्रियोंके हितार्थ और यशोर्थ यह नवीन ग्रंथ संग्रह किया है ॥ ९७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीवलदेवप्रसादात्मज-
राजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी-
भाषाटीकायां रव्यादिग्रहभावफलवर्णनो नाम
चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

अथ मूलजन्माध्यायः ।

तत्राभुक्तमूललक्षणमाह–नारदः ।

यो ज्येष्ठामूलयोरंतरालप्रहरजः शिशुः ।
अभुक्तमूलयोः सार्पमघानक्षत्रयोरपि ॥ १ ॥

अर्थ–जो लडका लडकी ज्येष्ठा और मूल नक्षत्रके बीचके एक प्रहरमें उत्पन्न हुआ तथा आश्लेषा और मघा नक्षत्रके एक प्रहर बीचमें पैदा हुआ वो अभुक्तमूल कहाता है अर्थात् ज्येष्ठा नक्षत्रमें अंतकी ३॥। पौने चारघडी और मूल नक्षत्रके आदिकी ३॥। पौने चार घडी यह एक प्रहर हुआ उसको अभुक्त मूल कहते हैं इसी प्रकार आश्लेपा नक्षत्रके अंतकी ३॥। और मघा नक्षत्रके आदिकी ३॥। घडी इसको भी अभुक्तमूल कहते हैं परन्तु गणितागतमें प्रहरार्धका प्रमाण जरूर देखलेना चाहिये पहिले नक्षत्रका सर्वर्क्ष बनाले उस सर्वर्क्षको सोलह हिस्सा नक्षत्रके आदि अंतका अभुक्त मूल कहताहै ॥ १ ॥

तत्राभुक्तमूलकालमाह-वसिष्ठः ।

भुजंगपौरंदरपौष्णभानां तदग्रभानां च यदंतरालम् ।
अभुक्तमूलं प्रहरप्रमाणं त्यजेत्सुतां तत्रभवां सदैव ॥२॥

अर्थ-आश्लेषा-ज्येष्ठा-रेवती इन नक्षत्रोंके अगाडीके अर्थात् आश्लेषा-मघा और ज्येष्ठा-मूल, रेवती-अश्विनी इन नक्षत्रोंके अंत और आदिका जो अंतराल है उस एक प्रहरका नाम अभुक्तमूल है इस प्रहरमें पैदा हुई जो कन्या उसको निरंतर त्याग करनी चाहिये ॥ २ ॥

तथा च अभुक्तमूलसंज्ञामाह-शौनकः ।

सार्पेचपैत्र्यंत्वथशाक्रमूलपौष्णाश्विनीनांच यदंतरालम् ।
अभुक्तमूलंप्रहरप्रमाणंतदुत्थकन्यांनविलोकयेत्पिता ॥३॥

अर्थ-आश्लेषा-मघाका और ज्येष्ठा-मूलका, रेवती-अश्विनीका जो अंतराल है वह अभुक्त प्रहर प्रमाण है उस प्रहरमें पैदा हुई कन्याको पिता न देखे ॥ ३ ॥

अभुक्तमूलोत्पन्नबालस्य त्यागः ।

अभुक्तमूलजं पुत्रं पुत्रीमपि परित्यजेत् ॥

अर्थ-अभुक्तमूलमें पैदा हुआ लडका वा लडकीको परित्याग करना चाहिये ।

अथ त्यागाशक्तौ शांतिः ।

अथ वाब्दाष्टकं तातस्तन्मुखं नावलोकयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ-जो त्याग करनेकी शक्ति न होय तो आठ वर्ष पीछे शांतिकरके बालकका मुख देखना चाहिये ॥ ४ ॥

अथ मूलजातस्य चरणवशेन फलम् ।

मूलाद्यंशे पितुर्नाशो द्वितीये मातुरेव च ॥
तृतीये धनधान्यानां नाशस्तुर्ये धनागमः ॥ ५ ॥

अर्थ–जो बालक मूलके पहिले चरणमें पैदा होय तो पिताका नाश करे दूसरे चरणमें उत्पन्न माताका नाश करे तीसरे चरणमें उत्पन्न धनधान्यका नाश करे चौथे चरणमें उत्पन्न धनका आगम कराता है ॥ ५ ॥

अथाश्लेषाजातस्य चरणवशेन फलम् ।

फलं तदेव सार्पर्क्षे प्रतीपं चान्त्यपादतः ॥ ६ ॥

अर्थ–जो कन्या या पुत्र आश्लेषा नक्षत्रके पहिले चरणमें पैदा होय तो धनागम होय दूसरे चरणमें धनधान्यका नाश करे तीसरे चरणमें उत्पन्न माताका नाश करे और चौथे चरणमें उत्पन्न पिताका नाश करे ॥ ६ ॥

अथ कन्याजन्मनिमूलजातचरणफलमाह ।

मूलस्य प्रथमे पादे पशुपीडा प्रजायते ।
द्वितीये चरणे जाता सर्वसौख्यप्रदा भवेत् ॥ ७ ॥
तृतीयांशे च मूलस्य पितृपक्षविनाशिनी ॥
चतुर्थांशप्रजाता स्त्री मातृपक्षक्षयंकरी ॥ ८ ॥

अर्थ–जो कन्या मूलके पहिले चरणमें पैदा भई सो पशुओंको पीडा करती है और दूसरे चरणमें पैदा भई सम्पूर्ण सौख्यदायिनी होती है ॥ ७ ॥ और तीसरे चरणमें पैदाभई पितापक्षका नाश करती है और चौथे चरणमें पैदाभई मातापक्षका नाश करती है ॥ ८ ॥

अथ मूलाश्लेषाजातफलमाह—नारदः ।
सुतः सुता च नियतं श्वशुरं हंति मूलजा ।

अर्थ—जो लडका लडकी निश्चयकरके मूलनक्षत्र वा आश्लेषा नक्षत्रमें पैदा होय तो वह श्वशुरका नाश करती है ॥

अथास्यापवादः ।
तदंत्यपादयोर्नैव तथाश्लेषाद्यपादजा ॥ ९ ॥

अर्थ--जो लडका लडकी मूलनक्षत्रके अंतिम चरणमें पैदा होय और आश्लेषा नक्षत्रके पहिले चरणमें पैदा होय तो मूलजात दोष नहीं है श्वशुरको शुभ है ॥ ९ ॥

अथ श्वशुरादिहंत्रीयोगः ।

मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा तु तदंगनाम् ॥
ऐंद्री तदग्रजं हंति देवरं तु द्विदैवजा ॥ १० ॥

अर्थ—जो कन्या मूलनक्षत्रमें पैदा होतीहै वह श्वशुरका नाश करती है जो कन्या आश्लेषा नक्षत्रमें पैदा भई वह सासका नाश करती है जो कन्या ज्येष्ठा नक्षत्रमें पैदाभई वह पतिके बडे भाईका नाश करती है जो कन्या विशाखा नक्षत्रमें पैदा भई वह देवरका नाश करती है ॥ १० ॥

तथा च मूलजातफलं—श्रीपतिः ।

जननीं जनकं हंति भर्तुर्मूलादिधिष्ण्यजा ।
द्वीशान्त्यपादजो दुष्टो तद्वज्ज्येष्ठान्त्यपादजा॥ ११॥

अर्थ–जो कन्या मूलनक्षत्रमें पैदा भई वह कन्या भर्ताके भ्राता पिताका नाश करतीहै और विशाखानक्षत्रमें अंतिम चरणमें पैदाभई कन्या या पुत्र भर्ताके मातापिताको दुष्टफल देते हैं तिस प्रकार ज्येष्ठानक्षत्रके अंतिमचरणमें उत्पन्न कन्या पूर्वोक्त दुष्ट फल देती है ॥ ११ ॥

तथाच मूलाऽऽश्लेषाजातफलं–गणपतिः ।
आश्लेषाख्यसमुत्पन्नो श्वश्रूं कन्यासुतो हतः ।
मूलजो श्वशुरं हंति ज्येष्ठोत्था स्वधवाग्रजम् ॥१२॥

अर्थ–आश्लेषानक्षत्रमें पैदाभई कन्या तथा पुत्र सासका नाश करते हैं और मूलनक्षत्रमें उत्पन्न श्वशुरका नाश करते हैं और ज्येष्ठानक्षत्रमें पैदाभई कन्या स्वामीके बडे भ्राताका नाश करे और लडका बडी सालीको नाश करे ॥ १२ ॥

अस्यापवादः ।

आश्लेषाप्रथमः पादः पादो मूलांतिमस्त
विशाखाज्येष्ठयोराद्यास्त्रयः पादाः शुभावहाः ॥१३॥

अर्थ–आश्लेषानक्षत्रके पहिले चरण और मूलनक्षत्रका अंतिमचरण और विशाखा ज्येष्ठानक्षत्रके आदिका चरण इनमें पैदा हुआ बालक शुभ होता है और बाकीके तीन चरण नक्षत्रके नेष्टहैं ॥ १३ ॥

अथ त्रिविधगण्डांतमाह–श्रीपतिः ।
पौष्णाऽश्विन्योः सार्पपित्रर्क्षयोश्च यत्र ज्येष्ठा-

मूलयोरंतरालम् । तद्गं गण्डं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेप्वनिष्टम् ॥ १४ ॥

अर्थ—रेवती अश्विनी आश्लेषा मघा ज्येष्ठा मूल इन नक्षत्रोंके अंत आदिकी चार चार घटी गण्डान्त कहाती हैं सो यात्रा जन्मकाल विवाह यज्ञोपवीतमें नेष्ट फल देती हैं रे. आश्ले. ज्ये. इनकी अन्तकी ४ घटी अश्वि. म. मू. आदिकी ४ घटी नेष्ट हैं ॥ १४ ॥

अथ तिथिगण्डांतमाह—नारदः ।

पूर्णानंदाख्ययोस्तिथ्योः संधिर्नाडीद्वयं तथा । गंडांतं मृत्युदं जन्म यात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ १५ ॥

अर्थ—पौर्णमासी प्रतिपदा पंचमी षष्ठी दशमी एकादशी इन तिथियोंकी दो दो घटी गण्डान्त कहाती हैं अर्थात् १५ । ५ १० इन तिथियोंके अंतकी एक एक घटी, १ । ६ । ११ इन तिथियोंके आदिकी एक एक घटीका नाम गण्डान्त है ये मृत्युकी देनेवाली हैं इनमें जन्म यात्रा विवाह यज्ञोपवीतादि नेष्ट हैं ॥ १५ ॥

अथ लग्नगण्डांतमाह ।

कुलीरसिंहयोः कौर्प्यचापयोर्मीनमेषयोः । गण्डांतमंतरालं स्याद्घटिकार्द्धं मृतिप्रदम् ॥ १६ ॥

अर्थ—कर्क—सिंह,वृश्चिक—धन, मीन—मेष, इन लग्नोंकी संधिकी आधी घटी गण्डान्त कहाती हैं ४ । ८ । १२ इन

लग्नोंके अंतकी घटीके १५ पल और ५ । ९ । १ इन लग्नोंके आदिके १५ पल गण्डान्त कहाते हैं इनमें यात्रा विवाह जन्म यज्ञोपवीत करनेसे मृत्यु होती है ॥ १६ ॥

अथ गण्डान्तकालमाह ।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रौ च जननीं तथा ।
संध्ययोर्हंति चात्मानं नास्ति गण्डे निरामयः ॥ १७॥

अर्थ-दिनमें उत्पन्न बालक गण्डान्तमें होय तो पिताका नाश करे और रात्रिके समय गण्डान्तमें उत्पन्न होय तो माताका नाश करे और दिनरात्रिकी संधिके समय गण्डान्तमें उत्पन्न होय तो अपनी आत्माका नाश करता है गण्डान्तमें उत्पन्न बालक निर्दोष नहीं होता है ॥ १७ ॥

अथ गण्डांतजाते दोषावधिज्ञानमाह-यवनः ।
वत्सरात्पितरं हंति मातरं तु त्रिवर्षतः । स्वात्मानं मासमेकं तु हंति गण्डो बुधैः स्मृतः ॥ १८ ॥

अर्थ-गण्डान्तकालमें उत्पन्न बालक पिताको एक वर्षके भीतर नष्ट करता है और माताको तीन वर्षके भीतर नष्ट करता है और अपनी आत्माको एक मासमें नाशकरता है ये विद्वानोंने कहा है ॥ १८ ॥

अथ गण्डान्तजातानां त्यागमाह ।

सर्वेषां गण्डजातानां परित्यागो विधीयते ।

अर्थ-जो बालक सम्पूर्ण कहेहुए गंडकालोंमें पैदा होय उसका परित्याग करनाही विधान है ॥

अथ त्यागाशक्तावबधिज्ञानम् ।

वर्जयेद्दर्शनं तावद्यावत्पाण्मासिको भवेत् ॥१९॥

अर्थ-जो गण्डान्तकालमें उत्पन्नबालक होय उसका दर्शन तबतक वर्जित है जबतक छः महीनेका न होय ॥१९॥

अथ गण्डांतजातानां परिहारः ।

मूलसार्पादिजं पौष्णं स्यादपश्यति लग्नपे । सक्रूरेऽब्जे च विबले शुभदृष्टिविवर्जिते ॥ तदा गण्डांतजातानां न दोषो मुनिभिः स्मृतः ॥२०॥

अर्थ-मूल आश्लेषा रेवती इन नक्षत्रोंमें पैदा हुआ बालक होय और चंद्रमा लग्नपति न देखता होय और पापग्रहोंसहित निर्बल चंद्रमा शुभग्रहोंकी दृष्टिरहित होय तो उस गण्डांतमें उत्पन्न बालक निर्दोषी होता है ऐसा मुनीश्वरोंने कहा है ॥ २० ॥

अन्यच्च गण्डांतदोषापवादः ।

मूलाद्यपादोयदिरात्रिभागेतदात्मजान्नास्ति पितुर्विनाशः । द्वितीयपादो दिनगो यदि स्यान्न मातुरल्पोऽपि तदास्ति दोषः ॥ २१ ॥

अर्थ-जो बालक मूलनक्षत्रके पहिले चरणमें रात्रिके समय उत्पन्न होय तो वह बालक पिताका नाश नहीं करता है

और मूलनक्षत्रके दूसरे चरणमें दिनके समय पैदा होय तो वह बालक माताको दोष नहीं करता है ॥ २१ ॥

तथा च पितामहः ।

नक्षत्रतिथिगण्डांतं नास्तींदौ बलभाजिनि ।
तथैव लग्नगण्डांतं नास्ति जीवे बलान्विते ॥ २२ ॥

अर्थ–जो बालक नक्षत्र और तिथि गंडान्तमें पैदा होय और चंद्रमा बली होय तो निर्दोष जानो और लग्नगंडांतमें बालक पैदा होय और बृहस्पति बली होय तो निर्दोष जानना चाहिये ॥ २२ ॥

अथान्यच्च परिहारः–वसिष्ठः ।

गण्डांतदोषमखिलं मुहूर्तोऽभिजिदाह्वयः । हंति
तद्वन्मृगं व्याधः पक्षिसंघमिवाखिले ॥ २३ ॥

अर्थ–जो बालक अखिल गंडांतदोषमें उत्पन्न हो और जन्मसमयमें अभिजित् मुहूर्त होय तो जैसे व्याध मृगपक्षियोंके समूहको नाश करे तिसी तरह अभिजित् सब गंडात दोष नष्ट करै ॥ २३ ॥

अथ मूलवृक्षविचारः–नरपतिः ।

मूलं स्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा ॥
मुनयोंघो दिशो रुद्राः सूर्याः पंचाब्धयोग्नयः ॥२४॥

अर्थ--मूलनक्षत्रमें उत्पन्नहुए बालकका मूल वृक्षमें विचार करना चाहिये एक वृक्षाकार बनाकर उसकी जडमें ७ घटिका और स्तंभमें ८ छालमें १० टहनियोंमें ११ पत्रोंमें १२

फलाम ४ और वृक्षके शिरपै ३ इसीप्रकार नक्षत्रके ६० घडियोंका न्यास करै ॥ २४ ॥

अथास्यफलमाह—जपार्णवे ।

मूले तु मूलनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम् ।
त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखायामखिलस्य च ॥२५॥
पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मंत्रिपदं स्मृतम् ।
फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवनम् ॥२६॥

अर्थ—जिस बालकके जन्मकालमें नक्षत्रकी घटीजडमें आवे तो वह बालक मूलका नाश करे और थंभेमें आनकर पडे तो वंशका नाश करे और छालमें पडे तो माताको क्लेशकरे और शाखाओंमें पडे तो सर्व सौख्य प्राप्त करे ॥ २५ ॥ और पत्रमें पडे तो राज्यफल देवे और फूलमें पडे तो वजीर करे और फलोंमें पडे तो बहुत लक्ष्मी प्राप्त करे और शिखामें पडे तो अल्पजीवी करे ये मूलनक्षत्रकी ६० घडियोंका फल विचारकर कहना नक्षत्रकी जिन घडियोंमें पैदा होय उसीका विचारकरना चाहिये ॥ २६ ॥

अथ जन्मनि मूलचक्रन्यासः—पितामहः ।

मूलस्य घटिकान्यासो मूर्ध्नि पंच नृपो भवेत् ।
मुखे सप्त मृतिः पित्रोः स्कंधे वेदा महाबलः ॥२७॥
बाह्वोरष्टौ बली कण्ठे तिस्रो हर्म्यान्वितो भवेत् ।
हृदि खेटा भूपमंत्री नाभौ द्वौ वशविद्भवेत् ॥२८॥

गुह्ये दशातिकामी स्याज्जानुनोः षण्महामतिः ।
पादयोः षण्मृतिस्तस्य चैतदुक्तं स्वयंभुवा ॥२९॥

अर्थ–कन्याओंके जन्मकालमें स्त्रियाकार स्वरूप बनाकर उसकी चोटीमें पांच घटी स्थापन करे वोह घटीमें उत्पन्न लडका लडकी राजा रानी होते हैं मुखमें सात घटी मृत्युदायक पिताकी होती है और कंधेमें ४ घटी महाबली करती है ॥ २७ ॥ बाहोंमें ८ घटी बलदाता जानों और कण्ठमें तीन घटी स्थानलाभ करती है हृदयमें ९ घटी राजाका मंत्री करतीहै और टूडीमें २ दो घटी बलदायक होती है ॥२८॥ कमरकी दश १० घटी अतिकामी करती है और जंघाओंकी ६ छः घटी बुद्धिमान् करती है और पैरोंमें ६ छः घटी मृत्युदायक होती है ये ब्रह्माजीने कहा है ॥ २९ ॥

अथ मूलजनने कुलक्षयमाह ।

कृष्णेतृतीयादशमीवलक्षेभुतोमहीजार्किबुधैःसमेतः ।
चेज्जन्मकालेकिलतत्रमूलमुन्मूलनंतत्कुरुतेकुलस्य ॥

अर्थ–जिस कन्याका जन्म कृष्णपक्ष तीज तिथि मंगलवार आश्लेषानक्षत्रमें होय एको योगः कृष्णपक्षकी दशमीतिथि शनैश्चरवार ज्येष्ठानक्षत्र द्वितीयो योगः और चतुर्दशीतिथि बुधवार मूलनक्षत्र तृतीयो योगः इन तीनों योगमें जो लडका लडकी पैदा होय वह अपने कुलको जडसे नाश करते हैं ॥ ३० ॥

अथ मूलजनने वेलाफलम् ।

दिवा सायं निशि प्रातः तातस्य मातुलस्य च ।
पशूनां मित्रवर्गस्य क्रमान्मूलमनिष्टदम् ॥ ३१ ॥

अर्थ—जो बालक दिनमें मूलनक्षत्रमें पैदा होय वह पिताका नाश करे और सायंकालके समय मूलमें पैदा होय तो मामाका नाश करे और रात्रिके समय मूलमें पैदा होय तो पशुओंका नाशकरे और प्रातःकालके समय मूलमें पैदा हो तो मित्रवर्गोंको नेष्टफल देताहै ये क्रमकरके फल कहना चाहिये ॥ ३१ ॥

अथ पुरुषाकृतौ मूलाश्लेषाफलम् ।

मूर्ध्नि पंच ५ मुखे पंच स्कंधयोर्घटिका ८ ष्टकम् ।
गला८ःधीरभुजयोर्युग्मं२हस्तयोर्हृदयेष्टकम् ८।३२
युग्मं नाभौ२दिशो१०गुह्ये षड् जान्वोःषट् च६पादयोः
विन्यस्य पुरुषाकारे सार्पस्य फलमादिशेत् ॥ ३३ ॥

अर्थ—जो बालक आश्लेषानक्षत्रमें पैदा होय तो पुरुषाकार बनाकर नक्षत्र ६० घटियोंका उस काल पुरुषके शरीरपर न्यासकरे शिर ५ मुख ५ कंध ८ भुजा ८ हाथ २ हृदय ८ नाभि २ कमर १० जंघा ५ पैरोंपर ६ इस प्रकार साठ घडियोंका न्यास करना चाहिये ॥ ३२ ॥ और इसी प्रकार पुरुषाकारसे मूलनक्षत्रकी भी ६० घटियोंका न्यास करना चाहिये ॥ ३३ ॥

अथास्यफलम् ।

छत्रलाभः शिरोदेशे वदने पितृकांतकम् ।
स्कंधयोर्द्धनहत्त्वं च बाहुयुग्मे त्वकर्मकृत् ॥ ३४ ॥
हत्याकरं करद्वंद्वे राज्याप्तिर्हृदये भवेत् ।
अल्पायुर्नाभिदेशे च गुह्ये च सुखमद्भुतम् ॥ ३५ ॥
जंघायां भ्रमणप्रीतिः पादयोर्जीवितालपता ।
घटीफलं किल प्रोक्तं मूलस्य मुनिपुंगवैः ॥ ३६ ॥
विज्ञेयं विबुधैः सर्वं सार्प्पे तच्च विपर्ययात् ॥ ३७ ॥

अर्थ–जो बालक शिरकी घडियोंमें उत्पन्न होय तो छत्र लाभ १ मुखकी घडियोंमें पैदा होय तो पिताका नाश २ कंधेकी घटीमें धननाश ३ और दोनों बाहुकी घडियोंमें खोटे कर्मकरनेवाला ४ ॥ ३४ ॥ दोनों हाथकी घडियोंमें उत्पन्न हत्या करे ५ हृदयकी घडियोंमें राज्यप्राप्ति करावे ६ नाभिकी घडियोंमें अल्पायु करे ७ कमरकी घडियोंमें अद्भुत सुख करावे ८ ॥ ३५ ॥ जंघाकी घडियोंमें उत्पन्न भ्रमण करे ९ पैरकी घडियोंमें उत्पन्न थोडे दिन जीवे १० ये मूलनक्षत्र घडियोंका फल निश्चयकरके श्रेष्ठ मुनियोंने कहा है ॥ ३६ ॥ और आश्लेषा नक्षत्रमें उत्पन्न होय तो पहिलेके समान उत्पन्न फल सम्पूर्ण पंडित जानकर कहे अर्थात् शिरकी घडियोंमें उत्पन्न थोडे दिन जीवे १ और मुँहकी घडियोंमें उत्पन्न भ्रमण करे २ कंधेकी घडियोंमें उत्पन्न अद्भुत सुख करे ३ और दोनों बाहोंके

घडियोंमें उत्पन्न थोडे दिन जीवे ४ दोनों हाथोंकी घडियोंमें उत्पन्न राज्यप्राप्ति करे ५ हृदयकी घडियोंमें उत्पन्न हत्या करे ६ नाभिके घडियोंमें उत्पन्न खोटे कर्म करे ७ कमरकी घडियोंमें उत्पन्न धननाश करे ८ जंघाओंकी घडियोंमें उत्पन्न पिताको अंत करे ९ पैरोंकी घडियोंमें उत्पन्न राज्यलाभ करे १० इस तरह आश्लेषाजात घडियोंका फल कहना चाहिये ॥ ३७ ॥

अथ मासवशान्मूलवासज्ञानमाह ।

मार्गफाल्गुनवैशाखे ज्येष्ठे मलं रसातले ।
श्रावणे कार्तिके चैत्रे पौषे मूलं च भूतले ॥ ३८ ॥
आषाढे चाश्विने भाद्रे माघे मूलं दिवि स्थितम् ।

अर्थ–मार्गशिर फाल्गुन वैशाख ज्येष्ठ इन मासोंमें मूल पाताललोकमें वास करते हैं और श्रावण कार्तिक चैत्र पौष मासमें मूल मृत्युलोकमें वास करते हैं ॥ ३८ ॥ आषाढ आश्विन भाद्रपद माघ मासमें मूल स्वर्गमें वास करते हैं ॥

अथास्य फलमाह ।

स्वर्गे मूलं भवेद्राज्यं पाताले च धनागमः ।
मृत्युलोके यदा मूलं तदा विघ्नं विनिर्दिशेत् ॥ ३९ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके अभुक्तमूलजन्मवर्णनो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

अर्थ–जो बालक मूलमें पैदा होय और मूलका वास स्वर्गमें होय तो राज्यदाता है और मूलका वास पाताललोकमें होय तो धनका आगम करे और मृत्युलोकमें मूलका वास होय तो विघ्न कहना चाहिये ॥ ३९ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायामभुक्तमूलफलवर्णनो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

अथ मूलजननशांतिरध्यायो निरूप्यते ।

तत्र शान्तिकालत्रयमाह–वशिष्ठः ।

शास्त्रोक्तरीत्या खलु सूतकांते
मासे तृतीयेऽप्यथ वत्सरांते ॥ १ ॥

अर्थ- मूल नक्षत्रमें पैदाहुए बालककी मूलशांति शास्त्रोक्त रीत्यनुसार सूतकके अंतमें करना चाहिये, या तीसरे महीनेमें करना चाहिये या वर्षके अंतमें करना उचित है ॥ १ ॥

अन्यच्च शांतिकालमाह–गर्गः ।

मातृगण्डे सुते जाते सूतकांते विचक्षणः ।
कुर्याच्छांतिं तदृक्षे वा तद्दोषस्यापनुत्तये ॥ २ ॥

अर्थ–मातृगण्डमें उत्पन्न हुआ लडका वा लडकी उसकी शांति सूतक निवृत्त होनेपर करना चाहिये अथवा जिस नक्ष-

त्रमें बालक पैदा होय उस नक्षत्रमें गण्डदोष निवृत्तिके अर्थ शांति करना उचित है ॥ २ ॥

अथ मूलशांतिकालं कथयति-शौनकः।

अथातः संप्रवक्ष्यामि मूलजातहिताय च।
मातापित्रोर्धनस्यापि कुले शांतिहिताय च ॥ ३ ॥
जातस्य द्वादशाहे तु जन्मर्क्षे वा शुभे दिने।
समाष्टके वा मतिमान्कुर्याद्वाऽतिविचक्षणः ॥ ४ ॥

अर्थ-इसके बाद शौनकजी कहते हैं मूलनक्षत्रमें उत्पन्न हुए लडका लडकीके हितके लिये माता और पिता धन और कुलके शान्तिके लिये ॥ ३ ॥ बालकके जन्मदिनसे बारहवें दिन अथवा जन्मनक्षत्रमें अथवा शुभदिनमें या आठवें वर्षमें बुद्धिमान् अति आदरसे शांति करे ॥ ४ ॥

अथ कर्तव्यकालेऽपवस्थानमाह-वसिष्ठः।

सुसमे पुण्यदेशे च मंडपं कारयेद्बुधः।
ऐशान्यामथवाप्राच्यामुदीच्यां दिशिकल्पयेत् ॥ ५॥
मंडपं चाष्टभिर्हस्तैश्चतुर्भिर्वा समंततः।
चतुर्द्वारसमायुक्तं तोरणाद्यैरलंकृतम् ॥ ६ ॥
कुण्डं च तद्बहिः कुर्याद्गृह्यज्ञोक्तमार्गतः।

अर्थ-अच्छे कालमें पुण्यस्थानमें पंडितजन मंडपबनावे मकानके ईशानकोणमें अथवा पूर्वमें या उत्तरदिशामें मण्डप बनावे ॥ ५ ॥ वह मण्डप आठ हाथका अथवा चार हाथका चौरस चार दरवाजासहित बंदनवारसे अलंकृत

करके ॥ ६ ॥ तिस मण्डपके बाहर ग्रहोंके यज्ञरीतिके माफिक कुण्ड बनावे ॥

अथ कुण्डनिर्माणप्रकारः ।

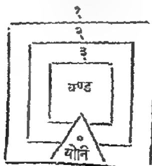
कुण्डवत्तद्बहिर्भागे कारयेच्चतुरस्रकम् ।
वितस्तिद्वयखातं यत्सकुंडं चतुरङ्गुलम् ॥ ७ ॥
विप्राणां क्षत्रियाणां च चाङ्गुलत्रयसंयुतम् ।
वैश्यानां द्व्यंगुलाधिक्यं शूद्राणां हस्तमात्रकम् ८
प्रथमा मेखला तत्र द्वादशाङ्गुलविस्तृता ।
चतुर्भिरंगुलैस्तस्याश्चोन्नतत्वं समंततः ॥ ९ ॥
तस्याश्चोपरि वप्रः स्याच्चतुरङ्गुलमुन्नतः ॥
अष्टाभिरङ्गुलैःसम्यग्विस्तीर्णश्च समंततः ॥१०॥
तस्योपरि पुनः कार्यो वप्रः सोपि तृतीयकः ।
चतुरङ्गुलविस्तीर्णश्चोन्नतश्च तथाविधः ॥ ११ ॥
योनिश्च पश्चिमे भागे प्राङ्मुखी मध्यसंस्थिता ।
षडङ्गुलैश्च विस्तीर्णा चायता द्वादशाङ्गुलैः॥ १२॥
पृष्ठोन्नता गजस्येव सच्छिद्रा मध्यमोन्नता ॥
एवं लक्षणसंयुक्तं कुण्डमिष्टार्थसिद्धये ॥ १३॥
अनेकदोषदं कुण्डं यत्र न्यूनाधिको भवेत् ॥ १४॥

अर्थ–कुण्डकी तरह मण्डपके बाहर एक चौखूंटा कुण्ड बनावे दोविलस्त लंबा और दो बिलस्त चौडा चार अङ्गुल गहरा है खात जिसका ऐसा कुण्ड बनावे ॥ ७ ॥ परंतु ब्राह्मणों-का कुण्ड एक हाथ चार अङ्गुल लंबा चौडा बनाना चाहिये

क्षत्रियोंके वास्ते एक हाथ तीन अंगुल लंबा चौडा बनाना चाहिये और वैश्योंके वास्ते एकहाथ दो अंगुलका कुण्ड बनाना चाहिये शूद्रोंके वास्ते केवल एक हाथ लंबा चौडा कुण्ड बनाना चाहिये ॥ ८ ॥ उस कुण्डके ऊपर पहिली मेखला बारह अंगुल चौडी और चार अंगुल ऊंची बनाना चाहिये ॥ ९ ॥ उस मेखलाके ऊपर चार अंगुल ऊंची और आठ अंगुल चौडा वप्र बनाना चाहिये ॥ १० ॥ तिसके ऊपर फिर तीसरा वप्र बनावे चार अंगुल लंबा और चार अंगुल ऊंचा वप्र बनाना चाहिये ॥ ११ ॥ कुण्डके पश्चिमकी तरफ पूर्वको है मुख जिसका कुण्डके वप्रमें छः अंगुल चौडी बारह अंगुल लंबी योनिबनावे अर्थात् भगाकार स्वरूप बनाना चाहिये ॥ १२ ॥ वह योनि पीठकी तरफसे ऊंची बीचमें छेद जिसके और बीचमें ऊंचाई लिये होना चाहिये इन लक्षणोंसे सहित जो कुण्ड है सो इष्ट अर्थात् सब प्रकारके मनोरथ सिद्धिदायक होते हैं ॥ १३ ॥ और जो पहिले कहाहुआ कुण्ड जो कमती बढती होय तो अनेक प्रकारके दोष देता है ॥ १४ ॥

कुण्डस्वरूपम् ।

पहिलानम ।



अथ पञ्चामृतमाह ।

पंचामृतं पंचगव्यं पंच त्वकपल्लवानि च ॥
उदुंबरवटाश्वत्थप्लक्षाम्रत्वक्सपल्लवाः ॥ १५ ॥
रोचनं कुंकुमं शंखं गजदंतं च गुग्गुलम् ॥
शतोपधीमूलशंखं नवरत्नानि मृत्तिका ॥ १६ ॥

अर्थ—पंचामृत-पंचगव्य-पांचछाल-पंचपल्लव-एकत्रित करना चाहिये गौका दूध-घृत-दधि-सहत-खाण्ड-इन चीजोंको मिला देनेसे पंचामृत बनता है ।

अथ पंचगव्यमाह—गौके-दुध-घी-दधि-गोबर-गोमूत्र इन चीजोंको इकट्ठा करनेसे पंचगव्य कहाता है ।

अथ पञ्चत्वचा तथा पंचपल्लवान्याह-गूलर-वरगद-पीपल-पाकड—आम्र इन वृक्षोंकी छालको पंचत्वक् कहते हैं और इन्हीं पांचों वृक्षोंके पत्तोंको इकट्ठा करनेसे पंचपल्लव कहा जाताहै ॥ १५ ॥ गोरोचन-रोली-शंख-हाथीदांत गूगल सौ औषधियोंकी जड-शंख नवरत्न अष्टमृत्तिका इनको एकत्रित करना चाहिये परंतु "स्योनापृथिवि" इस मंत्रकरके अष्टमृत्तिका एकत्रित करे ॥ १६ ॥

अथाष्टमृत्तिकामाह ।

गजाश्वरथ्यावल्मीकसंगमस्थानसंभवाः ।
ह्रदगोराजनगरद्वारतश्चाष्टमृत्तिकाः ॥ १७ ॥

अर्थ—गजशाला-अश्वशाला-मार्ग बांवी-नदियोंके मेलकी जगह वा दो रास्ते जहां मिले होंय तालाव गोशाला राजाके दर्वाजेकी नगरके द्वारकी ये मृत्तिका आठ कही हैं ॥ १७ ॥

अथ शतोषधीमूलमाह—वसिष्ठः ।

श्रीवृक्षो बिल्वखदिरविष्णुक्रांता पुनर्नवा ।
देवदारु जटामांसी सहदेवी मुरा शिवा ॥ १८ ॥
फलिनी बकुला जाती कला मांजिष्ठसंज्ञकाः ।
वटप्लक्षाऽग्निवारखदिरामल्लिकार्जुनाः ॥ १९ ॥
मदयन्ती महाजाती निंबोशीरहरिद्रकाः ।
सर्पाक्षी तुलसी रौद्रा कुटा दाडिमचंपकाः ॥२०॥
मातुलिङ्गं जयो रक्ता कर्णिका ऐणकांचनाः ।
सेवंती पनसो द्राक्षा विश्वाक्षी श्वेतसर्षपाः ॥ २१ ॥
राजीवकुंदमुकुलनीलोत्पलकरंजकाः ।
पुन्नागं चंदनं द्रोणमंदारो हेमदुग्धिका ॥ २२ ॥
रक्तचंदनजंबीरयूथिकागृहमाल्लिकाः ।
शम्यर्कसिंदुवारेन्द्ररक्तधत्तूरदाडिमाः ॥ २३ ॥
अपामार्ग च पालाशं बृहती करवीरकः ।
नंद्यावर्तकुबेराक्षीपाटलाहेमपुष्पिकाः ॥ २४ ॥
शिरीषामलकाशोकरक्तागस्तिकपित्थकाः ।
बंधूकभृंगराजाख्यकृष्णा वै माधवी लता ॥ २५ ॥
चातुर्जातो बर्हिशिखा कुटजो मेघबिम्बकः ।

समालमरुपुष्पेंद्रपुष्पाख्याः शुक्रमर्दिनी ॥ २६ ॥
वाकुचीशाल्मलीमोडीराह्वाखर्वपटोलिकाः ।
महाखर्जूरिकानारिकेलाख्यास्ते शतद्रुमाः ॥२७॥

अर्थ–सरीफा १ वेल २ खैर ३ विष्णुक्रांता ४ पुनर्नवा ५ देवदारु ६ जटामांसी ७ सहदेई ८ वालछड ९ स्तरड १०॥१८॥मालकांगनी११मोलसिरी १२ जायफल१३ अंगोठ १४ वरगद १५ पाकड१६ आम१७ समा१८ खदिर अन्य वृक्षभेद १९चमेली २० अर्जुन २१॥१९॥-वनचमेली २२ शासंनि २३ नीम २४ खस २५ हलदी २६ नागफली २७ तुलसी २८ रौद्रा वृक्षभेद २९ कुडा ३० दाडमी ३१ चंपा ३२ ॥ २० ॥ विजौरा ३३ गुल्दुपहरिया ३४ शूंवची ३५ करनेल ३६ अडोआ ३७ धतूरा ३८ सेवती ३९ कटहर ४० मुनका ४१ शतावर ४२ सफेदसरसों ४३ ॥२१॥ कमल ४४ कुंद ४५ मुकुल ४६ नीलकमल ४७ कंजा ४८ नागकेसर ४९ चंदन ५० द्रोणवृक्ष ५१ मंदार वृक्ष ५२ पीलाथोहर ५३ ॥२२॥ लाल चंदन ५४ जंभीरी ५५ जुही ५६ वागचमेली ५७ जण्ड ५८ आक ५९ निर्गुण्डी ६० इलायची ६१ लालधतूरा ६२ शाडिमा वृक्षभेद ६३ ॥ २३ ॥ अंदाझाड ६४ ढाक ६५ कटैया ६६ करनेल ६७ नंदावर्त वृक्षविशेष ६८ कुबेराक्षी वृक्षविशेष ६९ पाटल ७० पीली चमेली ७१ ॥ २४ ॥ सिरस ७२ऑवला ७३ अशोक ७४ लालअगस्त ७५ कैथ ७६

विजयसार ७७ भाँगरा ७८ पीपळ ७९ माधवीलता ८० ॥ २५ ॥ चातुर्जात अर्थात् केसर ८१ दालचीनी ८२ तेज-पात ८३ लाल इलायची ८४ मोरशिखा ८५ ॥ २६ ॥ इंद्रजौ ८६ मुलहठी ८७ इंद्रायण ८८ तमाल ८९ मरुपुष्प वृक्ष-विशेष ९० ऐंद्रपुष्पाकलियारी ९१ शुक्रमर्दिनी अर्थात् चिरचिरा ९२ बाकुची ९३ सेमर ९४ मुण्डी ९५ राल ९६ खर्व अर्थात् कुब्जक ९७ परवल ९८ बडी खजूर ९९ नारियल १०० ॥ २७ ॥ ये सौ वृक्षोंके नाम कहे अब विद्वानोंको चाहिये कि जिस वृक्षका नाम न मालूम होसके उस नामको कोषादि अनेक ग्रंथ अर्थात् शब्दकल्पद्रुम शब्दस्तोममहोदधि वाचस्पत्यवृह-दभिधान शब्दार्थचिंतामाणि इन कोषोंमें ढुँढवालेवे ॥

अथ ग्रंथांतरे शतौषधीराह ।

एषां मूलानि सर्वाणि गृहीत्वैनो तुदाति यत् ।
शांतिकर्मणि सर्वत्र निक्षिपेत्कलशोदके ॥२८॥

अर्थ–पाषाणभेद १ सहदेई २ विष्णुक्रांता ३ गईहस्त ४ शंखाहूली ५ मोरशिखा ६ चिकसी ७ लक्ष्मणा ८ नीलकंठी ९ चोरा १० घीकुवार ११ पाढर १२ ईश्वरलिंगी १३ परवल १४ धुसरायिन १५ चक्रांगी १६ मालकांगनी १७ रुदवंती १८ अंदाझाडा १९ श्वेतवीर्या २० श्यामरवासन २१ हसलीश्वेत २२ फरफेंदुआ २३ शतावर २४ अंधाहूली २५ सेमरकी जड २६ असगंध २७ मिरची २८ देवदारु २९

पाकड ३० वड ३१ गूलर ३२ पीपल ३३ आम्र ३४ पियावांसा ३५ विशोटा ३६ झाडु ३७ छिडकर ३८ सिंहमुखी ३९ भाँगरा ४० जमनी ४१ बेत ४२ नदीवृक्ष ४३ नागकेसर ४४ अर्जुनवृक्ष ४५ पाढ ४६ खिरेली ४७ चमेली ४८ केतकी ४९ चांदनी ५० केरा ५१ बिजौरा ५२ जयंती ५३ जवासा ५४ अनार ५५ गूमा ५६ बांसके पत्ते ५७ कायफल ५८ खस ५९ चंपा ६० पदमाख ६१ सूर्यमुखी ६२ अशोक ६३ माधवीलता ६४ कुंद ६५ मौलसिरी ६६ गुडहर ६७ केरा ६८ गोमती ६९ आँवला ७० ब्रह्मी ७१ धतूरा ७२ कचनार ७३ कफही ७४ कसौंधी ७५ अजमाइन ७६ भारंगी ७७ गिलोय ७८ कमलगट्टा ७९ अपराजिता ८० कैत ८१ जिमींकंद ८२ बेहू ८३ वडहर ८४ कुश ८५ काश ८६ कठहर ८७ बेरकीजड ८८ दारुहलदी ८९ हिरनी ९० हड ९१ अगर ९२ बालछड ९३ तुलसी ९४ शिरस ९५ हुलहुला ९६ नीम ९७ चकाइन ९८ चीता ९९ पिंडगिलोय १०० इन एक सौ औषधियोंको प्रेरणाकरके ग्रहणकरके सब जगह शांतिकर्ममें जलपूरित कुम्भमें डालना चाहिये ॥ २८ ॥

अथ शतौषधीनामभावे दशौषधीराह ।

कुष्ठमांसी हरिद्रे द्वे मुराशैलेयचन्दनम् ।
वराचंपकहस्ताश्च सर्वौषध्यो दशैव हि ॥ २९ ॥

घपामभावं तु दश सर्वौषध्यो दशैव हि ॥ ३० ॥

अर्थ—मौलसिरी १ जटामांसी २ हलदी ३ आमाहलदी ४ चालछड ५ पाषाणभेद ६ चंदन ७ वच ८ चंपा ९ हरता १० ये दशौषधी सर्वौषधीही कहाती हैं ॥ २९ ॥ जो एकसौ औषधी कही हैं ये न मिलें तो यही सर्वौषधी कहातीहैं ॥ ३० ॥

अथ दशौषधीनामभावे चतुरौषधीराह ।

विष्णुकांता सहदेवी तुलसी च शतावरी ।
मूलानीमानि गृहीयाद्दशालाभे विशेषतः॥ ३१ ॥

अर्थ—विष्णुकांता सहदेई तुलसी शतावर इन चारों औषधियोंके मूलको ग्रहण करे जो दशौषधीका अभाव होय तो इनकोही सर्वौषधी जाने ॥ ३१ ॥

अथ सप्तबीजान्याह ।

तिलमाषयवव्रीहि गोधूमाश्च प्रियंगवः ।
चणकैः सहितानीति सप्तबीजानि सर्वदा ॥ ३२ ॥

अर्थ—तिल १ उडद २ जौ ३ कुकनी ४ गेहूं ५ प्रियंगु राले चावल ६ चना ७ ये सात बीज श्रेष्ठ कहे हैं ॥ ३२ ॥

अथ नवरत्नमाह ।

माणिक्यविद्रुमं मुक्ताफलं वैडूर्यनीलकम् ।
वज्रं गारुत्मतं पुष्परागं गोमेदसंज्ञकम् ॥ ३३ ॥

अर्थ-मानक १ मूँगा २ मोती ३ वैडर्यमणि ४ नीलम ५ हीरा ६ गारुत्मत ७ पुष्पराज ८ गोमेद ९ ये सब रत्न कहे हैं इनको कुम्भमें डाले ॥ ३३ ॥

अथ पंचरत्नमाह ।

वज्रमौक्तिकवैडूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम् ।
पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मंत्रैः कुंभेषु निक्षिपेत् ॥ ३४ ॥

अर्थ-हीरा १ मोती २ वैडूर्य ३ पुष्पराज ४ नीलम ५ ये पंचरत्न कहे हैं जो नवरत्न न मिले तो मंत्रों करके कुंभमें पंचरत्नही डालना चाहिये ॥ ३४ ॥

अथ मूर्तिप्रमाणम् ।

सुवर्णेन प्रमाणेन तदर्धार्धेन वा पुनः ।
निर्ऋतिप्रतिमां कुर्याद्वित्तशाठ्यविवर्जितः ॥ ३५ ॥

अर्थ-तोलेभरकी छः मासेकी वा तीन मासेकी सुवर्णकी देवताकी प्रतिमा बनावे परंतु अपने शक्तिके माफिक प्रतिमा बनावे कम ज्यादे न बनाना चाहिये ॥ ३५ ॥

ग्रंथान्तरेण मूर्तिमानमाह-शौनकः ।

पलमानेन चार्द्धेन पादेनाथ स्वशक्तितः ।
नक्षत्रदेवतारूपं कारयित्वा विचक्षणः ॥ ३६ ॥

अर्थ-सोलह मासे वा आठमासेकी वा चारमासेकी या अपनी शक्त्यनुसार नक्षत्रदेवताका रूप बनाना चाहिये॥ ३६॥

अथ मूर्त्यभावे मूल्यमाह ।

मूल्यं सुवर्णस्य पुनः स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।
सुवर्णं सर्वदैवत्यं सर्वदेवात्मकोनलः ॥ ३७ ॥
सर्वदेवात्मको विप्रः सर्वदेवमयो हरिः ॥

अर्थ-जो सुवर्णकी मूर्ति बनानेमें श्रद्धा न होय तो उसका मूल्य प्रतिमाकी जगे स्थापित करके पूजा करे क्योंकि सब देवता सुवर्णमें वास करते हैं और अग्निभी सर्वदेवमय है ॥ ३७ ॥ और ब्राह्मणभी सर्वदेवमय है और विष्णुभगवान्‌भी सर्वदेवमय जानो ॥

अथ पूजनविधिः ।

वस्त्राणि षोडशाष्टौ च शुक्लसूक्ष्माण्यतंद्रितः ॥ ३८ ॥
ब्राह्मणान्वरयेत्पश्चात्स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ।
श्रोत्रियांश्चतुरोऽष्टौ च द्वादश त्वथ षोडश ॥ ३९ ॥
प्रधानाचार्यमेतेषां श्रेष्ठं तत्प्रतिमार्चनम् ।
ईशानादिचतुष्कोणेष्वव्रणाञ्जलपूरितान् ॥ ४० ॥
पूर्वोक्तद्रव्यसंयुक्तान्स्थापयेद्रक्तवर्णकान् ।
विप्रान्पृथक्पृथग्वापि मधुपर्कादिनार्चयेत् ॥ ४१ ॥

अर्थ-सोलह वा आठ वस्त्र सफेद बारीक विना आलस्यके देके ॥ ३८ ॥ पीछेसे ब्राह्मणोंको स्वस्तिवाचन सहित वरण करे यज्ञके करनेवाले चार वा आठ वा बारह षोडश ॥ ३९ ॥ इतने प्रधान आचार्य श्रेष्ठ प्रतिमाका पूजन करे ॥

ईशान दिशाको आदि लेकर आग्नेय नैर्ऋत्य वायव्य जलपूरित घट स्थापित करैं ॥ ४० ॥ पहिले कहीहुई औषधियोंसहित लालवर्णके घट स्थापित करैं अलग अलग ब्राह्मणोंको पाद्य अर्घ्य आचमन मधुपर्कादि रीतिसे पूजन करैं ॥ ४१ ॥

द्वारेषु जापकानष्टौ द्वौ द्वौ च वरयेत्पुनः ।
आप्यैर्वा वारुणैर्मंत्रैः शुक्लपुष्पाक्षतादिभिः ॥ ४२ ॥
तत्कुम्भस्थजलं स्पृष्ट्वा कुशकूर्चैर्जपेदिति ।
रुद्रसूक्तं च भद्राग्रेरानो भद्रा इति क्रमात् ॥ ४३ ॥
पुरुषसूक्तं च तन्मन्त्रैर्देवान्ध्यात्वा प्रयत्नतः ।
गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम् ॥ ४४ ॥
पंचगव्यमिदं कुम्भे क्षिपेद्गजमदान्वितम् ।
रजतं कांचनं ताम्रं विद्रुमं तीर्थवारि च ॥ ४५ ॥

अर्थ-मंडपद्वारोंमें आठ जप करनेवाले अर्थात् एक द्वारमें दो जप करनेवाले (आप्यैरिति) या वरुण मंत्र करके सफेद पुष्प अक्षतों करके वरण करै ॥४२॥ तिस कुम्भके विषे जलको स्पर्श कर (कुशकूर्च) इस मंत्रको जप करे (रुद्रसूक्त) और (भद्राग्ने आनोभद्रा) मंत्रोंसे क्रम करके ॥ ४३ ॥ और पुरुषसूक्त और पूर्वोक्तमंत्रोंकरके यत्न करके देवताओंका ध्यान करके गोमूत्र गोबर गोदधि गोघृत और कुशजल॥४४॥ ये पंचगव्य उस घटमें डालना हाथीके मदसहित चांदी, सोना-ताँबा, मूँगा, तीर्थोंका जल ॥ ४५ ॥

निक्षिपेद्धेममूलं च दशाष्टयवनिर्मितम् ।
देवदारु च शैलेयपद्मनीलोत्पलं तथा ॥ ४६ ॥
वचालोध्रप्रियंगु च शतच्छिद्रे घटे क्षिपेत् । वंश-
पात्रोपरि न्यस्तं शतच्छिद्रे घटे स्थितम् ॥४७॥
ततश्च निर्ऋतिं देवमर्चयेत्पश्चिमामुखम् ।
मोषुणस्त्वितिमंत्रेण शुक्लवस्त्राक्षतादिभिः ॥ ४८ ॥

अर्थ–अठारह यवपरिमित हेममूल और देवदारु, छलीरा, कमल, नीलकमल ॥ ४६ ॥ वच, लोध, कुकनी ये सम्पूर्ण चीजें सौ छिद्रके घटके विषे स्थित करे ॥ ४७ ॥ तिसके बाद नक्षत्रदेवताको पश्चिममुख होकर पूजन करे (मोषुण- स्त्विति) मंत्रकरके सफेद फूल और वस्त्र अक्षतादिकों करके पूजन करना चाहिये ॥ ४८ ॥

अथ मूलस्वरूपमाह ।

मूलरूपं विधातव्यं श्यामं कुणपवाहनम् । खड्ग-
खेटधरं चोग्रं द्विमुखं च वृकाननम् ॥ ४९ ॥
चरुं च श्रपयेत्तत्र नैर्ऋतिं दुष्कृतापहम् । स्थाप-
येत्तु ग्रहांश्चैव वस्त्रगंधादिभिर्यजेत् ॥ ५० ॥

---

१ चार घट चारों दिशामें स्थापन करे एक घट अलग रुद्रस्थापनके अर्थ स्थित करे एक सौ छेदके घडेमें देवदारु शैलेय इत्यादि औषधी सुवर्णमूल अठारह यवपरिमित डालकर बाँसकी टोकरियेमें रखकर उसके ऊपर कपडा बांधकर नक्षत्रदेवताकी प्रतिमा रुद्रप्रतिमा जलप्रतिमा सहित स्थापन करे और उसका षोडशोपचार पूजन करना ।

अर्थ--फिर मूलनक्षत्रके रूपका विधान करे, काला है वर्ण, मुरदा है वाहन, तलवार और खेटको धारण करे, दो हैं मुख बैलकासा है आसन जिसका ॥ ४९ ॥ चरु करके नक्षत्रदेवताको पाप नाश करनेके लिये और ग्रहोंको स्थापन करे तथा वस्त्र गंधादिकोंकरके पूजन करना चाहिये ॥ ५० ॥

उक्तं च शौनकेन ।

पुण्यादिमंत्रितैस्तोयैः प्रोक्षितायां क्षितौ ततः ।
तत्रोदकुम्भं सुश्लक्ष्णं रक्तं व्रणविवर्जितम् ॥५१॥
आकृष्णमूलनिर्णीतं पूरयेन्निर्मलाम्भसा । आक-
लशेष्विरयनया कलशस्थापनं शुभम् ॥ ५२ ॥

अर्थ-पुण्यादि मंत्रोंकरके जलकरके जलके कुम्भको देखकर घट और जल सुंदर टूटा न होय कोई छेद न होय ॥ ५१ ॥ आकृष्ण मल जो कहा है उस करके निर्मल जलसे घट पूरण कर (आकलशेति) मंत्र करके कलशका स्थापन करना शुभ है ॥ ५२ ॥

इमं मे इति मंत्रेण पूरयेत्तीर्थवारिणा ।
कुर्वन्हेमसमायुक्तं कृतपल्लवसंयुतम् ॥ ५३ ॥
स्वस्तिकोपरि विन्यस्य क्षीरद्रुमसपल्लवैः । द्रोण-
व्रीहिं च निक्षिप्य ईशाने च निधापयेत् ॥५४॥
पंचरत्नानि निक्षिप्य सर्वौषधिसमन्वितम् ।
अर्चितं गंधपुष्पाद्यैः श्रीरुद्रं तत्र पूजयेत् ॥ ५५ ॥

तत्र प्रतिरथं सूक्तं शतरुद्रानुवाचकम् । रक्षा-
मंत्रं तथा पुण्यै रक्षोघ्नं च स्पृशञ्जपेत् ॥ ५६ ॥

अर्थ--(इमंमे) इस मंत्रकरके तीर्थोंके जलसे पूरण करे हेममूल सहित करके पंचपल्लवसहित ॥ ५३ ॥ स्वस्तिवाचन करके दूध वृक्ष पल्लव सहित घटके ऊपर न्यास करे व तीस शेर धानकी ढेरी करके उसपर ईशानादि दिशामें वरुको स्थापन करना ॥ ५४ ॥ पंचरत्न डालकर सम्पूर्ण औषधियोंसहित घटको गंध पुष्पाक्षतादिकोंकरके पूजन करे और श्रीरुद्रमंत्रको जप करे ॥ ५५ ॥ तिसके प्रति वेदोक्त सूक्त और शतरुद्रीपाठ रक्षामंत्र तथा पुण्याह वाचन (रक्षोघ्नं) इस मंत्र करके स्पर्श कर जाप करे ॥ ५६ ॥

त्र्यंबकं च जपेत्सम्यगष्टोत्तरसहस्रकम् । एक-
वारं तथा जप्यं पावमानीस्पृशञ्जपेत् ॥ ५७ ॥
जपार्थं पंच कुम्भाश्च पुत्रपित्रोर्द्वयं तथा ।
प्रस्रवंतोऽभितस्ते च च्छन्ना वस्त्रैश्च पंचभिः ॥५८॥
वस्त्रावगुंठितान्कुंभान्पूरयेत्तीर्थवारिणा ।
पंचरत्नसमायुक्तानाम्रपल्लवशोभितान् ॥ ५९ ॥

अर्थ-(त्र्यंबकं) मंत्रको अष्टोत्तर सहस्र १००८ भले प्रकार जप करे एक समय तैसेही जप करके (पावमानी) इस मंत्रसे स्पर्श कर जप करे ॥ ५७ ॥ जपके पाँच कुम्भ

और दो पिता पुत्रके चारों तरफसे झरते होयँ पाँच वस्त्रोंकरके आच्छादित करै ॥ ५८ ॥ कपडेसे बांधकर तीर्थोंके जलसे पूरण कर पंचरत्नसहित आम्रपल्लव करके शोभायमान करना चाहिये ॥ ५९ ॥

तेषामुपरि पात्राणि हेममृद्रौप्यजानि च ।
शुद्धवस्त्रैश्च संछाद्य शतमूलानि निक्षिपेत् ॥६०॥
कुम्भोपरि न्यसेद्विद्वान्मूलनक्षत्रदेवताम् ।
अधिप्रत्यधिदेवौ च दक्षिणोत्तरदेशतः ॥ ६१ ॥
अधिदेवं जपेदादौ ज्येष्ठानक्षत्रदेवताम् ।
एवं प्रत्यधिदेवं च पूर्वाषाढर्क्षदैवतम् ॥ ६२ ॥

अर्थ-उन घटोंके ऊपर सोना व चांदी या मृत्तिकाका पात्र धरे साफ कपडेसे आच्छादित करके सौ वृक्षोंकी जड डालकर ॥ ६० ॥ घटके ऊपर पंडितजन मूलनक्षत्रके देवता स्थापित करै इसी प्रकार प्रत्यधिदेवताके घटको दक्षिणोत्तर देशमें स्थापन करे ॥ ६१ ॥ पहिले अधिदेवताका जप करे ज्येष्ठानक्षत्रके देवताका नाम अधिदेवता है इसी प्रकार प्रत्यधिदेवताका घट और जप करे पूर्वाषाढनक्षत्रके देवनाका नाम प्रत्यधिदेवता है ॥ ६२ ॥

अथाधिदेवतास्वरूपम् ।

महाकायो वज्रधरो ग्रहेंद्रो गजवाहनः ।
द्विभुजश्च जलं पद्मं गृहंश्चन्दनचर्चितः ॥ ६३ ॥

अर्थ-बडा है शरीर जिनका; वज्रको धारण किये ग्रहों-

के राजा, हाथी है वाहन, जलसम, दो हैं भुजा, कमल हाथमें चंदनलेपित शरीर जिसका ऐसा मत्याधिदेवताका स्वरूप जानो ॥ ६३ ॥

अथ पूजाप्रकारः ।

स्वलिङ्गोक्तैश्च मंत्रैश्च प्रधानादीन्प्रपूजयेत् ।
पंचामृतेन संस्नाप्य ह्यावाह्याथ समर्चयेत् ॥ ६४ ॥
उपचारैः षोडशभिः यद्वा पंचोपचारकैः ।
रक्तचंदनगंधाद्यैः पुष्पैः कृष्णसितादिभिः ॥ ६५ ॥
मेषशृंगादिधूपैश्च घृतदीपैस्तथैव च ।
सुरापोलिकमांसाद्यैर्नैवेद्यैर्भोजनादिभिः ॥ ६६ ॥

अर्थ–स्वलिङ्गोक्त मंत्रोंकरके प्रधानादिकोंका पूजन करे पंचामृतसे स्नान करावे आवाहन करके पूजन करे ॥ ६४ ॥ षोडशोपचार करके अथवा पंचोपचार करके लालचंदन गंध पुष्प श्याम श्वेत करके पूजन करे ॥ ६५ ॥ मेषशृंगादिधूप करके घृतदीप शराब पोलिक मांसको आदि लेकर नैवेद्य करके भोजनादिकसे पूजन करना चाहिये ॥ ६६ ॥

अथ द्विजातीनां मत्स्यमांसनिषेधः ।

मत्स्यमांससुरादीनि ब्राह्मणानां विवर्जयेत् ।
सुरास्थाने प्रदातव्यं क्षीरं सैंधवमिश्रितम् ॥६७॥
पायसं लवणोपेतं मांसस्थाने प्रकल्पयेत् ।
उक्तगंधाद्यभावे तु यथालाभं समर्चयेत् ॥

अर्थ–मछलीका मांस और शराब ब्राह्मणोंको भोजनमें नहीं देना चाहिये जहां शराब चढानेकी जगह हो वहां दूधमें सेंधव निमक मिलाकर चढाना चाहिये ॥ ६७ ॥ और खीरमें निमक मिलाकर मांसकी जगह स्थापन कर चढाना चाहिये और जो उक्त गंधादि चीजें कही हैं वे न मिलें तो जो वस्तु मिले उसीसे पूजन करना चाहिये ॥ ६८ ॥

पुष्पांतं तु समभ्यर्च्य होमं कुर्याद्यथाविधि ।
निर्वापप्रोक्षणादीनि चाग्ने कुर्याद्यथाविधि ॥ ६९ ॥
हव्यं गृहीत्वा विधिवन्नैर्ऋत्येति ऋचा हुनेत् ॥ ७० ॥

अर्थ–अंतमें पुष्पोंको समर्पण करके यथाविधि हवन करना प्रोक्षणादि पात्रोंको निर्वाप करके यथाविधि अग्निमें करे ॥ ६९ ॥ हनको विधिवत् ग्रहण कर नैर्ऋत्येति इस ऋचा करके हवन करना चाहिये ॥ ७० ॥

अथ हवनविधिमाह–वसिष्ठः ।

पालाशसमिदाज्येन चरुणाष्टसहस्रकम् ।
अथवाष्टोत्तरशतं प्रत्येकं जुहुयात्ततः ॥ ७१ ॥
ॐ प्रजामित्यष्टाभिर्वाक्यैर्मंत्रद्वयेन च ।
सोमनैर्ऋत्यैर्मंत्रैरश्वत्थसंभवैः ॥ ७२ ॥

करके दोनों मंत्रोंसे मूलाय स्वाहा प्रजापतये स्वाहा सावित्र-सोमनैर्ऋत्यैः मंत्रोंकरके पीपलकी ॥ ७२ ॥

समिद्भिश्च तिलव्रीहीन् हुत्वा व्याहृतिमंत्रतः ।
मूलं प्रजाभिरित्यष्टौ वाक्यानि नव वै जपेत् ॥७३॥
अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा नियतात्मवान् ।
अयं होमप्रकारस्तु शाखांतरविशोधितः ॥७४॥
मोषुणः परापरेति यत्ते देवेति वा पुनः ॥
पायसं घृतमिश्रं च हुनेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ७५ ॥

अर्थ–समिधों करके तिल और धान साठीके हवन करे व्याहृतियोंके मन्त्र करके (मूलं प्रजाभिः) इन आठ वाक्यों-करके नौ वार जप करना ॥७३॥ अष्टोत्तर सहस्र (१००८) वा एकसौ आठ वार (१०८) नियत करके जप करे ये होम-का प्रकार कहा अपनी शाखाओं करके जप करे ॥ ७४ ॥ (मोषुणः परापरेति) इस मंत्र करके (यत्ते देवेति) मंत्र करके करना चाहिये ॥ ७५ ॥

समिधाज्यचरूनात्मशक्तितः संख्यया हुनेत् ॥
अधिदेवतयोश्चैव जुहुयात्स्वस्वमंत्रकैः ॥ ७६ ॥
नक्षत्रदेवताभ्यश्च पायसेन तु होमयेत् ॥
कृणुष्वेति पंचदशभिर्जुहुयात्कृसरं ततः ॥७७॥

अर्थ–समिधें, घृत, अन्य चरुके अपनी शक्त्यनुसार हवन करे अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताओंके मंत्रसे हवन करना

चाहिये ॥ ७६ ॥ नक्षत्र देवताके अर्थ खीरसे हवन करे (कृणुष्वेति) मंत्र करके पंद्रह वार चंडीका हवन करना चाहिये ॥ ७७ ॥

गायत्र्या जातवेदेति अष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥
क्षाशुपुंजतिताममिवास्तोष्पतिमेवच ॥ ७८ ॥
क्षेत्रस्य पतिनेत्येवमग्निदूतं तथैव च ॥
श्रीसूक्तेन तथा विद्वान् समिदाज्यंचरूंक्रमात् ॥७९॥
अष्टोत्तरशतैर्वाथ ह्यष्टाविंशतिभिः क्रमात् ॥
अष्टाष्टसंख्यया वापि जुहुयाच्छक्तितो बुधः ॥८०॥

अर्थ-(गायत्र्या जातवेदसं) इस मंत्र करके २८ अट्ठाईस वार क्रम करके निरंतर अग्निमें देना चाहिये और वास्तोष्पति इस मंत्र करके ॥ ७८ ॥ और क्षेत्रपतिना० अग्निदूतं इसी प्रकार (श्रीसूक्त करके) पंडित जन समिधोंमें घृत और चरु करके क्रमसे ॥ ७९ ॥ अष्टोत्तरशत १०८ वा अष्टाविंशति क्रम करके अथवा आठ आठ संख्या करके शक्त्यनुसार पंडित हवन करे ॥ ८० ॥

एवं सोमेन पायसं च जुहुयात्तु त्रयोदश ॥
चतुर्गृहीतमाज्यं च यातेरुद्रेति मंत्रतः ॥ ८१ ॥
स्रुवेण जुहुयादाज्यं महाव्याहृतिभिः क्रमात् ॥
हुत्वा स्विष्टकृतं पश्चात्प्रायश्चित्ताहुतीर्हुनेत् ॥८२॥
- ॥ यजमानो वा चाग्नौ पूर्णाहुतिं हुनेत् ॥
होमशेषं समाप्याथ वह्निमारोपयेत्ततः ॥ ८३ ॥

अर्थ-(त्वं सोमेन) इस मंत्र करके तेरह मरतबे आहुति देना और (याते रुद्रेति) मंत्रकरके ४ आहुति घृतकी देय ॥ ८१ ॥ वेदोक्त व्याहृतियोंकरके घृतका हवन करे हवन करनेके बाद स्विष्टकृत् हवन करके प्रायश्चित्तकी आहुति देय ॥ ८२ ॥ आचार्य और यजमान अग्निमें पूर्णाहुति देय अशेष हवनकी शांतिके लिये अग्निको आरोपण करे ॥ ८३ ॥

कुम्भाभिमंत्रणं कुर्य्याद्दक्षिणेनाभिमंत्रयेत् ॥
मृत्युप्रशमनार्थं च जपेत्र्यंबकमंत्रकम् ॥ ८४ ॥
रुद्रकुम्भोक्तमार्गेण रुद्रमंत्रं स्पृशन्क्षिपेत् ॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं कुंभेषु विनिवेदयेत् ॥ ८५ ॥
प्रसादयेत्ततो देवमभिषेकार्थमादरात् ॥
भद्रासनोपविष्टस्य यजमानस्य ऋत्विजः ॥ ८६ ॥
दारापुत्रसमेतस्य कुर्युः सर्वेऽभिषेचनम् ॥
अक्षीभ्यामिति सूक्तेन पावमानीभिरेव च ॥ ८७ ॥

अर्थ-कुम्भको दहिनी तरफसे अभिमंत्रण करके मृत्युके दूरकरनेके निमित्त (त्र्यंबकं) मंत्र जप करना चाहिये ॥ ८४ ॥ रुद्र कुम्भको कहे हुए मार्ग करके रुद्रमन्त्रकर स्पर्श करे धूप दीप नैवेद्य कुंभके विषे निवेदन करे ॥ ८५ ॥ प्रसन्नतापूर्वक तिसके बाद देवताका आदरसे अभिषेक करे कल्याण करनेवाले आसनमें बैठे हुए यजमान और यज्ञ करानेवाला ॥ ८६ ॥ स्त्री पुत्र सहितका अभिषेक सब

और (अक्षीभ्यां) इस सूक्त करके (पावमानी) मंत्र करके ॥ ८७ ॥

आपोहिष्ठेति नवभिरापइद्राद्वयेन च ।
सहस्राक्षेत्यृचा वापि देवस्यत्वेति मंत्रकैः ॥ ८८ ॥
शिवसंकल्पमंत्रेण वक्ष्यमाणैश्च मंत्रकैः ।

अर्थ-(आपोहिष्ठेति) नौ मंत्रों करके (आपइद्रा) इन दो मंत्रों करके (सहस्राक्ष) इस ऋचा करके (देवस्य) इस मंत्र करके ॥ ८८ ॥ (शिवसंकल्प) मंत्र करके और जो कहे हुए मंत्र हैं जिन करके अभिषेक करना चाहिये ॥

अथाभिषेकमंत्रमाह ।

योसौ वज्रधरो देवो महेन्द्रो गजवाहनः ।
मूलजातशिशोर्दोषं मातापित्रोर्व्यपोहतु ॥ ८९ ॥
योसौ शक्तिधरो देवो हुतभुङ्मेषवाहनः ॥
यः सप्तजिह्वो देवोग्निर्मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ९० ॥
योसौ दंडधरो देवो धर्मो महिषवाहनः ॥
मूलजाताशिशोर्दोषं व्यपोहतु यमो महान् ॥ ९१ ॥
योसौ खड्गधरो देवो निर्ऋती राक्षसाधिपः ।
प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं गण्डांतसंभवम् ॥ ९२ ॥
योसौ पाशधरो देवो वरुणश्च जलेश्वरः ।
नक्रवाहः प्रचेताह्वो मूलोत्थाघं व्यपोहतु ॥ ९३ ॥
योसौ देवो जगत्प्राणो मरुतो मृगवाहनः ।

प्रशामयतु मूलोत्थं दोषं बालस्य शांतिदः ॥ ९४ ॥
योसौ निधिपतिर्देवः खड्गभृन्नरवाहनः ।
मातापित्रोः शिशोश्चैव मूलदोषं व्यपोहतु ॥ ९५ ॥
योसौ पशुपतिर्देवः पिनाकी वृषवाहनः ।
आश्लेषामूलगण्डान्तदोषमाशु व्यपोहतु ॥ ९६ ॥
विघ्नेशः क्षेत्रपो दुर्गा लोकपाला नवग्रहाः ।
सर्वदोषप्रशमनं सर्वे कुर्वंतु शांतिदाः ॥ ९७ ॥
त्रैलोक्ये यानि भूतानि चराणि स्थावराणि च ।
ब्रह्मार्कविष्णुयुक्तानि तानि दोषं व्यपोहतु ॥ ९८ ॥
तद्वयोरभिषेकं तु सर्वदोषोपशांतये ।
सर्वकामप्रदं दिव्यं मङ्गलानां च मङ्गलम् ॥ ९९ ॥

अर्थ—इन मंत्रों करके अभिषेक करना चाहिये ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

अथ स्नानम् ।

वस्त्रांतरितकुम्भाभ्यां पश्चात्तु स्नापयेद्बुधः ।
ततः शुक्लांबरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनः ॥ १०० ॥

अर्थ—वस्त्र करके ढके हुए घडोंकरके पीछेसे पंडित स्नान करावे सफेद कपडे धारण कराय सफेद माला पहिराय श्रेष्ठ गंधादिकोंकरके लेपन करना चाहिये ॥ १०० ॥

अथ दानमाह ।

यजमानो दक्षिणाभिस्तोपयेदृत्विजादिकान् ।
धेनुं पयस्विनीं दद्यादाचार्याय सवत्सकाम् ॥ १०१ ॥
निर्ऋतिप्रतिमां कुम्भं वस्त्रं हेमं च दापयेत् ।
ग्रहार्थे वस्त्रप्रतिमा तस्मै दद्यात्प्रयत्नतः ॥ १०२ ॥

अर्थ—तिसके बाद यजमान दक्षिणा करके ऋत्विजोंको संतोष करै और दूध देनेवाली बछडा सहित गौ आचार्यको दान करके देय ॥ १०१ ॥ नक्षत्रदेवताकी प्रतिमा और घट सुवर्ण आचार्यको दान करके देवें ग्रहोंके लिये जो वस्त्र और प्रतिमा बनाई है वह भी यत्नपूर्वक आचार्यको देय ॥ १०२ ॥

श्रीरुद्रजापिने देयः कृष्णोऽनड्वान्प्रयत्नतः ।
तत्कुम्भं वस्त्रप्रतिमां तस्मै दद्यात्प्रयत्नतः ॥ १०३ ॥
तत्कालाभे ततो दद्यादाचार्यब्रह्मऋत्विजाम् ।
तत्सन्मूल्यं प्रदातव्यं शक्त्या वाथ प्रदापयेत् ॥ १०४ ॥
अवशिष्टं ब्राह्मणेभ्यो यावच्छक्त्या च दक्षिणाम् ।
दीनांधकृपणादिभ्यः किंचित्किंचित्प्रदापयेत् ॥ १०५ ॥

अर्थ—श्रीरुद्रके मंत्र जपनेवालेको यत्न करके कालाबैल देय और श्रीरुद्रका कुम्भ और वस्त्र प्रतिमा तिसी जपकरनेवालेको देना चाहिये ॥ १०३ ॥ जो श्रीरुद्रके मंत्रका जप करनेवाला न होय तो आचार्य या अन्य ऋत्विज ब्राह्मणोंको

देय अथवा तिल तिलका मोलदेय या अपनी शक्त्यनुसार देय ॥ १०४ ॥ और बाकीके बचे जो ब्राह्मणोंके अर्थ अपनी शक्तिके लायक दक्षिणा देय दीन पुरुष अंधे लूले लंगडोंको भी थोडा धन देय ॥ १०५ ॥

अथ घृतावलोकनार्थं मंत्रः ।

वंदे सर्वरसश्रेष्ठं त्वामहं भगवानजः ।
अत्र आज्यसुधारूपं सर्वश्रेष्ठं कुरुष्व माम् ॥ १०६ ॥
यालक्ष्मीयंच मे दौस्थ्यं सर्वगात्रेष्ववस्थितम् ।
तत्सर्वं भक्षयाज्य त्वं लक्ष्मीं पुष्टिं विवर्धय ॥ १०७ ॥

अर्थ—इन दोनों मंत्रोंकरके घृतमें शरीर देखकर छाया पात्र दान करै ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

विसर्जनम् ।

उद्वासयेत्ततो वह्निग्रहान्देवान्द्विजान्क्रमात् ।
दद्यादन्नंपायसादिब्राह्मणान्भोजयेच्छतम् ॥ १०८ ॥
अलाभे दाति पंचाशद्दशकं तदलाभतः ।
सर्वशांतिश्च पठनमाशिषां ग्रहणं तथा ॥ १०९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालवि-रचिते स्त्रीजातके मूलशांतिवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अर्थ—फिर अग्निका विसर्जन कर ग्रहोंका, देवताओंका, ब्राह्मणोंका क्रमसे विसर्जन करे और एक सौ ब्राह्मणोंको खीरको आदि लेलेके पकान्नोंका भोजन देय ॥ १०८ ॥ और जो सौ ब्राह्मण न मिलें तौ पचास ब्राह्मण जो पचास न मिलें तो दश ब्रह्मणोंका भोजन देय और सब ब्राह्मण शांति पाठ करें ब्राह्मणोंसे आशीर्वाद ग्रहण करे ॥ १०९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिक पं० श्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां मूलशांतिवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथाऽऽश्लेषाशांतिरध्यायो निरूप्यते ।

आश्लेषायां तु जातानां शांतिं वक्ष्याम्यतः परम् ।
जातस्य द्वादशाहे तु शांतिहोमं समाचरेत् ॥ १ ॥
अलाभे भे तु जन्मस्थे कुर्याच्छांतिं शुभे दिने ।
स्नातोभ्यंगादिभिस्त्वस्मिन्वरयेत्तु द्विजोत्तमान् ॥ २ ॥

अर्थ—आश्लेषानक्षत्रमें पैदा हुआ लडका वा लडकी उनकी शांति कहताहूं जिस दिन बालक पैदा होय इससे बारहवें दिन शांतिहोम करना चाहिये ॥ १ ॥ जो बारहवें दिन न करे तो जन्मके नक्षत्रके दिन उत्तम दिनमें शांति करे उबटन करके स्नान करे फिर उत्तम ब्राह्मणोंको वरण करना चाहिये ॥ २ ॥

विभवे पंच कुम्भांश्च द्वयं वा तदभावतः ।
देवतास्थापने चैक एको रुद्राभिमंत्रणे ॥ ३ ॥
मूलशांतिप्रकारेण कुंभं निक्षिप्य पूजयेत् ।
गोमयालेपिते देशे धान्यादौ परिशोभने ॥ ४ ॥
पङ्कजं कारयेत्तत्र भूपाङ्गुलमितं तथा ॥
तंडुलैः कारयेत्पद्मं रक्तपीतसितासितैः ॥ ५ ॥
कर्णिकायां न्यसेच्छ्रीं ह्रीं स्थापयेत्तेषु कुंभकम् ॥
आकलशेष्वित्यनया कलशस्थापनं शुभम् ॥ ६ ॥

अर्थ–धनवान् होय तो पांच कुम्भ स्थापित करे और पांच कुम्भकी श्रद्धा न होय तो दो कुम्भ स्थापित करे एक घट नक्षत्र देवताका स्थापन करे और एक घट रुद्रदेवका अभिमंत्रण करनेको स्थापित करना चाहिये ॥ ३ ॥ मूल-शांति प्रकारकरके कुम्भके बीचमें औषधी डालकर पूजन करे गोबरसे धरती लीपकर धान्यकी राशिपर घट स्थापित करे ॥ ४ ॥ तहां अन्नका कमल बनावे चौबीस अंगुलका अथवा चावलका कमल बनावे लाल पीले सफेद श्याम चाव-लका बनावे ॥ ५ ॥ और कमलकी दलोंपर श्रीं ह्रीं क्रमते बनावे तिसके बीचमें घट स्थापित करे (आकलशे) इस मंत्र करके कलश स्थापन करना शुभ है ॥ ६ ॥

इमं मे इतिमंत्रेण पूरयेत्तीर्थवारिणा । कुम्भं च
पल्लगंधाद्यैस्तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ-फिर अग्निका विसर्जन कर ग्रहोंका, देवताओंका, ब्राह्मणोंका क्रमसे विसर्जन करै और एक सौ ब्राह्मणोंको खीरको आदि लेलेके पक्वान्नोंका भोजन देय ॥ १०८॥ और जो सौ ब्राह्मण न मिलैं तो पचास ब्राह्मण जो पचास न मिलैं तो दश ब्राह्मणोंका भोजन देय और सब ब्राह्मण शांति पाठ करैं ब्राह्मणोंसे आशीर्वाद ग्रहण करै ॥ १०९ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिक पं० श्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां मूलशांतिवर्णनं नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

अथाऽऽश्लेषाशांतिरध्यायो निरूप्यते ।
आश्लेषायां तु जातानां शांतिं वक्ष्याम्यतः परम् ।
जातस्य द्वादशाहे तु शांतिहोमं समाचरेत् ॥ १ ॥
अलाभे भे तु जन्मस्थे कुर्याच्छांतिं शुभे दिने ।
स्नातोभ्यंगादिभिस्त्वत्रिमन्त्रयेत्तु द्विजोत्तमान् ॥ २ ॥

अर्थ-आश्लेषानक्षत्रमें पैदा हुआ लडका वा लडकी उनकी शांति कहताहूं जिस दिन बालक पैदा होय इससे बारहवें दिन शांतिहोम करना चाहिये ॥ १ ॥ जो बारहवें दिन न करे तो जन्मके नक्षत्रके दिन उत्तम दिनमें शांति करे उबटन करके स्नान करे फिर उत्तम ब्राह्मणोंको वरण करना चाहिये ॥ २ ॥

विभवे पंच कुम्भांश्च द्वयं वा तदभावतः ।
देवतास्थापने चैक एको रुद्राभिमंत्रणे ॥ ३ ॥
मूलशांतिप्रकारेण कुंभं निक्षिप्य पूजयेत् ।
गोमयालेपिते देशे धान्यादौ परिशोभने ॥ ४ ॥
पद्मं कारयेत्तत्र भूपाङ्गुलमितं तथा ॥
तंदुलैः कारयेत्पद्मं रक्तपीतसितासितैः ॥ ५ ॥
कर्णिकायां न्यसेच्छ्रीं ह्रीं स्थापयेत्तेषु कुंभकम् ॥
आकलशेष्वित्यनया कलशस्थापनं शुभम् ॥ ६ ॥

अर्थ—धनवान् होय तो पांच कुम्भ स्थापित करे और पांच कुम्भकी श्रद्धा न होय तो दो कुम्भ स्थापित करे एक घट नक्षत्र देवताका स्थापन करे और एक घट रुद्रदेवका अभिमंत्रण करनेको स्थापित करना चाहिये ॥ ३ ॥ मूल-शांति मकारकरके कुम्भके बीचमें ओषधी डालकर पूजन करे गोबरसे धरती लीपकर धान्यकी राशिपर घट स्थापित करे ॥ ४ ॥ तहां अन्नका कमल बनावे चौवीस अंगुलका अथवा चावलका कमल बनावे लाल पीले सफेद श्याम चाव-लका बनावे ॥ ५ ॥ और कमलकी दलोंपर श्रीं ह्रीं क्रमते बनावे तिसके बीचमें घट स्थापित करे (आकलशे) इस मंत्र करके कलश स्थापन करना शुभ है ॥ ६ ॥

इमं मे इतिमंत्रेण पूरयेत्तीर्थवारिणा । कुम्भं च
पञ्चगंधाद्यैस्तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ॥ ७ ॥

याः फलिनीरित्यनेन दक्षिणोत्तरयोर्यजेत् ।
ऐंद्यादीशानपर्यंतमितरक्षाणि पूजयेत् ॥ ८ ॥

अर्थ-(इमं मे) इस मंत्रकरके घटमें तीर्थोंका जल भरना चाहिये घटको वस्त्र गंध पुष्पाक्षतादिकोंकरके तिन मंत्रोंसे पूजन करना चाहिये ॥ ७ ॥ (याः फलिनी) इस मंत्र करके दक्षिण उत्तर दिशामें यजन करे पूर्व दिशासे लेकर ईशानपर्यंत, इंद्र, अग्नि, पितृ, निर्ऋति, वरुण, मरुत्, कुबेर, ईश इन देवताओंका पूजन करना चाहिये और ग्रहोंकाभी पूजन प्रत्येक दिशाओंमें करे ॥ वराहः–प्रागाद्या रविशुक्रलोहिततमःसौरेंदुवित्सूरयः ॥ ८ ॥

मूलोक्तविधिनानेन कुम्भयोरभिमंत्रणम् ।
रुद्रार्चा रुद्रकुम्भेषु पूर्ववच्छेषमाचरेत् ॥ ९ ॥

अर्थ-और सब विधि मूल नक्षत्रमें कही है तिस माफिक कुम्भका अभिमंत्रण करके और रुद्रकुम्भको रुद्रके मंत्रकरके पहिले कही हुई विधिके अनुसार सब कार्य करे ॥ ९ ॥ अर्थात् मूल नक्षत्रके माफिक आश्लेषा नक्षत्रकी भी शांति करनी चाहिये सम्पूर्ण सामग्री सहित पांच कुम्भ स्थापित करे और पांचकी श्रद्धा न होय तो दो कुम्भ स्थापित करे और एक कुम्भ रुद्रका दूसरे कुम्भपर आश्लेषा नक्षत्रकी प्रतिमा स्थापित करे पूर्वोक्तरीत्यनुसार दोनों कुम्भोंका अभिमंत्रण करे तहाँ आश्लेषा नक्षत्रकी प्रतिमा सर्पाकार बनावे और

और उसका अधिदेवता बृहस्पतिको प्रतिमा और प्रत्यधिदेवता पितृश्वरोंकी प्रतिमाका स्थापन कर (नमोस्तु सर्पेभ्यः) इस मंत्र करके पूजन करे ॥

अथाश्लेषानक्षत्रध्यानमाह।

सर्पो रक्ताक्षिनेत्रश्च द्विभुजः पीतवस्त्रकः।
फलकाधिधरस्तीक्ष्णो दिव्याभरणभूषितः ॥ १० ॥
अर्थ—आश्लेषा नक्षत्रका ध्यान करना चाहिये ॥ १० ॥

अथ कर्मविधानमाह।

कर्तुः शाखोक्तमार्गेण आचार्यस्त्वथ वा चरेत् ॥
मखांतं कर्म निर्माय हविरादाय शास्त्रतः ॥ ११ ॥
इदं सर्पेभ्यो जुहुयात्साधिप्रत्याधिदेवतम्।
अष्टोत्तरशतं वाथ अष्टाविंशतिरेव च ॥ १२ ॥
मूलनक्षत्रवच्छेषं होमकर्म समापयेत्।
पूर्णाहुत्यंतकर्म्माणि कृत्वा संपातकं तथा ॥ १३ ॥

अर्थ—अपनी शाखामार्गकरके पूजन हवन आचार्य वा यजमान करे यज्ञके अंतमें कर्मनिवारण करके शास्त्रानुसार हविष्य लायकर ॥ ११ ॥ (इदंसर्पेभ्यो) इस मंत्रकरके हवन करे अधिदेवता और प्रत्यधिदेवताका अष्टोत्तर शत (१०८) अथवा अष्टाविंशति (२८) संख्याकरके ॥ १२ ॥ बाकीका सम्पूर्ण कर्म मूलनक्षत्रके तुल्य करके

हवनकर्म समाप्ति कर अंतमें पूर्णाहुति कर्मकरके फिर प्रायश्चित्तनिवारण करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथांजल्यभिषेकः ।

कुम्भाञ्जलिं तु प्रक्षिप्य अभिषेकं समाचरेत् ।
पुत्रदारसमेतस्य यजमानस्य पूर्ववत् ॥ १४ ॥

अर्थ–जिस घटको अंजलि देकर पुत्र स्त्री सहित जो यजमान है तिसका अभिषेक करना चाहिये पहिलेकी तरह ॥ १४ ॥ और घटके जलसे पुत्र स्त्री यजमानका अभिषेक करना अर्थात् घटके जलसे छींटा देना चाहिये ।

अथाभिषेकमंत्रमाह ।

आश्लेषाऋक्षजातस्य मातापित्रोर्धनस्य च ।
भ्रातृजातिकुलस्थानां दोषं सर्वं व्यपोहतु ॥ १५ ॥

अर्थ–आश्लेषा नक्षत्रमें पैदा हुए बालकके माता, पिता और धन, भ्रातृगण, बंधु लोगोंके सम्पूर्ण दोषोंको नाश करे हैं ॥ १५ ॥

अथ रक्षामंत्रः ।

पितरः सर्वभूतानां रक्षंतु पितरः सदा ।
सर्पनक्षत्रजातस्य वित्तं च ज्ञातिबांधवान् ॥ १६ ॥
सर्वाधीश नमस्तुभ्यं नागानां च गणाधिप ॥
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वारिष्टप्रशांतये ॥ १७ ॥
मूलनक्षत्रवत्कुर्यात्सर्वदोषे त्वनामतः ॥ १८ ॥

अर्थ—इस मंत्रकरके रक्षा करना तथा अर्घ्य देना चाहिये ॥ १६ ॥ १७ ॥ मूलनक्षत्रके तुल्य आश्लेषानक्षत्रके नाम करके सर्व कर्म करना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ मूलदोषमाह—नारदः ।

मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा तु तदंगनाम् ।
ऐंद्री तदग्रजं हंति देवरं तु द्विदैवजा ॥ १९ ॥
शांतिर्वा पुष्कला चेत्स्यात्तर्हि दोषो न कश्चन ।
इति सर्पर्क्षजाता च सुता शांतिमगाच्छुभम ॥२०॥

अर्थ—मूल नक्षत्रमें पैदा भई कन्या श्वशुरका नाश करती है और आश्लेषा नक्षत्रमें पैदा भई पतिके बहिनका नाश करे और ज्येष्ठा नक्षत्रमें पैदा भई बडे भाईका नाश करे और विशाखामें पैदा भई देवरका नाश करती है ॥ १९ ॥ पूरी पूरी शांति करनेसे सर्व दोष दूर होते हैं. मूल ज्येष्ठा आश्लेषा विशाखा इन नक्षत्रोंमें पैदा. भई कन्याकी शांति जन्मसमय अथवा विवाहसमय करना चाहिये क्योंकि मूल दोषमें उत्पन्न जो बालक है सो उत्पत्तिकालमें अपने कुलको दोष करते हैं और विवाहके बाद श्वशुर कुलको दोषी होते हैं. आश्लेषा नक्षत्रमें पैदा भई कन्याकी शांति पूर्ण कही है॥२०

अथ त्रिविधगण्डांतशांतिर्निरूप्यते ।
गण्डशांतिं प्रवक्ष्यामि सोममंत्रेण भक्तिमान् ।

इस मंत्र करके निश्चय करके पुजा करे गण्डदोषकी शांतिके लिये इष्ट दक्षिणा देय ॥ २५ ॥

शुक्लं वागीश्वरं चैव ताम्रपात्रसमन्वितम् ।
गण्डदोषोपशांत्यर्थं दद्याद्वेदविदे शुचिः ॥ २६ ॥
अभुक्तेतरजातानां सूतिकांते दिने तथा ॥
शांतिं शुभेह्नि वा कुर्यात्तावत्पुत्रं न लोकयेत् ॥२७॥

अर्थ–शुक्लवर्ण वागीश्वरकी मूर्ति ताम्रपात्रमें घृतसहित स्थिति करके गंडदोषकी शांतिके अर्थ वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको देय ॥ २६ ॥ अभुक्त मूलोंसे इतर दोषोंमें पैदा हुए बालककी शांति सूतकके अंतमें अथवा शुभ दिनमें करे जब तक शांति न करे तबतक कन्या पुत्रका मुख न देखना चाहिये ॥ २७ ॥

अथ विशेषगण्डमाह ।

मूलाश्विपित्र्यचरणे प्रथमे च नूनं पौष्णेंद्रयोश्च फणिनश्चतुरीयपादे । मातुः पितुः स्ववपुषः प्रकरोति नाशं जातो यदा निशि दिनेऽप्यथ संध्ययोश्च ॥२८॥

अर्थ–मूल अश्विनी मघा इन नक्षत्रोंके पहिले चरणमें जो बालक पैदा होय और रेवती ज्येष्ठा आश्लेषा नक्षत्रके चौथे चरणमें जो उत्पन्न होय तो वह बालक माता पिता और अपने शरीरको नाश करता है और जो बालक रात्रि और दिनकी संधिमें उत्पन्न होय तोभी पूर्ववत् अशुभ फल

कांस्यपात्रं प्रकुर्वीत पलैः षोडशभिर्नवम् ॥ २१ ॥
अष्टाभिश्च चतुर्भिर्वा द्वाभ्यां वा शोभनं तथा ।
तन्मध्ये पायसं शंखे नवनीतेन पूरिते ॥ २२ ॥
राजतं चंद्रमभ्यर्च्य सितपुष्पसहस्रकैः ।
देवज्ञः शुक्लवासास्तु शुक्लमाल्यांबरार्चितः ॥२३ ॥

अर्थ-अब गंडदोषशांति कहताहूं-चंद्रमाके (इमंदेवा) इस मंत्रकरके भक्तिसहित त्रेपन ५३ तोले चार मासेका कांस्यका पात्र बनावे अथवा तीस तोलेका कांसेका पात्र बनावे ॥ २१ ॥ अथवा २६ छब्बीस तोला आठ ८ मासेका या १३ तोले चारमासे वा छः तोले आठ मासेका शोभायमान पात्र बनावे उसके बीचमें खीर भरे और खीरके बीचमें मक्खन शंखमें भरकर ॥ २२ ॥ चांदीका चंद्रमा उसमें रखकर एक हजार सफेद पुष्पोंकरके पूजन करना और ज्योतिषीका सफेद वस्त्रोंकरके सफेद पुष्पोंकी माला बनाकर पूजन करना चाहिये ॥ २३ ॥

सोमोहमिति संचिंत्य पूजां कुर्यादतंद्रितः ।
जपेत्सहस्रकं मंत्रं श्रद्दधानः समाहितः ॥ २४ ॥
आप्यायस्वेति मंत्रेण पूजां कुर्यात्समाहितः ॥
दद्याद्दक्षिणामिष्टां गण्डदोषप्रशांतये ॥ २५ ॥

गृहाणार्घ्य ने॰) इस मंत्र करके आलस्य छोड करके मूलनक्षत्रवत्कुम्भक हजार मंत्र जपे ॥२४॥ (आप्यायस्व)

इस मंत्र करके निश्चय करके पुजा करे गण्डदोषकी शांतिके लिये इष्ट दक्षिणा देय ॥ २५ ॥

शुक्लं वागीश्वरं चैव ताम्रपात्रसमन्वितम् ।
गण्डदोषोपशान्त्यर्थं दद्याद्वेदविदे शुचिः ॥ २६ ॥
अभुक्तेतरजातानां सूतिकांते दिने तथा ॥
शांतिं शुभेह्नि वा कुर्यात्तावत्पुत्रं न लोकयेत् ॥२७॥

अर्थ-शुक्लवर्ण वागीश्वरकी मूर्ति ताम्रपात्रमें घृतसहित स्थिति करके गंडदोषकी शांतिके अर्थ वेदके जाननेवाले ब्राह्मणको देय ॥ २६ ॥ अभुक्त मूलोंसे इतर दोषोंमें पैदा हुए बालककी शांति सूतकके अंतमें अथवा शुभ दिनमें करे जब तक शांति न करे तबतक कन्या पुत्रका मुख न देखना चाहिये ॥ २७ ॥

अथ विशेषगण्डमाह ।

मूलाश्विपित्र्यचरणे प्रथमे च नूनं पौष्णेंद्रयोश्च फणिनश्चतुरीयपादे । मातुः पितुः स्ववपुषः प्रकरोति नाशं जातो यदा निशि दिनेऽप्यथ संध्ययोश्च ॥२८॥

अर्थ-मूल अश्विनी मघा इन नक्षत्रोंके पहिले चरणमें जो बालक पैदा होय और रेवती ज्येष्ठा आश्लेषा नक्षत्रके चौथे चरणमें जो उत्पन्न होय तो वह बालक माता पिता और अपने शरीरको नाश करता है और जो बालक रात्रि और दिनकी संधिमें उत्पन्न होय तोभी पूर्ववत् अशुभ फल

करता है ॥ २८ ॥ इन गंडदोषोंमें उत्पन्न बालकोंकी भी पूर्ववत् प्रतिमा कलश अभिषेक हवनादि कर्म करके शांति करना चाहिये ॥

अन्यच्च गण्डदोषमाह–श्रीपतिः ।

उत्तरातिष्यचित्रासु पूर्वाषाढोद्भवस्य च ।
कुर्याच्छांतिं प्रयत्नेन नक्षत्राकारजां बुधः ॥ २९ ॥

अर्थ–उत्तरा पुष्य चित्रा पूर्वाषाढमें उत्पन्न हुए बालकोंकी भी नक्षत्रके अनुसार यत्न करके शांति करना चाहिये ॥ २९ ॥

अथ पादभेदेन गण्डदोषमाह–वसिष्ठः ।
चित्राद्यर्धे पुष्यपादे द्वितीये पूर्वाषाढाधिष्ण्यपादे तृतीये । पूर्वाफाल्गुन्युत्तरार्द्धे विघाती मातापित्रोर्भ्रातुरेवात्मनश्च ॥ ३० ॥

अर्थ–चित्रानक्षत्रका अर्द्धभागमें पुष्य नक्षत्रके दूसरे चरणमें और पूर्वाषाढनक्षत्रके तीसरे चरण और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रके चौथे चरणमें जो बालक उत्पन्न होय वह माता पिता भ्राता और अपनी आत्माका क्रमसे घाती होता है ॥ ३० ॥

अथ नक्षत्रजातवशाद्बालकस्य दर्शनावधिमाह–गर्गः ।

द्विमासस्योत्तरादोषः पुष्यस्यैव त्रिमासकः ॥
पूर्वाषाढाष्टमे मासे चित्रायामाष्टमासिकम् ॥ ३१ ॥

नवमासं तथाश्लेषामूले चाष्टसमाः स्मृताः ।
ज्येष्ठा पंचदशे मासे पुत्रदर्शनवर्जिता ॥ ३२ ॥

अर्थ–उत्तरा नक्षत्रमें उत्पन्न बालकको दो मासतक न देखना चाहिये पुष्य नक्षत्रमें उत्पन्नको तीन मासतक पूर्वाषाढमें उत्पन्नको आठ मासतक चित्रामें पैदा हुएको छः महीनेतक ॥ ३१ ॥ आश्लेषामें उत्पन्नको नौ मासतक और मूलनक्षत्रमें उत्पन्न बालकको आठ वर्षतक और ज्येष्ठामें पैदा हुएको पंद्रह महीनेतक नहीं देखना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथ नक्षत्रजाते दानमाह ।

उत्तरे तिलपात्रं स्यात्तिष्ये गोदानमिष्यते ॥
अजां चित्रासु वै दद्यात्पूर्वाषाढे तु कांचनम् ॥ ३३ ॥
यवान्व्रीहींश्च माषांश्च तिलमुद्गांश्च दापयेत् ।
यथावित्तानुसारेण कुर्याद्ब्राह्मणभोजनम् ॥ ३४ ॥
पितुरायुष्यवृद्ध्यर्थं शांतिरत्र विधीयते ॥ ३५ ॥

अर्थ–उत्तरानक्षत्रमें उत्पन्नके शांत्यर्थ तिलपात्र दान करे पुष्यमें पैदा हुएको गोदान करना चाहिये चित्राजातको बकरा दान करना चाहिये पूर्वाषाढमें पैदा हुएको सुवर्ण दान करना चाहिये ॥ ३३ ॥ जौ, धान, उर्द, तिल, मूंग दान करना चाहिये और अपनी शक्त्यनुसार ब्राह्मणभोजन करना चाहिये ॥ ३४ ॥ पिताकी आयुष्य बढानेको ये शांति विधान करी है ॥ ३५ ॥

सर्वनक्षत्रेषु जाते शांतिं विना दानमाह—
वसिष्ठसंहितायाम् ।

विप्रेभ्यो गोत्रयं दद्यात्तद्दोषशमनाय वै ।
अशक्तो गोद्वयं दद्याद्गामेकां वापि भक्तितः ॥ ३६ ॥

अर्थ—पूर्वोक्त नक्षत्रमें जो बालककी शांति करानेकी शक्ति न होय तो ब्राह्मण तीन गोदान करके देय तिस दोषशांतिके लिये जो तीन गोदानकी शक्ति न होय तो दो गोदान करे अपनी भक्तिसहित एक गोदान करे ॥ ३६ ॥

अथ ज्येष्ठाशांतीर्निरूप्यते-भरद्वाजः ।
अथ ज्येष्ठाजाते प्रत्येकषड्घटिकाफलमाह ।

ज्येष्ठादौ मातृजननीं मातामहद्वितियिके ।
तृतीये मातुलं हंति चतुर्थे जननीं तथा ॥ ३७ ॥
आत्मानं पंचमे हंति षष्ठे गोत्रक्षयो भवेत् ।
सप्तमे कुलनाशः स्यादष्टमे ज्येष्ठसोदरम् ॥ ३८ ॥
नवमे श्वशुरं हंति सर्वस्वं दशमे तथा ।
प्रत्येकं घटिका षट् स्यात्फलमुक्तं द्विजोत्तमैः ॥ ३९ ॥

अर्थ—ज्येष्ठा नक्षत्रकी ६० घटीके दश भाग करे प्रत्येक भाग छः छः घटीका हुआ उसका फल क्रम करके कहते हैं. प्रथम भागमें उत्पन्न बालक नानीका नाश करे, दूसरे भागमें नानाका नाश करे, तीसरे भागमें मामाका नाश, चतुर्थ भागमें माताका नाश करे ॥ ३७ ॥ पंचम भागमें

अपनी आत्माका नाश करे छठे भागमें गोत्रका नाश करे सातवें भागमें कुलका नाश करे आठवें भागमें बडे भाईका नाश करे ॥ ३८॥ नवम भागमें श्वशुरका नाशकरे और दशम भागमें सर्वस्व नाश करे हर एक छः घटीका फल पंडितों- करके कहागया है ॥ ३९ ॥

अथ ज्येष्ठारेवतीगण्डान्तमाह ।

घटिकैकाचमैत्रांते ज्येष्ठादौ घटिकाद्वयम् ।
तयोः संधिरीति ज्ञेयं शिशिगण्डान्तमीरितम् ॥४०॥

अर्थ-अनुराधानक्षत्रके अंतका एक घटी ज्येष्ठाके आदिकी दो घटी इनकी संधिको गंडान्त कहते हैं ॥ ४० ॥

अथ ज्येष्ठापादफलम् ।

प्रथमे च द्वितीये च ज्येष्ठर्क्षे च तृतीयके ।
पादत्रयेपि यो जातः स च श्रेष्ठः प्रकीर्तितः ॥ ४१
ज्येष्ठांतपादजातस्तु पितुः स्वस्य विनाशकः ॥
ज्येष्ठर्क्षे कन्यका जाता हंति शीघ्रं धवाग्रजम् ॥४२॥

अर्थ-ज्येष्ठानक्षत्रका पहिला दूसरा तीसरा इन तीनों चरणोंमें उत्पन्न हुए बालक श्रेष्ठ होते हैं ॥ ४१ ॥ ज्येष्ठाके अंतिम चरणमें उत्पन्न बालक पिताका और अपना नाश करता है और ज्येष्ठानक्षत्रमें उत्पन्न भई कन्या स्वामीके बडे भ्राताका नाश करती है ॥ ४२ ॥

अथ ज्येष्ठागण्डान्तशांतिः ।

शांतिं तस्य प्रवक्ष्यामि गण्डदोषप्रशांतये ।

गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गण्डदोषप्रशांतये ॥ ५३ ॥

अर्थ–इस मंत्र करके अर्घ्य देना चाहिये ॥ ५३ ॥ इति ज्येष्ठाशांति ॥

अथ दुष्टयोगजनने शांतिः ।

दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ ।
शूले गण्डे च परिघे वज्रे च यमघंटके ॥ ५४ ॥
कालदंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे ।
तस्मिन् गंडे दिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते ॥ ५५ ॥
अतिदोषकरी प्रोक्ता तत्र पापयुते सति ।
विचार्य तत्र दैवज्ञः शांतिं कुर्याद्यथाविधि ॥ ५६ ॥

अर्थ–जिस कन्याके जन्मसमयमें दिनक्षय अर्थात् तिथि क्षय होय व्यतीपातयोग होय, व्याघातनाम योग होय वा भद्रा होय वा वैधृतिनाम योग होय शूलयोग होय गंडयोग होय वा परिघनाम योग होय वा यमघंटनाम योग होय अर्थात् सूर्यवारको मघा, चन्द्रवारको विशाखा, भौमवारको आर्द्रा, बुधवारको मूल, बृहस्पतिको कृत्तिका, शुक्रको रोहिणी, शनैश्चरको हस्त नक्षत्र होनेसे यमघंट योग होता है ॥ ५४ ॥ वा कालदंड योग होय अर्थात् रविवारको आर्द्रा मंगलको भरणी, चंद्रवारको मघा, बुधको चित्रा, बृहस्पतिको ज्येष्ठा, शुक्रको अभिजित, शनैश्चरको पूर्वाभाद्रपद होनेसे कालदंड योग होता है वा मृत्युयोग, रविवारको अनुराधा, चंद्रवारको उत्तरा ३, मंगलको शतभिषा, बुधको अश्विनी, बृहस्पतिको मृगशिर, शुक्रको आश्लेषा, शनैश्चर वार हस्त नक्षत्र

होनेसे मृत्युनाम योग होता है दग्धयोग अर्थात् रविवारको द्वादशी, चंद्रको प्रतिपदा, मंगलको पंचमी, बुधको तीज, बृहस्पतिको पडवा, शुक्रको अष्टमी, शनैश्वर, नवमी तथा रविवारको भरणी, चंद्रवारको चित्रा, मंगलको उत्तराषाढ, बुधको धनिष्ठा, बृहस्पतिको उत्तराफाल्गुनी, शुक्रको ज्येष्ठा, शनैश्वरको रेवती होनेसे दग्धयोग होता है वा दारुणनाम योग होय अथवा उस दिन गंड होय अर्थात् नक्षत्रगंडांत तिथिगंडांत लग्नगंडांत ये तीन प्रकारके गंडांत होते है, नवमी तिथिके अंतकी २ घडी पंचमीके अंतकी १ घडी चौथकी अन्तकी आधी घडी गंडांत कहाती है ज्येष्ठानक्षत्रके अन्तकी २ घडी अश्विनीकी आदिकी २ घडी आश्लेषाके अंतकी २ घडी, मघाके आदिकी दो घडी गंडांत कहाती है। कर्क, मीन, वृश्चिक इनके आदिकी २॥ घडी, सिंह मेष धन इन लग्नोंके आदिकी आधी घडी गंडांत कहाती है ऐसे समयमें जन्म होनेसे ॥ ५५ ॥ अत्यंतदोषकारी है और उन्हीं लग्नोंमें पापग्रह युक्त होय तो ज्योतिषी लोग विचारकरके यथाविधि शांति करें ॥ ५६ ॥

तस्य शांतिः।

यजनं देवतानां च ग्रहाणां चैव पूजनम्।
दीपं शिवालये भक्त्या गोघृतेन प्रदापयेत् ॥ ५७ ॥
अभिषेकं शंकराय तथाश्वत्थप्रदक्षिणाम्।
अभीष्टफलसिद्ध्यर्थं कारयेद्ब्रह्मभोजनम् ॥ ५८ ॥
गाणपत्यं पुरुषसूक्तं सौरं मृत्युंजयं तथा।

शांत्यै जाप्यं पुनश्चैव कृत्वा मृत्युंजयी भवेत् ॥५९॥

अर्थ–देवताओंके अर्थ यज्ञ करे, ग्रहोंका पूजन करे, शिवके मंदिरमें गौके घीका दीपक बाले ॥ ५७ ॥ और शिवका अभिषेक करके पीपलकी प्रदक्षिणा करे, अभीष्ट फलकी सिद्धिके अर्थ ब्राह्मणोंको भोजन करावे ॥ ५८ ॥ गाणपत्यसूक्त पुरुषसूक्त सौरमंत्र और मृत्युंजयके मंत्रका जप शांति करनेसे मनुष्य मृत्युंजयी होता है ॥ ५९ ॥

अथ व्यतीपातवैधृतिसंक्रांतिजातफलम् ।

कुमारीजन्मकाले तु व्यतीपातश्च वैधृतिः ॥
संक्रांतिश्च रवेस्तत्र जाता दारिद्र्यदुःखिता॥ ६० ॥

अर्थ–कन्याके जन्मकालमें व्यतीपात वैधृति सूर्यसंक्रांति होनेसे दरिद्रता कारक होताहै "व्यतीपातवैधृती गणितागतौ महापातसंज्ञौ ज्ञेयौ संक्रांतेरुभयत्र षोडशघटी मितौ ज्ञेयौ ॥ " ॥ ६० ॥

तस्य शांतिः ।

नवग्रहमखं कुर्यात्तस्य दोषस्य शांतये ।
प्रथमे गोमुखाज्जन्म ततः शांतिं समाचरेत् ॥ ६१ ॥
गृहस्य पूर्वदिग्भागे गोमयेनानुलिप्य च ।
अलंकृतं स्वदेशे तु व्रीहिराशिं प्रकल्पयेत् ॥ ६२ ॥

अर्थ–नवग्रहोंका यज्ञ करे तिस दोषकी शांतिके लिये जो पहिले गोमुखसे जन्म होय तिसकी शांति करे ॥ ६१ ॥ घरके पूर्वभागमें गोबरसे लीपकर तिस स्थानको अलंकृत करके धान्यकी ढेरी कल्पना करे ॥ ६२ ॥

पंचद्रोणमितं धान्यं तदर्धं तंदुलेन च ।
तदर्धं तु तिलैः कुर्यादन्योन्यं परिकल्पयेत् ॥ ६३ ॥
द्रव्यत्रितयराशौतु अष्टपत्रं लिखेद्बुधः ।
पुण्याहं वाचयित्वा तु आचार्यं कारयेत्पुरा ॥ ६४ ॥
राशौ प्रतिष्ठितं कुम्भमव्रणं सुमनोहरम् ।
तीर्थोदकेन संपूज्य समृदोषधिपल्लवम् ॥ ६५ ॥

अर्थ--चार मन जौ दो मन चावल एक मन तिल इनकी अन्य ढेरियें कल्पना करे ॥ ६३ ॥ धान्यकी तीनों ढेरियोंपर अष्टकमल पत्र लिखे पीछे पुण्याहवाचन आचार्य पहिले करे इन तीनों धान्यकी ढेरियोंपर सुन्दर बिना टूटा घट स्थापनकर घटोंमें तीर्थोदक डालकर शुभ मृत्तिका शतोषधी पंच पल्लव डाले ॥ ६४ ॥ ६५ ॥

पंचगव्यं पंचरत्नं वस्त्रयुग्मेन वेष्टितम् ।
तस्योपरि न्यसेत्पात्रं सूक्ष्मवस्त्रेण वेष्टितम् ॥ ६६ ॥
प्रतिमां स्थापयेत्पश्चात्साधिप्रत्यधिदैवतम् ।
चंद्रादित्याकृती पार्श्वे मध्ये वैधृतिमर्चयेत् ॥ ६७ ॥

अर्थ--पंचगव्य पंचरत्न घटमें डालकर दो वस्त्रों करके वेष्टन करे तिसके ऊपर पात्र रखकर महीन कपडेसे युक्त करे ॥ ६६ ॥ फिर घटके ऊपर प्रतिमा स्थापन करे अधिदेवता और प्रत्यधि देवताकी चंद्रमा और सूर्य घटके पार्श्ववर्ती कर बीचमें वैधृतिका पूजनकरे ॥ ६७ ॥

एवमेव व्यतिपाते शांते संक्रमणस्य च ।
अधिदेवं भवेत्सूर्ये चंद्रे प्रत्यधिदैवतम् ॥ ६८ ॥

तत्तद्व्याहृतिपूर्वैश्च तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ।
त्र्यंबकेन मंत्रेण प्रधानप्रतिमां यजेत् ॥ ६९ ॥
उत्सूर्यं इति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ।
आप्यायस्वेति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ॥ ७० ॥
तत्राष्टोत्तरसाहस्रमष्टोत्तरशतं च वा ।
अष्टाविंशतिसंख्याकं जपं सर्वत्र सौरजम् ॥ ७१ ॥

अर्थ-इस प्रकार व्यतीपातकी और संक्रांतिजननकी शांति करना चाहिये सूर्यको अधिदेव चंद्रमाको प्रत्यधिदेव करके ॥ ६८ ॥ तिन तिन पूर्वक ही व्याहृतियों करके तिन्हींके मंत्रोंसे पूजन करे, त्र्यंबक मंत्र करके प्रधान देवताकी प्रतिमाका यजन करे ॥ ६९ ॥ (उत्सूर्यं) इस मन्त्र करके सूर्यकी पूजा करे (आप्यायस्वेति) मंत्र करके चंद्रमाका पूजन करे ॥ ७० ॥ तिसके बाद एक हजार आठ मंत्र अथवा एकसौ आठ वा अट्ठाईस मंत्रका जप, सब जगह सौरज रीति करनी चाहिये ॥ ७१ ॥

अथ कुहुसिनीवालीदर्शप्रकारः ।

तहां अमावास्याके प्रथम प्रहरमें जिस बालकका जन्म होय तो सिनीवाली शांति करनी चाहिये, और अमावास्याके २।३।४।५।६ इन प्रहरोंमें जन्म होय तो दर्शशांति करनी चाहिये और अमावास्याके ७।८ प्रहरमें जो बालक उत्पन्न होय तो कुहूशांति करनी चाहिये, यहां अमावास्याके तीन भेद शांतिनिमित्त कहे हैं किसी २ आचार्यके मतमें सिनीवाली कुहू ऐसे दो भेद कहे हैं ॥

अथ सिनीवालीजननफलम् ।

सिनीवालीप्रसूता स्याद्यस्य भार्या पशुस्तथा ।
गोरश्वी महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥७२॥

अर्थ–जिस मनुष्यकी औरत वा पशु गौ घोडी भैंस सिनीवाली अमावास्यामें प्रसूता होय तो उसके घरमें इंद्रकी लक्ष्मी होय तो भी हरण होजाय ॥ ७२ ॥

अथ सिनीवालीपशुजनने भेदमाह ।

ये च संति द्विजाश्चान्ये स्वप्रसादोपजीविनः । वर्जयेत्तानशेषांस्तु पशुपक्षिमृगादिकान् ॥ ७३ ॥

अर्थ–जो घरमें पशु पाले जाते हैं ये सिनीवालीमें प्रसूता होय तो दोषी होते हैं, जो पक्षी वा पशु अपने बलते उपजीवन करते हैं अर्थात् जंगली मृगादिक पक्षी वगैरह हैं इनको छोड करके अन्य कोई प्रसूता होय तो उसकी शांति जरूर करना चाहिये ॥ ७३ ॥

अथ कुहूप्रसूतीफलम् ।

कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरी मता ।
यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशिनी ॥ ७४ ॥

अर्थ–जिस मनुष्यके घरमें कुहूमें बालक पैदा होय वह सर्वप्रकारके दोष करनेवाली होती है और वह बालक मातापिताकी आयु और धनका नाश करता है ॥ ७४ ॥

अथ कुहूसिनिवालीदर्शशांतिमाह ।

नारीं विना विशेषेण परित्यागो विधीयते ।
त्यागाशक्तः परां शांतिं कुर्याद्वित्तया विचक्षणः ७५॥

तत्तद्व्याहृतिपूर्वैश्च तत्तन्मंत्रैः प्रपूजयेत् ।
त्र्यंबकेन मंत्रेण प्रधानप्रतिमां यजेत् ॥ ६९ ॥
उत्सूर्य इति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ।
आप्यायस्वेति मंत्रेण सोमपूजां समाचरेत् ॥ ७० ॥
तत्राष्टोत्तरसाहस्रमष्टोत्तरशतं च वा ।
अष्टाविंशतिसंख्याकं जपं सर्वत्र सौरजम् ॥ ७१ ॥

अर्थ—इस प्रकार व्यतीपातकी और संक्रांतिजननकी शांति करना चाहिये सूर्यको अधिदेव चंद्रमाको प्रत्यधिदेव करके ॥ ६८ ॥ तिन तिन पूर्वक ही व्याहृतियों करके तिन्हींके मंत्रोंसे पूजन करे, त्र्यंबक मंत्र करके प्रधान देवताकी प्रतिमाका यजन करे ॥ ६९ ॥ (उत्सूर्य) इस मन्त्र करके सूर्यकी पूजा करे (आप्यायस्वेति) मंत्र करके चंद्रमाका पूजन करे ॥ ७० ॥ तिसके बाद एक हजार आठ मंत्र अथवा एकसौ आठ वा अट्ठाईस मंत्रका जप, सब जगह सौरज रीति करनी चाहिये ॥ ७१ ॥

अथ कुहूसिनीवालीदर्शप्रकारः ।

तहां अमावास्याके प्रथम प्रहरमें जिस बालकका जन्म होय तो सिनीवाली शांति करनी चाहिये. और अमावास्याके २ । ३।४।५।६ इन प्रहरोंमें जन्म होय तो दर्शशांति करनी चाहिये और अमावास्याके ७।८ प्रहरमें जो बालक उत्पन्न होय तो कुहूशांति करनी चाहिये, यहां अमावास्याके तीन भेद शांतिनिमित्त कहे हैं किसी २ आचार्यके मतमें सिनीवाली कुहू ऐसे दो भेद कहे हैं ॥

अथ सिनीवालीजननफलम् ।

सिनीवालीप्रसूता स्याद्यस्य भार्या पशुस्तथा ।
गोरश्वी महिषी चैव शक्रस्यापि श्रियं हरेत् ॥७२॥

अर्थ—जिस मनुष्यकी औरत वा पशु गौ घोडी भैंस सिनीवाली अमावास्यामें प्रसूता होय तो उसके घरमें इंद्रकी लक्ष्मी होय तो भी हरण होजाय ॥ ७२ ॥

अथ सिनीवालीपशुजनने भेदमाह ।

ये च संति द्विजाश्चान्ये स्वप्रसादोपजीविनः । वर्जयेत्तानशेषांस्तु पशुपक्षिमृगादिकान् ॥ ७३ ॥

अर्थ—जो घरमें पशु पाले जाते हैं ये सिनीवालीमें प्रसूता होय तो दोषी होते हैं, जो पक्षी वा पशु अपने बलते उपजीवन करते हैं अर्थात् जंगली मृगादिक पक्षी वगैरह हैं इनको छोड करके अन्य कोई प्रसूता होय तो उसकी शांति जरूर करना चाहिये ॥ ७३ ॥

अथ कुहूप्रसूतीफलम् ।

कुहूप्रसूतिरत्यर्थं सर्वदोषकरी मता ।
यस्य प्रसूतिरेतेषां तस्यायुर्धननाशिनी ॥ ७४ ॥

अर्थ—जिस मनुष्यके घरमें कुहूमें बालक पैदा होय वह सर्वप्रकारके दोष करनेवाली होती है और वह बालक मातापिताकी आयु और धनका नाश करता है ॥ ७४ ॥

अथ कुहूसिनीवालीदर्शशांतिमाह ।

नारीं विना विशेषेण परित्यागो विधीयते ।
त्यागाशक्तः परां शांतिं कुर्याद्वित्तया विचक्षणः ७५॥

प्रतिमां कारयेच्छंभोश्चतुर्भुजसमन्विताम् ।
त्रिशूलखड्गवरदाभयहस्तां यथाक्रमात् ॥ ७६ ॥
श्वेतवर्णां श्वेतपुष्पां श्वेतांबरवृषास्थिताम् ।
त्रैयंबकेन मंत्रेण पूजां कुर्याद्यथाविधि ॥ ७७ ॥

अर्थ—जो नारी कुहू सिनीवाली दर्शमें प्रसूता होय उसका परित्याग करना मुख्य है और जो परित्याग करनेकी शक्ति न होय तो विचक्षण भक्तिकरके शांति करे ॥ ७५ ॥ शिवजीकी प्रतिमा बनावे उसको चारभुजाओंकरके युक्तकरे त्रिशूल खड्ग वरद अभय ये हैं हाथोंमें जिनके ॥ ७६ ॥ श्वेत है वर्ण जिनका श्वेत पुष्पोंकी माला धारण किये, सफेद वस्त्र बैलपर सवार त्र्यंबक मंत्रकरके सर्वशास्त्रानुसार विधिकरके शिवका पूजन करे ॥ ७७ ॥

अथ इंद्रपूजनमाह ।

इंद्रश्चतुर्भुजो वज्रांकुशपाशससायकः ।
रक्तवर्णो गजारूढो यत इंद्रेति मंत्रतः ॥ ७८ ॥

अर्थ—चार भुजाओंको धारणकिये अंकुश पाश बाण हैं हाथमें जिसके रक्त वर्ण हाथीपर सवार इस प्रकारके स्वरूपवान् इंद्रका (यत इंद्रेति) मंत्रकरके पूजन करना चाहिये ॥ ७८ ॥

अथ पितृपूजनमाह ।

पितरः कृष्णवर्णाश्च चतुर्हस्ता विमानगाः ।
षडक्षिसूत्रकमंडलुभयानां च धारिणः ॥ ७९ ॥

अर्थ—श्यामवर्ण चारहाथ विमानपर सवार छः नेत्र सूत्र मंडलु धारणा किये इस प्रकारके पितर देवताओंका पूजन चाहिये ॥ ७९ ॥

अथ पूजनप्रकारमाह ।

ये सत्या इति मंत्रेण पूजां कुर्यादनंतरम् ।
कलशस्थापनं होमं कृत्वा पूजादिपूर्ववत् ॥ ८० ॥
समिदाज्यचरोर्होमं तिलमाषैश्च सर्षपैः ।
अश्वत्थप्लक्षपालाशसमिद्भिः खादिरैः शुभैः ॥ ८१ ॥
अष्टोत्तरशतं मुख्यं प्रत्येकं जुहुयाद् बुधः ।
त्रैयंबकेन मंत्रेण तिलान्व्याहृतिभिर्हुनेत् ॥ ८२ ॥
शंकरस्याभिषेकं च कुर्यात्पूर्वानुसारतः ।
अन्यत्सर्वाभिषेकं तु कुर्यादाज्यावलोकनम् ॥८३॥

अर्थ-(ये सत्या) इस मंत्रसे पूजनकर तिसके बाद कलशका स्थापन कर हवन करे पहिलेकीतरह पूजन करे ॥८०॥ समिध घृत चरु करके तिल उर्द सरसों करके हवन करे पीपल, पाकड, ढाककी समिध करके खैरकी शुभ समिध करके ॥ ८१ ॥ एकसौ आठ आहुति हरएकका हवन पंडित करे (त्र्यंबक) मंत्रकरके तिलोंका वेदकी व्याहृतियोंकरके हवन करे ॥ ८२ ॥ पहिले माफिक शिवजीका अभिषेक कर और सबोंका अभिषेक कर फिर घृतावलोकन करे ॥ ८३ ॥

अथ दर्शशांतिरुच्यते ।

अथातो दर्शजातानां मातापित्रोर्दरिद्रता ।
तद्दोषपरिहारार्थं शांतिं वक्ष्यामि नारद ॥ ८४ ॥
न्यग्रोधोदुंबराश्वत्थाः सचूता निंबकास्तथा ।
एतेषां किल मूलानि त्वगादीन्पल्लवांस्तथा ॥ ८५ ॥

पंचरत्नानि निक्षिप्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ।
सर्वे समुद्र इति चाऽऽपोहिष्ठादित्र्यृचेन च ॥ ८६ ॥

अथ–इसके अनंतर दर्शअमामें उत्पन्नहुए मनुष्य माता पिताको दरिद्रता करते हैं तिसके दोष दूर करनेके लिये मैं शांति कहता हूं ॥ ८४ ॥ संकल्पकरके कलशस्थापनकर कलशमें वट, पीपल, गुलर आम्र, पाकड इनके पत्ते और जड और छाल ॥ ८५ ॥ पंचरत्नको कलशमें डालकर दो कपडोंसे वेष्टनकर (सर्वे समुद्राः) इस ऋचा करके (आपोहि· ष्ठादि) ऋचाओंकरके घटको अभिमंत्रित पूर्वक अग्निको· णमें स्थापन करे ॥ ८६ ॥

अथ दर्शदेवतास्वरूपम् ।

दर्शस्य देवताश्चा सोमसूर्यस्वरूपजाम् ।
प्रतिमां स्वर्णजां नित्यं राजतीं ताम्रजां तथा ॥८७॥
आप्यायस्वेति मंत्रेण सविता पश्चात्तमेव च ।
उपचारैः समाराध्य ततो होमं समाचरेत् ॥ ८८ ॥
समिधश्च चरुं द्रव्यं क्रमेण जुहुयाद्गृही ।
हुनेत्सवितृमंत्रेण सोमो धेनुश्चमंत्रतः ॥ ८९ ॥

अर्थ–दर्शअमाका देवता चंद्रमासूर्यके स्वरूपसे पैदाहुआ प्रतिमा सोनेकी बनावे अथवा चांदी या तांबेकी बनावे॥८७॥ आप्यायस्वेति) मंत्रकरके सूर्यका पीछेसे षोडशोपचार करके पूजनकर पीछेसे हवन करे ॥ ८८ ॥ समिध और चरुद्रव्य करके क्रमसे यजमान हवन करे (सवितृमंत्रकरके) [illegible] मन्त्रसे ॥ ८९ ॥

अष्टोत्तरशतं वापि अष्टाविंशतिसंख्यया ।
अभिषेकादिकं कार्यं पूर्वरीत्या द्विजोत्तमैः ॥ ९० ॥
हिरण्यं राजतं चैव कृष्णा धेनुश्च दक्षिणा ।
ब्राह्मणान्भोजयेत्तत्रकारयेत्स्वस्तिवाचनम् ॥ ९१ ॥

अर्थ-एकसौ आठ अथवा अट्ठाईस संख्या करके आहुतिदेय पहिले माफिक अभिषेकादिकार्य पंडितजन करै ॥ ९० ॥ सोने वा चांदीकी श्यामा धेनु दक्षिणासहित देकर ब्राह्मणोंको भोजन कराकर स्वस्तिवाचन करे ॥ ९१ ॥

अथ कृष्णचतुर्दशीजननशांतिः ।

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां प्रसूतेः षड्विधं फलम् ।
चतुर्दशीं चषड्भागां कुर्यादादौ शुभं फलम् ॥९२॥
द्वितीये पितरं हंति तृतीये मातरं तथा ।
चतुर्थे मातुलं हंति पंचमे वंशनाशनम् ॥ ९३ ॥
षष्ठे तु धनहानिः स्यादात्मनो नाशकारकः ।
तस्मात्सर्वप्रयत्नेन शांतिं कुर्याद्विधानतः ॥ ९४ ॥

अर्थ-जो बालक कृष्णपक्षकी चतुर्दशीमें उत्पन्न होय उसका छः प्रकारके फल जानना चतुर्दशी तिथिके छः भाग दशदश घटीके करे आदिके भागमें पैदाभई कन्या शुभ होती है ॥ ९२ ॥ दूसरे भागमें पिताका नाश करे, तीसरे भागमें माताका नाश करे, चतुर्थ भागमें मातुलका नाश करे, पंचम भागमें वंशनाश करती है ॥ ९३ ॥ छठे भागमें धनहानि करे और आत्माका नाश करे, ऐसे योगमें उत्पन्न बालक निजकुलको फल करते हैं, कन्या श्वशुरकुलको फल करती है तिसते सब यत्नोंसे शांति विधानसे करनी चाहिये ॥ ९४ ॥

अथ विशेषमाह-वसिष्ठः ।

पित्रोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा ।
जन्मर्क्षांशे च तल्लग्ने जातः सद्यो मृतिप्रदः ॥ १०५ ॥

अर्थ-माता पिताके जन्मनक्षत्रमें पैदा हुआ बालक माता पिताको हनन करता है, जन्मकी राशि तथा लग्नमें पैदा हुआ बालक शीघ्रही मृत्यु देता है ॥ १०५ ॥

अथ मातृपितृभे कन्याजन्मनिषेध-
माह-देवकीर्तिः ।

यद्येकस्मिन्धिष्ण्ये जाता दुहितरोऽथवा पुत्राः ॥
पित्रोरंतकरा स्युर्यद्यपरे प्रीतिरतुला स्यात् ॥ १०६ ॥

अर्थ-पिताके नक्षत्रमें उत्पन्न हुआ पुत्र अथवा कन्या पिताका नाश करते हैं अन्यके नक्षत्रमें उत्पन्न होय तो बहुत प्रीति बढाते हैं ॥ १०६ ॥

तथा च भगवान् गार्गिः ।

यस्यैव जन्मनक्षत्रे भ्राता जायेत वा सुतः ।
सजातोवाऽत्मनो भ्रातुः पितुःप्राणान्हरेद्ध्रुवम् ॥ १०७ ॥

अर्थ-जो बालक जिसके नक्षत्रमें पैदा होय भाई या बहन होय वह बालक अपना या दूसरेके प्राणोंको अवश्य नाश करता है ॥ १०७ ॥

अथ शांतिविधानमाह ।

तत्र शांतिं प्रवक्ष्यामि सर्वानार्थप्रतेन तु ।
अग्नेरीशानभागे तु नक्षत्रप्रतिमां ततः ॥ १०८ ॥
तन्नक्षत्रोक्तमार्गेण चार्चयेत्कलशोपरि ।

रक्तवस्त्रेण संछाद्य वस्त्रयुग्मेन वेष्टयेत् ॥ १०९ ॥
स्वस्वशाखोक्तमार्गेण कुर्यादग्निमुखं तथा ।
अनेनैव तु मंत्रेण हुनेदष्टोत्तरं शतम् ॥ ११० ॥
प्रत्येकं समिधः साज्यैः प्रायश्चित्तान्तमेव च ।
अभिषेकं ततः पित्रोः कुर्यादाचार्य एव च ॥१११॥
वस्त्रालंकारगोदानैराचार्यं पूजयेत्ततः ।
ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां दद्यान्मापमात्रं सुवर्णकम्११२॥
देवताप्रतिमादानं धान्यवस्त्रादिभिः सह ।
पानशय्यासनादीनि दद्याद्दोषप्रशांतये ॥ ११३ ॥
भोजयेद्ब्राह्मणान्सर्वान्वित्तशाठ्यविवर्जितः ॥११४॥

अर्थ-तिसके बाद शांति कहता हूं। सब आचार्य्योंके मत करके आग्नेय वा ईशान भागमें नक्षत्रकी प्रतिमा स्थापन करे ॥ १०८ ॥ उसी नक्षत्रके अनुसार प्रतिमाको कलशके ऊपर पूजन करे लाल वस्त्र करके आच्छादित कर दो वस्त्रोंकरके वेष्टन करे ॥१०९॥ अपनी अपनी शाखाके अनुसार अग्निमुख होकर पूजन करे इन मंत्रों करके अष्टोत्तरशत होम करे ॥११०॥ हर एककी समिधें घृतसहित हवन करे, प्रायश्चित्तके अंतमें आचार्य्य पिता माताका अभिषेक करे ॥ १११ ॥ वस्त्र अलंकार गोदान कर आचार्यकी पूजन करे. ऋत्विक् ब्राह्मणोंको दक्षिणा तीन तीन मासे सुवर्ण देय ॥११२॥ नक्षत्रदेवताकी प्रतिमाका दान धान्य वस्त्रादिसहित करे पान शय्या आसन आदि दान करे

और भोजनका दान दोपकी शांतिके लिये करे ॥ ११३ ॥
पीछे सब ब्राह्मणोंको भोजन करावे वित्तसे ज्यादे नहीं॥ ११४॥

अथ त्रीतरशांतिरुच्यते ।

सुतत्रये सुता चेत्स्यात्तत्रये वा सुतो यदि ।
मातापित्रोः कुलस्यापि तदारिष्टं महद्भवेत् ॥११५॥
जातस्यैकादशाहे वा द्वादशाहे शुभे दिने ।
आचार्यमृत्विजो वृत्वा ग्रहयज्ञपुरःसरम् ॥ ११६ ॥
ब्रह्मविष्णुमहेशेंद्रप्रतिमाः स्वर्णनिर्मिताः ।
पूजयेद्धान्यराशिस्थाः कलशोपरि भक्तितः ॥११७॥
पंचमे कलशे रुद्रं जपेत्तद्रुद्रसंख्यया ।
रुद्रसूक्तानि चत्वारि शांतिसूक्तानि सर्वशः॥११८॥
द्विज एको जपेद्धोमकाले शुचिसमाहितः ।
आचार्यो जुहुयादत्र समिदाज्यं तिलांश्चरुम्॥११९॥
अष्टोत्तरसहस्रं वा शतं वा विंशतिस्तु वा ।
देवताभ्यश्चतुर्वक्त्रादिभ्यो ग्रहपुरःसरम् ।
कांस्याज्यवीक्षणं कृत्वा शेषं पूर्ववदाचरेत् ॥१२०॥
अर्थ-जिस मनुष्यके तीन पुत्र होनेके बाद चौथी कन्या

ग्रहकी सुवर्णकी प्रतिमा बनाकर अन्नकी ढेरीके ऊपर कलश स्थापन कर उसपर मूर्तिदेवताओंकी स्थापना कर अपनी भक्ति करके पूजन करे ॥ ११७ ॥ पांचवें कलशपर शिवजीको स्थापन कर ग्यारह हजार जप करके रुद्रसूक्त करके चारों देवताओंकी शांतिसूक्तसे पूजन करे ॥ ११८ ॥ होमकालमें एक ब्राह्मण पवित्र होकर आचार्य हवन करे समिध और घृततिलके चरु करके एक हजार और आठ आहुति देय अथवा एकसौ आठ आहुति देय वा अट्ठाईस आहुति देवे ब्रह्माको आदि लेकर चार देवताओंका पूजन कर ग्रहयज्ञ पहिले करके कांसीके पात्रमें घृत भरके उसमें मुख देख कर दानकरे और सब पूजन पहिले जो विधि कहिआये उसकी माफिक करे ॥ ११९ ॥ १२० ॥

अथ प्रसवविकारमुच्यते ।

हीनकालेऽधिके काले प्रसवे सति योषिताम् ।
असंख्यदिवसे युग्मे प्रसवे चापि नाशनम् ॥१२१॥
अमानुषाणि चांडानि जायन्तेऽन्यांङ्गानि च ।
हीनांगाश्चाधिकाङ्गाश्च अनंगाः संभवंति वा ।
विशिरोद्वित्रिशिरसो विमुखाः पक्षिसंनिभाः ॥१२२॥

अर्थ-जिस मनुष्यकी स्त्री थोडे कालमें अथवा ज्यादे कालमें संतान पैदा करे अथवा असंख्य दिनोंमें संतान उत्पन्न करे अथवा प्रसव नाश करे ॥ १२१ ॥ मनुष्यके बिना और कुछ उत्पन्न करे अंडेकी या पक्षियोंकी उत्पत्ति करे हीनांग वा

आधिकांग वा अंगहीन संतान पैदा करे ॥ शिरहीन वा दो तीन शिरकी मुख हीन वा पक्षिसदृश संतान उत्पन्न करे ॥ १२२ ॥

अथ प्रसवविकारफलम् ।

विनाशं तस्य देशस्य कुलस्य च विनिर्दिशेत् ।
मासत्रयांतरे नूनं परचक्रागमं वदेत् ॥ १२३ ॥

अर्थ–जिस देशमें इस प्रकारकी संतान उत्पन्न होय तो उस देशका नाश करे और जिस कुलमें उत्पन्न होय उस कुलका नाश करे तीन महीनेके भीतर पराई फौजका उस देशमें आगम होय ॥ १२३ ॥

अन्यप्रसवविकारमाह ।

अप्राप्ते वयसि भ्रूणो द्विचतुष्पात्रिपादपि ।
अत्युच्चान्विनतांश्चापि संतानं प्रसवेद्यदि ॥ १२४ ॥
विमुखान्पक्षिसदृशांस्तथार्द्धपुरुषांश्च वा ।
बडवां हस्तिनीं गां वा यदि पुत्रं प्रसूयते ॥
विमुखां विकृतां वापि षड्भिर्मासैस्त्रिपक्षकैः॥ १२५॥

अर्थ–जिस स्त्रीकी उमर गर्भ लायक न हो और उसके गर्भ स्थित होजाय, द्विपाद वा चतुष्पाद वा त्रिपाद संतान उत्पन्न करे अत्यन्त ऊंची व अत्यन्तनींची इस प्रकारकी संतान पैदा करे ॥ १२४ ॥ मुखहीन वा पक्षिसदृश अथवा आधापुरुष आधा और घोडा हस्तिनी गौके आकार समान अथवा दो संतान पैदा करे इस प्रकारकी संतान जहां पैदा होय तो मनुष्य-देश छः मास वा तीन पक्षमें करदेती है ॥ १२५ ॥

अथ प्रसवविकारशांतिरुच्यते ।

त्यक्तव्याः परदेशेषु भार्यास्ताः स्वहितार्थिना ।
त्यक्त्वा दिवानिशं होमं पूर्वोक्तं कारयेज्जपम् ॥ १२६ ॥
प्राजापत्येन मंत्रेण समिदाज्यं चरुं क्रमात् ।
द्विजान्संतर्पयेदन्नैर्ग्रहशांतिं च कारयेत् ॥ १२७ ॥
हुत्वा च तर्पयेद्विद्वान्बहुस्वर्णसुभोजनैः ।
एवं यः कुरुते सम्यक् तस्माद्दोषात्प्रमुच्यते ॥ १२८ ॥

अर्थ–बुद्धिमान्‌को चाहिये ऐसी विकृत संतान उत्पन्न करनेवाली स्त्रीको परदेशमें त्याग दे अर्थात् भेज दे जो अपने हितकी चाहना होय तो त्यागकरनेके उपरांत दिनरात होमकरे और पूर्वोक्त जप करवावे ॥ १२६ ॥ प्राजापत्य मंत्र करके समिध घृतका चरुसे क्रम करके हवन करे, ब्राह्मणोंको अच्छे अन्न भोजन कराके तृप्ति करे ग्रहोंकी शांति करे ॥ १२७ ॥ हवन करनेके बाद पंडितोंको बहुतसा सोना और अच्छे भोजन देकर प्रसन्न करे ऐसी विधिसे जो भलेप्रकार करे तो तिस दोषसे छूटजाय फिर स्त्रीको ग्रहण करे ॥ १२८ ॥

अथ सूर्यचन्द्रग्रहणसमयजननशांतिः ।

ग्रहणेचंद्रसूर्यस्य प्रसूतिर्यदि जायते ।
व्याधिपीडा तथा स्त्रीणामादौ तु ऋतुदर्शनात् ॥ १२९ ॥
शांतिं तासां प्रवक्ष्यामि नराणां हितकाम्यया ।
यस्मिन्नृक्षे विशेषेण ग्रहणं संप्रजायते ॥ १३० ॥
तदृक्षाधिपते रूपं सुवर्णेन प्रकल्पयेत् ।

यथाशक्त्यनुसारेण वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥१३१॥
सूर्यग्रहे सूर्यरूपं सुवर्णेन स्वशक्तितः ।
चांद्रं चंद्रग्रहे धीमान् रजतेन विशेषतः ॥ १३२ ॥

अर्थ-जिस बालककी उत्पत्ति सूर्य चन्द्रग्रहणके समय होय तो व्याधिपीडाको करते हैं अथवा ग्रहणसमयमें आदि ऋतु स्त्रीका होय तो स्त्रीको बडी पीडादायक जानो ॥ १२९ ॥ तिसकी शांति मैं कहताहूं, मनुष्योंके हितके लिये जिस नक्षत्रमें विशेष करके ग्रहण होय ॥ १३० ॥ उस नक्षत्रके अधिपतिकी मूर्ति सुवर्णकी बनावे अपनी शक्तिके अनुसार वित्तसे ज्यादे नहीं बनाना ॥ १३१ ॥ सूर्यग्रहणमें सूर्यका स्वरूप सुवर्णका बनावे और चंद्रग्रहणमें चंद्रमाका स्वरूप चांदीका बनावे विशेषकरके ॥ १३२ ॥

राहुरूपं प्रकुर्वीत नागेनैव विचक्षणः ।
शुचौ देशे प्रयत्नेन गोमयेन प्रलेपयेत् ॥ १३३ ॥
तस्योपरि न्यसेद्धान्यान्नववस्त्रं सुशोभनम् ।
त्रयाणां चैव रूपाणां स्थानं तत्र तु कारयेत् ॥१३४
रक्ताक्षतान् रक्तगंधं रक्तपुष्पांबराणि च ।
सूर्यग्रहे प्रदातव्यं सूर्यप्रीतिकरं च यत् ॥ १३५ ॥
श्वेतवस्त्रं श्वेतमाल्यं श्वेतगंधाक्षतादिकम् ।
चंद्रग्रहे प्रदातव्यं चंद्रप्रीतिकरं च यत् ॥ १३६ ॥

अर्थ-राहुका रूप बनावे सीसेका, नाग बनावे पवित्र .९ यत्न करके गौके गोबरसे लेपन करे ॥ १३३ ॥ उसके

ऊपर अन्नोंकी ढेरी लगावे, नया कपडा शोभायमान तीनों रूपोंको तीन जगह स्थानमें स्थापन करे ॥ १३४ ॥ लाल अक्षत लाल गंध लाल पुष्पादिकोंकरके सूर्यग्रहका दान करे सूर्यकी प्रीतिके लिये ॥ १३५ ॥ सफेद कपडा सफेद पुष्पोंकी माला सफेद गंध अक्षतों करके चंद्रमाका दान देय चंद्रमाकी प्रीतिके लिये ॥ १३६ ॥

राहवे चैव दातव्यं कृष्णपुष्पांबरादिकम् ।
दद्यान्नक्षत्रनाथाय श्वेतगंधानुलेपनम् ॥ १३७ ॥
सूर्यं संपूजयेद्धीमानाकृष्णेनेतिमंत्रतः ।
चंद्रग्रहेऽर्कपालाशैः समिद्भिर्जुहुयान्नरः ॥ १३८ ॥
दूर्वाभिर्जुहुयाद्धीमान्राहोः संप्रीणनाय च ।
समिद्भिर्ब्रह्मवृक्षोत्थैर्भेशाय जुहुयात्ततः ॥ १३९ ॥
पंचगव्यैः पंचरत्नैः पंचत्वक्पंचपल्लवैः ।
जलैरोपधिकल्कैश्च सहितैः कलशोदकैः ॥ १४० ॥

अर्थ–राहुग्रहके अर्थ काले पुष्प श्याम वस्त्रादिकों करके पूजन करना चाहिये और जिस नक्षत्रमें ग्रहण हो उस नक्षत्रके स्वामीके लिये सफेद गंध लेपन वस्त्रादि करके पूजन करे ॥ १३७ ॥ सूर्यका पूजन बुद्धिमान् (आकृष्णेति) मंत्र करके करे । चंद्रमाके लिये आक और ढाककी समिधा करके हवन करे ॥ १३८ ॥ और राहु ग्रहके अर्थ बुद्धिमान् दूर्वाकरके हवन करे और नक्षत्राधिपतिके लिये पीपलकी

समिधों करके हवन करै ॥ १३९ ॥ पंचगव्य पंचरत्न पंचपल्लव तीर्थजल सर्वौषधि कुम्भमें डालकर पूजन करे ॥१४०॥

अभिषेकं प्रकुर्वीत यजमाने च यत्नतः ।
मंत्रैर्वारुणदेवत्यैरापोहिष्ठादिभिस्त्रिभिः ॥ १४१ ॥
इमं मे गंगे पितरस्तत्त्वायामीति मंत्रकैः ।
अभिषेके निवृत्ते तु यजमानः समाहितः ॥१४२॥
आचार्यं पूजयेत्पश्चात्सुशांतो विजितेंद्रियः ।
तस्मै दद्यात्प्रयत्नेन भक्त्या प्रतिकृतित्रयम् ॥१४३
दक्षिणाभिश्च संयुक्तमात्मशक्त्यानुसारतः ।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा तु प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥१४४॥

अर्थ-यजमानको यत्न करके अभिषेक करे वरुणदेवताओंके मंत्र करके [आपोहिष्ठा] दि तीन मंत्रोंकरके ॥१४१॥ [इमंमे गंगे पितरस्तत्वायामि] मंत्रकरके अभिषेकसे निवृत्त होनेके बाद यजमान भले प्रकार ॥ १४२ ॥ आचार्यका पूजन करे शांतस्वभाव जितेंद्रिय हो यजमान आचार्यके अर्थ यत्न करके भक्ति करके तीनों मूर्ति देवे ॥ १४३ ॥ दक्षिणा करके संयुक्त अपनी शक्त्यनुसार ब्राह्मणोंको भोजन करावे फिर दंडवत् करके विसर्जन करे ॥ १४४ ॥

तेभ्यश्च दक्षिणां दद्याद्यजमानः समाहितः ।
अनेन विधिना शांतिं कृत्वा सम्यग्विशेषतः॥१४५॥
अकालमृत्युशोकं च व्याधिपीडां न चाप्नुयात् ।
सौख्यं सौमनसं नित्यं सौभाग्यं लभते नरः॥१४६॥

इत्थं ग्रहणजातानां सर्वारिष्टविनाशनम् ।
कथितं भार्गवेणेदं शौनकाय महात्मने ॥ १४७ ॥
इति श्रीभृगुप्रणीते स्त्रीजातके ग्रहणजननशांतिवर्णनं
नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अर्थ-तिन ब्राह्मणोंको दक्षिणा देकर यजमान सावधान होकर इस विधि करके भले प्रकार शांति करै ॥ १४५ ॥ उसको अकालमृत्यु शोक व्याधि पीडा नहीं होती है उसके मनमें सौख्य नित्यही सौभाग्य लाभ होता है ॥ १४६ ॥ इस प्रकार ग्रहणमें उत्पन्न हुए मनुष्योंका सर्वारिष्ट निशरण करनेको शौनक महात्माके आगे शुक्रजीने वर्णन करा है ॥ १४७ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकन्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मज राज-ज्योतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरी भाषाटीकायां ग्रहणजननशांतिवर्णनं नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

अथ वंशाध्यायप्रारंभः ।

रम्येवंशवरेलिकाख्यनगरे ज्योतिर्विदामग्रणीश्चा-
सीद्रामनदीषडुत्तरतटे गोविंदरामाभिधः ॥ तस्मा-
त्प्रापजनिमहेशचरणांभोजैकभृंगः शुचिस्तंत्रा-
म्भोनिधिपारगः खलुघनश्यामाभिधःपंडितः ॥ १ ॥

अर्थ-रमणीक बाँसबरेलीनाम नगरमें ज्योतिर्विदोंमें अग्र-णीय रामगङ्गाके उत्तर किनारेपै गोविंराम है नाम जिनका

तिन करके प्राप्त हुई है उत्पत्ति जिनकी शिवजीके चरणकमलके भ्रमर अतिपवित्र तंत्रशास्त्र समुद्ररूपके पार जानेवाले निश्चय करके घनश्याम नाम पंडित हुए ॥ १ २

सत्पुत्रो बलदेव उत्सवरतः सद्भक्तिभावोऽभवत् ।
सूनुस्तस्य महीपपूजितपदः श्रीश्यामलालाभिधः ॥
दैवज्ञोऽभिमतः सतां रचयिता ग्रंथान्सुटीकायुतान् ।
सोयं स्त्रीप्रणयेन जातकमिदं कर्तुं प्रवृत्तोऽभवत् ॥२॥

अर्थ--तिनके पुत्र बलदेव प्रसाद श्रीकृष्णके उत्सवोंमें तत्पर अच्छी भक्ति भाववाले होते हुए पुत्र जिनका राजाओंकरके पूजित हैं चरण जिसके श्यामलालज्योतिषिक सत्पुरुषोंका प्यारा टीकासहित ग्रंथोंका रचनेवाला सो श्यामलाल स्त्रीके प्यार करके यह स्त्रीजातक करनेको प्रवृत्त होता हुआ ॥ २ ॥

स्त्रीजातकमखिलमिदं भूधरभूताङ्कभूमिते वर्षे ।
जातं कृष्णकृपातश्चैत्रेकृष्णे दले द्वितीयायाम् ॥ ३ ॥
असमंजसमिह विबुधैर्जातं यन्मन्मतेर्दोषात् ।
शेषात्तत्र विरोध्यं शोध्यं बोध्यं क्षमासारैः ॥ ४ ॥

इति श्रीवंशबरेलिकस्थगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्योतिषिकपण्डितश्यामलालविरचिते स्त्रीजातके स्ववंशवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

अर्थ-यह स्त्रीजातक सम्पूर्ण भूपर ७ भूत ५ अंक ९ भूमिते १ अर्थात् १९५७ के वैक्रमीय संवतमें श्रीकृष्णकी कृपाते पूरा हुआ चैत्रमास कृष्णपक्ष द्वितीयाको ॥ ३ ॥ हे विद्वानो ! जो मेरी मति करके अशुद्धता होय उसपर क्रोध न करना क्षमा करके शोधना और शिष्योंको समझाना ॥ ४ ॥

इति श्रीवंशवरेलिकरथगौडवंशावतंसश्रीबलदेवप्रसादात्मजराजज्यौतिषिकपण्डितश्यामलालकृतायां श्यामसुंदरीभाषाटीकायां वंशवर्णनं नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास, "लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, कल्याण-मुंबई.

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेस, खेतवाडी-मुंबई.

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालयकी परमोपयोगी स्वच्छ शुद्ध और सस्ती पुस्तकें ।

यह विदित आज ३०।४० वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपीहुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रामाणित हुई हैं सो इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे-वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, सांप्रदायिक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाके प्रत्येक अवसरपर विक्रीके अर्थ तैयार रहते हैं । शुद्धता स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बंधाई देशभरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपरभी दाम बहुतही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशनभी पृथक् काट दियाजाताहै । ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असंभव है संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी २ आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मगानेमें त्रुटि न करनी चाहिये, ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है 'सूचीपत्र' मगा देखो ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,

कल्याण-मुंबई.

एते गुहस्य रक्षार्थं कृत्तिकोमाग्निशूलिभिः ।
सृष्टाः शरवणस्थस्य रक्षितस्यात्मतेजसा ॥
स्त्रीविग्रहा ग्रहा ये तु नानारूपा मयेरिताः ।
गङ्गोमाकृत्तिकानाञ्च ते भागा राजसा मताः ॥
नैगमेषस्तु पार्व्वत्या सृष्टो मेषाननो ग्रहः ।
कुमारधारी देवस्य गुहस्यात्मसमः सखा ॥
स्कन्दापस्मारसंज्ञो यः सोऽग्निनाग्निसमद्युतिः ।
स च स्कन्दसखा नाम विशाख इति चोच्यते ॥
स्कन्दः सृष्टो भगवता देवेन त्रिपुरारिणा ।
बिभर्त्ति चापरां संज्ञां कुमार इति स ग्रहः ॥
बाललीलाधरो योऽयं देवो रुद्राग्निसम्भव. ।
मिथ्याचारेषु भगवान् स्वयं नैष प्रवर्त्तते ॥
कुमारः स्कन्दसामान्यादत्र केचिदपण्डिताः ।
ग्रहातीत्यल्पविज्ञाना ब्रुवते देहचिन्तकाः ॥
ततो भगवति स्कन्दे सुरसेनापतौ कृते ।
उपतस्थुर्ग्रहाः सर्व्वे दीप्तशक्तिधरं गुहं ॥
ऊचुः प्राञ्जलयश्चैनं वृत्तिं न. संविधत्स्व वै ।
तेषामर्थे ततः स्कन्दः शिवं देवमचोदयत् ॥
ततो ग्रहांस्तानुवाच भगवान् भगनेत्रहृत् ।
तिर्य्यग्योनिं मानुषञ्च दैवञ्च त्रितयं जगत् ॥
परस्परोपकारेण वर्त्तते धार्य्यतेऽपि च ।

देवा मनुष्यान् प्रीणन्ति तैर्य्यग्योनींस्तथैव च ।
वर्त्तमानैर्य्यथा कालं शीतवर्षोष्णमारुतैः ।
इज्याञ्जलिनमस्कारजपहोमव्रतादिभिः ॥
नराः सम्यक् प्रयुक्तैश्च प्रीणन्ति त्रिदिवेश्वरान् ।
भागधेयं विभक्तञ्च शेषं किञ्चिन्न विद्यते ॥
तद्युष्माकं शुभा वृत्तिर्बालेष्वेव भविष्यति ।
कुलेषु येषु नेज्यन्ते देवाः पितर एव च ॥
ब्राह्मणाः साधवश्चैव गुरवोऽतिथयस्तथा ।
[illegible]
[illegible]
गृहेषु तेषु ये बालास्तान् गृह्णीध्वमशङ्किताः ॥
तत्र वो विपुला वृत्तिः पूजा चैव भविष्यति ।
एवं ग्रहाः समुत्पन्ना बालान् गृह्णन्ति चाप्यतः ।
ग्रहोपसृष्टा बालास्तु दुश्चिकित्स्यतमा मताः ।
वैकल्यं मरणं चापि ध्रुवं स्कन्दग्रहे मतं ॥
स्कन्दग्रहोऽत्युग्रतमः सर्व्वेष्वेव यतः स्मृतः ।
अन्यो वा सर्व्वरूपस्तु न साध्यो ग्रह उच्यते ॥